મેં વાંચ્યુ
તમે પણ વાંચો

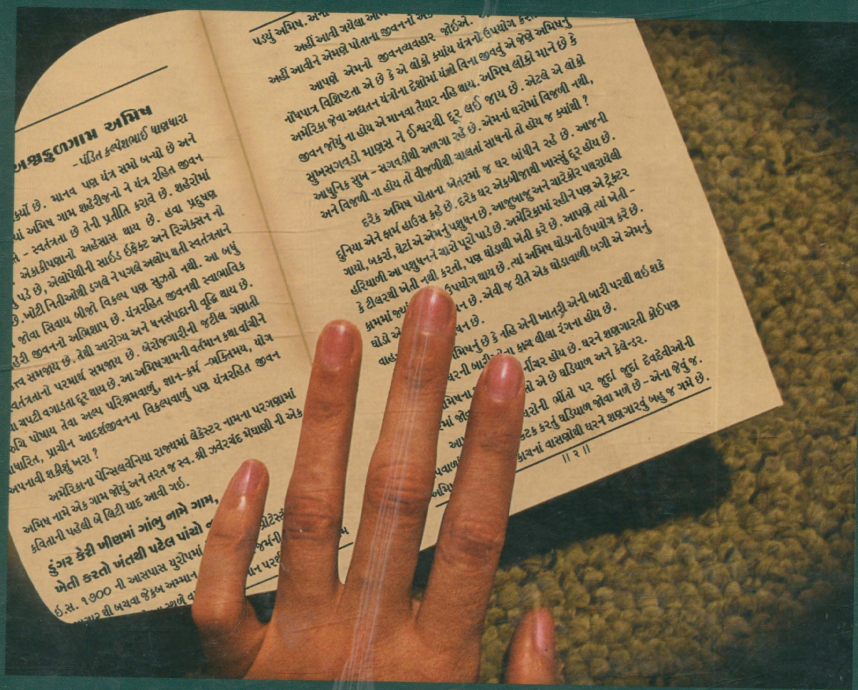

સંપાદક : મુનિશ્રી જયાનંદવિજયજી મ.સા.

॥ શ્રી આદિનાથાય નમઃ ॥
॥ પ્રભુ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરીશ્વરાય નમઃ ॥

મેં વાચ્યું તમે પણ વાંચો

❖ દિવ્યાશિષ ❖

શ્રી વિદ્યાચંદ્ર સૂરીશ્વરજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી રામચંદ્ર વિજયજી મ.સા.

❖ સંપાદક ❖

મુનિશ્રી જયાનંદવિજય

❖ પ્રકાશક ❖

ગુરુશ્રી રામચંદ્ર પ્રકાશન સમિતિ - ભીનમાલ

❖ મુખ્ય સંરક્ષક ❖

(૧) શ્રી સંભવનાથ રાજેન્દ્રસૂરિ શ્વે. મૂ. ટ્રસ્ટ,
કડુલાવારી સ્ટ્રીટ, વિજયવાડા.

(૨) મુનિરાજ શ્રી જયાનંદ વિજયજી આદિ ઠાણા કી નિશ્રા મેં
વિ. ૨૦૬૫મેં શત્રુંજય તીર્થે ચાતુર્માસ એવં ઉપધાન કરવાયા ઉસ નિમિત્તે

લેહર કુંદન ગ્રુપ
મુંબઈ, દિલ્લી, ચેન્નઈ, હરિયાણા,
શ્રીમતી ગેરીદેવી જેઠમલજી બાલગોતા પરિવાર મેંગલવા.

(૩) એક સદ્ગૃહસ્થ - ભીનમાલ

संरक्षक

(१) सुमेरमल केवलजी नाहर, भीनमाल, राज. के. एस. नाहर, २०१ सुमेर टॉवर, लव लेन, मझगांव, मुंबई-१०.

(२) मीलियन ग्रुप, सूराणा, मुंबई, दिल्ली, विजयवाडा.

(३) एम. आर. इम्पेक्स, १६-ए, हनुमान टेरेस, दूसरा माला, ताराटेम्पल लेन, लेमीग्टन रोड, मुंबई-७. फोन : २३८०१०८६.

(४) श्री शांतिदेवी बाबुलालजी बाफना चेरीटेबल ट्रस्ट, मुंबई, महाविदेह भीनमालधाम, पालीताना-३६४२७०.

(५) संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम, अक्षत बेटा पोता कुंदनमलजी भुताजी श्रीश्रीमाल, वर्धमान गौत्रीय आहोर (राज.) कल्पतरू ज्वेलर्स, ३०५, स्टेशन रोड संघवी भवन, थाना (प.) महाराष्ट्र.

(६) अति आदरणीय वडील श्री नाथालाल तथा पू. पिताजी चीनमलाल, गगलदास, शांतिलाल तथा मोंघीबेन अमृतलाल के आत्मश्रेयार्थे चि. निलांग के वरसीतप, प्रपौत्री भव्या के अट्ठाई वरसीतप अनुमोदनार्थ दोशी वीजुबेन चीमनलाल डायालाल परिवार अमृतलाल चीमनलाल दोशी पांचशो वोरा परिवार, थराद-मुंबई.

(७) शत्रुंजय तीर्थे नव्वाणुं यात्रा के आयोजन निमित्ते शा. जेठमल, लक्ष्मणराज, पृथ्वीराज, प्रेमचंद, गौतमचंद, गणपतराज, ललीतकुमार, विक्रमकुमार, पुष्पक, विमल, प्रदीप, चिराग, नितेष बेटा-पोता कीनाजी संकलेचा परिवार मेंगलवा, फर्म - अरिहन्त नोवेल्हटी, GF3 आरती शोपींग सेन्टर, कालुपुरटंकशाला रोड, अहमदाबाद. पृथ्वीचंद एन्ड कं., तिरुचिरापली.

(८) थराद निवासी भणशाली मधुबेन कांतिलाल अमुलखभाई परिवार.

(९) शा कांतीलाल केवलचंदजी गांधी सियाना निवासी द्वारा २०६३ में पालीताना में उपधान करवाया उस निमित्ते.

(१०) 'लहेर कुंदन ग्रुप' शा जेठमलजी कुंदनमलजी मेंगलवा (जालोर)

(११) २०६३ में गुडा में चातुर्मास एवं उपधान करवाया उस समय पद्मावती सुनाने के उपलक्ष में शा चंपालाल, जयंतिलाल, सुरेशकुमार, भरतकुमार, प्रिन्केश, केनित, दर्शित चुन्नीलालजी मकाजी काशम गौत्र त्वर परिवार गुडाबालोतान् जयचिंतामणि १०-५४३ संतापेट नेल्लूर-५२४००१ (आ.प्र.)

(१२) पू. पिताश्री पूनमचंदजी मातुश्री भुरीबाई के स्मरणार्थे पुत्र पुखराज, पुत्रवधु लीलाबाई पौत्र फुटरमल, महेन्द्रकुमार, राजेन्द्रकुमार, अशोककुमार मिथुन, संकेश, सोमील, बेटा पोता परपोता शा. पूनमचंदजी भीमाजी रामाणी गुडाबालोतान् 'नाकोडा गोल्ड' ७०, कंसारा चाल, बीजामाले, रून नं. ६७, कालबादेवी, मुंबई-२.

(१३) शा सुमेरपल, मुकेशकुमार, नितीन, अमीत, मनीषा, खुशबु बेटा पोता पेराजमलजी प्रतापजी रतनपुरा बोहरा परिवार, मोदरा (राज.) राजरतन गोल्ड प्रोड. के. वी. एस. कोम्प्लेक्ष, ३/१ अरूंडलपेट, गुन्टूर A.P.

(१४) एक सद्गृहस्थ, धाणसा.

(१५) गुलाबचंद डॉ. राजकुमार, निखीलकुमार, बेटा पोता परपोता शा छगनराजजी पेमाजी कोठारी, आहोर, अमेरिका : ४३४१, स्कैलेण्ड ड्रीव अटलान्टा जोर्जिया U.S.A.- ३०३४२. फोन : ४०४-४३२-३०८६/६७८-५२१-११५०

(१६) शांतिरूपचंद रविन्द्रचंद, मुकेश, संजेश, ऋषभ, लक्षित, यश, ध्रुव, अक्षय बेटा पोता मिलापचंदजी महेता फोलावास जालोर, बेंगलोर.

(१७) वि.सं. २०६३ में आहोर में उपधान तप आराधना करवायी एवं पद्मावती श्रवण के उपलक्ष में पिताश्री थानमलजी मातुश्री सुखीदेवी, भंवरलाल, घेवरचंद, शांतिलाल, प्रवीणकुमार, मनीष, निखिल, मित्तुल, आशीष, हर्ष, विनय, विवेक बेटा पोता कनाजी हकमाजीमुथा, शा. शांतिलाल प्रवीणकुमार एन्ड को. राम गोपाल स्ट्रीट, विजयवाडा. भीवंडी, इचलकरंजी

(१८) बाफना वाडी में जिन मन्दिर निर्माण के उपलक्ष में मातुश्री प्रकाशदेवी चंपालालजी की भावनानुसार पृथ्वीराज, जितेन्द्रकुमार, राजेशकुमार, रमेशकुमार, वंश, जैनम, राजवीर, बेटा पोता चंपालाल सांवलचन्दजी बाफना, भीनमाल. नवकार टाइम, ५१, नाकोडा स्टेट न्यु बोहरा बिल्डींग, मुंबई-३.

(१९) शा शांतिलाल, दीलीपकुमार, संजयकुमार, अमनकुमार, अखीलकुमार, बेटा पोता मूलचंदजी उमाजी तलावत आहोर (राज.) राजेन्द्रा मार्केटींग, विजयवाडा.

(२०) श्रीमती सकुदेवी सांकलचंदजी नेथीजी हुकमाणी परिवार, पांथेडी, राज. राजेन्द्र ज्वेलर्स, ८-रहेमान भाई बि. एस.जी. मार्ग, ताडदेव, मुंबई-३४.

(२१) पूज्य पिताजी श्री सुमेरमलजी की स्मृति में मातुश्री जेठीबाई की प्रेरणा से जयन्तिलाल, महावीरचंद, दर्शन, बेटा पोता सुमेरमलजी वरदीचंदजी आहोर, जे. जी. इम्पेक्स प्रा.लि.-५५ नारायण मुदली स्ट्रीट, चेन्नई-७९.

(२२) स्व. हस्तीमलजी भलाजी नागोत्रा सोलंकी की स्मृति में हस्ते परिवार बाकरा (राज.)

(२३) मुनिश्री जयानंद विजयजी की निश्रा में लेहर कुंदन ग्रुप द्वारा शत्रुंजय तीर्थे २०६५ में चातुर्मास उपधान करवाया उस समय के आराधक एवं अतिथि के सर्व साधारण की आय में से संवत २०६५.

(२४) मातुश्री मोहनीदेवी, पिताश्री सांवलचंदजी की पुण्यस्मृति में शा पारसमल सुरेशकुमार, दिनेशकुमार, कैलाशकुमार, जयंतकुमार, बिलेश, श्रीकेष, दीक्षिल, प्रीष कबीर, बेटा पोता सोवलचंदजी कुंदनमलजी मेंगलवा, फर्म : Fybros Kundan Group, ३५ पेरुमल मुदली स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई-१. Mengalwa, Chennai, Delhi, Mumbai.

(२५) शा सुमेरमलजी नरसाजी - मेंगलवा, चेन्नई.

(२६) शा दूधमलजी, नरेन्द्रकुमार, रमेशकुमार बेटा पोता लालचंदजी मांडोत परिवार बाकरा (राज.) मंगल आर्ट, दोशी बिल्डींग, ३-भोईवाडा, भूलेश्वर, मुंबई-२

(२७) कटारीया संघवी लालचंद, रमेशकुमार, गौतमचंद, दिनेशकुमार, महेन्द्रकुमार, रविन्द्रकुमार बेटा पोता सोनाजी भेराजी धाणसा (राज.) श्री सुपर स्पेअर्स, ११-३१-३A पार्क रोड, विजयवाडा, सिकन्द्राबाद.

(२८) शा नरपतराज, ललीतकुमार, महेन्द्र, शैलेष, निलेष, कल्पेश, राजेश, महीपाल, दिक्षीत, आशीष, केतन, अश्वीन, रींकेश, यश, मीत, बेटा पोता खीमराजजी थानाजी कटारीया संघवी आहोर (राज.) कलांजली ज्वेलर्स, ४/२ ब्राडी पेठ, गुन्टूर-२.

(२९) शा लक्ष्मीचंद, शेषमल, राजकुमार, महावीरकुमार, प्रविणकुमार, दिलीपकुमार, रमेशकुमार बेटा पोता प्रतापचंदजी कालुजी कांकरीया मोदरा (राज.) गुन्टूर.

(३०) एक सदगृहस्थ (खाचरौद)

(३१) श्रीमती सुआदेवी घेवरचंदजी के उपधान निमित्ते चंपालाल, दिनेशकुमार, धर्मेन्द्रकुमार, हितेशकुमार, दिलीप, रोशन, नीखील, हर्ष, जैनम, दिवेश बेटा पोता घेरवचंदजी सरेमलजी दुर्गाणी बाकरा, हितेन्द्र मार्केटींग, 11-x-2-Kashi, चेटी लेन, सत्तर शाला कोम्प्लेक्स, पहला माला, चेन्नई-७९.

(३२) मंजुलाबेन प्रवीणकुमार पटीयात के मासक्षमण एवं स्व. श्री भंवरलालजी की स्मृति में प्रवीणकुमार, जीतेशकुमार, चेतन, चिराग, कुणाल, बेटा पोता तिलोकचंदजी धर्माजी पटियात धाणसा. पी.टी.जैन, रोयल सम्राट, ४०६-सी वींग, गोरेगांव (वेस्ट), मुंबई-६२.

(३३) गोल्ड मेडल इन्डस्ट्रीस प्रा. ली. रेवतडा, मुंबई, विजयवाडा, दिल्ली, जुगराज ओटमलजी ए ३०१/३०२, वास्तुपार्क, मलाड (वेस्ट), मुंबई-६४

(३४) राज राजेन्द्र टेक्सटाईल्स, एक्सपोर्टस लिमीटेड, १०१, राजभवन, दौलतनगर, बोरीवली (ईस्ट) मुंबई, मोधरा निवासी.

(३५) प्र. शा. दी. वि. सा. श्री मुक्तिश्रीजी की सुशिष्या मुक्ति दर्शिताश्रीजी की प्रेरणा से स्व. पिताजी दानमलजी, मातुश्री तीजोबाई की पुण्य स्मृति में चंपालाल, मोहनलाल, महेन्द्रकुमार, मनोजकुमार, जितेन्द्रकुमार, विकासकुमार, रविकुमार, रिषभ, मिलन, हितिक, आहोर, कोठारी मार्केटींग, १०/११ चितुरी कोम्प्लेक्ष, विजयवाडा.

(३६) पिताजी श्री सोनराजजी, मातुश्री मदनबाई परिवार द्वारा समेतशिखर यात्रा प्रवास एंवं जीवित महोत्सव निमित्ते दीपचंद उत्तमचंद, अशोककुमार, प्रकाशकुमार, राजेशकुमार, संजयकुमार, विजयकुमार, बेटापोता सोनराजजी मेघाजी कटारीया संघवी धाणसा. अलका स्टील ८५७ भवानी पेठ, पूना-२.

(३७) मुनि श्री जयानंद विजयजी आदी ठाणा की निश्रा में सवंत २०६६ में तीर्थेन्द्र नगरे-बाकरा रोड मध्ये चातुर्मास एवं उपधान करवाया उस निमित्ते हस्ते श्रीमती मैतीदेवी पेराजमलजी रतनपुरा वोहरा परिवार-मोधरा (राजस्थान)

(३८) मुनि श्री जयानंद विजयजी आदी ठाणा की निश्रा में सवंत २०६२ में पालीताना में चातुर्मास एवं उपधान करवाया उस निमित्ते शांतीलाल, बाबुलाल, मोहनलाल, अशोककुमार विजयकुमार, श्री हंजादेवी सुमेरमलजी नागोरी परीवार-आहोर, बेंगलोर

(३९) संघवी कांतिलाल, जयंतिलाल गणपतराज राजकुमार, राहुलकुमार समस्त श्रीश्रीश्रीमाल गुडाल गोत्र फुआनी परिवार आलासण. संघवी इलेक्ट्रीक कंपनी, ८५, नारायण मुदली स्ट्रीट, चेन्नई-६०० ०७९.

(४०) संघवी भंवरलाल मांगीलाल, महावीर, नीलेश, बन्टी, बेटा पोता हरकचंदजी श्री श्रीमाल परिवार आलासन. राजेश इलेक्ट्रीकल्स ४८, राजा बिल्डींग, तिरुनेलवेली-६२७ ००१.

(४१) शा. कान्तीलालजी, मंगलचन्दजी हरण, दासपाँ, मुंबई।

(४२) शा भंवरलाल, सुरेशकुमार, शैलेषकुमार, राहुल बेटा पोता तेजराजजी संघवी कोमतावाला भीनमाल, एस. के. मार्केटींग, राजरतन इलेक्ट्रीकल्स - २०, सम्बीयार स्ट्रीट, चेन्नई-६०००७९.

(४३) शा समरथमल, सुकराज, मोहनलाल, महावीरकुमार, विकासकुमार, कमलेश, अनिल, विमल, श्रीपाल, भरत फोला मुथा परिवार सायला (राज.) अरुण इन्टरप्राइजेस, ४ लेन ब्राडी पेठ, गुन्टूर-२.

(४४) शा गजराज बाबुलाल, मीठालाल, भरत, महेन्द्र, मुकेश, शैलेस, गौतम, नीखील, मनीष, हनी बेटा-पोता रतनचंदजी नागोत्रा सोलंकी साँथू (राज.) - फूलचंद भवंरलाल, १८० गोवींदाप्पा नायक स्ट्रीट, चेन्नई-१

(४५) भंसाली भंवरलाल, अशोककुमार, कांतिलाल, गौतमचंद, राजेशकुमार, राहुल, आशीष, नमन, आकाश, योगेश, बेटा पोता लीलाली कसनाजी मु. सुरत. फर्म : मंगल मोती सेन्डीकेट, १४/१५ एस. एस. जैन मार्क्ट, एम.पी. लेन, चीकपेट क्रोस, बेंगलोर-५३.

(४६) बल्लु गगनदास विरचंदभाई परिवार, थराद.

(४७) श्रीमती मंजुलादेवी भोगीलाल वेलचन्द संघवी धानेरा निवासी, फेन्सी डायमण्ड, ११ श्रीजी आर्केड, प्रसाद चेम्बर्स के पीछे, टाटा रोड नं. १-२, ऑपेरा हाऊस, मुंबई-४.

(४८) शा शांतिलाल उजमचंद देसाई परिवार, विनोदभाई, धीरजभाई, सेवंतीभाई थराद, मुंबई.

(४९) बंदा मुथा शांतिलाल, ललितकुमार, धर्मेश, मितेश, बेटा पोता मेघराजजी फुसाजी ४३, आइदाप्पा नायकन स्ट्रीट, साहुकार पेट, धाणसा, चेन्नई-७९.

(५०) श्रीमती बदामीदेवी दीपचंदजी गेनाजी मांडवला चेन्नई निवासी के प्रथम उपधान तप निमित्ते, हस्ते परिवार.

(५१) श्री आहोर से आबू-देलवाडा तीर्थ का छरि पालित संघ निमित्ते एवं सुपुत्र महेन्द्रकुमार की स्मृति में संघवी मुथा मेघराज, कैलाशकुमार, राजेशकुमार, प्रकाशकुमार, दिनेशकुमार, कुमारपाल, करण, शुभम, मिलन, मेहुल, मानव, बेटा पोता सुगालचंदजी लालचंदजी लूंकड परिवार आहोर, मैसुर पेपर सप्लायर्स, ५, श्रीनाथ बिल्डींग, सुल्तान पेट सर्कल, बेंग्लोर-५३.

(५२) एक सद्गृहस्थ बाकरा (राज.)

(५३) माइनोक्स मेटल प्रा. लि., (सायला), नं. ७, पी. सी. लेन, एस. पी. रोड क्रोस, बेंग्लोर-२, मुंबई, चेन्नई, अहमदाबाद.

(५४) श्रीमती प्यारीबाई भेरमलजी जेठाजी श्रीश्रीश्रीमाल अग्नि गौत्र, गांव-सरत. २०६८में बाकरारोड में चातुर्मास एवं उपधान आयोजन निमित्ते हस्ते संघवी भंवरलाल, अमीचंद, अशोककुमार, दिनेशकुमार अंबीका ग्रुप विजयवाडा.

(५५) स्व. पिताश्री हिराचंदजी, स्व. मातुश्री कुसुमबाई, स्व. जेष्ठ भ्राताश्री पृथ्वीराजजी, श्री तेजराजजी आत्मश्रेयार्थ मुथा चुन्निलाल, चन्द्रकुमार, किशोरकुमार, पारसमल, प्रकाशकुमार, जितेन्द्रकुमार, दिनेशकुमार, विकाशकुमार, कमलेश, राकेश, सन्नि, आशिष, नीलेश, अंकुश, पुनीत, अभिषेक, मोन्टु, नितिन, आतिश, निल, महावीर, जैनम, परम, तनमै, प्रनै, बेटा पोता, प्रपोता लडपोता हिराचंदजी,

चमनाजी, दांतेवाडिया परिवार, मरुधर में आहोर (राज.) फर्म : हीरा नोवेल्टीस, फ्लोवर स्ट्रीट, बल्लारी.

(५६) मुमुक्षु दिनेशभाई हालचंद अदानी की दीक्षा के समय आई हुई राशी में से हस्ते हालचंदभाई वीरचंदभाई परिवार थराद, सुरत.

सह संरक्षक

(१) शा तीलोकचंद मयाचन्द एन्ड कं. ११६, गुलालवाडी, मुंबई-४

(२) शा ताराचन्द भोनाजी आहोर फर्म-मेहता नरेन्द्रकुमार एन्ड कुं., पहला भोइवाडा लेन मुंबई-२

(३) स्व. मातृश्री मोहनदेवी पिताजी श्री गुमानमलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल जयन्तिलाल, सुरेश, राजेश सोलंकी जालोर प्रविण एण्ड कं. १५-८-११०/२, बेगम बाजार, हैदराबाद-१२.

(४) १९९२ में बस यात्रा प्रवास, १९९५ में अट्ठाई महोत्सव एवं संघवी सोनमलजी के आत्मश्रेयार्थे नाणेशा परिवार के प्रथम सम्मेलन के लाभ के उपलक्ष्य में संघवी भबुतमल जयंतिलाल, प्रकाशकुमार, प्रविणकुमार, नवीन, राहुल, अंकूश, रितेश नाणेशा, प्रकाश नोवेल्टीज्, सुन्दर फर्नीचर, ७९४ सदाशीव पेठ, बाजीराव रोड, पूना-४११ ०३० (सियाणा)

(५) सुबोधभाई उत्तमलाल महेता धानेरा निवासी, कलकत्ता.

(६) पू. पिताजी ओटमलजी मातुश्री अतीयाबाई प. पवनीदेवी के आत्मश्रेयार्थ किशोरमल, प्रवीणकुमार (राजु) अनिल, विकास, संयम, ऋषभ, दोशी चौपड़ा परिवार आहोर, राजेन्द्र स्टील हाउस, ब्राडी पेठ, गुन्टुर (A.P.)

(७) पू. पिताजी शा प्रेमचंदजी छोगाजी की पुण्यस्मृति में मातुश्री पुष्पादेवी, सुपुत्र दिलीप, सुरेश, अशोक, संजय वेदमुथा रेवतडा. (राज.) चेन्नई श्री राजेन्द्र टॉवर नं.१३, समुद्र मुद्दाली स्ट्रीट, चेन्नई.

(८) पू. पिताजी मनोहरमलजी के आत्मश्रेयार्थ मातुश्री पानीदेवी के उपधान आदि तपश्चर्या निमित्ते सुरेशकुमार, दिलीपकुमार, मुकेशकुमार, ललितकुमार, श्रीश्रीश्रीमाल, गुडाल गोत्र नेथीजी परिवार आलासण. फर्म : M. K. Lights, ८९७ अविनाशी रोड, कोईम्बटूर-६४१ ०१८.

(९) गांधि मुथा, स्व. पिताजी पुखराजजी मातुश्री पानीबाई के स्मरणार्थ हस्ते गोरमल, भागचन्द नीलेश, महावीर, वीकेश, मीथुन, रीषभ, योनिक बेटा पोता पुखराजजी समनाजी गेनाजी सायला, वैभव ए टु झेड डोलार शोप वासवी महल रोड, चित्रदूर्गा.

(१०) श्रीमती शांतिदेवी मोहनलालजी सोलंकी के द्वितीय वरसीतप के उपलक्ष में हस्ते मोहनलाल विकास, राकेश, धन्या बेटा पोता गणपतचंदजी सोलंकी जालोर, महेन्द्र ग्रुप, विजयवाडा (A.P.)

(११) पू. पिताजी श्री मानमलजी भीमाजी छत्रिया वोरा की पुण्य स्मृति में हस्ते मातुश्री सुआदेवी. पुत्र मदनलाल, महेन्द्रकुमार, भरतकुमार, पौत्र नितिन, संयम, श्लोक, दर्शन सूराणा निवासी कोइम्बटूर.

(१२) स्व. पिताजी पीरचंदजी भाई कांतिलालजी की स्मृति में माताजी पातीदेवी हस्तिमल महावीरकुमार संदीप, प्रदीप, वीक्रम, नीलेष, अभिषेक, अमीत, हार्दिक, मानू, तनीष, यश, पक्षाल, नीरव बेटा-पोता-प्रपोता वीरचंदजी केवलजी बागरा । पीरचंद महावीरकुमार, मैन बाजार, गन्टुर.

(१३) श्री सियाणा, शत्रुंजय से शंखेश्वर का छ'रिपालित संघ २०६५ में हस्ते संघवी प्रतापचंद, मूलचंद, दिनेशकुमार, हितेषकुमार, निखिल, पक्षाल बेटा-पोता पुखराजजी बालगोता । जैन इन्टरनेशनल ९५ गोवींदाप्पानायकन स्ट्रीट, चेन्नई नं. १

(१४) स्व. प.पू. पिताश्री शाह शांतिलाल चीमनलाल बलु मातुश्री मधुबेन शांतिलाल अशोकभाई सुरेखाबेन आदीकुमार थराद । अशोककुमार शांतिलाल शाह, २०१, कोशमोश अपार्टमेन्ट, भाटीया स्कूल के सामने, सांईबाबानगर, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई-९२.

• • •

• प्राप्तिस्थान •

शा. देवीचंद छगनलालजी

सुमति दर्शन, नेहरू पार्क के सामने, माघ कोलोनी, भीनमाल-३४३ ०२९ (राज.) फोन : (०२९३९) २२० ३८७

श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन पेढी

साँथू - ३४३ ०२६. जिला : जालोर (राज.)
फोन : (०२९७३) २५४ २२१

श्री विमलनाथ जैन पेढी

बाकरा गाँव - ३४३ ०२५. (राज.)
फोन : (०२९७३) २५१ १२२

महाविदेह भीनमाल धाम

तलेटी हस्तिगिरि, लिंक रोड, पालीताणा - ३६४ २७०.
फोन : (०२८४८) ३४३ ०१८

श्री तीर्थेन्द्र सूरि स्मारक संघ ट्रस्ट

तीर्थेन्द्र नगर, बाकरा रोड - ३४३ ०२५. जिला : जालोर (राज.)
फोन : (०२९७३) २५१ १४४

श्री सीमंधर जिन श्री राजेन्द्रसूरि मंदिर

शंखेश्वर तीर्थ मंदिर के सामने, शंखेश्वर, जि. पाटण (गुज.)

અનુક્રમણિકા

ક્રમ	વિગત	પેજ
૧.	અમેરિકાનું અશ્વકુળગામ અમિષ	૧
૨.	આરોગ્ય વિષે વિચારણા	૬
૩.	નારીને ખરેખર કેવા પ્રકારની કેળવણી આપવી જોઈએ ?	૧૩
૪.	સર્વગ્રાહી શિક્ષણનું સાચું સ્વરૂપ	૧૯
૫.	શિક્ષણની ચિંતા	૧૯
૬.	રાષ્ટ્રકી આત્મા આજ મૂર્ચ્છિત હૈ	૨૫
૭.	ગુલામી કી માનસિક્તાકો ઉખાડ ફેંકે	૨૯
૮.	સ્ત્રી અને સદાચારની સુરક્ષા કાજે સાબદા બનીએ	૩૧
૯.	ટીનએજર દીકરીને દસ અમૂલ્ય શિખામણો	૩૫
૧૦.	દુષ્કર બનાવાયેલું પતિદૈવત્વ	૪૧
૧૧.	બાલશિક્ષણ	૪૨
૧૨.	કન્યા કેળવણી : મૂંઝવણ અને માર્ગ	૪૩
૧૩.	માનવજીવનનું સમગ્રતઃ પરિવર્તન	૪૬
૧૪.	આજની આધુનિક શિક્ષણપ્રણાલી	૪૮
૧૫.	પં. વીરવિજયજી મહારાજ કૃત હિતશિક્ષા છત્રીશી	૪૯
૧૬.	રાષ્ટ્રદાઝ	૫૯
૧૭.	વિજ્ઞાન : વિનાશ કે વિકાસ	૬૪
૧૮.	સાથિયાનું મહત્વ	૬૬
૧૯.	લેટ્રીન ના હિમાયતી વિચારેં	૬૯
૨૦.	સાધ્વાચાર અને પર્યાવરણ શુદ્ધિ	૭૮

ક્રમ	વિગત	પેજ
૨૧.	પાણી તો ઘીની જેમ વાપરવું જોઈએ, બેટા !	૮૮
૨૨.	સમસ્યા પાણી ગાળવાની : સમાધાન વરસાદના પાણીના ટાંકાનું	૯૬
૨૩.	તમારા ઓરડામાં અજવાળું પાથરનાર વીજળીની ચાંપ કો'ક ગરીબ ગામડિયાના જીવનમાં અમાસનો અંધકાર પણ રેલાવી શકે છે	૧૦૫
૨૪.	'જોઈએ છે' સુખ: નિર્ભેળ, સર્વપ્રકારક અને શાશ્વત	૧૧૪
૨૫.	ખાદી : એકવીસમી સદીના યુવાનોનું વસ્ત્ર	૧૨૦
૨૬.	કાગળખાઉ સંસ્કૃતિ ઝાડને પણ મ્યુઝિયમ પીસ બનાવી દેશે	૧૨૭
૨૭.	ઝેરનાં જમણ દ્વારા કવેળાનાં મરણ	૧૩૬
૨૮.	આપણા વપરાશમાં ગાયના હાડકાં	૧૪૦
૨૯.	ક્યાં છે સ્વતંત્રતા ? ક્યા છે સ્વરાજ્ય ?	૧૪૬
૩૦.	છાપાઓમાં છપાતાં ભગવાનના ફોટા	૧૪૭
૩૧.	નારી... નારી... સન્નારી	૧૫૦
૩૨.	મા : એક અનુભૂતિ, એક ચમત્કૃતિ	૧૫૪
૩૩.	વિદ્યા વેચાય નહિ	૧૫૭
૩૪.	જેલવાસ પુત્રનો પિતાને સણસણતો પત્ર	૧૬૧
૩૫.	વર્તમાન પરીક્ષા પદ્ધતિના અનિષ્ટો	૧૬૫
૩૬.	તમારા નહેરુના બનાવટી સમાજવાદ કરતાં ભગવાન મહાવીરનો સમાજવાદ લાખ ગણો બહેતર હતો...	૧૬૯
૩૭.	આપણે કયા માર્ગે ?	૧૭૫

ક્રમ	વિગત	પેજ
૩૮.	યુવાન ત્યજેલી યુવતીને પુનઃ પ્રેમ પંથે ડગલાં માંડવા આજીજી કરે છે...	૧૭૮
૩૯.	શિસ્ત, મહેનત અને સમાજલક્ષી અભિગમ તમારા ફાયદામાં છે	૧૮૨
૪૦.	આપણા રસોડા	૧૮૫
૪૧.	"ગર્ભપાત - દેશ-વિદેશમાં"	૧૮૯
૪૨.	ન શોભતા કાર્યો	૧૯૨
૪૩.	શ્રાવક શ્રાવિકાઓ અને માઈક	૧૯૪
૪૪.	શુદ્ધ રેશમી વસ્ત્રો અંગેની તલસ્પર્શી માહિતી	૧૯૯
૪૫.	જાતને યોગ્ય બનાવો, તકની પ્રતીક્ષા કરો	૨૦૩
૪૬.	જુગાર અને લોટરીની કમાણી દાનમાં લેવાની કેનેડાની ધાર્મિક સંસ્થાઓની ચોખ્ખી ના !	૨૦૭
૪૭.	એક વિચારણા લીંબુના ફૂલ વિષે	૨૧૨
૪૮.	લક્ષ્મીનું વર્ચસ્વ ?	૨૧૩
૪૯.	"આડંબર"	૨૧૪
૫૦.	શ્રી પ્રવાસિઓને નમ્ર વિનંતિ	૨૧૬
૫૧.	સંઘ અને સંઘપતિ : એક પ્રસંગ	૨૧૯
૫૨.	સમજીને સુધારી લઈએ ! બાજી હજી હાથમાં છે !	૨૨૨
૫૩.	ક્રોધ	૨૨૫
૫૪.	શાકાહારીઓ તંદુરસ્ત અને લાંબુ આયુષ્ય ભોગવે છે.	૨૨૬
૫૫.	છ વરસનો ડોસો.....!	૨૨૬
૫૬.	ઘર-ઘરમાં એક આંખવાળા રાક્ષસનો વાસ !	૨૨૭

ક્રમ	વિગત	પેજ
૫૭.	સૌન્દર્ય - ત્રિપુટી નષ્ટ થઈ રહી છે !	૨૩૧
૫૮.	અનાયાસ સમૃદ્ધ થવાનું ન વિચારો	૨૩૫
૫૯.	વિજ્ઞાનનું વિજ્ઞાન	૨૪૦
૬૦.	સમયનો પડકાર	૨૪૫
૬૧.	નિંદારસથી સાવધ રહો !	૨૫૦
૬૨.	લેબલ અને ઢાંકણ	૨૫૮
૬૩.	પ્રાણો આપી પ્રાણ બચાવ્યા	૨૬૨
૬૪.	અંતે એ અંગ્રેજ અફસરે મહાજન સમક્ષ હેટ ઉતારી	૨૬૮
૬૫.	પરિચારિકા	૨૭૧
૬૬.	સર્યું આવા સૌન્દર્યથી !	૨૭૨
૬૭.	અવસાન અંગેના વિચિત્ર રિવાજ	૨૭૬
૬૮.	શિશુઓ જ્યાં વેચાય છે અને શિશુશિરો જ્યાં કપાય છે .	૨૭૭
૬૯.	દુનિયાના સૌથી અજબ કંજુસ - શ્રીમંતો અને તેમનાં જીવનના વિચિત્ર પ્રસંગો	૨૮૨
૭૦.	ભંડારિયામાં ભરાઈ રહેતો કંજુસ :	૨૮૩
૭૧.	કંજુસ સ્ત્રી	૨૮૩
૭૨.	લક્ષાધિપતિ મખ્ખીચૂસ	૨૮૪
૭૩.	તેના જીવનની વિચિત્રતાઓ	૨૮૫
૭૪.	કરોડોનો વારસો મૂકી ગયો	૨૮૬
૭૫.	યાચક ખાલી પાછો ફર્યો	૨૮૭
૭૬.	કંજુસ ધારાશાસ્ત્રી	૨૮૮
૭૭.	વારસામાં ઉતરેલી કંજુસાઈ	૨૮૯

ક્રમ	વિગત	પેજ
૭૮.	પ્રમાણિકતા	૨૯૦
૭૯.	નોકરી કરતી સ્ત્રી સમાજ અને કુટુંબને શું ઉપકારક છે ?	૨૯૧
૮૦.	મહિલા વર્ષમાં નારી -જાગૃતિના નામે નારીની અવહેલના ન થાય તે માટે જાગતા રહો	૨૯૬
૮૧.	સ્ત્રી - સ્વાતંત્ર્ય : એક ચિંતન	૩૦૩
૮૨.	વિચારો, ગંભીરતાપૂર્વક પક્ષપાતરહિત વિચારો	૩૦૭
૮૩.	નારીનું સ્વમાન	૩૦૯
૮૪.	આ તે દવાખાના કે કતલખાનાં ? :	૩૧૪
૮૫.	ડી. એન્ડ સી. ઓપરેશન :	૩૧૫
૮૬.	ચુસણ પદ્ધતિ :	૩૧૬
૮૭.	હિસ્ટેરોટોમી (નાનું સિઝેરિયન) :	૩૧૬
૮૮.	ઝેરી ક્ષારવાળી પદ્ધતિ :	૩૧૭
૮૯.	નિકાલની આગવી રીતો :	૩૧૭
૯૦.	પ્રચાર જાળ:	૩૧૮
૯૧.	કાયદો અને કુદરતી ન્યાય :	૩૨૦
૯૨.	માનસિક નીરોગિતા	૩૨૩
૯૩.	ક્ષમા	૩૨૭
૯૪.	"સ્ત્રીઓનું સ્થાન ઘરમાં જ છે"	૩૨૮
૯૫.	"વિડંબના દાયક વિધવા વિવાહ?"	૩૨૯
૯૬.	વિચારણીય	૩૪૮

અમેરિકાનું અશ્વકુળગામ અમિષ

- પંડિત કલ્પેશભાઈ ધાણધારા

આજે યંત્રવાદ વકર્યો છે. માનવ પણ યંત્ર સમો બન્યો છે અને યંત્રમાનવો બન્યા છે. ત્યાં અમિષ ગામ શહેરીજનો ને યંત્ર રહિત જીવન જીવવામાં કેટલી શાંતિ - સ્વતંત્રતા છે તેની પ્રતીતિ કરાવે છે. શહેરોમાં સામુહિકતામાં પણ એકાકીપણાનો અહેસાસ થાય છે. હવા પ્રદુષણ ધ્વનિપ્રદૂષણ વેઠવું પડે છે, એલોપેથીની સાઈડ ઈફેક્ટ અને રિએક્સન નો ભોગ બનવું પડે છે. ખોટી નિતીઓથી ડગલે ને પગલે અલોપ થતી સ્વતંત્રતાને અવાક્ બનીને જોવા સિવાય બીજો વિકલ્પ પણ સુઝતો નથી. આ બધું આધુનિક શહેરી જીવનનો અભિશાપ છે. યંત્રરહિત જીવનથી સ્વાભાવિક શ્રમનું મહત્ત્વ સમજાય છે. તેથી આરોગ્ય અને ધનસંપદાની વૃદ્ધિ થાય છે. સાચી સ્વતંત્રતાનો પરમાર્થ સમજાય છે. બેરોજગારીની જટીલ ગણાતી સમસ્યા ચપટી વગાડતા દૂર થાય છે. આ અમિષગામની વર્તમાન કથા વાંચીને રસરુચિ પોષાય તેવા અલ્પ પરિશ્રમવાળું, જ્ઞાન-કર્મ -ભક્તિમય, યોગ આધારિત, પ્રાચીન આદર્શજીવનના વિકલ્પવાળું પણ યંત્રરહિત જીવન અપનાવી શકીશું ખરા ?

અમેરિકાના પેન્સિલવેનિયા રાજ્યમાં લેકેસ્ટર નામના પરગણામાં અમિષ નામે એક ગામ જોયું અને તરત જ સ્વ. શ્રી ઝવેરચંદ મેઘાણી ની એક કવિતાની પહેલી બે લિટી યાદ આવી ગઈ.

ડુંગર કેરી ખીણમાં ગાંભુ નામે ગામ,
ખેતી કરતો ખંતથી પટેલ પાંચો નામ.

ઈ.સ. ૧૭૦૦ ની આસપાસ યુરોપમાં કેથલિક અને પ્રોટેસ્ટંટ પંથીઓના અત્યાચાર થી બચવા જેકબ અમ્માન નામનો માણસ જર્મની થી અમુક ખેડૂત કુટુંબોને લઈ આવી ને આ સ્થળે વસ્યો અને અમ્માન પરથી આ સ્થળનું નામ

પડયું અમિષ. એના રહેવાસીનું નામ પણ અમિષ.

અહીં આવી ગયેલા અમિષ લોકોના જીવનમાં પણ આમ જ બન્યું છે. અહીં આવીને એમણે પોતાના જીવનનો એકડો નવેસર થી ઘૂંટયો.

આપણે એમનો જીવનવ્યવહાર જોઈએ. અમિષના જીવનની નોંધપાત્ર વિશિષ્ટતા એ છે કે એ લોકો ક્યાંય યંત્રનો ઉપયોગ કરતા નથી. અમેરિકા જેવા અદ્યતન યંત્રોના દેશોમાં યંત્રો વિના જીવવું એ જેણે અમિષનું જીવન જોયું ના હોય એ માનવા તૈયાર નહિ થાય. અમિષ લોકો માને છે કે સુખસગવડો માણસ ને ઈશ્વરથી દૂર લઈ જાય છે. એટલે એ લોકો આધુનિક સુખ - સગવડોથી અળગા રહે છે. એમનાં ઘરોમાં વિજળી નથી, અને વિજળી ના હોય તો વીજળીથી ચાલતાં સાધનો તો હોય જ ક્યાંથી ?

દરેક અમિષ પોતાના ખેતરમાં જ ઘર બાંધીને રહે છે. આજની દુનિયા એને ફાર્મ હાઉસ કહે છે. દરેક ઘર એકબીજાથી ખાસ્સું દૂર હોય છે. ગાયો, બકરાં, ઘેટાં એ એમનું પશુધન છે. આજુબાજુ અને ચારેકોર પથરાયેલી હરિયાળી આ પશુધનને ચારો પૂરો પાડે છે. અમેરિકામાં રહીને પણ એ ટ્રેક્ટર કે ટીલરથી ખેતી નથી કરતો, પણ ઘોડાથી ખેતી કરે છે. આપણે ત્યાં ખેતી - કામમાં જ્યાં બળદનો ઉપયોગ થાય છે. ત્યાં અમિષ ઘોડાનો ઉપયોગ કરે છે. ઘોડો એ જ ખેતીનું સાધન છે. એવી જ રીતે એક ઘોડાવાળી બગી એ એમનું વાહન વ્યવહારનું સાધન છે.

એ ઘર અમિષનું છે કે નહિ એની ખાતરી એની બારી પરથી થઈ શકે છે. અમિષના ઘરની બારીઓના કાચ લીલા રંગના હોય છે.

અમિષના ઘરમાં જૂજ ફર્નીચર હોય છે. ઘરને શણગારતી કોઈપણ ચીજ ઘરમાં જોવા મળતી હોય તો એ છે ઘડિયાળ અને કેલેન્ડર.

આપણાં ગામોમાં ઘરોની ભીંતો પર જુદાં જુદાં દેવદેવીઓની છાપવાળાં કેલેન્ડર અને ટકટક કરતું ઘડિયાળ જોવા મળે છે - એના જેવું જ. અમિષ સ્ત્રીઓને સુંદર કાચનાં વાસણોથી ઘરને શણગારવું બહુ જ ગમે છે.

એટલે અમિષના ઘરમાં ઠેર ઠેર તમને કાચનાં વાસણો જોવા મળશે. ઘરનું ભોંયતળિયું જેને અમેરિકામાં પહેલો માળ કહે છે એ ફોલ્ડિંગ દીવાલોથી જુદા જુદા ખંડમાં વહેંચાયેલું હોય છે. જરુર પડતા આ દિવાલોને વાળીને આખાય ખંડનો મોટા હૉલ તરીકે ઉપયોગ થઈ શકે છે. ખાસ કરીને પ્રાર્થનાસભા યોજવા માટે આમ કરવામાં આવે છે.

પ્રાર્થનાસભા એ કાંઈ જડ કાર્યક્રમ નથી. દરેક કુટુંબમાં આ પ્રાર્થનાસભા એક અવસર છે. તે વખતે ઘરને રંગરોગાન કરવામાં આવે છે. કસબાનાં બીજાં ઘરોમાંથી સ્ત્રીઓ પ્રાર્થનાના બે દિવસ પહેલાં મદદ કરવા આવી જાય છે. સૌ સાથે મળીને પ્રાર્થના પછીના જમણવારની તૈયારીઓ કરે છે. પ્રાર્થના પછીના રવિવારે દરેક અમિષ કાં તો પોતાના ઘરમાં બેસી આરામ કરે છે અથવા સગાવહાલાંને મળવા જાય છે.

શાળામાં વાંચતાં - લખતાં, ઈતિહાસ - ભૂગોળ, ગણિત અને સંગીત જેવા વિષયો શીખવવામાં આવે છે. કેટલીક શાળાઓ વિજ્ઞાન શીખવે છે. તો કેટલીક શાળાઓ ઈતિહાસ અને કલાના વિષયોને બદલે ખેતીવાડી શીખવે છે. વર્ગશિક્ષણ ભજન અને બાઇબલ વાંચનથી શરૂ થાય છે, અને બપોરના ભોજન પહેલા મૌન પ્રાર્થના કરવામાં આવે છે.

આઠમું ધોરણ પાસ કર્યા પછી બાળકો શાળાએ જતાં નથી. ત્યાર પછી એમને ઘર કેમ ચલાવવું તેનું તેમ જ ખેતીવાડીની તાલીમ આપવામાં આવે છે. શાળાના શિક્ષણ કરતાં ગૃહશિક્ષણ અને ખેતીવાડી ની તાલીમને વધુ મહત્વ આપવામાં આવે છે અને ખરેખર જોવા જઈએ તો આ તાલીમ બાળક જ્યારે પાંચ વર્ષનું હોય ત્યારથી શરૂ થઈ જાય છે.

જેમ દરેક સમાજમાં હોય છે તેમ અમિષ લોકો માં પણ લગ્ન એક મોટો અવસર છે. એને ભારે ધામધૂમથી ઉજવવામાં આવે છે. આપણે ત્યાં જેમ વૈશાખ મહિનો એ લગનગાળો છે. ચારસો - ચારસો માણસો લગ્નમાં હાજરી આપે છે. ભાતભાતની વાનગીઓ બનાવવામાં આવે છે. આવા અવસરની ઉજવણીમાં સ્ત્રીઓ તો મોખરે જ હોય. કેટલાક દિવસ અગાઉ આવીને એ

લગ્ન ની તૈયારીઓમાં પડી જાય છે. આપણા દેશમાં બહેનો, ભાઈઓ, નણંદો કરે છે એમ જ.

અમિષ નવદંપતી મધુરજની ઉજવવા કોઈ હિલસ્ટેશન પર નથી જતાં, પણ સગાં - વહાલાંને મળવા જાય છે અને પછી પોતાના ઘરમાં રહેવા જાય છે.

અમિષ લોકો પાસે ખેતીવાડી ઉપરાંત હસ્તઉદ્યોગો પણ છે. વણાટકામ, ભરત - ગૂંથણ, લાકડામાંથી રમકડાં બનાવવાં, ફર્નિચર, ટોપલાટોપલી બનાવવાં વગેરે.

નાતાલ અને થેન્ક્સગીવિંગ જેવા તહેવારો માં સગાંવહાલાંને મળવા જાય છે. કોઈક કુટુંબમાં નાતાલના દિવસે નાની - મોટી ભેટ આપવાનો પણ રિવાજ છે.

મેળો એ લોકજીવનનું ભાતીગળ અંગ છે. ધરતીના જાયાના જીવનમાં રંગ - ધર્મ, જાત - પ્રાંતના ભેદભાવ વગર માણવામાં આવતો જો કોઈ પણ ઉત્સવ હોય તો તે છે લોકમેળો. સત્યાસી એકરની હરિયાળી જમીન પર ગોઠવાતો આ મેળો અમિષની લોકસંસ્કૃતિનું સાચું પ્રદર્શન છે. આબાલ - વૃદ્ધ સૌને આ મેળો મનોરંજન પુરૂં પાડે છે. કઠપૂતળીના ખેલ, જીપ્સીનૃત્યો, મદારીના ખેલ, જાદુના ખેલ, બળતા અંગારા ગળી જવાના, દોરી પર ચાલવાના એવા એવા ખેલ થાય છે. લગભગ ત્રીસ જેટલા તો નાટ્ય પ્રયોગો થાય છે. લોકનાટકોથી માંડીને શેક્સપિયરનાં ક્લાસિકલ નાટકો સુધી અને શેક્સપિયરનાં નાટકો તો શેક્સપિયરના અસ્સલ ગ્લોબ થિયેટરની નકલ કરી એમાં ભજવવામાં આવે છે. આ બધું કંઈ એક દિવસના લોકમેળામાં થાય નહિ. મેળો ચાલે છે સોળ અઠવાડિયાંના ખાસ્સા સોળ શનિ - રવિ સુધી. પછી શાનું કોઈ મનોરંજન બાકી રહે?

અમિષ લોકોનું જીવન એ ખૂબ જ અંગત જીવન છે. એ બહારના લોકોને મળવાનું ટાલે છે. ફોટા પડાવવાનો એમને અણગમો છે. કોઈ પ્રવાસ - વર્ણનમાં અમિષ નો ફોટો જોવા મળે તો માનજો કે એ ફોટો ખરેખરા

અમિષનો નથી, પણ અમિષની વેશભૂષા પહેરેલા કોઈ અભિનેતાનો છે. પોતાના ઘર, પોતાની રહેણીકરણી અજાણ્યા માણસો જોવા આવે એ અમિષ લોકોને ગમતું નથી. પણ પ્રવાસીઓ જે સંખ્યામાં અને જે ઝડપથી અમિષ લોકોને જોવા આવી રહ્યા છે એ જોતાં તો લાગે છે કે અમિષ લોકોનું આ અળગાપણું ઝાઝું ટકવાનું નથી. પરિવર્તનનાં પૂર જે ગતિથી ધસમસતાં આવી રહ્યાં છે એને અમિષ લોકો કેટલો વખત ખાળી શકશે ? (સૌજન્ય નવનીત સમર્પણ માર્ચ, ૧૯૯૧)

(આ લેખ ૧૯૯૧માં લખાયેલો છે. આજે આટલાં વર્ષો વીત્યાં તે પછી પણ અહીં વર્ણવેલી સ્થિતિ બદલાઈ નથી. ગૂગલ ઉપર સર્ચ કરવાથી એની ખાતરી થઈ શકે છે. સં.)

-પ્રેમ સુબોધ

સૌ પ્રત્યે સમતાનો ભાવ રાખવો, ધનાદિ માટે વિશેષ ખટપટમાં ન પડવું, સત્ય બોલવું, ભોગોથી વિરક્ત રહેવું અને કર્મમાં આસક્ત ન થવું- આ પાંચ વાત હોય તો મનુષ્ય સુખી થઈ શકે છે.

આરોગ્ય વિષે વિચારણા

- પં. પ્રભુદાસભાઈ બેચરદાસ પારેખ

શરીરના આરોગ્યનો સંપૂર્ણ આધાર આહાર, નિદ્રા અને બ્રહ્મચર્ય ઉપર છે. તેમાં પણ આહાર પ્રથમ કારણ છે. કારણ કે શરીરમાં રહેલી સર્વ ધાતુઓ આહારમાંથી ઉત્પન્ન થાય છે. જેનું પાચન આદર્શ છે તેને આહારનું પરિણમન સર્વ ધાતુઓમાં થાય છે, પરંતુ સામાન્ય પ્રકારના પાચનવાળાઓને સંપૂર્ણ સાતે ધાતુમાં પાચન થતું નથી, એટલે કેટલાકને રુધિર સુધી તો કેટલાકને માંસ કે મેદ સુધી પરિણમન થાય છે. આટલી સૂક્ષ્મ વાતઉપરથી સાબિત થાય છે કે શરીરે હૃષ્ટપૃષ્ટ દેખાતો માણસ સંપૂર્ણ નીરોગી હોઈ શકે કે કેમ તે નિશ્ચિત નથી, પરંતુ જેને આહારનું પાચન સાતે ધાતુમાં થતું હોય તે જ નીરોગી કહેવાય છે.

કેટલાકનું માનવું એમ છે કે ખૂબ દંડ અને બેઠકની કસરત કરવાથી શરીરનું આરોગ્ય વધે છે, પરંતુ તે માન્યતા ભૂલભરેલી છે, કેમ કે નબળા બાંધાના મનુષ્યોને તે દંડ અને બેઠક ફાયદો કરવાને બદલે કેટલીક વાર નુકશાન કરી બેસે છે. એટલે એ અતિશય બળવાનોની કસરત સામાન્ય માણસોના શરીરમાં લોહીનું ભ્રમણ વધારે છે. તેથી હાર્ટ (હૃદય)ની નબળાઇ વધારે થાય છે, પરંતુ જેઓ પહેલવાનો છે, જેઓનાં શરીરો કસરતી છે તેઓને ફાયદો કરશે. ક્યારેક મોટા - મોટા પહેલવાનો પણ ટૂંકી જીદગી ભોગવીને મરણ પામતા જણાય છે. પંજાબનો "અજય પહેલવાન, વિજેતા ગામા," જેના ૩૦,૦૦૦(ત્રીસ હજાર) ડોલર બૅન્કમાં જમા હતા અને કહેતા કે મને જીતનાર ને એક હજાર ડૉલર ઈનામ. યુરોપમાં મહાન ગણાતા પહેલવાનો શરીરે ગ્લીસરીન ચોપડીને તેની સામે કુસ્તીમાં આવ્યા કે જેથી ગામાને ચિત્ત કરતાં પોતાનું શરીર હાથ ન આવે છતાં પણ તે પંજાબી પહેલવાન દરેકને બબ્બે મિનિટમાં ચિત્ત કરીને અજેય કહેવાયો છે. તે ગામા ૪૦ વર્ષની ભરયુવાનીમાં મૃત્યુ પામ્યો છે. તેનું કારણ તો એ જણાય છે દંડબેઠકની વધુ

પડતી કસરતથી હાર્ટ નબળું થયું હોય.

એક માણસ ઘી, દૂધ, ફ્રુટ વગેરે ખોરાક નો ઉપયોગ વારંવાર ઘણો કરતો હોય તેના કરતાં દરેક ટંકે ત્રણ - ચાર રોટલા કે એવો જ બીજો કાંઈ નક્કર ખોરાક વિશેષ પ્રમાણમાં લઈ શકે તથા તેનું પુરું પાચન કરી શકે તેનું આરોગ્ય વધારે સારૂં ગણાય છે. ઘી - દૂધ શરીરને નક્કર ખોરાક કરતાં વધારે પોષણ આપતાં નથી, પરંતુ પ્રમાણમાં લેવાતો અન્નનો નક્કર ખોરાક જ પુષ્ટિ આપે છે, કારણ કે જેટલા પ્રમાણમાં વધારે ખોરાક લેવાય તેટલા પ્રમાણમાં ખોરાકમાંથી લોહી વધારે મળે અને બીજી ધાતુઓને પણ પોષણ મળે છે, પણ એમ ત્યારે થઈ શકે કે જ્યારે ઉપર પ્રમાણે શરીરનું પાચન આદર્શ હોય તો જ.

ઉપરની દરેક બાબતથી જણાય છે કે શરીરના આરોગ્યનો મુખ્ય આધાર ખોરાક ઉપર છે. સમસ્ત વૈદકીય શાસ્ત્રનો સાર પણ એટલો જ છે કે જ્યારે અજીર્ણ હોય ત્યારે ભોજન ન કરવું જોઈએ. અર્થાત્ જ્યારે પૂર્વે લીધેલો ખોરાક સંપૂર્ણ પાચન થઈ ગયો હોય ત્યારે જ ફરીથી અનાજ લેવું, પરંતુ અત્યારે પોતાનાં પાચનનો વિચાર કર્યા વિના રસેન્દ્રિયના સ્વાદમાં જઠર ઉપર શક્તિ કરતાં વધારે બોજો નખાય છે અને એ પ્રમાણે રોજના હિસાબે અમુકવર્ષે શરીરમાં કચરાનો વધારો થાય છે. આપણાં જઠરની શક્તિ પાંચ રોટલી પચાવવાની હોય, પરંતુ હમેશાં સ્વાદમાં ને સ્વાદમાં એકાદ વધારે લીધી. એ પ્રમાણે આપણે આપણી જીંદગીમાં એવી ભૂલ તો ઘણી વાર કરી હશે, પરંતુ યાદ રાખો, જ્યારે એવી ભૂલો વધારે પ્રમાણમાં થવા માંડે છે ત્યારે શરીર સહન કરી શકતું નથી. જીંદગીની કોઈ પણ અવસ્થામાં ગમે તેવી સામાન્ય ભૂલ કરી હોય તો તે જરુર વૃદ્ધાવસ્થામાં માણસને નડે છે.

યુવાનીના ચડતા જોમમાં એ બધી અનિયમિતતા કદાચ આપણને નહિ જણાતી હોય, પરંતુ જ્યારે શરીરમાં લોહી - માંસ - શક્તિ ઘટે છે ત્યારે જીંદગીની કોઈ પણ અવસ્થામાં કરેલી આહાર-વિહારની ભૂલો સવાર થઈ બેસે છે. અર્થાત્ શરીરમાં કોઈ પણ રોગનું ઉત્પન્ન થવું તે આહારવિહારમાં

કરેલી ભૂલનું પરિણામ છે.

તે જ પ્રમાણે નિદ્રા કહેતા આરામ પણ મનુષ્ય ને જરૂરની વસ્તુ છે. આઠ કલાક કામ કરવાની શક્તિ હોય અને વધારે કામ કરે તો તેનું શરીર પણ થાકે છે. એક બળદને થાકી ગયા પછી મારી મારી ને વધારે ચલાવીએ તો કદાચ બે માઈલ આગળ ચાલશે, પરંતુ ત્યાર પછી તે પહેલાંના કરતાં વધારે થાકેલો અને બીજી વાર ચાલવાને ઘણો અશક્ત થશે. તે પ્રમાણે થાકેલાં શરીરે ચા - કોફી જેવાં ઉત્તેજક પીણાં પીને જેઓ શરીરને આગળ કામમાં જોડે છે તેને કદાચ તેનો કેફ જોમ આપશે, પણ પરિણામ તો એકંદરે ભયંકર છે અને શરીરનો બાંધો નબળો કરનાર છે. તેથી પેટમાં નાખવાની કોઈ પણ વસ્તુ લેતાં પહેલાં વિચાર કરવો જોઈએ કે તે પોતાને કેટલી લાભદાયી છે.

બીજું આપણા શરીરમાં રોગનું ઘર બનાવનાર વિદેશી દવાઓ જ છે. કોઈ પણ શરીરને આવી કોઈ પણ દવાની જરૂર જ નથી, કેમ કે તે દવા રોગને કે રોગના કારણને કદી પણ શમાવતી નથી, પરંતુ આત્માની દુઃખ જાણવાની શક્તિને તદ્દન બુટ્ઠી કરી નાખે છે. તેથી તાત્કાલિક તેને દવાથી ફાયદો થયેલો જણાય છે, પરંતુ જ્યાં સુધી રોગનું કારણ નાશ પામ્યું નથી ત્યાં સુધી સાચી શાંતિ થતી જ નથી - દવાથી પ્રાપ્ત થયેલી શાંતિ અલ્પકાળની છે. તેથી ફરીથી રોગ ઉત્પન્ન થવાનો છે, પરંતુ જ્યારે રોગનું કારણ શમે છે ત્યારે ફરીથી રોગ ઉત્પન્ન થતો નથી. દાખલા તરીકે માથું દુખવા આવ્યું હોય ત્યારે આપણે બામ -મલમ લગાવીએ છીએ. મલમમાં એકદમ ગરમ દ્રવ્યો આવતાં હોવાથી માથામાં તનમનાટ ઉભો કરે છે અને તે તનમનાટથી માથાનો દુઃખાવો જણાતો નથી. તેથી થોડી વાર માટે શાંતિ થાય છે, પરંતુ માથું દુખવાનાં જે અનેક કારણો છે, તેમાંનાં કોઈને શમાવતો નથી. અજીર્ણથી, ભૂખથી, તાપથી, થાકથી, બહુ બોલવાથી, કબજીયાતથી, ઉજાગરાથી કે ભયથી - કોઈ પણ કારણથી માથું દુઃખતું હોય. તે કારણ જ્યાં સુધી મોજૂદ છે ત્યાં સુધી રોગ પણ કાયમ છે. શરીરમાં ઉત્પન્ન થયેલા ગૂમડા ઉપર મલમની પટ્ટી લગાવીએ તેથી ગૂમડું મટી

જાય છે, પણ પટ્ટી લગાડવાથી રોગ તો શરીરમાં જ રહે છે. શરીરમાંથી જે રોગ બહાર નીકળવાનો હોય છે, તેને મલમ દ્વારા બહાર નીકળતો અટકાવીએ છીએ અને ત્યાં નવું લોહી ઉત્પન્ન થઈ રોગના બહાર આવવાનાં દ્વાર બંધ કરી દે છે. પછી રોગ બહાર આવવાને બદલે શરીરમાં જ લોહી સાથે મળીને ફેલાઈ જાય છે. તે જ પ્રમાણે દવાનો ઉપયોગ પણ તેવા પ્રકારનો છે. કુદરતી ઈલાજ જેટલો ફાયદો કરે છે તેનો એક અંશ ફાયદો પણ દવા કરતી નથી. એ ફાયદો કરવો તો બાજુમાં રહ્યો, પણ બીજા એવા અનેક રોગને મૂકી જાય છે. એ વાત કોઈ જાણતું નથી. અત્યારે તો દવાનો મોહ એટલો વધતો ચાલ્યો છે કે નજીવા રોગના રોગીઓ પણ યમદૂત જેવા ડોક્ટરોના દવારૂપી ઝેરના પ્યાલાઓ આનંદથી પીએ છે અને જૂના રોગને કાયમ કરી નવા રોગોને આમંત્રણ આપે છે, તો પછી ઉત્પન્ન થયેલો રોગ મટશે કેમ ? આપણા હિંદની પૂર્વની સ્થિતિ વિચારીએ તો મોટાં શહેરમાં પણ ભાગ્યે જ એકાદ વૈદ્ય નજીવી આવકથી નભતો હતો, કારણ કે બધા હિંદુઓ રોગના કુદરતી ઈલાજ જાણતા અને નાછૂટકે કાષ્ઠ ઔષધી લેતા, ત્યારે હાલની પરિસ્થિતિ જુઓ. શહેરમાં ડૉક્ટરો સુખેથી બંગલાઓ બનાવી રહ્યા છે અને પ્રજા પણ ઝેરના પ્યાલાઓ આનંદથી પી રહી છે.

હિન્દુઓની ધાર્મિક ક્રિયાઓ જ રોગના ઈલાજ કે ઔષધરૂપ છે, કારણકે મહિનામાં એકાદ ઉપવાસ કે એકટાણાં કરી શરીરમાં વધેલા કચરાને બાળી નાખે છે અને આખી જીંદગી નીરોગી રહે છે. ત્યારે હાલમાં આહાર - વિહારની અનિયમિતતા, ઝેરી દવાઓનું પાન વગેરે તેમના રોગોને વધારી રહ્યા છે અને તેઓ આખી જીંદગી દુઃખથી જીવી રહ્યાં છે અને ડૉક્ટરોના ઘરમાં પોતે ઘણા દુઃખથી મેળવેલું દ્રવ્ય ભરી રહ્યા છે અથવા વાસ્તવિક રીતે કહીએ તો દેશને ભિખારી બનાવી રહ્યાં છે. તેઓ એમ સમજે છે કે ડોક્ટરો આપણા હિતેચ્છુ છે, પણ ખરી રીતે તો તેઓ હિતશત્રુ જ છે. તેઓ નથી જાણતા કે વિદેશમાં દવાઓ બનાવનારી કંપનીઓ શાથી હયાતી ભોગવે છે ? જો બધા આટલું જાણતાં હોત તો તે કંપની ક્યારની છિન્નભિન્ન થઈ ગઈ હોત, પણ

આપણે આપણાં અજ્ઞાનથી પ્રતિવર્ષ કરોડો રૂપિયા વિદેશ મોકલી રહ્યાં છીએ અને દેશને દરિદ્રી અને રોગી બનાવી રહ્યાં છીએ, તો સૌએ સમજવું કે ડૉક્ટરો આપણા વૈદ્ય અને હિતેચ્છુ નહિ, પણ વિલાયતની કંપનીના જ વૈદ્ય અને હિતેચ્છુ છે - તેના એજન્ટ છે, કેમ કે જો ડોક્ટરો ન હોય તો એ કરોડો રૂપિયાઓની દવાઓનો કોણ ઉપયોગ કરાવી શકે તેમ છે? તે કારણથી વિદેશી દવાઓ રોગનો નાશ કરે છે એવી ખોટી સમજ દરેકે કાઢી નાખવી જોઈએ અને કુદરતી ઈલાજ - આહાર - વિહારોમાં નિયમિતતા એ જ સાચું ઔષધ છે એમ સમજી બને ત્યાં સુધી તે બાબતમાં કાંઇ પણ ભૂલ ન કરવી તથા ઉત્પન્ન થયેલા રોગનાં કારણો તપાસી તે કારણો દૂર કરવાનો પ્રયત્ન કરવો, જેથી સંપૂર્ણ આરોગ્ય મળશે, પરંતુ જ્યાં સુધી દવાઓનો મોહ ઓછો નથી થતો ત્યાં સુધી શરીર રોગાર્ત જ રહેવાનું છે એમ નિશ્ચે સમજો.

આટલી બીના સંપૂર્ણ સમજ્યા પછી દરેક જણ નીચેની હકીકતો પ્રમાણે વર્તન રાખશે તો તેને જિંદગીમાં કદાપિ રોગ નડશે નહીં.

૧. જ્યારે સંપૂર્ણ ભૂખ લાગે ત્યારે રુચિપૂર્વક, કાંઇક ઉણા રહીને મોઢામાં જ ખોરાકનો રસ થાય ત્યાં સુધી ચાવીને જમો.

૨. જ્યારે ભૂખ ન લાગે, અજીર્ણ થયું હોય, ક્રોધમાં હોઈએ ત્યારે ભોજન ન કરવું અને અજીર્ણ થયેલું પચી જાય ત્યાં સુધી ભૂખ્યા રહો. બની શકે તો તેવા પ્રસંગે લાંઘણ કરી લો, પણ કોઇ દિવસ એવા વખતે ખાવાની ભૂલ ન કરો. (મીઠું ભેળવ્યા વિનાના લૂખા રોટલા કે રોટલીનો ટુકડો સાવ એકલો, પણ ઘણું ચાવીને ખાવાથી ઘણો મીઠો લાગે અને તરત ફરીથી બીજો ટુકડો ખાવાનું મન થાય ત્યારે સાચી ભૂખ લાગી છે એમ જાણવું.)

૩. જ્યારે ભૂખ લાગી હોય ત્યારે ગમે તે પ્રકારનું આવશ્યક કામ છોડીને જમી જ લો, કારણકે જો તમે નહીં જમો તો પેટમાં વાયુ ઉત્પન્ન થશે અને નવા રોગનું ઘર થશે.

૪. ધાર્મિક ક્રિયાઓનું પૂર્ણ પાલન કરો. મહિનામાં ઓછામાં ઓછા

બે ઉપવાસ કે ત્રણ - ચાર એકટાણાં અવશ્ય કરો. જેથી શરીરમાં રહેલો નકામો કચરો બળી જાય.

૫. કોઈ પણ વસ્તુ પેટમાં નાંખતા પહેલાં વિચાર કરો કે પોતાને કેટલી લાભકારી છે.

૬. પોતાની પ્રકૃતિને જે ખોરાક અનુકૂળ નથી તેનું કદાપિ સેવન ન કરો.

૭. લીધેલો ખોરાક પાચન થયો કે નહિ? તેની ખાતરી મળ ઉપરથી થાય છે. તો જ્યારે મળ સાફ ન આવ્યો હોય તો પાચન નથી થયું જાણી ખોરાક છોડી દો. (મળસંબંધી ઘણું જાણવાનું છે પચેલો મળ ન હોય તો પણ ઘણાંને ભૂખ લાગ્યા કરે છે, પણ તે ખોટી ભૂખ છે.)

૮. પાણી ભરવાના તથા પીવાનાં વાસણો સ્વચ્છ રખાવવાં અને બેસીને ધીરે ધીરે પાણી પીઓ. કેટલીક વાર પાણી પીવામાં ઘણી ભૂલો થાય છે, જેમ કે પેટમાં અજીર્ણ હોય ત્યારે ઘણી તૃષા લાગે છે, ત્યારે ઉપરાઉપરી પાણી પીધે જાય છે, પણ તે સાચી તૃષા નથી, કેમ કે તે અજીર્ણ મોઢામાં - ગળામાં ખોટી ગરમી ઉત્પન્ન કરે છે. તે સાચી તરસ નથી. એવે વખતે જો પાણી પીધા વિના રહે તો થોડા જ કલાકમાં દોષ સમી જાય છે.

૯. કામથી કંટાળી ગયા પછી કામ ન કરતાં આરામ લો.

૧૦. શરીરમાં સ્ફૂર્તિ લાવવા સાંજ - સવાર ફરવાની વગેરે સામાન્ય પ્રકારની કસરત હમેંશા નિયમિત કરો.

૧૧. કોઈ પણ કેફી પદાર્થનું સેવન ન કરો.

૧૨. દવાનો મોહ છોડી પ્રાકૃતિક ઈલાજ પ્રમાણે વર્તવાની ટેવ પાડો.

૧૩. હંમેશા મન - વચન - કાયાથી બ્રહ્મચર્ય પાળો.

ઉપરની બીનાઓનું વિવેચન ઘણું કર્યું છે. એટલે કહેવાની આવશ્યકતા નથી કે ઉપર પ્રમાણે નિયમિત રહેવાથી કોઈ રોગ ઉત્પન્ન ન જ

થાય. આહાર, નિદ્રા કે આરામ તથા બ્રહ્મચર્ય તે જિંદગીના નક્કર થાંભલારૂપ છે. તેમાં જેટલા પ્રમાણમાં શિથિલતા થાય તેટલા પ્રમાણમાં શરીરરૂપી ઘરનું ચણતર શિથિલ થતું જાણવું.

આપણા શરીરમાં રોગનું ઘર બનાવનાર વિદેશી દવાઓ જ છે. કોઈ પણ શરીરને આવી કોઈ પણ દવાની જરૂર જ નથી, કેમ કે તે દવા રોગને કે રોગના કારણને કદી પણ શમાવતી નથી. પરંતુ આત્માની દુઃખ જાણવાની શક્તિને તદ્દન બુટ્ઠી કરી નાખે છે. તેથી તાત્કાલિક તેને દવાથી ફાયદો થયેલો જણાય છે, પરંતુ જ્યાં સુધી રોગનું કારણ નાશ પામ્યું નથી ત્યાં સુધી સાચી શાંતિ થતી જ નથી - દવાથી પ્રાપ્ત થયેલી શાંતિ અલ્પકાળની છે. તેથી ફરીથી રોગ ઉત્પન્ન થવાનો છે, પરંતુ જ્યારે રોગનું કારણ શમે છે ત્યારે ફરીથી રોગ ઉત્પન્ન થતો નથી.

- પ્રેમ સુબોધ

સુખની ઈચ્છા રાખનારે વૈરાગ્યનો જ આશ્રય લેવો જોઈએ. જે પુરુષ ધનોપાર્જનની ચિંતા છોડી ઉપરત થઈ જાય છે એ સુખપૂર્વક ઊંઘી શકે છે.

નારીને ખરેખર કેવા પ્રકારની કેળવણી આપવી જોઈએ ?

-સંજયભાઈ વોરા

અમારી એક બહેનપણીની દિકરી ૧૫ વર્ષની થઈ છે અને એસએસસી પાસ થઈ છે. તે હવે પુત્રીને કયા પ્રકારનું શિક્ષણ આપવું તેની દ્વિધા અનુભવી રહી છે. તેમના સમાજમાં એવો રિવાજ છે કે કન્યા ગ્રેજ્યુએટ હોય તો જ તેને યોગ્ય મુરતિયો મળે. તેની ઈચ્છા દીકરી ને ડિગ્રી કોલેજમાં મોકલવાની જરાય નથી. આ કોલેજના વાતાવરણનો તેને બરાબર ખ્યાલ છે. તે સાથે દીકરી ઉચ્ચ શિક્ષણથી વંચિત રહી જાય એવું પણ તે નથી ઈચ્છતી. તો પછી દીકરીને ક્યું શિક્ષણ આપવું ? આ સમસ્યા આજે અનેક સમજદાર મા - બાપોની છે. માટે તેના વિશે ગંભીરતાથી વિચારવાની જરૂર છે. સ્ત્રી માટે આદર્શ શિક્ષણ કેવું હોવું જોઈએ ?

આપણા દેશમાં જ્યારે મેકોલેની પદ્ધતિ પ્રમાણેની સ્કુલોની અને યુનિવર્સિટીઓની સ્થાપના થઈ ત્યારે તેમાં ભણતા વિધાર્થીઓ પુરુષો જ હતા. સ્ત્રીઓને આધુનિક શિક્ષણ આપતી આ સંસ્થાઓમાં મોકલવા માટે આપણો સમાજ જરાય તૈયાર નહોતો. આ કારણે જ સ્ત્રીઓ માટે અલાયદું શિક્ષણ આપતી સ્કુલો અને કોલેજોની આપણે ત્યાં સ્થાપના થઈ. આ કારણે સ્ત્રીઓને આધુનિક શિક્ષણ આપવાની બાબતમાં સમાજનો ક્ષોભ ઓછો થયો. તેનો લાભ સહશિક્ષણ આપતી સ્કુલો અને કોલેજોને પણ થયો અને તેમાં પણ મહિલાઓની સંખ્યા વધતી ગઈ. આજે પણ કેટલાંક મા - બાપો પોતાની કન્યાઓને સહશિક્ષણ આપતી સંસ્થાઓમાં ભણવા મોકલતા ભયનો અનુભવ કરે છે અને તે ભય વ્યાજબી પણ છે. આ કારણે જ ગર્લ્સ હાઈસ્કુલ અને વુમેન્સ યુનિવર્સિટીઓને આજે પણ પૂરતી સંખ્યા મળી રહે છે. છતાં સ્ત્રીઓને કઈ કેળવણી આપવી તે મુદ્દો અનિર્ણીત જ રહે છે.

આધુનિક શિક્ષણ આપતી સંસ્થાઓમાં અગાઉ છોકરીઓને ભણવા માટે મોકલવામાં નહોતી આવતી, તેનાં બે કારણો હતાં. એક કારણ વિજાતીય પરિચયનાં ભયસ્થાનોનું હતું તો બીજું કારણ માત્ર પુરુષો માટે જ રચવામાં આવેલો અભ્યાસક્રમ સ્ત્રીઓ માટે કેટલો ઉપયોગી, એવો વ્યાજબી પ્રશ્ન પણ હતો. શરૂઆતમાં આપણી સ્કુલો અને કોલેજોમાં જે શિક્ષણ આપવામાં આવતું હતું તે કારકુનો પેદા કરવા માટેનું જ શિક્ષણ હતું. મોટા ભાગની કોલેજો પણ આ માટે જ ખોલવામાં આવતી હતી. સમાજને લાગતું હતું કે આ પ્રકારનું શિક્ષણ સ્ત્રીઓને આપવાથી તેમને કોઈ લાભ નહીં થાય. આ કારણે જ આપણો સમાજ સ્ત્રીઓને આધુનિક શિક્ષણ આપવા બહુ ઉત્સુક નહોતો. સ્ત્રીઓ માટે જ શિક્ષણ આપતી જે સંસ્થાઓ ખોલવામાં આવી તેને કારણે પહેલી સમસ્યા તો હલ થઈ ગઈ પણ બીજી સમસ્યા વિશે આજ સુધી ગંભીરતાથી વિચાર કરવામાં આવ્યો નથી.

આ સમસ્યા છે, શું કન્યાને આર્ટ્સ, સાયન્સ કે કોમર્સની ગ્રેજ્યુએટ બનાવીને તેનું ખરેખર કલ્યાણ થઈ શકે ખરૂં ? આપણે મિતાલીનો જ દાખલો જોઈએ. તેનો જન્મ એક રૂઢિચુસ્ત જૈન પરિવારમાં થયો છે. આ પરિવારમાં દિકરીઓને ક્યારેય નોકરી કરવા માટે મોકલવામાં નથી આવતી. મિતાલીનાં લગ્ન તેની જ્ઞાતિમાં જ કરવામાં આવશે તે પણ નક્કી છે. તેની જ્ઞાતિમાં પરણીને સાસરે આવેલી વહુને પણ નોકરી કરવા જવા નથી દેવાતી. તેમ છતાં જ્ઞાતિમાં એવો રિવાજ છે કે વહુ ઓછામાં ઓછી ગ્રેજ્યુએટ તો હોવી જ જોઈએ. આ કારણે મિતાલીને કોલેજના અભ્યાસમાં બિલકુલ રસ નહોતો તો પણ તેણે બી. કોમ. થવું પડ્યું. ત્યાર પછી તેનાં લગ્ન લંબાઈ ગયાં એટલે તે એમ. કોમ. થઈ. હવે તે યોગ્ય વરની રાહ જોઈ રહી છે. લગ્ન પછી તેને આ શિક્ષણ જરાય કામ નહીં આવે તે નક્કી છે.

મિતાલીનો જન્મ તો એક રૂઢિચુસ્ત કુટુંબમાં થયો છે, એટલે તેની વાત અલગ છે. કર્ણાટકના ગૌડ સારસ્વત બ્રાહ્મણોની સામાજિક પરિસ્થિતિ આજે એવી છે કે કન્યા જો ભણેલી ન હોય અને નોકરી કરતી હોય તો જ તેનાં લગ્ન

થાય. તેનું કારણ એ છે કે આ જ્ઞાતિના પુરુષો બહુ કામ કરવામાં જ નથી માનતા. તેઓ પત્નીની કમાણી ઉપર મજા કરવામાં જ માને છે. આ સંયોગોમાં આ જ્ઞાતિની કન્યાઓને આધુનિક શિક્ષણ લેવું પડતું હોય તો તે તેમની ચોઈસ ન ગણી શકાય. આ તેમની મજબૂરી છે. આ રીતે દક્ષિણ ગુજરાતની અનાવિલ કન્યાઓ દહેજની રકમ એકઠી કરવા માટે જ નોકરી કરે છે. તેમણે એટલું બધું દહેજ આપવું પડે છે કે તે માટે નોકરી કરવી જ પડે. આ પણ ઈચ્છનીય પરિસ્થિતિ ન ગણાય.

અહીં આપણે સામાજિક રિવાજ કે આર્થિક મજબૂરીને કારણે ઉચ્ચ શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરતી નારીની વાત નથી કરવી પણ જે સ્ત્રીઓ કારકિર્દી બનાવવા માટે ઈચ્છાપૂર્વક યુનિવર્સિટીનું શિક્ષણ લે છે તેમની વાત કરવી છે. તેમાંની મોટા ભાગની સ્ત્રીઓ પુરુષોની કોલેજોમાં ભણીને તેમના જેવું જ શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરે છે અને પુરુષોના ક્ષેત્રમાં જ પ્રવેશી તેમની સાથે સ્પર્ધા કરે છે. આજે બેંકમાં એકાઉન્ટન્ટ તરીકે, હોસ્પિટલમાં ડોક્ટર તરીકે, સ્કુલમાં શિક્ષક તરીકે, કોલેજમાં પ્રોફેસર તરીકે, અખબારોમાં પત્રકાર તરીકે, સરકારી ખાતાઓમાં કર્મચારી તરીકે, કોર્ટોમાં વકીલ તરીકે અને એરોપ્લેનમાં હોસ્ટેસ તરીકે પણ સ્ત્રીઓ જોવા મળે છે. અગાઉ લશ્કર અને પોલીસ ખાતામાં પુરુષોની મોનોપોલી ગણાતી હતી તેમાં પણ સ્ત્રીઓએ પ્રવેશ કર્યો છે. આ બધાના મૂળમાં સ્ત્રી કેળવણી છે, એ સ્વાભાવિક હકીકત છે. તેના કારણે સમાજમાં ધરમૂળથી પરિવર્તન આવ્યું છે તે પણ હકીકત છે.

અહીં સવાલ એ થાય છે કે સ્ત્રીને પણ પુરુષ જેવું જ શિક્ષણ આપી પુરુષ જેવી જ કારકિર્દી અપનાવવાની પ્રેરણા આપવી એ સમાજના અને સ્ત્રીના હિતમાં છે કે અહિતમાં ? તેનો વિચાર સ્ત્રીશિક્ષણના પુરસ્કર્તાઓએ ક્યારેય કર્યો હોવાનું જણાતું નથી. કુદરતે સ્ત્રી અને પુરુષની શરીર રચના અલગ બનાવી છે, તેનો તો કોઈ ઈન્કાર કરી શકે તેમ નથી. સ્ત્રી ગર્ભધારણ કરી શકે છે અને બાળકને જન્મ આપી શકે છે. આ કામ પુરુષો કરી શકતા

નથી. બાળક પાંચ વર્ષનું થાય ત્યાં સુધી તો પિતા વગર રહી શકે છે, પણ માતા વગર રહી શકતું નથી આધુનિક તબીબો પણ બે વર્ષ સુધી બાળકને માતાનું દૂધ જ આપવું જોઈએ એવું ભારપૂર્વક કહે છે. આ કારણે પણ બાળક માટે માતાની હાજરી અનિવાર્ય છે. વળી માતા જે રીતે બાળકનું સંસ્કરણ કરી શકે તે રીતે પિતા ન કરી શકે તે પણ હકીકત છે. શું આપણે સ્ત્રી માટે આદર્શ કેળવણી અને કારકિર્દીનો વિચાર કરીએ છીએ ત્યારે આ બધાં કુદરતી પાસાંઓનો વિચાર કરીએ છીએ ખરા ? આ કુદરતી પાસાઓ ઉપરાંત આપણા સમાજની કેટલીક વાસ્તવિકતાઓ છે, જેમાં ફેરફાર થઈ શકે તેમ નથી અને જેનો ઈન્કાર પણ કરી શકાતો નથી. આ વાસ્તવિકતા એ છે કે પુરુષપ્રધાન સમાજમાં ઘરના સંચાલનની અને રસોઈપાણીની તેમ જ વૃદ્ધ માતાપિતાની દેખરેખની જવાબદારી મુખ્યત્વે સ્ત્રીએ જ ઉપાડવી પડે છે. શું સ્ત્રીઓને આધુનિક કેળવણી આપતી વખતે તેની આ બધી ભૂમિકાઓનો વિચાર કરવામાં આવ્યો હતો ખરો ? તેનો સ્પષ્ટ જવાબ નકારમાં મળે છે. શું સ્ત્રી એકાઉન્ટન્ટ, ડોક્ટર, ઈન્સ્પેક્ટર, વકીલ, શિક્ષક, પ્રોફેસર કે પત્રકાર બને ત્યારે એક પત્ની તરીકે, માતા તરીકે અને પુત્રવધુ તરીકે તેણે જે જવાબદારીઓ અદા કરવાની હોય તેમાંથી તે છટકી શકે છે ખરી ? તેનો જવાબ પણ સ્પષ્ટ નકારમાં મળે છે.

સ્ત્રીનું એક અલાયદું વ્યક્તિત્વ છે. સ્ત્રી કોમળતા અને વાત્સલ્યનો ભંડાર છે. સ્ત્રીના આ વિશિષ્ટ ગુણોની પતિઓને જરુર છે, બાળકોને જરૂર છે, વડીલોને જરૂર છે, પરિવારને જરૂર છે અને આખા સમાજને જરૂર છે. સ્ત્રી જો પુરુષો જેવું જ શિક્ષણ લઈ પુરુષો જેવી જ નોકરી કરવા માંડશે તો બે અનર્થ થશે : - એક, પુરુષોમાં બેકારી વધશે અને બે, સમાજમાં સમસ્યાઓ વધશે. સ્ત્રી જો નોકરી છોડી દેશે તો પુરુષો તેની જગ્યાએ આસાનીથી ગોઠવાઈ જશે પણ સ્ત્રી જો પરિવારની જવાબદારી છોડશે તો પુરુષ તે નિભાવવામાં નિષ્ફળ જ જશે. જે કુટુંબની સ્ત્રી નોકરી કરવા જાય તેનાં બાળકોને ઘોડિયાઘરમાં અને

વડીલોને વૃદ્ધાશ્રમમાં જ ધકેલી દેવા પડે છે. જે સ્ત્રીઓ નોકરી કરતી હોય તેઓ પોતાના પતિનું ઓછું ધ્યાન રાખી શકે છે, જેને પરિણામે ઘરમાં કજિયા વધે છે અને મામલો છૂટાછેડા સુધી પહોંચી જાય છે.

વળી કારકૂન, શિક્ષક, ડોક્ટર, ઈન્સ્પેક્ટર, પત્રકાર, વકીલ વગેરે કોઈ પણ ભૂમિકા નિભાવવા માટે સ્ત્રીએ ઘરની ચાર દિવાલોનું સંરક્ષણ છોડી બહાર નીકળવું પડે છે અને હાડમારીઓ વેઠવી પડે છે. આ પ્રક્રિયામાં સ્ત્રી ઓફિસોમાં જાતીય કનડગત અને શોષણનો આસાનીથી ભોગ બને છે. આ બધાનું મૂળ સ્ત્રીને તેની કુદરતી અને સામાજિક ભૂમિકાથી વિરુદ્ધ શિક્ષણ આપવામાં છે. અમે એવું કહેવા જરાય નથી માંગતા કે સ્ત્રીને કોઈ કેળવણી ન આપવી જોઈએ કે અભણ જ રાખવી જોઈએ. અમારા કહેવાનો આશય એટલો જ છે કે જે શિક્ષણ અને કારકિર્દીનું નિર્માણ માત્ર પુરુષજાતની જરૂરિયાતોને જ લક્ષમાં રાખીને કરવામાં આવ્યું છે તેને સ્ત્રીને ભોળવીને કે બળજબરીથી તેને માથે ઠોકી બેસાડવી જોઈએ નહીં. આમ કરવાથી સ્ત્રી સરવાળે દુઃખી જ થાય છે અને તેની વિશિષ્ટ શક્તિઓનો લાભ મેળવવાથી આપણો સમાજ વંચિત જ રહી જાય છે.

અહીં ફરીથી એ સવાલ આવીને ઊભો રહી જાય છે કે પંદર વર્ષની કન્યાને ક્યું શિક્ષણ આપવું કે જેથી તેના વ્યક્તિત્વનો પૂર્ણ વિકાસ થાય અને સમાજને પણ તેનો લાભ થાય. તેનો જવાબ બે રીતે આપી શકાય. પહેલી શરત એ છે કે જે અભ્યાસક્રમો માત્ર પુરુષોને જ લક્ષમાં રાખી ઘડવામાં આવ્યા છે તો ડિગ્રી કોલેજો, તબીબી કે એન્જિનિયરિંગ કોલેજો કે ચાર્ટર્ડ એકાઉન્ટન્ટની ઈન્સ્ટિટયુટમાં તો સ્ત્રીને ભણવા માટે ન જ મોકલવી જોઈએ. તેના સિવાયના વિકલ્પોનો જ વિચાર કરવો જોઈએ. તેના સિવાય એક નહીં પણ ૬૪ વિકલ્પો છે. આ વિકલ્પો એટલે પ્રાચીન આર્ય ગ્રંથોમાં સ્ત્રીઓ માટે જે ૬૪ કળાઓનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે છે. આ ૬૪ કળાઓનું શિક્ષણ મેળવનાર સ્ત્રી વિદુષી કહેવાય છે અને સમાજના દરેક ક્ષેત્રમાં તે આદરનું સ્થાન પ્રાપ્ત કરે છે.

પ્રાચીન ૬૪ કળાઓ આજે આધુનિક સ્વરૂપે પણ એટલી જ લોકપ્રિય છે. તેના યોગ્ય ગુરુઓ મેળવીને સ્ત્રીઓ માટે ખાસ વર્ગમાં કે ઘરે પણ તેની તાલીમ આપી શકાય છે. આ ૬૪ કળાઓમાં સંગીત, નૃત્ય, ચિત્રકામ, કેશગુંફન, કાવ્ય, ગણિત, વાજિંત્ર, વસ્ત્રાભૂષણ, શૃંગાર, ધર્મ, સાહિત્ય વગેરે અનેક વિલક્ષણ વિદ્યાઓનો સમાવેશ થાય છે. આ બધી જ વિદ્યાઓનો ઉપયોગ સ્ત્રીએ નોકરી કે ધંધા માટે કરવાની જરૂર નથી. એ જવાબદારી પુરુષોના માથે જ નાંખવી જોઈએ. સ્ત્રીએ આ ૬૪ કળાઓનો ઉપયોગ પોતાના વ્યક્તિત્વને સમૃદ્ધ બનાવવામાં, બાળકોનું સંરક્ષણ કરવામાં, પરિવારને સુખી બનાવવામાં, સમાજની સેવા કરવામાં અને પરોપકારના કાર્યોમાં જ કરવો જોઈએ. આ કારણે જ આપણા સમાજમાં સ્ત્રીની પૂજા કરવામાં આવતી હતી. સ્ત્રીને જો યોગ્ય કેળવણી અપાય તો જ તે વિશ્વવંદ્ય બની શકે તે નક્કી છે.

-પ્રેમ સુબોધ

જે મનુષ્ય પોતાની બધી કામનાઓને પ્રાપ્ત કરે છે અને જે એમનો સર્વથા ત્યાગ કરી દે છે એ બંનેમાં કામનાઓને પ્રાપ્ત કરનાર કરતાં ત્યાગનાર જ શ્રેષ્ઠ છે.

સર્વગ્રાહી શિક્ષણનું સાચું સ્વરૂપ

જે શિક્ષણથી બ્રહ્મ કર્મમાં રત નિઃસ્પૃહ બ્રાહ્મણ શિક્ષકો પકવી શકાય, પ્રજા-ધર્મ અને ન્યાયના રક્ષણ માટે મૃત્યુને પડકારતા યુદ્ધપ્રિય રાજાઓ પકવી શકાય, દેશના અર્થતંત્રને સમૃદ્ધ મજબૂત અને સ્વતંત્ર બનાવનારા નીતિમાન વ્યાપારી પકવી શકાય, વિવિધ કળા - કારીગરી અને વ્યવસાયમાં નિપુણ સ્વનિર્ભર સુથાર, લુહાર, મોચી, કુંભાર, શિલ્પી, દરજી, વણકર, સેવક, પકવી શકાય તે સર્વગ્રાહી શિક્ષણ કહેવાય છે.

શિક્ષણની ચિંતા

-ઈન્દુમતી કાટદરે

આપણે શિક્ષણને પૈસા સાથે જોડી દીધું છે. પુસ્તકો, સાધનસામગ્રી અને શાળા કોલેજની ફી એટલી ઉંચી થવા લાગી છે કે સામાન્ય લોકો ભણી જ ન શકે. ખરેખર તો શિક્ષણને પૈસા સાથે કોઈ લેવાદેવા નથી. શિક્ષણનો સંબંધ બુદ્ધિ સાથે છે. પરંતુ આપણે એને બજારની વસ્તુ બનાવી દીધી છે. એનું એક વિપરીત પરિણામ એ આવ્યું છે કે હવે શુદ્ધ જ્ઞાનના વિષયો ભણનારા વિદ્યાર્થીઓ બહુ જૂજ જોવા મળે છે. વ્યાવસાયિક અભ્યાસક્રમોની સંખ્યા, વિવિધતા અને પ્રભાવ એવાં વધી ગયાં છે કે સાહિત્ય, કલા, વિજ્ઞાન, સામાજિક શાસ્ત્રો વગેરે ભણવાની અને ખરેખર જ્ઞાનવાન થવાની કોઈની ખ્વાહીશ રહી નથી. વાત એટલે સુધી વણસી છે કે હવે એને શિક્ષણ કહેવાનું જ બંધ કરી દેવું જોઈએ, એને વ્યવસાયની તાલીમ જ કહેવું જોઈએ.

આપણે એવું અર્થશાસ્ત્ર ભણાવીએ છીએ તે એકે એક બાબત આપણે માટે વેચવા અને ખરીદવાની વસ્તુ બની ગઈ છે. જ્ઞાન વેચાય, અન્ન વેચાય,

પાણી વેચાય, દવા વેચાય,શીલ વેચાય, દેહ વેચાય, ધર્મ વેચાય. જે વેચી શકાય એમ ન હોય એની કશી કિંમત નથી. એ જ અર્થશાસ્ત્રને કારણે યંત્રવાદ આવ્યો, મોટા ઉદ્યોગો આવ્યા, ક્રેડિટ કાર્ડ આવ્યું. આર્થિક મહાસત્તાઓ બની જેને પરિણામે મનુષ્ય બેકાર થતો ગયો, દરિદ્ર બનતો ગયો અને પોતાના ધંધાના માલિક થવાને બદલે બીજાની માલિકીના કારખાનામાં મજૂર બન્યો દેશ કદાચ અમીર બન્યો, લોકો ગરીબ બન્યા, દેશ સ્વતંત્ર થયો, પ્રજા પરતંત્ર બની. નકામું અને અનુત્પાદન ખર્ચ વધ્યું પણ સંતોષ અને સમાધાન નષ્ટ થઈ ગયાં.

● શાળા વગરનું શિક્ષણ અને ભાર વગરનું સાચું ભણતર

-સંજય વોરા

આજનું શિક્ષણ લઈને વિદ્યાર્થીઓ પોતાની ભાષાથી જ નહીં પણ પોતાના આત્મસન્માનથી પણ વિમુખ બની રહ્યા છે. જેઓ પરાઈ ભાષાના મોહમાં પડે છે તેઓ પોતાની આગવી જીવનશૈલીથી પણ દૂર ચાલ્યા જાય છે.

- પ્રેમ સુબોધ

● ચૈતાલીનો સ્વયંવર અને અનુચિત સ્ત્રી શિક્ષણ

-પં.કલ્પેશભાઈ સે. ધાણધારા

અમદાવાદની દિવ્ય જીવન સોસાયટીમાં રહેતાં સુખી પરિવારની એક દિકરી એનું નામ ચૈતાલી. નવા જમાનાની સુધરેલી અને સામાન્ય રીતે સોસાયટી ગર્લની ઈમેજ ધરાવતી કન્યાઓમાંની તે પણ એક હતી. આવી છોકરીઓ લગ્નની બાબતમાં સાવ બેદરકાર હોવાનો દેખાવ કરે છે. શિક્ષણ અને કારકીર્દીનું ગાણું ગાઈને એક બાજુ લગ્નની વાત ટલ્લે ચડાવી દે છે. તો બીજી બાજુ પોતાના મનની અપેક્ષા મુજબનો કોઈ પુરુષ બ્રહ્માએ બનાવ્યો છે

કે નહીં તેની શોધ ચલાવ્યા કરે છે. એની ઉમરની કેટલીય તેની બહેનપણીઓ બે સંતાનોની માતા બની ચૂકી હોય તેવી ઢાંઢાં જેવડી ઉમર છતાંય પોતાને જાણે લગ્નનો વિચાર શુદ્ધાં આવતો નથી એવા દંભનો આંચળો ઓઢી રાખે છે.

જો કે આવી છોકરીઓ પુરુષ મિત્રોમાં છૂટથી હરતી ફરતી તો હોય જ છે. ભરયૌવનમાં તેની આજુ - બાજુ પુરુષ મિત્રોનું ભ્રમરવૃંદ ગુંજતું હોય છે. એમાંથી કોઈ પુરુષ મિત્ર લગ્નનો પ્રસ્તાવ મૂકે તો ભાવ ખાય છે, મોંઘી ને મોંઘી બનતી જાય છે. તેની ચિત્તની અપેક્ષાઓ એટલી બધી વિપરીત અને વિચિત્ર હોય છે કે તે જાળામાંથી તે સ્વયં પણ બહાર આવી શકતી નથી. ફસાયેલા કરોળીયાની જેમ તરફડતી છોકરીઓની આવી અનિર્ણાયક મનોદશાનું કારણ ***સ્ત્રી ઉપયોગી કેળવણીનો સદંતર અભાવ છે.*** સ્ત્રીઓને અપાયેલા વ્યવસાય લક્ષી અનુચિત અભ્યાસક્રમોના કારણે જ લગ્ન જેવી મહત્ત્વની બાબતોનો નિર્ણય કન્યાઓ લઈ શકતી નથી. અને માતા - પિતાઓને એ અધિકાર પાછો સોંપવા માંગતી નથી. આ ચૈતાલીની જ મુંઝવણ જુઓને.

તેને અભિષેક ગમે છે કેમ કે તેની હાઈટ અને પર્સનાલીટી સારી છે. પણ વાળ ઓળવાની ઢબ ગમતી નથી. એટલે થોડા પરિચય પછી અભિષેકને ચૈતાલીની દુનિયામાંથી વિદાય લેવી પડી. પછી અભિષેકની જગ્યા સુરેશે લીધી. હોટલમાં થયેલી પહેલી મુલાકાતમાં જ સુરેશ ગમી જાય છે. પણ પરિચય થતાં જ તેનાં સિદ્ધાંત અને ફિલોસોફી ચૈતાલીને બિલકુલ પસંદ આવતા નથી. આથી સુરેશને અંગૂઠો બતાવી નીકળી જાય છે. હવે વારો આવ્યો બકુલનો. એ ખૂબ દેખાવડો અને વાચાળ હતો. છોકરીઓને ઈમ્પ્રેસ કરવાનો અને તેની માનસિકતાનો અચ્છો જાણકાર બની લાભ ઉઠાવવામાં માહિર હતો. ચૈતાલી તેની મીઠી વાતો અને મોહક અદાઓમાં ફસાઈ ગઈ છે. પરિચય પ્રેમની નિકટ જઈ પહોંચ્યો પણ ત્યાં જ બકુલે પોતાની જ્ઞાતિની મોટા ઘરની રૂપાળી છોકરી સાથે સગાઈ કરી લેતા ચૈતાલી માટે ખાટી દ્રાક્ષ કોણ ખાય ?

જેવો ઘાટ ઘડાયો. એકબીજાને આપેલી ગિફ્ટોની આપ - લે કરવી પડી. આમ છતાં ચૈતાલી હિંમત હારે તો સોસાયટી ગર્લ શાની? પછી નિશીથ આવે છે. નિશીથનો પરિવાર પરિચિત છે. તેઓ સુખી સંપન્ન છે. નિશીથ પોતે પણ સંસ્કારી ધાર્મિક સ્વભાવનો અને કર્તવ્ય પરાયણ છે, આથી ગમે તો છે પણ જોઈએ તેવો દેખાવડો નથી માટે વિચારના અંતે "નેકસ્ટ વિકમાં જવાબ આપીશું" કહીને ના પાડશે તે નક્કી છે, આમ લટકતી તલવાર રાખીને નવા છોકરા જોવાનું ચાલું રાખ્યું. ચૈતાલીના સ્વયંવરમાં કતારબદ્ધ ઉભા રહેવાની રાજનની પણ મજબૂરી હતી. રાજનનો વિદ્યાવ્યાસંગી સ્વભાવ ચૈતાલીને ગમે છે. કોલેજમાં પણ તે પુસ્તકોમાં અને ચિંતનમાં રચ્યોપચ્યો રહેતો હતો તેની ચૈતાલીને જાણ હતી. આવો સદાચારી છોકરો કારકીર્દીમાં ટોચ ઉપર હોય તે સ્વાભાવિક હતું પણ તેની કપડાં પહેરવાની થોડી બેદરકારી ચૈતાલીને ખૂબ ખૂંચે છે. એક સંનિષ્ઠ કાર્યકરની જેમ પોતાના ધ્યેય ઉપર જ કેન્દ્રિત હોવાથી વસ્ત્રોમાં થોડો અવિવેક અવ્યવહારું લાગ્યા કરતો અને આ તો ચાલે જ કેવી રીતે ? તેવી ચૈતાલીની દૃઢ માન્યતા હોવાથી રાજનને પાણીચું પકડાવી દીધું. હવે સમીર આવે છે. તે સોહામણો છે અને ગમી જાય તેવો છે. ખોટા ખર્ચા ન કરનારો, કરકસરીયો, ખરો વ્યવહારું માણસ છે એટલે રેસ્ટોરોમાં કલબોમાં કે પાર્ટીઓમાં ખર્ચો કરતા અચકાય છે. એથી ચૈતાલીને સમીર લોભીયો લાગ્યો. તેજસ વેપારી છે. નવી લાઈન શોધીને જાતમહેનતે આગળ આવેલો ધનાઢ્ય છે. આથી આખા પરિવારને તેજસ પસંદ છે પણ આપણા ચૈતાલીબેનને પસંદ ન પડ્યો. કેમ કે તેને મળેલા દરેક છોકરા તેની આંખ અને જુલ્ફોનાં વખાણ અચૂક કરતા હતાં અને આ તેજસ તેની સામે જ જોતો નહોતો. વેપારી છતાં તેજસ થોડો શરમાળ પ્રકૃતિનો હતો. આથી ચૈતાલી ને એમ લાગ્યું કે આનામાં જોવાની કલાદૃષ્ટિ જ નથી. શૃંગાર જેવી મહત્ત્વની બાબત જ આ માણસ સમજતો નથી. ગ્રીન કલરની ચોલી સાથે કયા કલરની પાઈપીન અને સાડી શોભે તે વાતનો સ્પષ્ટ નિર્ણય કરવાની ક્ષમતા તેજસમાં નથી. આવો શરમાળ અને અનિર્ણયી માનસ ધરાવતા છોકરા સાથે આખું જીવન કેમ

વીતાવવું ? એ વિચારે ચૈતાલીએ તેજસને મુલતવી રાખવાના બદલે કેન્સલ જ કરી નાખ્યો.

આવી સોસાયટી ગર્લની નજરમાં એકેય યુવાન સમાઈ શકતો નથી. સદાચારી, ભાવનાશીલ, ઉદ્યમી, કેળવાયેલા, વિચારક અનેક યુવાનોના માંગા પાછા ફરે છે. મને તો એક માંગતા હજારો મળી રહેશે એ ઉન્માદમાં જ યૌવન પસાર થઈ જાય છે. અનેક યુવાનો સોસાયટી ગર્લના પરિચયમાં આવે છે. દોસ્તીના દાવ ફેંકાય છે. વારંવારની મુલાકાતો ગોઠવાય, હિલ સ્ટેશનોની મોજ લૂંટાય અને પછી ખોવાઈ જાય છે.

પછી તો યૌવનની સાથે થનગનાટ ઉત્સાહ અને ઓજની સાથે અહં પણ ધીમે - ધીમે ઓસરવા માંડે છે. એ સોસાયટી ગર્લનું આકર્ષણ ઓસરી જાય છે. "તબ તુમ મેરે પાસ આના પિયા ! મેરા ઘર ખુલા હૈ ખુલા હી રહેગાં" ગાનારા શાયર મિજાજી આશિકો પણ કરમાતા પુષ્પથી દૂર થયેલા અનુભવવા માંડે ત્યારે સોસાયટી ગર્લને બ્રહ્મજ્ઞાન લાધે છે.

એવી હાલતમાં સોસાયટી ગર્લને ત્વરિત લગ્નનાં વિચારો કેડો મુકતા નથી. બાજી હાથમાંથી જતી દેખાય એટલે બને તેટલું જલ્દી પતાવી દેવાની અધીરાઈ પેદા થઈ જાય છે એને સમજાઈ ચુક્યું છે કે હવે મારે પરણી જવું જોઈએ અને લાયક મુરતીયો પસંદ કરી લેવો જોઈએ પણ લાયક મુરતીયા લાવવા ક્યાંથી ? તેની ઉમરના લાયક છોકરા ક્યારનાય પરણીને ઠરીઠામ થઈ ગયા. જ્યારે લાયક મુરતીયા તેણીના દ્વાર ખખડાવતા ત્યારે વારંવાર ઊંહ " કરનારી સોસાયટી ગર્લ પોતે મુરતીયાને આંગણે ઊભી રહે છે. અથવા જીવનભર ન પરણવાનો નિર્ણય કરે છે. સમયાંતરે એ નિર્ણયમાં પરિવર્તન આવ્યા કરે છે. વારંવાર સમાચારપત્રોમાં જા. ખ. આપવા લાગે છે. હવે અભિષેકના વાળ અને ઓળવાની ઢબ ગમે છે. સુરેશના સિદ્ધાંતો સાંભળતા તે સોક્રેટિસ લાગવા માંડે છે. નિશીથના દેખાવ કરતાં તેના ગુણને મહત્ત્વ આપ્યું હોત તો સારું થાત એમ થાય છે. હવે રાજનનો કપડા પહેરવાનો ઢંગ તેને

વૈજ્ઞાનિક ધુની અને કાર્યરત યુવાન જાહેર કરતો લાગ્યો. લોભીયો સમીર વ્યવહારું અને અર્થશાસ્ત્રમાં નિષ્ણાત લાગે છે. કલાદૃષ્ટિ વગરનો તેજસ ઉદ્યમી સાહસી અને આત્મવિશ્વાસ ધરાવતો યુવાન લાગે છે તેનો લજ્જા ગુણ તેને સદાચારી જાહેર કરતો જણાય છે. પણ હવે ગુણાનુરાગી દૃષ્ટિ કેળવવાનો શો અર્થ ?

એ યુવાનોએ તો પોતાની ઘરગૃહસ્થી ક્યારનીય સંભાળી લીધી છે. હવે બધાય યુવાનો તેને પસંદ પડવા માંડ્યા છે. પણ યુવાનને તે પસંદ પડતી નથી. કેમ કે કન્યાકાળ ક્યારનોય વહી ગયો છે અને પ્રૌઢાવસ્થાના એંધાણ વર્તાવા માંડ્યા છે. આખરે સોસાયટી ગર્લ ન ગમતો હોવા છતાં સામાન્યમાં સામાન્ય યુવકને પરણી બેસે છે. એવી સંસારયાત્રામાં તેનું અંતર રોજ વલોવાતું હોય છે. પણ થાય શું ? હાથના કર્યા હૈયે વાગ્યા ! શિક્ષણ અને કારકિર્દીની લ્હાયમાં (મોડા લગ્ન કરતી) ચૈતાલી જેવી અનેક કન્યાઓનું જીવન સળગી ચૂક્યું છે.

શ્રેષ્ઠ સંતતિની પ્રાપ્તિ માટે યૌવન કાળ વીત્યા પહેલા સંતાનોત્પાદન થઈ જવું જોઈએ *એ માટે ઋતુ ધર્મમાં આવતા પહેલાં વિવાહ કરાવી સવેળા આણું કરાવવું જોઈએ અને તેમ કરવાથી જ એકપતિત્વ અને પતિદૈવત્વના સંસ્કાર કન્યાના ચિત્તમાં પડે છે.* પરંતુ અવ્યવહારું શિક્ષણના વધેલા વ્યાપના કારણે જ આજે સમાજમાં શિક્ષિતવર્ગને પતિદૈવત્વની, એક પતિત્વની અને સ્ત્રી ઉપયોગી સાચી કેળવણીની જરૂર જણાતી હોવા છતાં તેને અનુસરી શકે તેમ નથી; જેનું દુષ્પરિણામ સ્ત્રીઓ બાળકો પરિવાર અને સમાજ ભોગવી રહ્યો છે. દરેક પરિવારે સ્ત્રી કેળવણી અંગે સાચી દિશામાં પગ ઉપાડવો પડશે કેમ કે અનિર્ણય (નિર્ણય ન લેવો) પણ એક નિર્ણય હોય છે.

- પ્રેમ સુબોધ

રાષ્ટ્રકી આત્મા આજ મૂર્ચ્છિત હૈ

(લેખકઃ શ્રીરામનાથજી "સુમન")

મૈં બચ્ચોંકો "રાષ્ટ્રકી આત્મા"કહતા હુઁ, ક્યોંકિ યહી હૈ જિનકો લેકર રાષ્ટ્ર પલ્લવિત હો સકતા હૈ, અતીત સોયા હુઆ હૈ, વર્તમાન કરવટેં લે રહા હૈ ઔર ભવિષ્ય કે અદૃશ્ય બીજ બોતે જા રહે હૈ। બાલક રાષ્ટ્ર કે અતીત, વર્તમાન ઔર ભવિષ્ય તીનોં કા હાર હૈ ઔર વહિ બાલક આજ મૂર્ચ્છિત હૈ, અચેત હૈ। ન ઉસે પતા હૈ, ન ઉસકે અભિભાવક જાનતે હૈ ઔર ન રાષ્ટ્ર કે નેતાઓ કો જ્ઞાન હૈ કિ ઉસે કહાઁ જાના હૈ, ક્યા કરના હૈ, કૈસે ઔર ક્યા ઢલના હૈ। ઈસીલિએ હલચલોં ઔર આન્દોલનોં કે ઈસ તુફાન મેં ભી, જહાઁ વાણી આજ સબસે સસ્તી હો ગયી હૈ, કુછ હો નહીં પાતા હૈ। રાષ્ટ્ર ઔર આગે બઢ઼ નહીં પા રહા હૈ - ક્યોંકિ રાષ્ટ્ર કી આત્મા સો ગઈ હૈ, મૂર્ચ્છિત હૈ।

દેશ સ્વતંત્ર હો ગયા। હમેં ઈસકા અભિમાન ભી હૈ, હજારોં વર્ષોંબાદ હમને સ્વતંત્રતાસે સિર ઉઠાકર અપના ચેહરા દેખા, પર અપના ચેહરા દેખકર ગ્લાનિ હોતી હૈ ઔર હૃદય એક અનનુભૂત વ્યથા સે ભર જાતા હૈ। ક્યા ઈસ રૂપ કી ઉપલબ્ધિ કે લિએ ગાઁધીજી ને હમારી સત્પ્રવૃત્તિયોં કા યુદ્ધ મેં આવાહ્ન કિયા થા ? ક્યા હૈ આજ હમારે ચારોં ઔર જિસ મેં હમ અનુભવ કરેં કિ હમ ભારતીય હૈ - હમારે જીવન મેં હમારે રાષ્ટ્ર કે જીવન મેં વિશ્વ કે લિએ એક સંદેશ હૈ। વિશ્વ કી વિકાસ કિયા મેં હમારા એક નિયુક્ત કાર્ય હૈ। અંગ્રેજ ચલે ગયે, પર અંગ્રેજી ન ગયી, "અંગ્રેજિયત" ઔર ભી ન ગયી। હમારે બચ્ચે હમારે સામને "વિદેશી" હોતે જા રહે હૈં। ઉનકે ચારોં ઓર કા વાતાવરણ વિદેશી હૈ, વિજાતીય હૈ, ઉનકા શિક્ષણ વિજાતીય હૈ। ઉનકો શાસન ને વિજાતીયતા કી ઓર પ્રેરિત કિયા હૈ। જો અંગ્રેજોં કે જમાને મેં હોતા થા, વહી આજ હૈ। વહી શિક્ષણ, વહી જીવનશૈલી, વહી વાતાવરણ। તબ કૈસે યે બચ્ચે રાષ્ટ્ર કે ભવિષ્ય કા નિર્માણ કરેંગે ?

યોજનાઓં કી બાત બહુત સુનને મેં આતી હૈ। પંચવર્ષીય, સપ્તવર્ષીય,

યોજનાએઁ બન રહી હૈ, પર ઈન્હેં બનાનેવાલે વહી હૈ જિન પર પશ્ચિમીય સભ્યતા સે પ્રેરિત અર્થવિજ્ઞાન કા પ્રભાવ હૈ, જિનકા શિક્ષણ ઔર જીવન કેમ્બ્રિજ ઔર આક્સફોર્ડ કે સાઁચે મેં ઢલા હૈ। જિનકે સામને કોઈ સ્પષ્ટ ચિત્ર નહીં કિ વે અપને બચ્ચોં કો ક્યા બનાના ચાહતે હૈ ? યહ તો સભી કહતે હૈં કિ વર્તમાન શિક્ષા - પદ્ધતિ દૂષિત હૈ, પર યત્ન ઉસકે વિસ્તાર કા હો રહા હૈ। યહાઁ - વહાઁ બૈવન્દ લગાને યા મુલમ્મા કર દેને કા કભી - કભી યત્ન કિયા જાતા હૈ, પર વહ સફલ નહીં હોતા - હો ભી નહીં સકતા।

સબસે પહલી આવશ્યકતા ઈસ બાત કી હૈ કિ હમ સમઝે કિ ભારત ક્યા હૈ, ભારતીય સભ્યતા ક્યા હૈ, ભારતીય સંસ્કૃતિ ક્યા હૈ ઔર કૌન સી આન્તરિક શક્તિ ઔર પ્રેરણા થી, જિસસે શતાબ્દિયોં કે સંઘર્ષ યુક્ત લંબે વ્યવધાનકો પારકર ભારતીય સંસ્કૃતિ બચી રહી। તબ યહ સોચેં કિ વર્તમાન વિશ્વ મેં ઉસે આગે બઢ઼ાને કે લિએ કિન નૂતન સંસ્કારોં કી આવશ્યકતા હૈ ઔર હમ ઉસકી મૂલ પ્રેરણાઓં કો બદલતે હુએ એવં તેજી સે બદલતે હુએ વિશ્વ મેં કૈસે સુરક્ષિત ઔર પલ્લવિત રખ સકતે હૈ। ઉસી ભૂમિકા પર બચ્ચોં કા, નયી પીઢ઼ી કા જીવન ગઢ઼ના હોગા। સ્વતન્ત્રતા એવં ક્રાન્તિ હમેં નવીન જીવન દૃષ્ટિ દેતી હૈ, પર આજ હમારી જીવન દૃષ્ટિ વહી બની હુઈ હૈ જો બ્રિટિશ શાસન મેંથી। ઈસીલિએ ભૂલ સે, સાક્ષરતા કો વિદ્યા કા, શિક્ષા કા પર્યાય માન લિયા ગયા હૈ। વસ્તુતઃ *વિદ્યા વહ હૈ જો પ્રેય સે શ્રેય કી ઓર લે જાતી હૈ* ઔર શિક્ષા ઈસી શક્તિ કે અર્જન કી સાધના હૈ।

પાશ્ચાત્ય સભ્યતા ને હમ પર સંખ્યા બલ કા જાદૂ ચલા રખા હૈ। ઉન્નતિ કા અર્થ આઁકડોં કી ભાષા મેં હી હમ સમઝતે હૈ। "ફૈક્ટરી મૅંટિલિટી" હર જગહ વ્યાપ્ત હો ગઈ હૈ। કપડે કી મિલોં કી તરહ શિક્ષા કી ભી ફૈક્ટરિયાઁ ખુલ ગઈ હૈ ઔર ખુલ રહી હૈં। ઔર ઉનકી સફલતા એવં મહત્તા દિન - દિન વૃદ્ધિમાન્ આઁકડોં સે કૂતી જાતી હૈ। કિતના કપડ઼ા યા લોહા ઈસ વર્ષ બના, ઈસી પર કિતને સ્નાતક ઈસ વર્ષ કિસ યુનિવર્સિટી સે નિકલે, ઈસી પર શિક્ષણ - સફલતા કા અંકગણિત ચલતા હૈ। ગુણપ્રધાન (ક્વાલિટિ) દૃષ્ટિ કી જગહ

સંખ્યાપ્રધાન (ક્વૉંટિટિ) દૃષ્ટિ કી સ્થાપના ને ભારતીય સંસ્કૃતિ કી મૂલ પ્રેરણાઓં પર સબસે અધિક આઘાત કિયા હૈ ।

યુનિવર્સિટિયાઁ જ્ઞાન કે સાધનાસ્થલ નહીં, વિક્રયસ્થલ બન ગઈ હૈ । બચ્ચોં કો દેખિયે -ઉચ્છૃંખલ, અનિયંત્રિત, જીવન કી બાહ્ય સુવિધાઓં એવં ભોગોં કે પ્રતિ આસક્ત, *સિનેમા હી જિનકા તીર્થ હૈ* ઔર સિનેમા સ્ટાર જિનકે આદર્શ હૈ, અનુશાસનવિહિન, આત્મ - નિયંત્રણ સે સ્ખલિત, જીવન સે ગેંદ કી ભાઁતિ ખિલવાડ કરનેવાલે - યે ક્યા રાષ્ટ્ર કા ભવિષ્ય બનાયેંગે ?

પર ઉનકા દોષ ક્યા હૈ ? હમને ઉન્હેં એસે શિક્ષક દિયે, એસા વાતાવરણ દિયા. જ્ઞાન કી સાધના હી જિનકે લિએ સબ કુછ હૈ એસે આચાર્યો કી જગહ વિદ્યાદાન કો એક પેશા ઔર "કેરિયર" માનકર ચલનેવાલે શિક્ષકોં સે હમારી યુનિવર્સિટીયાઁ ભરી હુઈ હૈ । બ્રહ્મબલ, તેજ, તપ એવં જ્ઞાનાર્જન કા સ્થાન ધન કી વિતૃષ્ણતાને લે લિયા હૈ। જૈસે દુકાનોં મેં વસ્તુઓં કી વિક્રી હોતી હૈ, વૈસે હી ઇનકે યહાઁ વિદ્યા બિકતી હૈ । વિદ્યા એવં જ્ઞાન કા માપદણ્ડ ચરિત્ર એવં જીવન નહીં, કાગજોં પર છપે ઉપાધિપત્ર હૈ, કોઈ યુગ એસા ભી થા જબ સ્નાતક કેવલ યહ કહકર અપના પરિચય દેતા થા કિ મૈં અમુક કા શિષ્ય હૂઁ. અમુક કા શિષ્ય હોના હી સબસે બડા પ્રમાણ પત્ર થા, ક્યોંકિ વિદ્યા પુસ્તકોં કે માધ્યમ સે નહીં, આચાર્ય કે જીવન કે માધ્યમ સે પ્રાપ્ત હોતી થી । એક જીવન કે સંપૂર્ણ સંસ્કાર દૂસરે જીવન કો પ્રાપ્ત હોતે થે । ગુરુ યા આચાર્ય અપના જીવન હી શિષ્ય કો દેતા થા । વિદ્યા જીવન મેં ઉતર આતી થી, જીવન મેં, ઉસકે આચરણ મેં બોલતી થી ।

જિજ્ઞાસા માનવ કી પહેલી વૃત્તિ હૈ, શિશુ મેં જિજ્ઞાસા પહલે હોતી હૈ, વાણી બાદ મેં ફૂટતી હૈ । ઈસી જિજ્ઞાસા કે કારણ ઉસકા માનસિક વિકાસ હોતા હૈ, યહ જિજ્ઞાસા પરિસ્થિતિ એવં સંસ્કાર કે અનુરૂપ હોતી હૈ । જ્યોં - જ્યોં બચ્ચે કી દુનિયા બઢતી જાતી હૈ ઔર ઉસકે સંસ્કાર બનતે હૈં ત્યોં - ત્યોં જિજ્ઞાસા કા ક્ષેત્ર ભી વિસ્તૃત હોતા જાતા હૈ ।

જિજ્ઞાસા કે મૂલ મેં તીન તત્ત્વ હોતે હૈ -૧. યહ ક્યા હૈ, ૨. ક્યોં હૈ ? ઔર ૩. કૈસે હૈ ? જિજ્ઞાસા જ્ઞાન કા બીજ હૈ। ઈસ જિજ્ઞાસા - વૃત્તિ કો વિકસિત કરને ઔર ઉસમેં અચ્છે સંસ્કાર ડાલને મેં હી શિક્ષા કા ઉપયોગ હૈ। ઈસલિએ જો શિક્ષા માનવ મેં સદ્‌વૃત્તિયોં કો જાગરિત નહીં કરતી, જો ઉસે પ્રેય સે શ્રેય કી ઓર નહીં લે જાતી, જો ઉસકે હૃદય મેં પ્રવિષ્ટ હોકર એક શ્રેષ્ઠ જીવન - સ્વપ્ન સે ભર નહીં દેતી, યહ શિક્ષા નહીં હૈ, કેવલ સાક્ષરતા હૈ ઔર આજ એસે સાક્ષર મૂઢોં કી બઢતી હુઈ સંખ્યા હી જગત કી અનેક સમસ્યાઓં કા કારણ હૈ।

ઈસલિએ શિક્ષા કી પહલી સમસ્યા હૈ - ભારતીય સંસ્કૃતિ કે મૂલાધાર કો સમઝકર ઉસકે અનુરૂપ નવીન જીવન - નિર્માણ કી એક વ્યાપક યોજના બનાને કી। દૂસરી સમસ્યા હૈ, આચારવાન, બ્રહ્મનિષ્ઠ, આત્મનિષ્ઠ, પૈસા નહીં, બલ્કિ જ્ઞાન કી સિદ્ધિ હી જિનકે જીવન કા લક્ષ્ય હૈ, એસે શિક્ષકોં કો પ્રાપ્ત યા તૈયાર કરને કી। તભી હમારે વિદ્યામન્દિર શક્તિ એવં પ્રકાશ કે પ્રતીક બન સકતે હૈં।

પરંતુ ઈતના હી બસ નહીં। યહ માન લેના કિ શિક્ષાર્થી પાઠશાલા મેં હી સિખતા હૈ, એક બડી ભૂલ હૈ। વહ કુટુમ્બ મેં, માર્ગ મેં ચલતે હુએ અપને સાથિયોં કે સંપર્ક મેં, સર્વત્ર કુછ ન કુછ સિખતા રહતા હૈ। યહ અપને પ્રતિ માતા - પિતા, કુટુમ્બિયોં, મિત્રો, સાથિયોં ઔર પરિચિતોં, અપરિચિતોં કે વ્યવહાર સે ભી બહુત કુછ સીખતા હૈ। ઈસલિએ આવશ્યકતા હૈ કિ સમાજ કા વાતાવરણ આજ કી ભાંતિ દુષિત ન હો। ઉસકા પરિષ્કાર કિયા જાય। અર્થપ્રધાન જીવનદૃષ્ટિ કી જગહ ધર્મપ્રધાન યા કર્તવ્યપ્રધાન જીવનદૃષ્ટિ કી સ્થાપના ઈસકે લિએ અત્યન્ત આવશ્યક હૈ। ઉપર્યુક્ત એવં પવિત્ર વાતાવરણ કે નિર્માણ કે લિએ આજકલ કે ચલચિત્રોં કો સર્વથા બંદ કર દેના ચાહિએ। યહ ન હો સકે તો ઉસ પર કડ઼ી દેખ - રેખ કી આવશ્યકતા હૈ। અશ્લીલ ચિત્રોં કા નિર્માણ તો સર્વથા એકદમ રોક દિયા જાના હી ચાહિએ।

ઈસ તરહ કી અનેક બાતેં સામને રખી જા સકતી હૈ, પરંતુ મૂલ બાત યહી હૈ કિ જબતક હમારે શિક્ષણ કા પૂરા ઢાંચા નહીં બદલતા ઔર હમારી જીવનદૃષ્ટિ ભારતીય સંસ્કૃતિ કે અનુરૂપ નહીં બનતી, જબતક હમ શ્રેયસ્કરી જીવનદૃષ્ટિ કો નહીં અપનાતે ઔર જબતક હમારી શિક્ષણ - શાલાએ સાક્ષરતા એવં પુસ્તકીય જ્ઞાન કે બિક્રી કેન્દ્ર નહીં બલ્કિ જીવન કે મર્મ મેં પ્રવેશ કરનેવાલે સ્વપ્નોં એવં આદર્શો, ચરિત્ર એવં જ્ઞાન કે સાધના કેન્દ્ર તપસ્યા ભૂમિ નહીં બનતે, તબ તક સબ નિરર્થક હૈ - તબ તક રાષ્ટ્ર કી આત્મા સોતી રહેગી, તબ તક લાખ સ્થૂલ યોજનાએઁ હમારે જીવન કે ક્ષિતિજ કો પ્રકાશપૂર્ણ નહીં કર સકતી ।

- પ્રેમ સુબોધ

ગુલામી કી માનસિકતાકો ઉખાડ ફેંકે

સન્ ૧૯૫૩ મેં સંસદીય સમિતિ કે સમ્મુખ ભારત મેં પ્રયોગ કીયે જાને વાલે શિક્ષા કે તૌર તરીકો કે સંદર્ભ મેં રાજનૈતિક સોચકો ચાર્લ્સ ટ્રેવેલિયન ને ભી કુછ ઈસ રૂપમેં પ્રસ્તુત કરતે હુએ કહા થા કિ અંગ્રેજી શિક્ષા કે પ્રભાવ સે ભારતીય યુવક હમેં વિદેશી સમજના છોડ દેગેં ઔર ધીરે - ધીરે ઉનકી હિન્દુસ્તાનિયત કમ હોતી જાયેગી, સમાનાંતર અંગ્રેજીયત બઢતી જાયેગી । ફલ સ્વરૂપ હમેં ઈસ દેશ સે નિકાલને કા કોઈ પ્રયાસ નહી કરેંગે । થામસ બૈબિંગટન મેકોલ્ન કી ઈસ માનસિકતા કા નતીજા હૈ કિ અંગ્રેજી બોલને પર ગર્વ કી અનુભૂતિ કરેંગે । અપની પુરાની સચ્ચી સંસ્કૃતિ, આધ્યાત્મિકતા ઔર ગુરુ શિષ્યભાવ કી આશ્રમી વ્યવસ્થા કો છોડકર અંગ્રેજીયત કે નાલે મેં કુદ જાના કિસ બુદ્ધિમત્તા કા પરિચાયક હો શકતા હૈ?

ઈતના હી નહીં આઝાદી કે બાદ અપને દેશ કા નામ તક બદલ ડાલા ઔર દેશ કે સંવિધાન મેં "ઈણ્ડિયા" કા ઉલ્લેખ અંગ્રેજોને હમારે લોગોં સે બડી સાવધાની પૂર્વક કરવા લિયા । ઈસકે પીછે ભી એક ધારણા કામ કર રહી

થી કિ ભરત રાજા કે નામ સે રખા નામ "ભારત" કો ભૂલ જાઓ ઔર ઇણ્ડિયા યાદ રખો। અંગ્રેજોં કી ગુલામી (વેશભૂષા, શિક્ષણ, વર્તન) યાદ રખો, ક્યોંકિ ભારત કો યાદ કરને પર ભરત યાદ આયેગા, શકુન્તલા ઔર દુષ્યન્ત યાદ આયેંગે. ભારતકો યાદ રખને પર હસ્તિનાપુર, અધર્મ કે વિરુદ્ધ ધર્મયુદ્ધ કરનેવાલે દીર્ઘદર્શી મહાબલી પૂર્વજ યાદ રહેંગે। અંગ્રેજી સોચ એવં અંગ્રેજી શિક્ષા પદ્ધતિ કે કારણ આજ વો સંબંધ તૂટતા જા રહા હૈ। રક્ષાબંધન કી જગહ ફ્રેન્ડશીપ ડે મહત્ત્વપૂર્ણ બનતા જા રહા હૈ। કેક કાટકે મોમબત્તી બુઝાને પર આધુનિકતા કી અનુભૂતિ કરને લગે હૈં। કૈસા દુર્ભાગ્ય હૈ, હમને પહલી અપ્રિલ કો દેશ કી અર્થવ્યવસ્થા સંચાલિત કરનેવાલા વર્ષ કા પ્રથમ દિન સ્વીકાર કર લિયા। લેકિન અંગ્રેજીયત મેં પલે લોગોંને હમે પઢા દિયા કિ પહલી અપ્રિલ મૂર્ખો કા દિન હૈ ફિર ભી હમ મૂર્ખ બનતે ગયે। ઈતને મૂર્ખ બને કિ અંગ્રેજોંને બતાયા કિ રાતકે ૧૨ બજે દિન બદલતા હૈ। યહ સારી બાતે અંગ્રેજીયત કે દુષ્પ્રભાવ મેંબહતે ચલે ગયે લોગોં કી હૈ, જબકિ હિન્દુસ્તાન કે અધિકતમ ગાઁવ અબ ભી બચે હુએ હૈં। વહી એક અંગ્રેજી પાની કે તેજ બહાવ કો સૂખા કરને વાલા મધ્યાહ્ન તેજોરવિ હૈ।

સભી ભારતપ્રેમીઓં સે યહ નિવેદન હૈ કિ આજ સે અપને જીવન મેં યહ બાતેં અપનાને કા પ્રણ લે।

૧. ભારત કે લિએ ઇણ્ડિયા શબ્દ કા પ્રયોગ ન કરેં। ૨. અપને ભારતીય ત્યૌહાર જો ભારતીય તરીકોં સે હી ઉત્સવ કે રૂપ મેં મનાયા જાય. ૩. ભારત કે ભવ્ય ઇતિહાસ પર ગર્વ કી અનુભૂતિ કરે. ૪. કિસી કો પ્રભાવિત કરને કે લિએ અંગ્રેજી શબ્દોં યા વાક્યોં કા ઇસ્તેમાલ ન કરે અપિતુ સંસ્કૃત શબ્દ - વાક્યોં કો બોલને પર ગર્વ કી અનુભૂતિ કરેં.

- પ્રેમ સુબોધ

સ્ત્રી અને સદાચારની સુરક્ષા કાજે સાબદા બનીએ

-નિમિષ કાપડિયા

સ્ત્રી સલામતી સામે જોખમ

સુરત ગેંગરેપ, પાટણ ગેંગરેપ, રાજકોટ ગેંગરેપ વગેરે ઘટનાઓ જોતા એમ લાગ્યા વિના નહિ જ રહે કે, સાંપ્રત સમયનો આ સળગતો પ્રશ્ન છે. આજે જ્યાં જુઓ ત્યાં સ્ત્રીઓ, મહિલાઓ, બાળકીઓના શોષણ અને સામાજીક અસલામતીની વાતો ચાલી રહી છે. આ સમસ્યાનો કંઈક ઉકેલ લાવવો અનિવાર્ય છે. આજથી દસ વર્ષ પહેલાં આપણે આપણી દિકરીઓને ઘરની બહાર મોકલતાં કોઈ ડર અનુભવતા ન હતા. તેમને શાળાએ, ટ્યુશન પર તેમજ ઘરના નાના મોટા કામો માટે હિંમતથી એકલા મોકલી શકતા, આજે એ પરિસ્થિતિ છે કે તેમને થોડા સમય માટે પણ આપણી આંખથી ઓઝલ થવા દેતા ડર અને શંકા અનુભવીએ છીએ. આવું શી રીતે થયું? સમાજમાં એવું તો શું થયું છે કે, જેથી આપણે આજે આવી અસલામતી અનુભવીએ છીએ.

અસામાજિક તત્ત્વો તો સમાજમાં સદાકાળથી ઓછાવત્તા પ્રમાણમાં ચાલ્યા જ આવે છે, પરંતુ આ અસામાજિક તત્ત્વોનું આજે વર્ચસ્વ વધ્યું છે. આપણી કેટલીક કહેવાતી મોર્ડન લાઈફ સ્ટાઈલથી જ તેને પીઠબળ મળે છે. માટે આવી પરિસ્થિતિ સરજાઈ જવા પામી છે.

૧. આજથી દસ કે પંદર વર્ષ પહેલાની જ વાત લઈએ, તો ત્યારે પણ સ્ત્રીઓ સ્વતંત્ર, મોર્ડન વિચારસરણી ધરાવતી તેમજ સમાજના દરેક ક્ષેત્રમાં આગળ આવતી હતી. પરંતુ તેને તેની મર્યાદાનું ઠીકઠીક ભાન હતું. સૌ પ્રથમ નજરે ચડે છે *આજનો પહેરવેશ !* આજે આપણી દીકરીઓ પાશ્ચાત્ય પોશાકનું આંધળું અનુકરણ કરીને પોતાની જાતે જ પોતાની અસલામતી વહોરી રહી છે અને તેમાં તેમના માતા - પિતા જાણે કે અજાણ્યે પૂરેપૂરો સાથ

આપી રહ્યા છે. આજે ટ્યુશન કે બહાર ફરવા જતી ૧૫ થી ૨૦ વર્ષની કન્યાઓનો જો સર્વે કરવામાં આવે, તો તેમાં ભારતીય પોશાકવાળી કન્યાઓની સંખ્યા કદાચ ૧ થી ૨ % હશે, અને વધુ દુઃખદ બાબત તો એ છે કે, તેવી કન્યાઓને સંકુચિત માનસવાળી ગણીને હાંસીપાત્ર ઠરાવાય છે. તેમના માતા -પિતા ને જૂના જમાનાના ગણવામાં આવે છે. પાશ્ચાત્ય પોશાક પણ જો અમુક મર્યાદા જળવાતી હોય, તો હજી ક્ષંતવ્ય ગણાય. આજકાલ તો મિની સ્કર્ટ, માઈક્રો મિની સ્કર્ટ, સ્લીવલેસ ટોપ, બેકલેસ ટોપ, લો વેસ્ટ જિન્સ, હાઈ લો વેસ્ટ જિન્સ, સ્કીન ટાઈટ આઉટ ફીટ, લો નેક ડ્રેસીસનો જમાનો છે. આટલું યે હજી ઓછું હોય, તેમ આંતરવસ્ત્રો પણ સારી રીતે દેખાય એવા હોય છે. આવો પહેરવેશ જોઈને કોઈપણ વિજાતીય વ્યક્તિ નું મન ચલિત થાય જ. તેમજ રોડ સાઈડ રોમિયો તો આ પરિસ્થિતિનો ગેર લાભ ઉઠાવ્યા વિના ન જ રહે. તદ્દન સહજ ગણાય એવી આ વાત આજકાલના કહેવાતા મોર્ડન માતા - પિતાના અને શિક્ષકોના ધ્યાનમાં કેમ નથી આવતી, એ જ સમજાતું નથી. પોશાક તો આપણી આબરૂ અને વ્યક્તિત્વને સાચવવા માટે સહાયક સાધન તરીકે ઢાલ બને તેવો હોવો જોઈએ, નહીં કે આપણા શરીરની હરાજી કરીને સદાચારની હત્યા કરવા માટેનું હથિયાર બને એવો !

૨. આજકાલના યુવાનો - યુવતીઓમાં વિશેષતઃ ટીન એજર્સમાં સૌથી આકર્ષક વસ્તુ ગણાય છે : સેલફોન - મોબાઈલ ફોન ! જે તેમની અધોગતિનું કારણ બની રહ્યું છે. આજકાલ આઠમા - નવમા ધોરણમાં ભણતા વિદ્યાર્થીઓ પોતાની પાસે મોબાઈલ રાખતા થઈ ગયા છે. આ મોબાઈલનો ઉપયોગ મિત્રો સાથે વાતોના ગપાટા મારવામાં અને બીજો અતિ મહત્વનો ઉપયોગ S.M.S. કરવા અને મેળવવામાં થાય છે. વળી આજકાલના લેટેસ્ટ મોબાઈલમાં તો બ્લ્યુટૂથ, ઈન્ફારેડ વગેરે સગવડોને કારણે મલ્ટી મિડિયા મેસેજ ડાઉનલોડ કરવાનો ક્રેજ છે. વળી, ચિત્ર - વિચિત્ર બિભત્સ વાર્તાલાપો તેમજ ફિલ્મી વલ્ગર ગીતો ડાઉનલોડ થાય છે. જેને કારણે આજની યુવા પેઢીનું માનસ વિકૃત બની ગયું છે. ગણવો હોય તો મોબાઈલનો એકજ ફાયદો હજી ગણાવી શકે કે, તમે કોઈ પણ

સમયે કોઈ મુશ્કેલીમાં હો તો તમારી પરિચિત વ્યક્તિનો તમે સંપર્ક કરી શકો. પરંતુ આ સાધનનો લાભ ઉઠાવવાને બદલે તેનો ગેરલાભ વધુ ઉઠાવાય છે.

૩. આજકાલ મિડિયા એટલે કે સમાચાર પત્રો, મેગેઝીન તેમજ ટી. વી. ચેનલોએ પણ વિકૃત પરિસ્થિતિનું નિર્માણ કરવામાં એટલોજ ભાગ ભજવ્યો છે. દરરોજ સવારમાં આવતા વર્તમાન પત્રોમાં સમાચારો ઓછા અને બિભત્સ જાહેરાતો તેમજ ફોટાઓ વધુ હોય છે. જાણે આવા Erot સમાચારો વાંચવા માટેજ આપણે છાપું મંગાવતા હોઈએ એવું લાગે છે. પહેલા બાળકોને વર્તમાન પત્રો વાંચવાની ટેવ પાડવામાં આવતી, હવે તેમને છાપું ન વાંચવા માટે કહેવું પડે એમ છે. તેમાંય ચલચિત્રોવાળી પૂર્તિ તેમજ બીજી સ્પેશ્યલ પૂર્તિઓમાં તો સ્ફોટક સુરંગ જેવી આવી સામગ્રી પૂરી પાડવામાં આવે છે. યુવાનો તેમજ સારા ગણાતા પુરુષો પણ આ બધું જોઈ - વાંચીને ઉત્તેજિત ન થાય તો જ નવાઈ ! તેમજ સારા યુવાનો પણ આ જોઈ વાંચીને અવળે રસ્તે ચડી જાય છે. ટી. વી. ચેનલોએ તો જાણે માઝા જ મૂકી છે. તેના ઉપર તો કોઈ રોક-ટોક જ નથી. જાહેરાતોથી માંડીને સિરિયલોમાં વલ્ગારીટી અને અભદ્ર વર્તન તેમજ વાણીનો આ માધ્યમો બેફામ ઉપયોગ કરે છે અને આપણી યુવા પેઢી તેમજ વડીલો, પુખ્તવયના સ્ત્રી - પુરુષો ખૂબ રસપૂર્વક આ લીલા નિહાળે છે. આખોય પરિવાર સાથે બેસીને આ નગ્ન તસ્વીરો તેમજ વલ્ગર વાર્તાલાપો જોતો અને સાંભળતો હોય છે. આવા મર્યાદા વગરના વર્તન અને વાતાવરણને કારણે બાળકોને તેમજ યુવાનોને વડીલો પ્રત્યે આદર, વિવેક કે મર્યાદાનું ભાન રહેતું નથી. ખરેખર તો આપણા સમાજે આ ટી.વી. ચેનલોનો સામૂહિક બાયકોટ કરવો જોઈએ. જેથી સ્વસ્થ અને ભદ્ર સમાજનું નિર્માણ થાય.

૪. કહેવાતા શિક્ષિત સમાજમાં આજકાલ શિક્ષણની બોલબાલા છે. આપણે આપણા બાળકોને ઉચ્ચ શિક્ષણ આપવા માટે ગમે તે હદે જઈ શકીએ છીએ. ટ્યુશન ક્લાશ સવારે સાડા પાંચે શરૂ ત્યારેજ થઈ શકે, જ્યારે તે ક્લાશમાં ભણવા આવનાર વિદ્યાર્થી તૈયાર હોય અને તેના મા - બાપ પણ આ માટે તૈયાર હોય. હરિફાઈમાં ટકી રહેવા અને ઉચ્ચ ટકાવારી મેળવવા માટે

માતા - પિતા બાળકો પર અત્યંત જુલમ ગુજારતા હોય છે. વળી, ઉચ્ચ ભણતર માટે વિદેશ મોકલવાનો પણ મોહ છે. જ્યાં બાળકોનું શારિરીક, માનસિક શોષણ થાય છે. પૈસા કમાવાની હોડમાં આપણે આપણું યુવાધન વેડફી રહ્યા છીએ. આપણી દીકરી ઉચ્ચ અભ્યાસ કરીને સર્વોચ્ચ સ્થાને પહોંચે, તેને માટે તેને જીવનના કયા મૂલ્યોનો ભોગ આપવો પડ્યો, તેનું ધ્યાન આપણે વાલીઓએ જ રાખવું જોઈએ.

મારી દ્રષ્ટિએ આજની દિકરીઓ મહિલાઓ કરતાં પહેલાના જમાનાની સ્ત્રીઓનો માન મરતબો સમાજમાં વધુ હતો. આજે આટલું ઉચ્ચ શિક્ષણ મેળવ્યા બાદ પણ સ્ત્રીઓનું સામાજિક સ્થાન તો નીચું ગયું છે. પહેલા તો કોઈ એકની દીકરી કે ભાણી આખાય મહોલ્લાની, ગામની પણ દીકરી - ભાણી ગણાતી. તેની લાજ - મર્યાદાની જવાબદારી આખાય ગામની હતી, તેથી તેની સામે કોઈ આંખ ઊંચી કરીને જોઈ શકતો નહીં. જ્યારે આજે તો પડોશની દીકરીની લાજ - મર્યાદાનું પણ ભાન રહેતું નથી. આમ, જેમ ગામડાઓનું શહેરીકરણ થયું, તેમ - તેમ માણસોના મન, મગજનું પણ શહેરીકરણ થયું અને ગામડા તૂટવાની સાથે - સાથે લોકોના દિલ - દિમાગ પણ તૂટતા ગયા.

આજે સમય પાકી ગયો છે, જ્યારે બાળકો ખાસ કરીને તરુણીઓને ઉચ્ચ શિક્ષણ આપવાનો મોહ મારી ન શકીએ, તો સાથે સાથે તેમને સદાચારનિષ્ઠ બનાવવા ઉપરાંત સ્વરક્ષણ માટેનું શિક્ષણ ફરજીયાત આપવું. ખરેખર તો બધી શાળાઓમાં આવા સ્વરક્ષણ માટેનો અભ્યાસ રાખવો જરૂરી છે. સ્વૈચ્છિક સંસ્થાઓએ આ જવાબદારી ઉપાડી લેવી જોઈએ. ફક્ત વિરોધ પ્રદર્શિત કરવાથી કંઈ ઉપજતું નથી. સાપુતારાની ઋતંભરા વિશ્વ વિદ્યાપીઠ તેમજ એમાંથી બોધપાઠ મેળવી શકાય. - પ્રેમ સુબોધ

● *નિમિષ કાપડિયા, એડવોકેટ્સ હાઈકોર્ટ*
૫, બાણ ગાયત્રી સોસા-૨, શ્યામલ ચાર રસ્તા પાસે,
સેટેલાઈટ, ૧૩૨ ફૂટ રીંગરોડ રોડ, અમદાવાદ -૫૧
ફોન :૬૭૬૨૭૬૨, ૬૭૫૧૫૪૫

ટીનએજર દીકરીને દસ અમૂલ્ય શિખામણો

-સંજયભાઈ વોરા

વિખ્યાત લેખિકા શોભા ડે ને જ્યારે પૂછવામાં આવ્યું કે તમારાં ટીનએજર સંતાનો શું ન કરે એવું તમે ઇચ્છો છો ? ત્યારે તેણે ખૂબ અસંદિગ્ધ ભાષામાં જણાવ્યું હતું કે "તેઓ ગર્લફ્રેન્ડ અને બોયફ્રેન્ડ તરીકે રાત્રે સાથે રહે કે બાળકોના બેડરૂમમાં બેસીને સ્મોકિંગ કરે કે માબાપની હાજરીમાં દારૂ પીએ તે મને જરાય પસંદ નથી. તમે ગમે તેટલા સ્વતંત્ર હો તો પણ વડીલો પ્રત્યે વિનય તો રાખવો જ જોઈએ. દિવસના અંતે તો હું એક રૂઢિચુસ્ત મધ્યમ વર્ગની મહારાષ્ટ્રીયન સ્ત્રી છું અને રહીશ. આજે હું જે કંઈ છું તેનો યશ રૂઢિચુસ્ત વાતાવરણમાં થયેલા મારા ઉછેરને ફાળે જ જાય છે."શોભા ડે જેવી અત્યંત બોલ્ડ અને આધુનિક ગણાતી સ્ત્રી પણ જ્યારે પોતાનાં સંતાનોના ઉછેરની વાત આવે ત્યારે આટલી બધી સજાગ થઈ જતી હોય છે ત્યારે પોતાને આધુનિક ગણાવતી ઉચ્ચ મધ્યમ વર્ગની અને મધ્યમ વર્ગની મમ્મીઓએ તો ખાસ વિચારવા જેવું છે. *દિલ્હીની પબ્લિક સ્કૂલમાં ભણતી એક છોકરી પોતાના બોયફ્રેન્ડ સાથે જાતીય સંબંધો બાંધવા તૈયાર થઈ જાય અને તેની વિડિયો ફિલ્મ ઊતરે તેનો પણ વિરોધ ન કરે એ કિસ્સો આવી તમામ મમ્મીઓને ચોંકાવી દેવા માટે પૂરતો છે.* આજના સેક્સપ્રચૂર વાતાવરણમાં ઉછેર પામતા ટીનએજરો કઈ હદે જઈ શકે છે, તેનો આ એક પુરાવો છે. આ કિસ્સાને કારણે પ્રત્યેક સંવેદનશીલ મમ્મીઓ પોતાની દીકરીઓ માટે સચિંત થઈ ગઈ છે. આવી એક ચિંતાગ્રસ્ત આધુનિક મમ્મીએ પોતાની ટીનએજર દીકરીને જે દસ શિખામણો આપી છે તે દરેક મમ્મીએ આપવા જેવી છે અને દરેક કન્યાએ પાળવા જેવી છે.

૧. અજાણ્યા પુરુષોનો ક્યારેય વિશ્વાસ ન કરવો.

આજકાલના સમાજમાં સ્ત્રીઓને ફસાવનારા પુરુષોની સંખ્યા વધતી ગઈ છે. ભૂખ્યા વરુઓની જેમ તેઓ દરેક ક્ષેત્રમાં ફરતા હોય છે. તું જે સ્કુલ કે કોલેજમાં ભણતી હોય કે ઓફિસમાં કામ કરતી હોય ત્યાં પણ આવા ભૂખ્યા પુરુષો હોવાના જ. તેઓ મીઠી મીઠી વાતો કરીને પોતાની જાળમાં ફસાવવાની કોશિશ કરવાના જ. આવા પુરુષોનો કદી પણ વિશ્વાસ ન કરવો. તેમની સાથેય ક્યારેય એકાંતમાં રહેવું નહીં. તેમની સાથે ક્યારેય એકલા બહાર ફરવા જવું નહીં. તેમની પાસેથી ફ્રી ગિફ્ટ ક્યારેય સ્વીકારવી નહીં. તેમની અંગત સમસ્યામાં સહાયરૂપ બનવાની કદી કોશિશ કરવી નહીં. તારી અંગત સમસ્યામાં કદી તેમની પાસે માર્ગદર્શન માંગવું નહીં. તેમની પાસે પૈસાની મદદ તો ક્યારેય માંગવી નહીં કે સ્વીકારવી નહીં. આવા પુરુષોના અહેસાન હેઠળ ક્યારેય આવવું નહીં. તેમના જૂથમાં ભણવાની ક્યારેય કોશિશ કરવી નહીં.

૨. શરીરની પવિત્રતાનો ક્યારેય ભંગ કરવો નહીં...

તને જે સ્ત્રીનું શરીર પ્રાપ્ત થયું છે તેને કોઈ પણ પુરુષના અનિચ્છનીય સ્પર્શથી અપવિત્ર થવા દેવું નહીં. સ્ત્રીના ચારિત્ર્યની જેટલી કિંમત છે, એટલી કિંમત સ્ત્રીના શરીરની પવિત્રતાની છે. સ્ત્રી માટે શીલ એક ઘરેણું છે. સ્ત્રીની શોભા જ તેનું શીલ છે. કોઈ પણ પુરુષ, કોઈ પણ સંયોગોમાં આ શરીરનો સ્પર્શ કરે અને તેની સાથે છેડછાડ કરે એ ચલાવી લેવું જ નહીં. આવી તક કોઈ પુરુષને ક્યારેય આપવી નહીં. દેહની આ પવિત્રતા આજીવન અને કમસે કમ લગ્ન સુધી તો ટકાવી જ રાખવી જોઈએ. લગ્ન અગાઉના શારીરિક સંબંધો વ્યભિચારનું બીજું નામ છે. સ્વાર્થી અને દગાખોર પુરુષો ઘણી વાર લગ્નનું વચન આપી ભોળી કન્યાઓ સાથે શરીરસંબંધો બાંધતા હોય છે. આવા પુરુષોની જાળમાં કદી પણ ફસાવું નહીં. કોઈ પણ પુરુષને કોઈ પણ રીતે શરીરનો સ્પર્શ કરવાની તક આપવી જ નહી.

૩. મૂંઝવણમાં મા બાપ પાસે જ માર્ગદર્શન માગવું.

જીવનની ઘટમાળમાં અનેક મૂંઝવણો પેદા થવાની તે નક્કી છે. તારે આવનારી કોઈ પણ મૂંઝવણમાં માર્ગદર્શન મેળવવા માટે હંમેશા મા - બાપ ઉપર જ ભરોસો રાખવો. જીવનમાં નાનીમોટી ભૂલો દરેકની થતી જ હોય છે. નાનકડી ભૂલોમાં જો યોગ્ય માર્ગદર્શન ન મળે તો મોટી સમસ્યાઓ સર્જાતી હોય છે. આ કારણે જ નાનકડી ભૂલ થઈ જાય ત્યારે તેમાંથી બહાર નીકળવા માટે મિત્રો કે સહપાઠીઓ પાસે દોડી જવાને બદલે કોઈ પણ કટોકટીને પહોંચવા માટે સક્ષમ મા-બાપ પાસે જ માર્ગદર્શન મેળવવું જોઈએ. સેક્સ, પ્રેમ, સંબંધો, લગ્ન વગેરે બાબતોની ચર્ચા પણ બહારના લોકો સાથે કરવાને બદલે સૌથી પહેલાં માતા - પિતા સાથે જ કરવી જોઈએ. મા - બાપ હંમેશા પોતાનાં સંતાનોનું હિત ઈચ્છતાં હોવાથી તેઓ સાચી જ સલાહ આપશે. આ વાત અન્ય લોકો માટે કહી શકાય નહીં. માટે મા - બાપને જ તારા ફ્રેન્ડ, ફિલોસોફર અને ગાઈડ બનાવજે.

૪. મોબાઇલનો મર્યાદિત ઉપયોગ જ કરવો.

બેટા, અમે તને જે મોબાઈલ ફોન આપ્યો છે તેનો ઉપયોગ અમારી સાથે સંપર્કનો સેતુ જાળવી રાખવા માટે જ કરવો. મોબાઈલનો ઉપયોગ મિત્રો સાથે ગપ્પાં મારવા માટે અને ફાલતુ વાતો કરવા માટે હરગિજ કરવો નહીં. એક દીકરી તરીકે આ કાળમાં અમને તારી ચિંતા થતી હોય તે માટે જ તારી સાથે ગમે ત્યારે વાત કરી શકાય તે માટે જ અમે તને મોબાઈલ આપ્યો છે. આ મોબાઈલ ફોન દ્વારા તું ગમે તેવી મુશ્કેલીની ક્ષણે કે મૂંઝવણની ઘડીએ અમારો તાત્કાલિક સંપર્ક સાધી શકે એટલા માટે આ મોબાઈલ ફોન છે. તેનો નંબર સ્કૂલ કે કોલેજમાં સાથે ભણતા કોઈ પણ છોકરાને ક્યારેય આપવો નહીં. આ રીતે નંબર આપવાથી તેનાં અનેક અનિચ્છનીય પરિણામો આવી શકે છે. કદાચ અનિચ્છાએ આપવો પડે તો એકાદ નંબર બદલી ને આપવો ।મોબાઈલ ફોનનાં અગણિત ભયસ્થાનો છે. આ ભયસ્થાનોથી બચવું હોય તો મમ્મી પપ્પા

સિવાય કોઈની સાથે મોબાઈલ ઉપર વાત જ કરવી નહીં.

૫. છોકરાઓના પૈસાની ઝાકઝમાળમાં અંજાવું નહીં.

તું જે સ્કૂલમાં કે કોલેજમાં ભણે છે ત્યાં શ્રીમંત મા - બાપોના અનેક નબીરાઓ ભણવા માટે આવતા હશે અને બાપકમાઈનું પ્રદર્શન કરતા હશે. તેમની પાસે નવીનક્કોર મોટરકાર હશે. કેમેરાવાળો મોબાઈલ હશે અને આંગળીમાં હીરાની વીંટી પણ હશે. આ છોકરાઓનું બહોળું વર્તુળ હશે. જેમાં છોકરીઓ હશે. આ જૂથમાં ભણનારી છોકરીઓને ઝગમગતી ગાડીમાં ફરવા મળતું હશે. પિકનિકો અને પાર્ટીઓમાં આમંત્રણ મળતું હશે અને ડિસ્કોથેકમાં પણ છોકરાઓના ખર્ચે જવા મળતું હશે. આ બધાં જ પ્રલોભનોને વશ થવાની કદી ભૂલ કરવી નહીં. આ બધા મફતના લાભો મેળવવા જતી કન્યાઓએ પોતાના શરીરનો જ સોદો કરવો પડે છે. યાદ રાખજે, આ દુનિયામાં કોઈ ચીજ મફત મળતી નથી. માટે મફતમાં કંઈ મેળવવાની કોશિશ કરવી નહીં. તેની જે કિંમત ચૂકવવી પડશે તે ખૂબ જ આકરી હશે.

૬. સેક્સવિષયક મૂંઝવણોમાં માર્ગદર્શન

ઉમર ઉમરનું કામ કરે છે. અમુક ઉમર થાય એટલે સ્ત્રીપુરુષોના સંબંધો, ગર્ભાવસ્થા, સંતતિનિયમનનાં સાધનો, દૈહિક આકર્ષણ વગેરે અંગે પ્રશ્નો પેદા થાય એ આજના કાળમાં ખૂબ સ્વાભાવિક છે. સ્ત્રી રજસ્વલા થાય તે પછી આ સમસ્યાઓ વિશેષ પ્રકારે પેદા થાય છે. આ બધા જ પ્રશ્નોના જવાબ આપવા તારી આ મમ્મી તૈયાર છે. હું જ્યારે તારી ઉમરની હતી ત્યારે મને પણ આ પ્રશ્નો થયા હતા અને મેં તેના જવાબો મારી રીતે પ્રાપ્ત કર્યા હતા. હવે હું એવું નથી ઈચ્છતી કે તું આ પ્રશ્નોના જવાબો કોઈ અજાણ્યા, અધકચરું જ્ઞાન ધરાવતા લોકો પાસેથી મેળવવાની કોશિશ કરે અને તારી જાતને નુકસાનીના ખાડામાં ઉતારી દે. આ બધા જ પ્રશ્નો તું કોઈ પણ જાતના સંકોચ વગર મને પૂછી શકે છે. તને સંપૂર્ણ સંતોષ થાય તે રીતે આ પ્રશ્નોના ઉત્તરો આપવાની હું કોશિશ કરીશ.

૭. મુગ્ધાવસ્થામાં થતા મોહને પ્રેમ ન માનવો.

અત્યારે તારી ઉમર જ એવી છે કે તને કોઈ પણ હેન્ડસમ છોકરો કે યુવકને જોતા જ એવો ભ્રમ થાય કે તું તેના પ્રેમમાં પડી છે. આ ભ્રમ ખૂબ ખતરનાક છે. તેને પ્રેમ માનવાની કોશિશ કદી ન કરવી. સાચો પ્રેમ કોને કહેવાય તે ઓળખવા માટે આ ઉમર ખૂબ કાચી છે. આ ઉમરે એક નહીં પણ અનેક પુરુષો માટે આ પ્રકારનો મોહ દિલમાં પેદા થાય તે શક્ય છે. આ મોહની જાણ તે પુરુષને થાય તેવી ચેષ્ટા કદી પણ ન કરવી. તેનું પરિણામ ખૂબ જ ખતરનાક આવી શકે છે. સ્વાર્થીપુરુષો આવી ભોળી યુવતીઓને ફસાવવા માટે રાહ જોઈને જ બેઠા હોય છે. આવા પુરુષો સાથે કોઈ પણ જાતનો સંપર્ક સાધવો નહી કે તેમની નજીક ફરકવાની પણ કોશિશ ન કરવી. તેમને ભૂલી જવામાં જ તારું શ્રેય છે. આ ઉમરે કદી પ્રેમમાં પડી શકાય જ નહીં, એટલું યાદ રાખવું.

૮. લગ્ન માટે યોગ્ય પાત્ર શોધવાની અમારી જવાબદારી છે.

તારી જ્યારે લગ્ન માટે યોગ્ય ઉમર થશે ત્યારે યોગ્ય પાત્ર શોધી આર્ય દેશની મર્યાદા મુજબ તારાં લગ્ન કરાવી આપવાની અમારી જવાબદારી છે.આ બાબતની ચિંતા તારે કરવાની જરાય જરૂર નથી. માટે જે કોઈ પુરુષના સંપર્કમાં આવે તેમાં તારા ભવિષ્યના ભરથારને શોધવાની કોશિશ કરવી નહીં. તારા માટે તો દુનિયાના બધા જ પુરુષો ભાઈ કે પિતા સમાન જ હોવા જોઈએ. આ બધા પુરુષો પૈકી કયા પુરુષ સાથે લગ્ન કરીને તું સુખી થઈશ એ સમજવાનું તારું ગજું નથી. આ બાબતમાં કોઈ પણ નિર્ણય કરવાનું તું દુસ્સાહસ કરીશ તો દુઃખી જ થઈશ. માટે આવી કોઈ પણ ચિંતામાંથી મુક્ત થઈને તારે તારું મન તો હમેંશા અભ્યાસમાં જ પરોવવાનું છે. યોગ્ય સમયે, યોગ્ય પાત્ર સાથે મા - બાપ જ લગ્ન કરાવી આપશે એવો કાયમ વિશ્વાસ રાખીશ તો તારો પગ કદી કુંડાળામાં પડશે નહીં.

૯. આર્થિક ચિંતા તારે કરવાની નથી.

ઘરની આર્થિક પરિસ્થિતિ ગમે તેટલી વિષમ હોય તો પણ તારે કદી તેની ચિંતા કરવાની નથી. અમે તેમાંથી માર્ગ કાઢવા માટે સક્ષમ છીએ. અમે એવું ઇચ્છીએ છીએ કે પૈસા કમાવાની બિલકુલ ચિંતા અને બોજ વગર તું તારું ધ્યાન વિદ્યાની પ્રાપ્તિમાં કેન્દ્રિત કર. તારું ભણતર પુરૂં થઈ જાય તે પછી અમે તારો ઉપયોગ પૈસા કમાવાના મશીન તરીકે નહીં કરીએ પણ યોગ્ય સ્થાન ગોતીને તારા હાથ પીળા કરવાની જ ઉતાવળ કરીશું. તારા માથે મા - બાપનું ભરણપોષણ કરવાનો બોજો અમે હરગિજ લાદવા માંગતા નથી. એટલે જ નોકરી માટે કે પૈસા રળવા માટે તારે કોઈની લાચારી પડે કે કોઈ કોમ્પ્રોમાઈઝ કરવું પડે એવી પરિસ્થિતિ જ અમે પેદા થવા દેવા માંગતા નથી. આ માટે જ અમે તને તમામ પ્રકારની આર્થિક ચિંતાઓથી મુક્ત રાખવા માંગીએ છીએ.

૧૦. કટોકટીમાં પણ અમને જ યાદ કરજે.

તું જો અગાઉની બધી જ શિખામણો માનીને તેનો બરાબર અમલ કરીશ તો જીવનમાં લગભગ કટોકટીની ક્ષણ આવશે જ નહીં અને તારી જિંદગી અત્યંત આસાન બની રહેશે. તેમ છતાં ભૂલથી પણ ઉપરની શિખામણોનો ભંગ કર્યો અને કોઈ કટોકટી ભરી પરિસ્થિતિમાં આવી જવાનું થાય તો એવો વિચાર નહીં કરતી કે, હવે મમ્મીને આ વાત કેવી રીતે કરવી? બેટા, અમે તારી ભૂલોને માફ કરવા અને તને મદદ કરવા હંમેશા બેઠા જ છીએ. માટે કટોકટીમાં હતાશ બનીને કોઈખોટું પગલું ભરવાનો વિચાર કદી ન કરતી. અમારું વાત્સલ્ય અમને તારી ભૂલની ઉપેક્ષા કરાવડાવીને તેને કારણે પેદા થયેલી કટોકટીમાંથી માર્ગ કાઢવાની તાકાત આપશે. તું અમારું જ લોહી છે, માટે અમે કદી તારો સાથ નહીં છોડીએ એ વાત તું હંમેશ માટે યાદ રાખજે.

- પ્રેમ સુબોધ

દુષ્કર બનાવાયેલું પતિદૈવત્વ

-જ. ૨. શા.

૧. વર્તમાન શિક્ષણ પદ્ધતિમાં યુવાન વયે સહશિક્ષણથી થતી હાનિનો વિચાર શા માટે નથી કરવામાં આવતો ? કન્યાવિવાહ ઉપર કાયદાથી પ્રતિબંધ મૂકી સ્ત્રીને અધિષ્ઠાનવિહીન રાખવી અને શિક્ષણના નામે અનેક પુરુષોના સહવાસમાં ધકેલી દેવી એ સ્ત્રીના માનસ ઉપર મોટો અત્યાચાર નથી? એ સતત અધિષ્ઠાન શોધતી ફરે અને એને અધિષ્ઠાન વિહીન રાખવી, લગ્ન કરતાં એને રોકવી અને ચારિત્ર્ય પતન થાય તો એને ધિક્કારવી - આ વિરોધાભાસ કદી ન સમજાય એવો છે. શિક્ષણ તો ઉન્નતિ પ્રતિ લઈ જનારૂં હોય, પણ એનાથી અવનતિ કેમ સર્જાય છે ? આધુનિકતા અને પ્રગતિના, વિકાસના અને સુસભ્યતાના મહાદંભમાં આપણે આપણી નવી પેઢીને શા માટે દુષ્પરિણામોના ચક્કરમાં ફસાવી કે ધકેલી રહ્યા છીએ ?

૨. નોકરીના ક્ષેત્રમાં પુરુષ અને સ્ત્રી સહકર્મચારી તરીકે સાથે કાર્ય કરે તો પરણેલા સ્ત્રીપુરુષોનાં ચિત્ત દૂષિત થવાનાં જ અને આપણા વર્તમાન સાહિત્યની મોટાભાગની નવલકથાઓ અને નવલિકાઓનું સર્જન, ટીવીની શ્રેણિઓ (સિરિયલો)નું સર્જન પણ મુખ્યત્વે આ જ મુદ્દાને આધાર બનાવીને કરાઈ રહ્યું છે.વાસ્તવમાં તો વર્તમાન વાસ્તવિક સ્થિતિનું એમાં પ્રતિબિંબ જ છે અને ફિલ્મી નટનટીઓ વાર તહેવારે છડી પોકારતા કહેતા હોય છે કે અમે તો સમાજમાં જે બને છે તે જ દેખાડીએ છીએ. પરંતુ સમાજમાં આવું બનવાના મૂળ કારણો પતિદૈવત્વના અને બ્રહ્મચર્યના આચારપાલનના અભાવમાં અને એ આચારોના પાલનને દુષ્કર બનાવનારી આપણે ઉભી કરેલી અવ્યવસ્થામાં પડ્યાં છે એ આપણે અત્યંત સ્પષ્ટપણે સ્વીકારવું જ પડશે.

- પ્રેમ સુબોધ

સ્ત્રી શિક્ષણ

-બદ્રિશાહ ઢુલધરિયા

સમાજનો મુખ્ય આધાર છે ગૃહસ્થાશ્રમ. ગૃહસ્થાશ્રમરૂપી પૃથ્વીના સ્ત્રી અને પુરુષ બે ધ્રુવ છે. આ બે ધ્રુવોની શક્તિથી જગતની ધારણા થાય છે. ગૃહસ્થાશ્રમના બે ધ્રુવોની માનસિક અને શારીરિક રચનામાં ભલે થોડું સાદૃશ્ય હોય પરંતુ અનેક વાતોમાં અંતર પણ ઘણું છે. આ જ અંતરને કારણે તેમનામાં ભિન્ન- ભિન્ન પ્રકારની વિશેષતા થઈ ગઈ છે. પહેલાં કહેવાઈ ગયું છે તેમ પુરુષની વિશેષતા હોય છે *તેજ અને ત્યાગમાં,* સ્ત્રીઓની વિશેષતા હોય છે *ક્ષમા અને પ્રેમમાં.* સ્ત્રી પુરુષોમાં રહેલા તેમના વિશેષ ગુણોને સમૃદ્ધ કરીને પુરુષોને કર્મયોગી બનાવવા અને સ્ત્રીઓને પતિપરાયણ બનાવવી તે અધ્યાપનનું મુખ્ય લક્ષ્ય મનાય છે. તેથી સ્ત્રીઓ અને પુરુષો માટે અધ્યાપન શૈલી ભિન્ન - ભિન્ન પ્રકારની હોવી જોઈએ. પુરુષોનું અધ્યાપન થવું જોઈએ તેજોમય અને ત્યાગમય સન્નિકર્ષો વચ્ચે અને સ્ત્રીઓનું અધ્યાપન થવું જોઈએ ક્ષમામય અને પ્રેમમય સન્નિકર્ષો વચ્ચે. ભગવતી અનસૂયાના કહેવા અનુસાર....

સ્ત્રી શિક્ષણ સંબંધી આ સિદ્ધાંતની સાથે માનવહૃદયના વલણનો વિચાર કરીને એ માનવું પડે છે કે સ્ત્રી શિક્ષણ પાઠશાળાઓમાં થઈ શકે નહીં. સ્ત્રીશિક્ષણ માટે પિતૃગૃહ સિવાય બીજું કોઈ પણ સ્થાન ઉપયુક્ત હોઈ શકે નહીં. આપણા અધ્યાપન શાસ્ત્ર અનુસાર સ્ત્રીઓમાં ક્ષમા અને પ્રેમના સંસ્કારોનું સિંચન કરવા માટે દેવાર્ચન, વ્રતધારણા, કથાશ્રવણ, ગૃહસ્થ કર્માભ્યાસ એ જ મુખ્ય ઉપાય છે. આ ઉપાયોથી બાલિકાઓમાં પતિપરાયણતાના સંસ્કાર ઉત્પન્ન થાય છે. જૂનાં મોટા ઘરોમાં આજે પણ આવું શિક્ષણ આપવામાં આવે છે.

કન્યા કેળવણી : મૂંઝવણ અને માર્ગ

-દીપિકાબેન ધાણધારા

૧. શું ભારતમાં સ્ત્રીઓને શિક્ષણથી વંચિત રાખીને ઘર કુકડી બનાવવામાં આવતી હતી એ વાત સાચી ?

ઋષિ શાસિત ભારતની સ્પષ્ટ માન્યતા હતી કે ભારતની તમામ પ્રકારની ઉન્નતિનું મૂળ "ઘર" છે. ચાર પ્રકારની વર્ણાશ્રમ વ્યવસ્થાનો મૂળ આધાર પણ ગૃહસ્થાશ્રમ જ માનવામાં આવતો. આથી ગૃહિણીને કન્યાવસ્થામાં જ સર્વશ્રેષ્ઠ ગાર્હસ્થ્ય શિક્ષણ મળતુ. માટે જ અન્ય પુરુષોનો અતિ પરિચય થાય તેવા વ્યાપાર ધંધા કે નોકરી તથા સહશિક્ષણથી દૂર રાખવી આવશ્યક ગણાતું, આવી કેળવાયેલી સ્ત્રીને જ ઘર કહેવાતું, *गृहिणी गृहमुच्यते* /ઉક્તિ આપીને ઋષિઓએ સ્ત્રીને પુરુષ સમોવડી નહી પણ પુરુષ કરતાં પણ શ્રેષ્ઠ ગણી છે, *यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्र देवता* /જ્યાં સ્ત્રીઓ પૂજાય છે, ત્યાં દેવતાઓ વાસ કરે છે. સ્ત્રી ગૌરવની આનાથી વિશેષ કીર્તિગાથા વિશ્વની કંઈ સંસ્કૃતિમાં જોવા મળશે ? બાકી વેલો વાડ વગર ન ચડે ! વાડ એ વેલાનું બંધન નહી પણ ઉન્નતિ અને રક્ષણ કરનાર જ છે. આથી *"न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति"*/ સૂત્ર પણ સ્ત્રીની ઉન્નતિ અને રક્ષણ માટે જ છે. "સ્વચ્છંદપણે વર્તતી કોઈ સ્ત્રીએ ક્યારેય કોઈ મહાપુરુષને જન્મ નથી આપ્યો" એ ન ભૂલવું જોઈએ, સ્ત્રીને સ્વાતન્ત્ર્ય મળતા જ તેના ભ્રષ્ટ થવાનો પ્રારંભ થઈ જાય છે. એમ સમજી દરેક સ્ત્રી આનંદ પૂર્વક ગૃહસ્થ કર્મોનો અભ્યાસ કરી નિરંતર તેમાં જ રમમાણ રહેતી. આથી તેને ઘરકુકડી નહી પણ ઘરની દેવીની જેમ રાખવામાં આવતી. સ્ત્રી શિક્ષણનો પ્રારંભ આદિ પુરુષ ઋષભદેવ ભગવાને તેમની દિકરી બ્રાહ્મી અને સુંદરી ને ભાષા - લિપિ અને ગણિત વગેરે શીખવી ને કર્યો છે.

૨. તો પછી ભારતમાં સ્ત્રી શિક્ષણ નહોતું આવો ભ્રામક પ્રચાર કોણ કરે છે ?

ભારતમાં અંગ્રેજોએ પોતાના શાસન દરમ્યાન સાચી શિક્ષણ વ્યવસ્થાનો નાશ કર્યા પછી શિક્ષણનો કૃત્રિમ શૂન્યાવકાશ સર્જીને પોતાની અંગ્રેજી કેળવણી દાખલ કરી ત્યારથી આવો અપપ્રચાર અંગ્રેજોએ તેમની શિક્ષા પદ્ધતિને અનુસરનારા દેશી અંગ્રેજોના માધ્યમથી કર્યો. આ બાબતના અંગ્રેજ ઓફિસરોએ જ લખેલા દસ્તાવેજી ઢગલાબંધ પુરાવા આજે આપણી પાસે છે.

૩. કન્યા કેળવણી તથા શિક્ષણના વિષયો શું શું હોવા જોઇએ?

જીવન ઉપયોગી દરેક વિષયો જેમ કે શ્રેષ્ઠ રસોઈનું વિજ્ઞાન, ગૃહપાક શાસ્ત્ર, શ્રેષ્ઠ સંતતિની પ્રાપ્તિ, સંરક્ષણ અને સંવર્ધન શીખવતું અધિજનન શાસ્ત્ર, બાળકોને પ્રાથમિક શિક્ષણ કેવી રીતે આપવું તેનું આધ્યાપનિક શાસ્ત્ર, શરીર સંરચના અને આરોગ્ય અંગેનું સ્વસ્થવૃત્ત શીખવતું આયુર્વેદ, ઈશ્વરભક્તિ - સમર્પણ અને તન મનની પ્રસન્નતા આપતું યોગ શાસ્ત્ર, ભાષા - લેખન - ગણિત અને વિવિધ લલિતકળાઓ સાથે પતિપરાયણતા, ક્ષમા, સ્નેહ, અતિથિ સત્કાર, પારિવારિક સદ્‌ભાવના, જેવા ગુણો ખીલવતું શિક્ષણ આપી શકાય. બાગકામ, પશુપાલન, જેવા શોખના વિષયો સાથે ઉપયોગી આધુનિક ભાષા - વિજ્ઞાન - ટેકનોલોજી, શસ્ત્રાસ્ત્રની તાલીમ યોગ્ય વયે આપી શકાય.

૪. કન્યા કેળવણી કોણ કરે અને ક્યાં કરે?

કન્યા કેળવણી માતા, મોટી બેન કે કુલવૃદ્ધા જેવી પરિવારની જ સ્ત્રી સભ્ય કરતી, ભાષા - ગણિત - લેખન જેવું ઔપચારિક શિક્ષણ પિતા પણ આપે, ઔપચારિક શિક્ષણ - લલિત કળાઓ કે વિશેષ વિદ્યા શાખાઓનું જ્ઞાન નજીકમાં જ ચાલતા વર્ગોમાંથી મેળવી લેવું અથવા નજીકમાં નીતિશાળા કે પાઠશાળામાંથી જ મેળવવાનું રહેતું. આમ કન્યા કેણવણી પિતાના ઘરે જ થવી જોઈએ તે માટે નિવાસી કન્યા, છાત્રાલય કન્યા, ગુરુકુલ કે હોસ્ટેલ રક્ષણ અને

શિક્ષણ બંને દ્રષ્ટિએ ખૂબ અગવડ ભરેલા, જોખમી અને દુર્ગુણ જનક હોય છે. પિતૃગૃહ વિના કેળવણી તો અધૂરી જ રહી જાય છે.

૫. આજ કાલ વાલીઓ આવી કેળવણી આપવાનું જાણતા જ ન હોય ત્યારે શું કરવું જોઇએ ?

વાલીઓએ પ્રશિક્ષણ લેવું જ પડે. તે માટે નજીકમાં જ નીતિશાળા ચલાવવી જોઈએ. જેમાં કન્યાઓ ભણે અને વાલીઓ કેળવણી કેમ આપવી ? તેનું પ્રશિક્ષણ પણ મેળવે.

૬. નીતિશાળામાંથી ડિગ્રી કે નોકરી ન મળે તો સંતાનોના ભવિષ્યનું શું ?

સાચું સ્ત્રી શિક્ષણ સ્ત્રીઓને નોકરી અને ઘર એમ બેવડી જવાબદારીમાંથી મુક્ત કરાવવા માટે જ છે. ઘરમાં જ પૂરતું ધ્યાન આપવાથી પોતે, બાળકો, પરિવાર અને ક્રમશઃ રાષ્ટ્ર ઉન્નતિ પામે છે. દૂરસ્થ શિક્ષા કેન્દ્રો માંથી ઘેર બેઠા જ યોગ્ય ઉંમરે ડિગ્રી પણ મેળવી શકાય છે. જેથી લગ્ન સમયે એજ્યુકેશનનો પ્રશ્ન નડે નહી.

૭. કન્યાઓને સાચી શિક્ષા પદ્ધતિ અનુસાર કેળવણી ન આપી શકીએ અને વર્તમાન શિક્ષા પ્રવાહમાં જ વહેવા દેવા પડે તો ?

તો સંતાનોના જીવનમાં સતત પેદા થતી સમસ્યાઓ સ્વીકારી લેવી તેમાં સમાધાન ન મળવાથી સતત ચિંતિત રહેવું, ચિંતાથી ઘેરાઈ વ્યર્થ ફાંફા મારવા, સંતાનોના જીવનમાં વ્યભિચાર, વ્યસન, રોગીષ્ઠ શરીર, પ્રેમલગ્ન, સ્વચ્છંદી જીદ્દી સ્વભાવ, મા - બાપનું અપમાન, છુટા છેડા, ઘર કંકાશ, આત્મહત્યા જેવી જીવનમાં ફૂટી નીકળેલી ઢગલાબંધ સમસ્યાઓ માટે વારંવાર ફરીયાદ કે અફસોસ કરવાનું બંધ કરી દેવું,

માનવજીવનનું સમગ્રતઃ પરિવર્તન

-જ. ૨. શા.

નિસર્ગનું સાનિધ્ય

વિદ્યા આદાન પ્રદાનનું કાર્ય અને નિસર્ગનો સંબંધ એકાંતિક નથી. મોટી વિદ્યાપીઠો, વિશિષ્ટ તપોવનો સદાસર્વદા નગર, ગામ કે વસતીથી દૂર રહેતા હતાં, વનો, અરણ્યો કે ઉપવનોની વચમાં સ્થિત આવા વિદ્યાધામોમાં તમામ પ્રકારે જીવનલક્ષી તાલીમ આપવાની વ્યવસ્થા પણ હતી. પૂર્વકાળમાં આવાં વિદ્યાધામોની સુલભતા અને બહુલતા પણ સહજ હતી.

સ્વાભાવિક છે કે શાંતિપૂર્ણ રમ્ય સ્થાનોમાં વિદ્યાદાતા ગુરુજનો અને વિદ્યાતુર વિદ્યાર્થીઓ પવિત્ર, નિર્મળ આચારો અને ભાવનાઓથી સહજતાથી લેપાતા અને પરિણામે રાજ્ય અને પ્રજા માટે લાભકારી, હિતકારી કલ્યાણકર નવી પેઢીનું નિર્માણ અદ્‌ભુત સહજતાથી થતું હતું.

પરિવારની વચ્ચે રહીને વિદ્યા પ્રાપ્તિ થવી એ દુષ્કર છે. અનેક પ્રતિકૂળ અને અનુકૂળ અવરોધો આવવાની શક્યતાઓ ડગલે ને પગલે રહેવાની જ. વર્તમાનકાળે ટી.વી., વિડિયો, ફિલ્મો, અખબારો, કુસંગ પેદા કરનારું સાહિત્ય, કુસંસ્કારો પેદા કરનારી રમતો, તન અને મનને બગાડનારી ખાણી - પીણી જેવાં ઢગલાબંધ નિમિત્તો વધુ મોટી હોનારતો સર્જી શકે છે. એકમાત્ર ઉપાય છે, વિદ્યાર્થીને વિદ્યાપ્રાપ્તિના થોડાં વર્ષોના સમયગાળા માટે પરિવારથી અલિપ્ત રાખવાનો.

ભૂતકાળમાં વિદ્યાપીઠો અને તપોવનો ઉપરાંત કેળવણીનું કાર્ય કરતી અન્ય સંસ્થાઓ કે વ્યવસ્થાઓ પણ સામાન્ય જનજીવનમાં ગોઠવાયેલી હતી. આવી સંસ્થાઓમાં ગુરુકુળો અને પાઠશાળાઓની મુખ્યતા હતી.

ગુરુકુળો કે ગુરુકુલો, જેને સંસ્કૃત ભાષામાં "ગુરુકુલમ્" શબ્દથી ઓળખવામાં આવે છે ત મહદંશે જે તે ગુરુના તપોવનમાં, આશ્રમમાં, ઘરમાં

કે મકાનમાં ચાલતાં હતાં, તપોવનો અને આશ્રમોમાં ચાલતાં ગુરુકુળો કરતાં, નગર, પુર કે ગામોમાં ગુરુનાં ઘરો કે મકાનોમાં ચાલતાં ગુરુકુળોની સંખ્યા અનેકગણી હતી. ગામોની વસ્તીના પ્રમાણમાં અને વિદ્વાન બ્રાહ્મણ ગુરુજનોની ઉપલબ્ધિ પ્રમાણે એક થી વધુ અને મોટાં નગરોમાં સેંકડોથી વધુ સુધીની સંખ્યામાં ગુરુકુળો ચાલતાં હતાં, જ્યાં વિદ્યાર્થીઓ વર્ષો સુધી ગુરુની પાસે રહી, ગુરુની સેવા કરવા સાથે જ્ઞાનપ્રાપ્તિ કરતા હતા. ગુરુનાં નાનાં - મોટાં રોજિંદા કાર્યો કરવાં તે ગુરુની સેવા કરી એમ ગણાતું હતું.

ભારતમાં લાખોની સંખ્યામાં, ગામોગામ પાઠશાળાઓ હતી, જ્યાં આઠ વર્ષની વય સુધીનાં પ્રત્યેક બાલક - બાલિકા લખતાં, વાંચતાં અને હિસાબ કરતાં શીખી જતાં, પંડિત સુંદરલાલ લિખિત અને અંગ્રેજ સરકારે વર્ષો સુધી જેની ઉપર પ્રતિબંધ મૂક્યો હતો તે ગ્રંથ "ભારતમાં અંગ્રજી રાજ્ય" માં જણાવેલી ઈ. સ. ૧૬૦૦ પહેલાના અંગ્રેજ વિદ્વાન અને ઈતિહાસકારની, નોંધ પ્રમાણે ઈ. સ. ૧૫૦૦ ની આસપાસનાં વર્ષોમાં એકલા બંગાળમાં એંસી હજાર પાઠશાળાઓ હતી, દર એંસી બાળકો દીઠ એક કે દર ચારસો માણસની વસતી દીઠ એક પાઠશાળા હતી. આ પાઠશાળાઓ દેશી પંચાયતો, મંદિરો, ધાર્મિક સંસ્થાઓ, શ્રીમંતો દ્વારા ચલાવાતી કે ગામલોકો ભેગા મળીને ચલાવતા. પાઠશાળાઓની વ્યવસ્થા બે પ્રકારે રહેતી, તે નક્કી કરેલા સ્થાનમાં ચાલતી અથવા બ્રાહ્મણ ગુરુના ઘરમાં ચાલતી દિવસના નિર્ધારિત કલાકો માટે વિદ્યાર્થીઓ પાઠશાળામાં આવીને ભણી જતા, તેઓ ચોવીસ કલાક ત્યાં રહેતા નહિ.

વર્તમાન સ્થિતિને ધ્યાનમાં લઈને શક્ય હોય ત્યાં સુધી નીતિશાળા પ્રાકૃતિક, શાંત, રમ્ય અને પવિત્ર સ્થાનમાં રાખવામાં આવે. આમ છતાં ક્ષેત્ર, ગુરુ, વિદ્યાર્થી અને સંચાલકોની પરસ્પર અનુકૂળતા અને આવશ્યકતા પ્રમાણે પ્રાચીન પદ્ધતિની કોઈ પણ વ્યવસ્થા સ્વીકારી શકાય....

- પ્રેમ સુબોધ

આજની આધુનિક શિક્ષણપ્રણાલી

-પ્રો. નવઘણસિંહ વાઘેલા

બાળવિકાસમાં અવરોધક પરિબળો:

આજે બાળકને શિક્ષણ આપવાની ઉંમર નાની બનતી જાય છે. બાળકના હોઠ પરનું માતાનું દૂધ સુકાય ત્યાં જ તેને શિક્ષણ આપવા માંડવું કેટલું વાજબી છે ? હજી તો પુરું બોલતાં આવડે ત્યાં જ કમ્પ્યુટર શીખવવા લાગી પડવું એ શિક્ષણનો અતિરેક નહીં, આક્રમણ છે. હજી તો બાળકની બીજી વર્ષગાંઠ માંડ ઉજવાઈ હોય ત્યાં તો તેને પ્લેગ્રુપમાં ધકેલાય છે. ગઈ પેઢી જે ઉંમરે શિક્ષણનો પ્રારંભ કરતી હતી તેટલી ઉંમરે પહોંચતા સુધીમાં તો આજનો બાળક પોતાની શૈક્ષણિક કારકિર્દીના ચોથા વર્ષમાં પહોંચી ગયો હોય છે. કદાચ ગર્ભસ્થ બાળકને પણ શીખવી શકે તેવી ટેકનોલોજી શોધાતાં પ્રેગ્નન્ટ સ્ત્રીને પણ ક્યાંક પ્રિ. નર્સરી કલાસીસ એટેન્ડ કરવા જવું પડે તેવા દર્દનાક અને દયનીય દિવસો તરફ સમાજ ધકેલાતો જાય છે.

બાળકને પ્લેગ્રુપમાં દાખલ કરી દેવાથી માતાના ખોળા નામની શિક્ષણસંસ્થાને તાળું લાગે છે. અઢી વર્ષના બાળકને પ્લેગ્રુપમાં મોકલી દેનારા વાલીઓએ સમજવું જોઈએ કે સંયુક્ત કુટુંબ, વસ્તારી પરિવાર કે હૂંફાળા પાડોશીઓ જેવું અસરકારક પ્લેગ્રુપ બાળક માટે બીજું એકેય નથી. આજના માતા - પિતા, દેખાદેખી, સ્પર્ધાભાવ અને રેપિડ વિકાસની ધૂનમાં બાળકનું ઘોર અહિત કરી રહ્યા છે. વળી ઓછું હોય તેમ હસતા - ખીલતા અઢી વર્ષના બાળકનો ઈન્ટરવ્યુ લેવાની પદ્ધતિ જે અવૈજ્ઞાનિક, બિનવ્યવહારુ, હાસ્યાસ્પદ અને જુલમી હોય તેવી લાગે છે કેમ કે "ગુલાબનું ફૂલ પ્રેશર કૂકરમાં બફાતું હોય તેવું લાગે છે." નાની ઉંમરના બાળક ઉપર જ્યારે એકસાથે વધારે વિષયોનો બોજો નાંખી દેવામાં આવે ત્યારે અભ્યાસ ભારેખમ ભણતરથી વિદ્યાર્થી પોતાની ડેફિસિટ - મુક્તતા વેકેશનમાં પણ પૂરી કરી શકતો નથી.

કારણ કે વાસ્તવમાં વિદ્યાર્થીને વેકેશન મળતું જ નથી. વિદ્યાર્થીના કેલેન્ડરમાં રવિવાર જેવું કશું જ નથી. કેમ કે પરીક્ષા પૂર્ણ થતાં જ વેકેશન બેચ, કેશ કોર્સના દબાણ હેઠળ તે આવી જાય છે. ગુમાસ્તાધારા હેઠળ અઠવાડિયે એક વાર મજૂરી કરતા બિચારા આ બાળમજૂરોનું નસીબ ગુમાસ્તાધારા કરતાંય બે ડગલાં આગળ છે.

-પ્રેમ સુબોધ

પં. વીરવિજયજી મહારાજ કૃત

હિતશિક્ષા છત્રીશી

-પૂ. આ. વિ. કુલચંદ્રસૂરીશ્વરજી (કે. સી.) મ. સા.

૧. સાંભળજો સજ્જન નરનારી, હિત શિખામણ સારીજી
રીસ કરે દેતા શિખામણ, ભાગ્યદશા પરવારીજી ॥૧॥
સુણજો સજ્જન રે, લોક વિરુદ્ધ નિવાર સું,
જગતવડો વ્યવહાર સું,

- કોઇ શિખામણ આપે ત્યારે ખોટુ લગાડવું નહિ.
- લોક થી વિરુદ્ધ આચરણ કરવું નહિ, કારણકે. જગતમાં સૌથી મોટો વ્યવહાર છે.

૨. મૂરખ બાલક જાચકવ્યસની, કારૂ ને વળી નારૂજી
જો સંસારે સદા સુખ વંછો, તો ચોરની સંગત વારૂજી ॥૨॥

- મૂર્ખ (ગાંડો), બાળક, માંગનાર, વ્યસન કરનાર, ગામે ગામ ફરનારા, અને હલકી કોમના લોકો, અને ચોરની સંગત (સંગ) કરવી નહિ.

૩. વેશ્યા સાથે વણજ ન કરીએ, નીચ શુ નેહ ન ધરીએ રે
ખાંપણ આવે ઘર ધન જાવે, જીવિત ને પરિહરીએ ॥૩॥

- વેશ્યા સાથે વ્યાપાર ન કરવો,

- નીચ લોકો સાથે સ્નેહ ન રાખવો
- જીવનમાં કલંક લાગવાથી ઘરનો, ધનનો તથા જીવનનો નાશ થાય છે।

૪. કામ વિના પર ઘર નવી જઈએ, આળ ગાળ ન દીજેજી
બળીયા સાથે બાથ ન ભરીએ, કુટુંબ કલહ નવી કિજેજી ॥૪॥

- કોઈ કામ વગર બીજાનાં ઘરે જવું નહિ,
- કોઈના ઉપર આળ (કલંક) મુકવું નહિ,
- તથા ગાળ ન આપવી.
- આપણાથી વધારે બળવાન સાથે લડવું નહિ,કુટુંબમાં કલહ (ક્લેશ – ઝગડો) કરવો નહિ.

૫. દુશ્મન શું પરનારી સાથે, તજીએ વાત એકાંતેજી
માત બહેન શું મારગ જાતાં, વાત ન કરીએ રાતેજી ॥૫॥

- દુશ્મન તથા પરનારી સાથે એકાંતમાં વાત કરવી નહિ.
- માતા બહેન (બધી સ્ત્રી) સાથે રસ્તે ચાલતા તથા રાત્રે વાત કરવી નહિ.

૬. રાજા રમણી ઘરનો સોની, વિશ્વાસે નવ રહીએ જી
માત - પિતા ગુરુ વિણ બીજાને, ગુહ્યની વાત ન કરીએજી ॥૬॥

- રાજા, સ્ત્રી, તથા ઘરનો સોની (જેની પાસે દાગીના બનાવતા હોય) નો વિશ્વાસ કરવો નહિ.
- માતા–પિતા અને ગુરુ સિવાય બીજા કોઈને ગુપ્ત વાત ન કરવી.

૭. અણજાણ્યાં શું ગામ ન જઈએ, ઝાડ તણે નવી વસીએજી
હાથી - ઘોડા - ગાડી જાતા, દુર્જનથી દૂર ખસીએજી ॥૭॥

- અજાણ્યા ગામમાં જવું નહિ। (જ્યાં આપણું જાણીતું કોઈ ન હોય તે ગામમાં જવું નહી)

- ઝાડ નીચે વસવાટ કરવો નહિ.
- હાથી, ઘોડો, ગાડી, અને દુર્જન રસ્તે જતા હોય ત્યાંથી દૂર ખસી જવું.

૮. **રમત કરતા રીસ ન કરીએ, ભય મારગ નવિ જઈએજી.**
બે જણ વાત કરે જિંહા છાની, તિંહા ઉભા નવી રહીએ જી ॥૮॥

- જ્યારે રમત કરતા હોઈએ ત્યારે રીસ ન કરવી. (મજાકમાં ખોટું લગાડવું નહી)
- તથા ભયવાળા માર્ગે જવું નહિ.
- બે જણા ખાનગી વાત કરતા હોય ત્યાં ઉભા રહેવું નહિ.

૯. **હુંકારા વિણ વાત ન કરીએ, ઈચ્છા વિણ નવી જમીએ જી.**
ધન વિદ્યાનો મદ પરિહરીએ, નમતા સાથે નમીએ જી ॥૯॥

- કોઇ વાત કરતું હોય ત્યારે હુંકારો તો જરૂર આપવો.
- મનની ઇચ્છા ન હોય તો જમવું નહિ.
- ભણતરનો તથા સંપત્તિનો મદ (અહંકાર) કરવો નહિ.
- જે આપણી સાથે નમ્રતાથી વર્તે તેની સાથે નમ્રતાથી વર્તન કરવું.

૧૦. **મૂરખ જોગી રાજા પંડિત, હાંસી કરી નવી હસીએ જી**
હાથી વાઘ સર્પ નર વઢતા, દેખીને દૂર ખસીએ જી ॥૧૦॥

- મૂર્ખ, યોગી (તપસ્વી), રાજા (સત્તાધારી), તથા પંડિત આ લોકોની મશ્કરી કરીને હસવું નહિ.
- હાથી, વાઘ, સાપ તથા માણસો લડતા હોય ત્યાંથી દૂર ખસી જવું, ઉભા રહેવું નહિ.

૧૧. **કૂવા કાંઠે હાંસી ન કરીએ, કેફ કરી નવી ભમીએ જી**
વરો ન કરીએ ઘર વેચીને, જુગટડે નવી રમીએ જી ॥૧૧॥

- કૂવા (ભયસ્થાન) ના કાંઠે (જાહેર સ્થાને) મશ્કરી કરવી નહિ.
- નશો કરવો નહિ અને નશો કરીને ભમવું (રખડવું) નહિ.
- ઘર વેચીને નાત જમણ વગેરે ન કરવું.
- કોઇ પણ પ્રકારનો જુગાર રમવો નહિ.

૧૨. ભણતા ગણતા આળસ તજીએ, લખતા વાત ન કરીએજી.
પરહસ્તે પરદેશ દુકાને, આપણું નામ ન ધરીએ જી॥૧૨॥

- ભણતા ગણતા આળસ ન કરવી.
- લખતા વાત ન કરવી.
- પરદેશમાં આવેલી દુકાને બીજો માણસ જાય ત્યાં પોતાના નામથી ઉધારે વહીવટ કરાવવો નહિ.

૧૩. નામું માંડો આળસ છંડી, દેવાદાર ન થઈએ જી.
કષ્ટ ભયાનક થાનક વરજી, દેશાવર જઈ રહીએ જી ॥૧૩॥

- કોઇ પણ ધંધામાં નામું અવશ્ય રાખવું, નહિ તો દેવાદાર થવાનો વખત આવે.
- બીજા દેશમાં જઈએ ત્યારે કષ્ટ ઉપજે તથા ભય ઉપજે તેવા સ્થાનોએ જવું નહિ.

૧૪. ધનવંતોને વેશ મલીનતા, પગશું પગ ઘસી ધોવેજી,
નાપિત ઘર જઈ શિર મુંડાવે, પાણીમાં મુખ જોવે જી ॥૧૪॥

૧૫. નાવણ દાંતણ સુંદર ન કરે, બેઠો તરણા તોડે જી.
ભૂંએ ચિત્રામણ નાગો સૂએ, તેને લક્ષ્મી છોડે જી॥૧૫॥

- ધનવાનો છતાં મલીન વસ્ત્રો પહેરવાથી,
- પગથી પગ ઘસીને ધોવાથી,

- હજામ ના ઘરે જઈને હજામત કરાવવાથી,
- પાણીમાં મુખ જોવાથી,
- સ્નાન અને દાંતણ સારી રીતે નહિ કરવાથી,
- બેઠા – બેઠા ઘાસ તોડવાથી,
- જમીન ઉપર ચિત્રામણ કરવાથી,
- તથા જમીન ઉપર નિર્વસ્ત્ર સુવાથી લક્ષ્મીનો નાશ થાય છે...

૧૬. માતા ચરણે શીશ નમાવી, બાપને કરીયે પ્રણામજી
દેવ ગુરુને વિધિએ વાંદિ, કરે સંસારના કામોજી ॥૧૬॥

- માતા – પિતાને નમન (પ્રણામ)કરીને તથા દેવ – ગુરુને વિધીથી વંદન કરીને પછી જ સંસારના કોઈ પણ કામોની શરૂઆત કરવી જોઈએ.

૧૭. બે હાથે માથું નવી ખણીએ, કાન નવિ ખોતરીએ જી
ઉભા કેડે હાથ ન દીજે, સામે પૂર ન તરીએ જી ॥૧૭॥

- બે હાથે માથું ન ખણવું.
- કાન ખોતરવા નહિ.
- ઉભા – ઉભા કમર પર હાથ ન રાખવો.
- સામે પુરે તરવું નહિ.

૧૮. તેલ તમાકુ દૂરે તજીએ, અણગલ જલ નવિ પીજે જી.
કુલવંતી સતીને શિખામણ, હવે નર ભેળી દીજે જી॥૧૮॥

- તેલમાં તળેલું વાપરવું નહિ તથા તમાકુ જેવા ઉષ્ણવીર્ય પદાર્થોને તથા વ્યસનોને છોડવા.
- ગળ્યા વગરનું પાણી પીવું નહિ....

૧૯. સસરો સાસુ જેઠ જેઠાણી, નણંદ વિનય મ મૂકોજી.

શાણપણે શેરી સંચરતા, ચતુરા ચાલ મ ચૂકો જી॥૧૯॥

- સસરો, સાસુ, જેઠ, જેઠાણી તથા નણંદનો વિનય ચૂકવો નહિ.
- શેરીએ નીકળતા ચતુર નારીએ ચેનચાળા કરવા નહિ તથા ઘર બહાર નીકળીએ ત્યારે નીચી નજરે, બોલ્યા ચાલ્યા વિના અને ચેનચાળા કર્યા વિના ચાલવું.

૨૦. નીચ સાહેલિ સંગ ન કીજે, પરમંદિર નવિ ભમીએજી.
રાત્રિ પડે ઘર બાર ન જઈએ, સહુને જમાડી જમીએ જી ॥૨૦॥

- નીચ (હલકી કોમની) બહેનપણીનો સંગ કરવો નહિ.
- બીજાના ઘરે વારંવાર જવુ નહિ.
- રાત્રિ સમયે ઘરની બહાર નીકળવું નહિ.
- સૌને જમાડીને પછી પોતે જમવા બેસવું.

૨૧. ધોબણ માલણ ને કુંભારણ, જોગણ સંગ ન કરીએ જી,
સહેજે કોઈક આળ ચડાવે, એવડું શાને કરીએ જી ॥૨૧॥

- ધોબણ, માલણ, કુંભારણ, જોગણ જેવી શુદ્રવર્ણની કે દુર્ગુણી સ્ત્રીનો સંગ ન કરવો.
- આ બધાનો સંગ કરવાથી લોકોને સહેજે આળ ચડાવવાનો અવસર મળી રહે છે. એવું શા માટે કરવું?

૨૨. નિજ ભરતાર ગયો દેશાવર, તવ શણગાર ન ધરીએ જી,
જમવા નાતિ વચ્ચે નવિ જઈએ, દુર્જન દેખી ડરીએ જી॥૨૨॥

૨૩. પર શેરી ગરબો ગાવાને, મેળે ખેલે ન જઈએ જી
નાવણ ધોવણ નદી કિનારે, જાતા નિર્લજજ થઈએ જી ॥૨૩॥

- જ્યારે પોતાનો પતિ પરદેશ ગયો હોય ત્યારે શણગાર કરવો નહિ.
- જ્ઞાતિ વગેરેના જાહેર સમારંભમાં ભોજન કરવા જવું નહિ.

- દુર્જન થી હમેંશા દૂર રહેવું.
- બીજી શેરીમાં ગરબો ગાવા તથા મેળામાં, રમતના જાહેર સ્થળ આદિમાં જવું નહિ. (નવરાત્રિમાં તો જવાય જ નહીં)
- નદી કિનારે (જાહેર સ્થળે) ન્હાવા તથા કપડા ધોવા જવું નહિ. તેમ કરતા બે શરમ પણું ગણાય.

૨૪. ઉપડતે પગે ચાલ ચાલીજે, હુન્નર સહુ શીખીજે જી,
સ્નાન સુવસ્ત્રે રસોઈ કરીને, દાન સુપાત્રે દીજે જી॥૨૪॥

- સ્ફુર્તિથી ચાલવું. પગ ઘસડીને ચાલવું નહિ.
- દરેક પ્રકારની કળાઓમાં પારંગત થવું.
- વસ્ત્ર સહિત સ્નાન કરીને, સુવસ્ત્રો પહેરીને રસોઇ કરવી તથા સુપાત્રદાન કરવું.

૨૫. શૌક્ય તણા લઘુ બાળક દેખી, મ ધરો ખેદ હૈયામેજી,
તેહની સુખ શીતલ આશિષે, પુત્ર તણા ફળ પાવે જી ॥૨૫॥

- શૌક્યના નાના બાળકો જોઈને દિલમાં દુઃખ લગાડવું નહિ કારણ. કે. તેમના આશિર્વાદથી જ પુત્રનું સુખ પ્રાપ્ત થાય છે.

૨૬. બાર વરસ બાળક સુર પડિમા, એ બે સરીખા કહીએજી,
ભક્તિ કરે સુખ લીલા પામે, ખેદ કરે દુઃખ લહીએ જી॥૨૬॥

- ૧૨ વર્ષ સુધી બાળક તથા દેવ પ્રતિમા એક સમાન માનવાં, તેમની ભક્તિ કરવાથી સુખ પ્રાપ્ત થાય છે. તથા બાળકની સેવામાં કંટાળો લાવવાથી પરિણામે દુઃખ પ્રાપ્ત થાય છે.

૨૭. નરનારી બેઉને શિખામણ, મુખ લવરી નવી હસીએજી,
નાતી સગાના ઘર છોડીને, એકલડા નવી વસીએજી ॥૨૭॥

- હવે બંનેને અનુલક્ષીને શિખામણ આપવામાં આવે છે.

- વાચાળતાના કારણે મુખથી લવારો કરતા કરતા મોટેથી હસવું નહિ.
- જ્યાં આજુબાજુમાં નાતી (સમાજવાળા)તથા સગાંસંબંધીઓના ઘર ન હોય ત્યાં વસવું નહિ.

૨૮. વમન કરીને ચિંતા જાળે, નબળે આસન બેસીજી
વિદિશે દક્ષિણ દિશિ અંધારે, બોટ્યું પશુએ પેસીજી ॥૨૮॥

- ઉલટી થયા પછી ખાવું નહિ,
- ચિંતાના જાળા ઘેરીવળ્યા હોય ત્યારે જમવું નહિ. વિચારો કરતા – કરતાં જમવું નહિ.
- ઉભા – ઉભા અથવા વિચિત્ર રીતે બેસીને પણ જમવું નહિ. આસન બાંધીને (પલાઠીવાળીને) શાંતિથી ડાબા પગે ઢીંચણિયો ભરાવીને જમવું, (ઉભા ઉભા અને ખુરશી–ટેબલ પર તો જમવા બેસાય જ કેમ?)
- વિદિશામાં કે દક્ષિણ દિશામાં મુખ કરીને અને અંધારામાં ખાવું નહિ.
- ઘરમાં આવીને પશુ કે પંખીએ બોટેલું અન્ન ખાવું નહીં.

૨૯. અણજાણ્યે ઋતુવંતિ પાત્રે, પેટ અજીરણ વેળાજી.
આકાશે ભોજન નવિ કરીએ, બે જણ બેસી ભેળાજી ॥૨૯॥

- અજાણી વસ્તુ ખાવી નહિ.
- ઋતુવંતી (અંતરાયવાળી) સ્ત્રી એ ખાધેલા પાત્રમાં ખાવું નહિ.
- પેટમાં અજીરણ હોય ત્યારે જમવું નહિ.
- ખુલ્લા આકાશમાં (ખુલ્લામાં) બેસીને જમવું નહિ.
- એક પાત્રમાં બે જણે ભેગા બેસીને ન જમવું.

૩૦. અતિશય ઉનુ ખારૂં ખાટું, શાક ઘણું નવિ ખાવુંજી,
મૌનપણે ઓઠીંગણ વરજી, જમવા પહેલા નહાવું જી॥૩૦॥

- અતિશય ગરમ, ખારૂં, ખાટું વધુ પડતું ખાવું નહિ.

- શાક વધુ ખાવું નહીં. તેથી વૃદ્ધત્વ જલ્દી આવે છે.
- મૌન પણે જમવું, ટેકો દઈને જમવું નહિ.
- બપોરે સ્નાન કરીને જમવું.

૩૧. ધાન્ય વખાણી વખોડી ન ખાવું, તડકે બેસીને જમવુંજી,
માંદા પાસે રાત તજીને, નરણાં પાણી ન પીવું જી॥૩૧॥

- આ સારું છે, આ ખરાબ છે, આ બરાબર નથી એમ કહીને જમવું નહિ.તડકે જમવું નહિ.
- માંદા માણસો પાસે રાત રહેવું નહિ.
- નરણા કોઠે (વહેલી સવારે) પાણી પીવું નહિ.

૩૨. કંદમૂળ અભક્ષ્ય ને બોળો, વાસી દ્વિદળ વરજો જી
જૂઠ તજો પરનિંદા હિંસા, જો વળી નરભવ સરજો જી ॥૩૨॥

- જો નરભવ સાર્થક કરવો હોય તો કંદમૂળ, અભક્ષ્ય, બોળ – અથાણું, વાસી, તથા દ્વિદળ (કાચા દૂધ – દહીં – છાશ સાથે લીલા કે સૂકા કઠોળ) ખાવું નહિ.
- જૂઠું બોલવું નહિ, બીજાની નિંદા કરવી નહિ, તથા હિંસા કરવી નહિ.

૩૩. વ્રત પચ્ચક્ખાણ ધરી ગુરુ હાથે, તીરથ જાત્રા કરીએજી,
પુણ્ય ઉદય જો મોટો પ્રગટે, તો સંઘવી પદ ધરીએ જી॥૩૩॥

- યથા શક્તિ વ્રત પચ્ચક્ખાણ દેવ – ગુરુ અને આત્મસાક્ષીએ કરવા જોઈએ.
- તીર્થોની યાત્રા કરવી જોઈએ.
- જો શક્તિ હોય તો છ'રી' પાલિત સંઘ કાઢીને સંઘવી પદ પ્રાપ્ત કરવું જોઈએ.

૩૪. મારગમાં મન મોકળું રાખી, બહુવિધ સંઘ જમાડોજી,

સુરલોકે સુખ સઘળા પામો, પણ નહિ એહવો દાહડો જી॥

- સંઘ યાત્રામાં રસ્તામાં જે પણ સંઘો આવે તેમને જમાડવા જોઈએ, કહેવાય છે કે દેવલોકમાં બધા સુખો પ્રાપ્ત થાય છે પણ આવુ પુણ્ય પ્રાપ્ત કરવાનો અવસર મળતો નથી.

૩૫. તીરથ તારણ શિવસુખ કારણ, સિદ્ધાચલ ગિરનારેજી,
પ્રભુ ભક્તિ ગુણ શ્રેણે ભવજલ, તરીએ એક અવતારે જી॥૩૫॥

- શિવસુખ (મોક્ષ) આપનાર અને સંસારથી તારનારી તીર્થાધિરાજ શ્રી સિદ્ધાચલની તથા શ્રી ગિરનારજી તીર્થની ભાવપૂર્વક ભક્તિસહિત યાત્રા કરી અનેક ગુણો ખીલવનાર મનુષ્યનો એક ભવમાં મોક્ષ થાય છે.

૩૬. લૌકિક લોકોત્તર હિતશિક્ષા, છત્રીશી એ બોલીજી
પંડિત શ્રીશુભવીર વિજય મુખ, વાણી મોહન વેલીજી॥૩૬॥

- સર્વ જનના હિતાર્થે શ્રી શુભવીર વિજયજી દ્વારા આ હિતશિક્ષા છત્રીશી ની રચના કરવામાં આવી છે.

- પ્રેમ સુબોધ

- વીર શાસન પત્રિકા ના ૨૦-૯-૧૯૩૫ના અંકમાં પૃષ્ઠ ૭૭૦ પર લખેલ છે કે-

  ટર્કીશ સરકારે એક યાદી બહાર પાડી, એવો હુકમ બહાર પાડ્યો છે કે ૧૪ વર્ષથી નાની છોકરી અને ૧૮ વર્ષથી નાના છોકરાને સીનેમા દેખાડી શકાશે નહીં

  વર્તમાનમાં જૈનો એ આવો કોઈ નિયમ બહાર પાડવો જોઈએ જેથી જૈનોના ઘરે જે બની રહ્યું એ ન બને.

  - જયાનંદ

રાષ્ટ્રદાઝ

-પં. ચન્દ્રશેખરવિજયજી મ. સા.

જેમ માનવતા અને ધાર્મિકતાનું જીવનમાં મહત્ત્વ છે તેમ રાષ્ટ્રીયતાનું રાષ્ટ્રધ્વજનું પણ જીવનમાં મહત્ત્વ છે. આ વાત ભારતીય પ્રજાની રગેરગમાં પ્રસરી હતી.

રાષ્ટ્ર ખાતર બહુ મોટા બલિદાનો અપાયા છે. આ જવાબદારી ચાર વર્ણોમાંના ક્ષત્રિય વર્ણ ઉપર નાખવામાં આવી હતી. ક્ષત્રિયોના લોહીમાં વંશવારસાગત રીતે રાષ્ટ્રદાઝ હતી. તેઓ યુદ્ધના મેદાનમાં મૃત્યુ પામવાની વાતને બહુ મોટું નસીબ માનતા હતા. આથી જ યુદ્ધભૂમિ ઉપર એકદમ ધસી જતા અને વીરમૃત્યુને વરતા. એ રીતે મૃત્યુ પામેલા યુવકોના કુટુંબો મોટો આનંદ ઉત્સવ કરતાં.

ભારતના સ્વાતંત્ર્યના ઈતિહાસ ઉપર નજર કરીએ તો નાનાસાહેબ પેશ્વા, ઝાંસીની રાણી લક્ષ્મીબાઈ, તાત્યા ટોપે, નાના ફડનવીસ, વીર સાવરકર, સુભાષ બોઝ, ભગતસિંહ, ચન્દ્રશેખર આઝાદ, ચાફેકર બંધુઓ, ગુરુ ગોવિંદસિંહ વગેરે હજારો ભારતીય લોકોએ સામી છાતીએ ધસી જઈને બલિદાન આપ્યું હતું.

મૂલ્યોની રક્ષા માટે જૈનાચાર્ય કાલકસૂરિજીએ ઈતિહાસ સર્જ્યો હતો. હેમચન્દ્રસૂરિજીએ આર્હન્નીતિ ગ્રંથ લખ્યો હતો. રાજાઓના મંત્રી તરીકેના પદ ઉપર સેંકડો જૈનો આરૂઢ થયા હતા. તેમણે પોતાની સૂક્ષ્મ બુદ્ધિથી રાષ્ટ્રની જબરી રક્ષા કરી હતી.

ભામાશાહે મહારાણા પ્રતાપને કટોકટીના સમયમાં પ્રચંડ બળ પુરું પાડ્યું હતું. મહારાજા ખારવેલ, સમ્રાટ સંપ્રતિ, ગુર્જરેશ્વર કુમારપાળ, મગધપતિ શ્રેણિક જૈન રાજવીઓ તરીકે યશસ્વી કામગીરી કરી હતી.

જો રાષ્ટ્ર સલામત છે તો તીર્થો, જિનાલયો, શ્રમણો અને શ્રમણીઓ, જ્ઞાનભંડારો વગેરે બધું ય સલામત છે.

જો રાષ્ટ્રમાં શાન્તિ છે તો ધર્માનુષ્ઠાનો ખૂબ સારી રીતે થઈ શકે છે. દિલ્લીના લાલ કિલ્લા ઉપર જો પાકિસ્તાનનો લીલો ઝંડો ફરકી જાય તો તમામ હિન્દુઓની સુન્નત થઈ જાય, તમામ મંદિરો મસ્જિદ બની જાય.

વર્તમાનમાં કમનસીબે જૈનો ભૌતિક જીવનમાં વધુ ગળાડૂબ હોવાના કારણે અથવા આ વિષયમાં તેમને સજાગ રહેવાની પ્રેરણા નહીં મળી હોવાના કારણે તેમણે રાજકારણના ક્ષેત્રને અછૂત ગણી લીધું હોય તેમ લાગે છે. હા, પોતાનો સ્વાર્થ સાધવા પુરતું બધું કામ ઠેઠ ઊંડે સુધી ખૂંપી જઈને પણ તેઓ કરે છે. પરન્તુ દૂરગામી પરિણામો હાંસલ કરે તેવી રીતે કોઈ વિચારણા તેઓ કરતા નથી. જો કે દિગંબર જૈનો આ વિષયમાં થોડાક પણ ગંભીર છે ખરા, પરન્તુ શ્વેતામ્બરો તો લગભગ ઉદાસ હોય તેવું લાગે છે. આ બરાબર થતું નથી. તીર્થો, દેવદ્રવ્યાદિની સંપત્તિઓ, જ્ઞાનભંડારો, ધર્મવિરોધી કાયદાઓ, પ્રાણીરક્ષા વગેરે બાબતોમાં અવસરે પોતાનો અવાજ અસરકારક રીતે જો રજૂ ન થાય તો ઘણી મુસીબતો ઊભી થાય, ઘણું ગુમાવી દેવાનો પ્રસંગ આવી પડે. સાંભળવા મુજબ દિગંબર લોકોના ૫૬ આઈ. એ. એસ. અધિકારીઓ ભારતના વિવિધ સચિવાલયો વગેરે સ્તરોમાં ગોઠવાયેલા છે. શ્વેતામ્બરોના પાંચ આઈ. એ. એસ. હશે કે કેમ ? તેમાં શંકા છે.પ્રધાનો કરતાં આ અધિકારીઓની શક્તિ વધુ હોય છે. પ્રધાનોની ચોટલી તેમના હાથમાં હોય છે. ધાર્યા કામ પાર પડાવી શકે તેવો તેમનો પાવર હોય છે.

બેશક, લોકશાહી, ચૂંટણી પ્રથા વગેરે પ્રજાના હિતકારક તત્ત્વો નથી, પરન્તુ હવે જ્યારે તે ઢાંચાઓમાં રહીને જ કામ કરવાનું છે ત્યારે તેની ચાલે ચાલવું પડે. ગાંડાની સાથે ગાંડા થવાનો કુવૃષ્ટિન્યાય અપનાવવો પડે.

બૃહત્ - શાન્તિ સ્તોત્રમાં રાજાઓની (હાલના સમયમાં વડાપ્રધાનો, પ્રધાનો વગેરેની) શાન્તિની શુભેચ્છા સેવવામાં આવી છે. આમ કહીને જૈનધર્મ, સ્વધર્મના અનુયાયીઓ અને પ્રજાજનોની શાન્તિ ઈચ્છે છે. તેમ થાય તો જ ધર્મ સાધી શકાય તેમ સૂચિત કરે છે.

ટૂંકમાં પોતાના રાષ્ટ્ર પ્રત્યેની દાઝ એ પ્રજાના હૈયે દૃઢ થયેલું મૂલ્યવાન તત્ત્વ છે.

હા, એ વાત સાચી કે આજે જે રાષ્ટ્રના માધ્યમથી દુષ્ટ લોકો પોતાનો સ્વાર્થ સાધી રહ્યા છે તે રાષ્ટ્રની દાઝ હોવાની વાત બરોબર નથી. રાષ્ટ્ર એટલે પ્રજામાત્રનું કલ્યાણકારી રાષ્ટ્ર, નહીં કે થોડાકોનું હિત સાધતું રાષ્ટ્ર. એવા રાષ્ટ્ર પરત્વે દાઝ કેળવવાનો કોઈ અર્થ નથી.

ભારતવર્ષ એક જ એવું વિશ્વનું રાષ્ટ્ર છે જેની પ્રજા મોક્ષના લક્ષને અને સદાચારના પક્ષને હાડોહાડ વરેલી છે. આવી પ્રજાની રક્ષા અને તેની વંશપરંપરા અત્યન્ત જરૂરી છે. તેવી પ્રજાને રક્ષતું રાષ્ટ્ર ધરતી ઉપરથી નાબૂદ થાય એ કોઈ પણ સંયોગમાં ન ચલાવી શકાય તેવી વાત છે. હા, જો રાષ્ટ્ર પણ પશ્ચિમના ઝેરી પવનની ઝપટમાં આવીને પોતાનું સ્વરૂપ વિકૃત કરી દે, તેની પ્રજા મોક્ષના લક્ષથી ભ્રષ્ટ બની જાય તો તેવા ભારત નામના રાષ્ટ્રની દાઝ રાખવાની વાત કદી કરી શકાય નહીં.

મને પ્રથમ નંદ રાજાના મહામંત્રી કલ્પકની રાષ્ટ્રદાઝ યાદ આવે છે. ભવિષ્યમાં હતપ્રહત થનારા રાષ્ટ્રને બચાવવાની જવાબદારી પોતાના શિરે આવવાની છે એમ જાણીને તેમના આખા કુટુંબે ભૂખમરાથી પ્રાણત્યાગ કરીને કલ્પક ને જીવાડી રાખ્યા હતા. અને કટોકટીના સમયે કલ્પકે મગધને દુશ્મનોના હાથમાં સપડાતું અટકાવીને ઉગારી લીધું પણ હતું. વિદેશીઓની ભેદી રીતે અને ભયાનકરૂપે ગોઠવાયેલ રાષ્ટ્રનાશક સુરંગોથી ઉગરવા માટે હાલ તો સમગ્ર ભારતીય લોકોએ, એક નહીં એકસો પાંચનો ન્યાય લગાડીને ખભેખભા મિલાવી દેવા જોઈએ.

જોકે રાષ્ટ્રના કોઈ કમનસીબે, જેમ રાષ્ટ્રદાઝવાળા મર્દો થયા છે. તેમ તેનાથી મોટી સંખ્યામાં રાષ્ટ્રના ગદ્દારો, વિશ્વાસઘાતીઓ, અમીચંદો પણ પેદા થાય છે.

ઘણી મહાન ગણાતી રાજાશાહીનો સમય આપસની કાપાકાપીમાં

પુષ્કળ ગયો છે. રાજાઓના અત્યન્ત વિશ્વાસુ માણસોએ તેમનો વિશ્વાસઘાત કરીને પોતાના સ્વામીને મરણાન્ત કષ્ટ આપ્યું છે. આપસની ઈર્ષ્યાદિના કારણે દેશના રાજાઓએ વિદેશી (ઈબ્રાહીમ લોદી વગેરે) રાજાઓને દેશમાં આવવા માટે આમંત્રણ દેવાની અતિ ખતરનાક ભૂલો કરી છે.

જો રાષ્ટ્રદાઝની વાત કરીએ તો તે માટે મેવાડના વંશપરંપરાગત મહારાણાઓને યશ દેવો જોઈએ, જ્યારે જ્યારે વિદેશી શાસકો ભારતમાં ધસી આવ્યા છે. ત્યારે છેવટે તેમણે આંતરીને પાછા ભગાડયા છે. તેમણે કદી શરણાગતિ સ્વીકારી નથી.

બાપા રાવળ, રાણો સંગ, પ્રતાપ, ઉદમસિંહ વગેરેની રાષ્ટ્રદાઝ કેવી હતી ! શરીરમાં બ્યાંસી ઘા સાથે લંગડો રાણો સંગ જ્યારે વિદેશીઓના સૈન્ય તરફ ધસી જતો ત્યારે શત્રુ સૈન્ય ચીસો પાડતું ભાગી છૂટતું. મહારાણા પ્રતાપની બાદશાહ અકબર સામેની ઝિંદાદિલીથી કોણ અજાણ છે ?

હાય ! આજે તો એ અસલી રાષ્ટ્ર જ રહ્યું નથી. આજનું રાષ્ટ્ર એ અખંડ ભારત નથી. આ તો ટુકડે - ટુકડે થયેલું, છૂંદાયેલું, લૂંટાયેલું ઈન્ડિયા છે આને અખંડ હિન્દુ રાષ્ટ્ર શી રીતે કહેવાય ?

ભ્રષ્ટાચારી લોકોએ ગીધડાની જેમ ફોલી ખાઈને પોતે તગડા બનવા માટે રહેલું મડદા જેવું આ રાષ્ટ્ર શી રીતે દાઝને લાયક બને ?
ભગતસિંહની શહાદત સુધી તો અખંડ ભારત નામનું અસલી રાષ્ટ્ર હતું. પણ હવે તો....

આ ભારત માતા ઉપર તેના કપૂત સંતાનોએ અત્યાચાર કર્યો છે. તેના અંગોને પીંખી નાખ્યા છે. તેની ઉપર તેઓ થુંક્યા છે. મૂતર્ક્યા છે, તેને લાતો મારી છે, તેના દેહના ટુકડા કર્યા છે. તે કણસી રહી છે, તે ચિત્કાર કરી રહી છે.

જેનું અસલી સ્વરૂપ ખતમ થયું છે. તેવા ૦ગ્નકલી, કલ્ચર, વિદેશીઓના કબજે ગયેલું રાષ્ટ્ર તે આ ઈન્ડિયા છે.

હા, એના પ્રત્યે પણ જો દાઝ રહેતી હોય તો ભલે રહે, પણ તે દાઝ

તેને અસલ સ્વરૂપમાં લાવવા માટેના કસમપૂર્વકની હોવી જોઈએ. એ માટે વિદેશી અને દેશી ગોરાઓની ભેદી અને ક્રૂર રમતોની સાચી સમજણ મેળવવી પડે. તે વિનાની રાષ્ટ્રદાઝ નકામી છે.

આજના સાવ નકલી સ્વરૂપનાં ભારતને સાચું રાષ્ટ્ર માનીને તેના તરફ દાઝ વ્યક્ત કરવી, તેની આઝાદી કબૂલ રાખવી, પંદર ઓગસ્ટના દિવસે તે આઝાદીની ઉજવણી કરવી, ભાષણબાજી કરવી....એ બધું તો હીજડાની જાન કાઢવા જેવું મૂર્ખામીભર્યું કૃત્ય કહેવાય.

અરે, એ પણ કરો, પરંતુ એ વખતે આગ ઝરતી ભાષામાં સાચી વાતનો વિસ્ફોટ કરીને સહુને જાગ્રત કરો. એસીડમાં કલમ બોળીને ભેદભરમોને ખુલ્લા પાડતા લેખો લખો. કોઈ વાંધો નથી.

કાશ ! ઘણા ખરા રાષ્ટ્રદાઝવાળા લોકોને પણ ખબર નથી કે તેઓ શું કરી રહ્યા છે ! કેવા ગેરરસ્તે દોરવાઈ ગયા છે ! રાષ્ટ્રભક્તિ કરવા દ્વારા ગોરાઓની કેવી ભક્તિ કરી રહ્યા છે ! - પ્રેમ સુબોધ

● વીર શાસન પત્રિકા ના ૯-૧૨-૧૯૩૨ના અંકમાં નેપોલિયનના વિચારો છપાયા છે તેમાં લખ્યું છે કે-

સ્ત્રી કેળવણીમાં પણ ધર્મનું શિક્ષણ બહુ અગત્યનું છે. કન્યાઓ શાળા છોડે ત્યારે ફેશનઘર રમણિઓ નહીં, સુશીલ સન્નારીઓ નિવડે અને તેમનો મોહ ટીપ-ટોપ કરવામાં નહીં પણ તેમના ઉચ્ચગુણ ખિલવવામાં રહેલો હોય એવું જોવાને હું ઘણો ઉત્સૂક છું.

જૈન સંઘ આના ઉપર વિચાર કરે કે અમારે અમારી કન્યાઓને ફેશનની પુતલી બનાવવી કે સાધ્વી યા સુશ્રાવિકા બનાવવી.

- *જયાનંદ*

વિજ્ઞાન : વિનાશ કે વિકાસ

-મુનિ કુલદર્શન વિજય મ. સા.

વિશ્વભરના વિજ્ઞાનિકોની સભા ભરાઈ હતી. દેશ વિદેશના વિજ્ઞાનિકો ત્યાં હાજર હતા. હજારોની મેદની ભેગી થઈ હતી. તે વખતે ગાંધીજીને મુખ્ય અતિથી રૂપે હાજર રહેવા આમંત્રણ આપવામાં આવ્યું હતું. તે વખતે ગાંધીજીને, ત્યાં ઉપસ્થિત એક વૈજ્ઞાનિકે એક સવાલ કર્યો કે બાપુ અમે વૈજ્ઞાનિકોએ શોધ કરેલી ટેલીફોન, ટ્રેન, વિમાન, કાર, કોમ્પ્યુટર આદિ સિદ્ધિઓ શું હેરતભરી નથી ? આપ તે ઉપરથી વિજ્ઞાનની તથા વૈજ્ઞાનિકોની પ્રશંસા કરો કે નહિ ? તે વખતે ગાંધીજીએ ઉત્તર આપ્યો કે વિજ્ઞાનના જે સાચા અંશો છે તેની હું પ્રશંસા કરું છું. પણ સમસ્ત વિજ્ઞાનની પ્રશંસા કરવા મારું મન રાજી થતું નથી. ગાંધીજીની આ વાત અક્ષરશઃ સાચી છે. વિજ્ઞાન એ એક સાત મણી વાળો, સાત ફણાવાળો નાગ છે. જેની દાઢમાં ઝેરની થેલી ભરેલી છે. ગમે ત્યારે તે વિજ્ઞાનરૂપી નાગ ઝેરની પીચકારી મારી શકે છે. અને આજે વર્તમાન પરિસ્થિતિ જોવા બેસો તો વિજ્ઞાનની તાજેતરમાં થયેલી દરેક શોધના ફાયદા છે તેના કરતા તેનું નુકશાન વધારે છે. આજે જેની પાછળ આખું જગત પાગલ છે તે ઈન્ટરનેટના જેટલા ફાયદા છે તેના કરતા નુકશાન અનેક ગણું વધારે છે. આજે ઈન્ટરનેટ ઉપર ધાર્મિક, સામાજીક, કે સાહિત્યીક વેબસાઈટો જેટલી નથી તેના કરતા અનેક ગણી વધારે બાળકોમાં કુસંસ્કારો વધારતી તથા પોર્નોગ્રાફિની વેબસાઈટો છે. અને આ બધી વેબસાઈટોના પ્રભાવે જે જાણકારી ૪૦ વર્ષના પુખ્ત વ્યક્તિઓ પાસે નથી હોતી તે જાણકારી આજ કાલના ટાબરીયાઓ પાસે હોય છે. આજનું નવું જનરેશન (નવો ફાલ) દિવસે ને દિવસે આપણી સંસ્કૃતિનો કચ્ચરઘાણ બોલાવી રહ્યું છે. આપણી પ્રાચીન - આધ્યાત્મિક - ધાર્મિક સંસ્કૃતિનો કચ્ચરઘાણ બોલાવી રહ્યું છે. આપણી પ્રાચીન - આધ્યાત્મિક - ધાર્મિક સંસ્કૃતિને જડમૂળથી ઉખાડીને પશ્ચીમી સંસ્કૃતિના કદમ સાથે કદમ મિલાવી રહ્યું છે. ઈન્ટરનેટ પછીની બીજી સૌથી

મોટી શોધ છે મોબાઈલ. આ મોબાઈલથી આરોગ્યની દૃષ્ટિએ જુઓ તો કાનમાં બહેરાશ આવે છે. મગજનું કેન્સર થઈ શકે છે. ચામડીના રોગ થઈ શકે છે. આંગળી તથા કાંડુ જકડાઈ જવાનો રોગ થઈ શકે છે. આર્થિક દ્રષ્ટિએ જુઓ તો તમે નીતિથી પરસેવો પાડીને કમાયેલું ધન તેનું ફોગટનું બિલ ભરવામાં વપરાઈ જાય છે. તમે ક્યા છો તેની પ્રાઈવસી જળવાતી નથી. તમે ક્યાં સુધી કોની સાથે ક્યારે વાત કરો છો તેનાથી તમારા માતા - પિતા અજાણ હોય છે જેથી તમારી પડતીની શરૂઆત થાય છે. તેઉકાયના તથા વાઉકાયના જીવોનો કચ્ચરઘાણ નીકળી જાય છે, ખીસ્સામાં મોબાઈલ રાખવાથી તેના રેંઝની ખરાબ અસરથી હાર્ટએટેક પણ આવી શકે છે. આવી બધી બાબતો લખવા જઈએ તો કેટલું ય લખાય. પણ ટુંકમાં જોવા જઈએ તો જમાના પ્રમાણે વિજ્ઞાનનો સર્વથા ત્યાગ તો કરી શકવાના નથી, તેનાથી સર્વથા દૂર થઈ શકવાના નથી. પણ તેને તમારું વ્યસન ન બનવા દો. એ જરૂરી છે કે આપણે વિજ્ઞાનની નવી શોધોનો ઉપયોગ સમય સાથે જરૂર પુરતો કરવો જોઈએ પણ જો એ તમારું વ્યસન બની ગયું હોય તો તેના ફાયદા કરતા ગેરફાયદા વધારે છે. માટે અટકો વિજ્ઞાન જો તમારું વ્યસન બની ગયું તો એ વિજ્ઞાન તમારો વિકાસ નહિ પણ વિનાશ નોતરનારું બનશે. - પ્રેમ સુબોધ

● વીર શાસન પત્રિકા ના ૭-૧૨-૧૯૩૨ના અંકમાં

આ જમાનામાં વિચારભેદ અને વાણી સ્વાતંત્રતા આજની કેળવણીના પ્રતાપે એટલા બધા ખીલ્યા છે કે સંયુક્ત કુટુંબો વિભક્ત થઈ ગયા છે. ન્યાતોનો નાશ શરૂ થઈ ગયો છે. આચાર અને ક્રિયાકાંડને વહેમ સમજાવવાનું શરૂ થયું છે. અને દરેક જણ શાસ્ત્રો કરતાં પોતાના અંતરના અવાજને પ્રથમ સ્થાન આપે છે.

- જયાનંદ

સાથિયાનું મહત્વ

૧. સાથિયો એટલે શું ?

સા- સાધના, થિ - સ્થિર થવું, યો - ચોરાશી યોનિમાંથી બહાર નીકળવું. આપણે મુખ્યત્વે સાથિયો દર્શન, જ્ઞાન તથા ચારિત્ર તરીકે સમજીએ છીએ. સાથિયાના ચાર પાંખિયા આપણને કહે છે કે,

1. Time is money.
2. Knowledge is power.
3. Truth is god.
4. Character is life.

પરંતુ વધારે સમજવા નીચે સમજણ આપી છે, મારા જ્ઞાન પ્રમાણે રજુઆત કરી છે.

1. Time is money.

સમય પૈસા કરતાં પણ કિંમતી છે. પરંતુ કેટલાંક ભાગ્યશાળી સમયને મારે છે. કેટલાક વેડફે છે. કેટલાંક પસાર કરે છે અને કેટલાંક સાચો ઉપયોગ કરે છે.

2. Knowleedge is power.

સમ્યગ્ જ્ઞાનથી શક્તિ વધે છે. દા. ત., આહાર સાત્ત્વિક લેવો, આજ્ઞા પાળવી, આદરભાવ તથા આતિથ્ય જાળવવું.

3. Truth is god.

કડવું સત્ય કહેવું, નગ્ન સત્ય ન કહેવું.

કાદુ મકરાણી પ્રખ્યાત બારવટિયો હતો. એક વખત લૂંટ કરવા જતાં રસ્તામાં તરસ લાગી - કૂવા પાસે ગયો. એક બહેન પાણી ભરતી હતી. તેને પાણી પીવડાવ્યું ને બહેનને કહ્યું કે તું આ ગામમાં રહે છે. અમો ધાડ પાડવા આવ્યા છીએ. તારા ઘરે બે દીવા કરી રાખજે. હું મારા સાગરીતોને કહીશ જ્યાં

બે દીવા હોય તે ઘરે ધાડ પાડવાની નથી, કહીને વિદાય લીધી.

આ બહેને આખા ગામમાં ઢંઢેરો પીટાવ્યો અને બધાને આ વાત કરી દરેકના ઘેર બે દીવા કરવા જણાવ્યું. બીજા દિવસે કાદુના માણસો આવી ગામ આખામાં ફરે છે ને બધે બે દિવા જોઈ ધાડ પાડ્યા વિના પાછા જાય છે. કાદુ ગરમ થાય છે કેમ ધાડ પાડ્યા વિના આવ્યાં. તેના માણસોએ જવાબ આપ્યા બે દિવા બધા જ ઘરે હતાં તેથી શું કરીએ. કાદુ પેલી બહેન પાસે જઈ કહે છે તે આ શું કર્યું? બહેને જવાબ આપ્યો તમે મને બહેન કરી મારું ઘર ન લૂંટવાનું કહેલ પણ ભાઈ તો બહેનના આખા ગામને ન લૂંટે તેથી આજથી સોગન લો કે હવેથી હું લૂંટ કરીશ નહીં. અને કાદુ મકરાણી તે દિવસથી લૂંટારો બની શાહુકાર બને છે. આનું નામ સાચું આતિથ્ય છે.

4. Character is life.

જીવન માં Health, Wealth & Character એમાં સાચું ધન ચારિત્ર છે. દેવલોક માટે મોક્ષ અઘરૂ છે, નારકી માટે અઘરૂ છે પરંતુ મનુષ્ય લોક માટે શક્ય છે. આરાધના કરી મોક્ષે જવાય છે. સાચું સમ્યગ્જ્ઞાન મેળવી ધર્મ કરવાથી મોક્ષે જવાય છે.

જીવનમાં આગળ વધવા માટે સમજો કે મુગુટ માથા ઉપર શાંતિથી શોભે છે અવાજ પણ કરતો નથી. મનને શાંત રાખવાનું છે. જે માથાના મુગુટ નીચે રહેલું છે. હાર થોડો અવાજ કરે છે. જે હૃદય ઉપર રહે છે ને સાંકળાં અવાજ બહુ કરે છે. તેથી પગમાં નીચે પહેરાય છે તો આપણે મુગુટ, હાર કે સાંકળાં બનવું છે તે આપણે નક્કી કરવાનું છે.

શેઠના ઘરમાં લક્ષ્મી - ધન - યશ ને સદાચાર રહેતા હતા. એક દિવસ લક્ષ્મી શેઠને કહે છે તમે મને પૂરી રાખી છે તેથી હું જઉ છું. ધન કહે છે મારો ઉપયોગ નથી. હું જઉ છું. યશ કહે લક્ષ્મી - ધન જાય છે તો હું રહીને શું કરું. તે ત્રણેને શેઠ પ્રેમથી જવાની હા પાડે છે. છેલ્લે સદાચાર કહે છે હું પણ જઉ છું. શેઠ ના પાડે છે. જીવનમાં મને સત્ય સદાચાર વિના નહીં ચાલે તેને રાખે છે.

સદાચારની પાછળ ગયેલા ત્રણે લક્ષ્મી ધન ને યશ પાછા આવે છે ને શેઠ સુખેથી રહે છે. સદાચારીની બધે જીત થાય છે. સત્યવાન વ્યક્તિ સર્વત્ર પૂજાય છે.

આ બધું સમજી "સાથિયો" કરવાનો છે ને ગુણો જીવનમાં લાવી સાચું દર્શન જ્ઞાન ને ચારિત્ર લાવવાનાં છે. આવો આપણે સાચી સમજણ લાવી "સાથિયા" ના સ્વરૂપને જાણી સિદ્ધશીલા ઉપર પહોંચવાનો પ્રયત્ન કરી મોક્ષ માર્ગે આગળ વધવા પ્રભુને અંતરથી પ્રાર્થના કરીએ.

સુગુરૂ શોધી સુધર્મ પાળી જીવનમાં પ્રગતિ કરી ધર્મ માર્ગે આગળ વધી ચરિત્ર/સંયમ લેવા જેવું છે ને મોક્ષ મેળવવા જેવો છે. સંસાર અસાર છે તે જાણી જીવનમાં આગળ વધવા પ્રયત્ન કરી ધર્મક્રિયા સમજીને કરી તેનાં ફળ મેળવવા સાધના કરીએ ને મોક્ષ તરફ પ્રયાણ કરીએ. *-મનુભાઈ ડી. ઝવેરી*

બદલો લેનાર અથવા ચૂકવનાર સાત પ્રકારના પુત્રો

(૧) પોતાનો પૂર્વજન્મનો રાખેલ વારસો લેવા માટે, (૨) પોતાના પૂર્વજન્મનું ઋણ ચૂકવવા માટે, (૩) પૂર્વજન્મનું વેર લેવા માટે, (૪) પૂર્વજન્મમાં મળેલા અપકારના બદલે અપકાર કરવા માટે, (૫) પૂર્વજન્મમાં મળેલા સેવા-સુખના બદલામાં સેવા-સુખ આપવા માટે, (૬) પૂર્વજન્મમાં મળેલા ઉપકારના બદલામાં ઉપકાર કરવા માટે અને (૭) નિરપેક્ષ. આમાંથી જે જે કામ માટે પુત્ર બનીને આવે છે એ કર્મ અનુસાર પોતાનું કામ પૂર્ણ કરીને મૃત્યુ પામે છે અથવા કર્મ અનુસાર દીર્ઘ કાળ સુધી જીવિત રહી બદલો લેતો-દેતો રહે છે.

ફક્ત પુત્ર જ નહિ પત્ની, પતિ, ભાઈ, બહેન, નોકર તથા ગાય વગેરે પશુ સુદ્ધાં કર્મ-ઋણ લેવા કે ચૂકવવા માટે પૂર્વજન્મ અનુસાર સંબંધ બાંધી સીમિત અથવા દીર્ઘ કાળ માટે પ્રાપ્ત થાય છે.

-હનુમાન પ્રસાદ પોદ્દાર (ભાઈજી)

।। લેટ્રીન ના હિમાયતી વિચારેં ।।

મુંબઈ મહાનગરપાલિકાના ૨૧૪૧૪ સફાઈ કામદારો પ્રતિદિન ૬,૫૦૦ ટન કચરો સાફ કરે છે.

ઈતિહાસનાં પુસ્તકોમાં એમ ભણાવવામાં આવતું હતું કે અસ્પૃશ્યતા માનવજાતનું કલંક છે. આપણને એમ પણ ભણાવવામાં આવતું હતું કે, અસ્પૃશ્યતાને કારણે હિન્દુ સમાજ અસંખ્ય ટુકડાઓમાં વહેંચાઈ ગયો હતો. આપણી સમજ એવી છે કે આપણા સમાજમાં હરિજનો સાથે ભેદભાવભર્યો વર્તાવ કરવામાં આવતો હોવાથી તેઓ સામાજિક અન્યાયના અને અત્યાચારોના ભોગ બન્યા હતા. આ કારણે જ ગાંધી બાપુએ અસ્પૃશ્યતા સામે જંગ આદર્યો હતો અને દિલ્હીમાં તેઓ હરિજનોની કોલોનીમાં જઈને રહેતા હતા. ગાંધીજી અને આંબેડકર જેવા નેતાઓના અથાક પ્રયત્નોને કારણે ભારતનાં શહેરોમાંથી અસ્પૃશ્યતા નામનું કલંક તો મહદંશે દૂર થયું છે, ઓછી વ્યાપક છાપ હોવા છતાં પણ *આજના સફાઈ કામદારો અગાઉના હરિજનો કરતાં પણ વધુ અન્યાય, અત્યાચાર, બીમારીઓ અને મોતનો સામનો કરી રહ્યા છે. આજના શહેરોના સફાઈ કામદારોની હાલત અગાઉના હરિજનો કરતાં પણ બદતર છે,* અને તેના માટે અસ્પૃશ્યતા નિવારણની વાતો કરતી આપણી સરકાર જ જવાબદાર છે. *આજની આધુનિક નગર રચના અને ગટર સિસ્ટમને કારણે લાખો સફાઈ કામદારો અસાધ્ય બીમારીઓનો શિકાર બન્યા છે અને હજારો અકાળે અવસાન પામી રહ્યા છે. શહેરોની ગંદકી સાફ કરવાની આ વ્યવસ્થા અસ્પૃશ્યતા કરતાં પણ મોટું કલંક છે.*

ભારતના ગામડામાં રહેતા સફાઈ કામદારે ગામનો કચરો ઉપાડીને ઉકરડામાં નાંખવો પડતો હતો અને સૂકા જાજરૂમાં મળ સફાઈ કરવી પડતી હતી. *આજના સફાઈ કામદારે ૨૦-૨૦ ફૂટ ઊંડી ગટરમાં ઉતરીને અંદરનો કચરો સાફ કરવો પડે છે. તે માટે તેણે કલાકો સુધી માનવ*

મળથી અને ઝેરી રસાયણોથી ઉભરાતી ગટરમાં પોતાનું માથાં સિવાયનું શરીર ડૂબાડી દેવું પડે છે, અને સફાઈ કરવી પડે છે. મુંબઈના ઉકરડાઓમાં હોસ્પિટલનો ઝેરી કચરો પણ ડમ્પ કરવામાં આવે છે, જેમાં અનેક ચેપી રોગોના વિષાણુઓ પણ હોય છે. આ બધા જ કચરાને હેન્ડલ કરવા માટે સફાઈ કામદારોને હાથમોજાંઓ અને ફેસમારક પણ આપવામાં નથી આવતા. આ ઝેરી કચરા વચ્ચે કલાકો સુધી કામ કરવાને કારણે સફાઈ કામદારો પણ અનેક ચેપી અને અસાધ્ય બીમારીઓનો ભોગ બને છે. મુંબઈ શહેરમાં સેંકડો ગેરકાનૂની કતલખાનાંઓ અને મચ્છી-મટનની માર્કેટો આવેલી છે. તેમાંથી જે કચરો પેદા થાય છે, તેમાં પ્રાણીઓના લોહી, માંસ, હાડકાંઓ અને મળમૂત્ર પણ હોય છે. આ બધી જ ગંદકી સફાઈ કામદારોએ સાફ કરવી પડે છે, જેને કારણે તેઓ અનેક રોગોના ભોગ બને છે.

કેન્દ્ર સરકારના સામાજિક ન્યાય અને કલ્યાણ વિભાગે હરિજન દ્વારા માથે મેલું ઉપાડવાની પ્રથાને કાયદા દ્વારા પ્રતિબંધિત જાહેર કરી છે. કોઈ પણ વ્યક્તિ જો હરિજનને માનવમળ ઉપાડવાની કામગીરી સોંપે, તો તેને જેલમાં પૂરી શકાય તેવા કાયદાઓ થયા છે; *પણ શહેરની મ્યુનિસિપાલિટી પોતાના સફાઈ કામદારને માનવ મળમાં ડૂબકી મારવાની ફરજ પાડે, તો તેને માટે કોઈ સજાની જોગવાઈ કાયદામાં રાખવામાં આવી નથી.* આ રીતે સતત ગંદકીમાં રહેવાને કારણે દેશના સફાઈ કામદારો ચર્મરોગ, અસ્થમા, ટી.બી. અને કેન્સર જેવી બીમારીઓનો ભોગ બનીને અકાળે મરણ પામે છે. *એકલાં મુંબઈ શહેરમાં જ દર વર્ષે ૩૦૦ સફાઈ કામદારો ફરજ ઉપર હોય ત્યારે મૃત્યુનો ભોગ બને છે. પુણે શહેરમાં ૩૦ મહિનામાં ૨૨૭ સફાઈ કામદારો અકાળ અવસાન પામ્યા હતા.* ઈન્ડિયન એક્સપ્રેસ નામનાં અંગ્રેજી અખબારમાં પુણેના સફાઈ કામદારોની દયનીય હાલત બાબતમાં લેખમાળા પ્રગટ કરવામાં આવી, તે પછી કેન્દ્ર સરકારને આંચકો લાગ્યો, અને તેણે મહારાષ્ટ્રના મુખ્ય પ્રધાન વિલાસરાવ દેશમુખને આ

સફાઈ કામદારોના સ્વાસ્થ્ય માટે પગલાં લેવાની તાકીદ કરી.

મુંબઈ શહેરમાં કચરો વધી રહ્યો છે. પણ સફાઈ કામદારોની સંખ્યા ઘટી રહી છે, જેને કારણે કામના બોજામાં સતત વધારો થઈ રહ્યો છે. ઈ.સ. ૧૯૭૮ની સાલમાં મુંબઈ શહેરની વસતિ ૭૮ લાખની હતી ત્યારે પ્રતિદિન ૩,૦૦૦ ટન કચરો પેદા થતો હતો, જેને સાફ કરવા માટે ૨૨,૦૦૦ કામદારોને નોકરીમાં રાખવામાં આવ્યા હતા. ઈ.સ. ૨૦૦૭માં મુંબઈની વસતિ ૧.૪૦ કરોડ ઉપર પહોંચી છે. હવે રોજનો ૬,૫૦૦ ટન કચરો પેદા થાય છે પણ તેને સાફ કરવા માટે સફાઈ કામદારોની સંખ્યા ઘટાડીને ૨૧,૪૧૪ની કરી નાંખવામાં આવી છે. આ કારણે દરેક કર્મચારી ઉપર કામનો બોજો બમણા કરતાં વધી ગયો છે. તેની સરખામણીએ દિલ્હી શહેરની વસતિ ૧.૩૭ કરોડ હોવા છતાં ત્યાં ૪૯,૦૦૦ સફાઈ કામદારો છે. આ રીતે ગરીબ સફાઈ કામદારોનું મ્યુનિસિપાલિટી દ્વારા જ શોષણ કરવામાં આવે છે.

સફાઈ કામદારોએ જે માનવતાહીન વાતાવરણમાં કામ કરવું પડે છે, તેનું કારણ શહેરોની ગટર વ્યવસ્થા છે અને આ ગટર વ્યવસ્થાનું કારણ ફ્લશ ટાઈપના જાજરૂ છે. ગામડાંઓમાં ગટરની સિસ્ટમ ન હોવાને કારણે હરિજનોએ માત્ર ઘન કચરો ઉપાડીને ઉકરડે નાંખી દેવાનો રહે છે, જ્યારે શહેરમાં ગટરો હોવાને કારણે સફાઈ કામદારે ગંદાં પાણીમાં કલાકો સુધી પોતાનું શરીર ડૂબાડી રાખવું પડે છે. *ગટરમાંથી ઝેરી ગેસ નીકળવાને કારણે દર વર્ષે સંખ્યાબંધ સફાઈ કામદારોનાં મોત થાય છે.* પુણેના સફાઈ કામદારોની હાલત તો એટલી બધી કફોડી છે કે, લાઈફ ઈન્સ્યૂરન્સ કોર્પોરેશન ઓફ ઈન્ડિયાએ તેમનો વીમો લેવાનો પણ ઈનકાર કરી દીધો હતો. મ્યુનિસિપાલિટીના નિયમો મુજબ પ્રત્યેક સફાઈ કામદારને તેની સલામતી માટે હાથમોજાં, રેઈનકોટ, ગમબૂટ, ફેસમાસ્ક વગેરે આપવા આવશ્યક છે. અગાઉ આ ઉપકરણો ત્રણ વર્ષ સુધી ચાલતાં હતાં. હવે હાલત એવી ખરાબ છે કે આ સાધનો એક અઠવાડિયામાં જ ખતમ થઈ જાય છે. મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનના ભ્રષ્ટ અધિકારીઓ આ સાધનોની ખરીદીમાં કરોડો રૂપિયાનો

ભ્રષ્ટાચાર આચરે છે.

જે સફાઈ કર્મચારીઓ આખાં મહા-નગરની ગંદકી સાફ કરે છે, તેમને રહેવા માટેનું સુવિધાપૂર્ણ ઘર પણ આપણી સરકાર ઉપલબ્ધ કરાવી શકતી નથી. મુંબઈના ૨૧,૪૧૪ સફાઈ કર્મચારીઓ માટે માત્ર ૫,૭૫૮ સ્ટાફ ક્વાટર્સ જ પૂરાં પાડવામાં આવ્યાં છે. બાકીના કર્મચારીઓ પોતાના પરિવાર સાથે ઝૂંપડ-પટ્ટીઓમાં જ રહે છે. સફાઈ કર્મચારીઓને જે ક્વાટર્સ આપવામાં આવ્યાં છે, તે માત્ર એકલા માણસને જ રહેવા માટેનાં તેનું ક્ષેત્રફળ ૧૦૦ થી ૧૮૦ ચોરસ ફૂટ જેટલું છે. આ ક્વાટર્સનું બાંધકામ એટલું નબળું છે કે તેમાં ચોમાસામાં છત્રી લઈને ઘરમાં બેસવું પડે છે. આજે મોટા ભાગના સફાઈ કામદારો આટલી સાંકડી જગ્યામાં પોતાના પરિવાર સાથે રહે છે. કોઈ કર્મચારી પોતાની આખી કારકિર્દી નોકરી કરે અને નિવૃત્ત થાય ત્યારે તેની પાસે આ ક્વાટર્સ ખાલી કરાવવામાં આવે છે. આ ઘર ટકાવી રાખવા માટે સફાઈ કામદારના ભણેલા-ગણેલા સંતાને પણ સફાઈ કામદાર તરીકે નોકરી કરવી પડે છે. આ લાચારીના કારણે જ મુંબઈ મહાનગરપાલિકાને સફાઈ કામદારોની કમી મહેસૂસ થતી નથી. જો આ લાચારી ન હોય તો બહુ ઓછા લોકો આ ગંદી નોકરી કરવા તૈયાર થાય. જો કોઈ કર્મચારીનું ફરજ દરમિયાન મરણ થાય તો પોતાનું ઘર ટકાવી રાખવા તેમના એક પુત્રે પોતાની નોકરી છોડીને પણ સફાઈ કામદાર બનવું પડે છે.

મુંબઈમાં આવેલા શ્રી સિદ્ધિ વિનાયક મંદિરમાં ચાલતા ભ્રષ્ટાચારને ડામવા મેદાને પડેલા શ્રી કેવલ સામલાનીએ શહેરના ૨૧,૪૧૪ સફાઈ કામદારોની બદતર હાલતમાં સુધારા માટે પણ જંગ આદર્યો છે. માહિતી મેળવવાના અધિકારનો ઉપયોગ કરીને તેમણે સફાઈ કામદારોની હાલત વિષે વિગતો મેળવી મુંબઈ હાઈકોર્ટમાં એક જાહેર હિતની અરજી કરી છે. આ નગરપાલિકાના મેયરના બંગલાના સમારકામ પાછળ તાજેતરમાં કરોડો રૂપિયાનો ખર્ચ કરવામાં આવ્યો હતો. સરકારી અધિકારીઓની કચેરીઓના ઈન્ટિરિયર ડેકોરેશન પાછળ લાખો રૂપિયા ખર્ચવામાં આવે છે, પણ સફાઈ

કામદારોની હાલત સુધારવા માટે ફાળવવામાં આવતાં નાણાં પણ આ અધિકારીઓ હજમ કરી જાય છે.

આધુનિક સમાજમાં આપણે જ્ઞાતિ-જાતિની પ્રથા નાબુદ કરી હોવાનો દાવો કરીએ છીએ પણ જાણીને આશ્ચર્ય થશે કે મુંબઈ મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનમાં નોકરી કરતાં ૯૦ ટકા કામદારો હરિજન છે, જેમાંના ૫૦ ટકા તો સૌરાષ્ટ્રની મેઘવાળ જ્ઞાતિના સભ્ય છે. આ હરિજનો કહે છે કે ગામડાંઓમાં તેમનું જેટલું શોષણ નહોતું થતું તેના કરતાં અનેક ગણું શોષણ મુંબઈ જેવા મહાનગરોમાં થઈ રહ્યું છે, જેના માટે ગટરના પાણીનો અને કચરાનો નિકાલ કરવા માટેની ક્ષતિપૂર્ણ સિસ્ટમ જવાબદાર છે. જ્યાં સુધી આપણો સમાજ ફ્લશ ટાઈપના જાજરૂનો અને તેના માટે ઊભી કરવામાં આવતી ગટર સિસ્ટમનો વિકલ્પ નહીં શોધી કાઢે ત્યાં સુધી લાખો સફાઈ કર્મચારીઓ રોગચાળાનો શિકાર બન્યા કરશે. જો આ હરિજનોને આપણે અન્યાય, અત્યાચારો અને બીમારીઓથી બચાવવા માંગતા હોઈએ તો માથે મેલું ઉપાડવાની પ્રથાને ગેરકાયદે જાહેર કરી છે તેમ ગટરમાં મેલું વહાવી દેવાની પ્રથાને પણ ગેરકાયદે જાહેર કરવી જોઈએ

દર મહિને ૨૫ સફાઈ કામદારોનો ભોગ લેતી મુંબઈની ગટર સિસ્ટમ

ઈતિહાસનાં પાઠ્યપુસ્તકોમાં આપણે વારંવાર વાંચીએ છીએ કે પ્રાચીન ભારતમાં પછાત વર્ગના લોકો અસ્પૃશ્યતાનો અને સામાજિક ભેદભાવનો ભોગ બન્યા હતા. જૂના જમાનામાં હરિજનોને માથે મેલું ઉપાડવું પડતું હતું તેને આપણે રાસ્ટ્રીય શરમ માનતા હતા અને આ પ્રથાને નાબુદ કરવા આપણી સરકાર દેશભરમાં ફ્લશ ટાઈપના ટોઈલેટ માટે પ્રચાર કરી રહી છે.

જોકે આજે પણ આપણા દેશમાં અનેક સ્થળોએ સૂકાં જાજરૂ અસ્તિત્વ ધરાવે છે, જેમાં મળમૂત્રના નિકાલ માટે હરિજનોની સેવા લેવામાં

આવે છે. કેન્દ્રના સામાજિક ન્યાય મંત્રાલયે આ પ્રકારના સૂકા જાજરૂની નાબૂદી માટે ઝુંબેશ શરૂ કરી છે અને જેઓ હરિજન પાસે મેલું ઉપડાવે તેમને જેલની સજા કરવાની જોગવાઈ પણ કાયદામાં કરવામાં આવી છે. સરકારના આ પ્રયાસો ઉપરથી કોઈને પણ એવું માનવાનું મન થાય કે સૂકા જાજરૂને બદલે જે ફ્લશ સિસ્ટમનાં ટોઈલેટની સ્થાપના કરવામાં આવે છે, તેમાં હરિજનોના આરોગ્યને કોઈ ખતરો નથી, પણ હકિકત તેનાથી તદ્દન વિપરીત છે. જૂના જમાનામાં હરિજન માથે મેલું ઉપાડીને જતો હતો, તેને કારણે કદાચ બહુ તો તેના આરોગ્ય ઉપર અસર થતી હશે, પણ આધુનિક પદ્ધતિની ગટરો સાફ કરવા માટે દર વર્ષે દેશમાં હજારો હરિજનોએ પોતાના જીવ પણ ગુમાવવા પડે છે.

મુંબઈ શહેરની ગટરો સાફ કરવાનું કાર્ય બોમ્બે મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશન (બી. એમ. સી)ના જે કર્મચારીઓ કરી રહ્યા છે, તેઓ કોઈ જાતની અસ્પૃશ્યતાનો ભોગ નથી બનતા, તો પણ તેમણે પોતાનો જીવ ગુમાવવાની તૈયાર રાખવી પડે છે. બી.એમ.સી. તરફથી બહાર પાડવામાં આવેલા આંકડાઓ મુજબ ઈ.સ. ૨૦૦૪-૦૫ની સાલમાં કુલ ૨૮૮ મ્યુનિસિપલ કર્મચારીઓ ગટર સાફ કરવાને કારણે માંદા પડીને મરણને શરણ થયા હતા. તેમાં પણ અમુક કર્મચારીઓ ગટરમાં ઉતરીને સફાઈનું કાર્ય કરી રહ્યા હતા, ત્યારે જ ઝેરી ગેસ બહાર નીકળવાને કારણે ગૂંગળાઈને મરણ પામ્યા હતા. મુંબઈના સફાઈ કામદારોનું પ્રતિનિધિત્વ કરતી સંસ્થાએ જ્યારે માહિતી મેળવવાના અધિકારના કાયદા હેઠળ અરજી કરી, ત્યારે તેમને સત્તાવાર રીતે આ માહિતી પૂરી પાડવામાં આવી હતી.

બોમ્બે મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશને આપેલી માહિતી મુજબ ઈ.સ. ૧૯૯૬ થી ૨૦૦૬નાં દશ વર્ષમાં મહાનગર મુંબઈના ૨૪ પૈકી ૧૪ વોર્ડમાં જ ફરજ બજાવતા કુલ ૨,૦૩૯ કર્મચારીઓ અકાળ અવસાનને વર્યા હતા. આ આંકડાઓમાં જે કામદારોને નાળાની અને હોસ્પિટલની સફાઈ માટે કોન્ટ્રેક્ટના ધોરણે રાખવામાં આવે છે, તેમનો સમાવેશ થતો નથી. અતિરિક્ત

મ્યુનિસિપલ કમિશનર આર. એ. રાજીવ કબૂલ કરે છે કે મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનના જેટલા પણ કર્મચારીઓ છે, તેમાં સફાઈ કામદારોનો મૃત્યુદર સૌથી વધુ છે. હવે મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશન આ કર્મચારીઓ માટે એક લાખ રૂપિયાના વીમાની યોજના બનાવી રહી છે, પણ તેમને ગટર સાફ કરવાનાં કામમાંથી મુક્તિ મળે તેવી કોઈ સંભાવના નજીકના ભવિષ્યમાં દેખાતી નથી. મુંબઈ મહાનગરપાલિકાના સફાઈ ખાતામાં જેટલા કર્મચારીઓ કામ કરી રહ્યા છે, તેમાંના ૯૦ ટકા કરતાં પણ વધુ કર્મચારીઓ હરિજન છે.

તારદેવના આંબેડકર નગરમાં રહેતા પૂંજાલાલ વાણેલની માતા પણ બી.એમ.સીના સફાઈ ખાતામાં નોકરી કરતી હતી. સફાઈ ખાતાંમાં નોકરી કરતાં કર્મચારીઓને બી.એમ.સી. તરફથી રહેવા માટે સ્ટાફ ક્વાટર્સ આપવામાં આવે છે. કોઈ કર્મચારીનું અવસાન થાય છે. તેના પરિવારજનોએ આ ક્વાટર્સ ખાલી કરી અન્ય વ્યવસ્થા ઊભી કરવાની રહે છે. પૂંજાલાલની માતાનું યુવાન વયે બીમારીથી અવસાન થયું, ત્યારે તેના પરિવાર પાસે રહેવા માટે બીજી કોઈ જગ્યા નહોતી, જેને કારણે ઘરને ટકાવી રાખવા માટે તેણે સફાઈ કામદારની નોકરીમાં જોડાઈ જવું પડ્યું. પૂંજાલાલ ૨૦ વર્ષની ઉંમરે બી.એમ.સી.માં જોડાયો અને તે ૩૦ વર્ષથી ગટરો સાફ કરવાની કામગીરી બજાવી રહ્યો છે. ગટરો સાફ કરવાને કારણે તેની ચામડી કાળી પડી ગઈ છે અને ભીંગડા ઉખડી રહ્યા છે. તે જ્યારે દવા માટે મ્યુનિસિપલ હોસ્પિટલમાં ગયો, ત્યારે ડૉક્ટરે તેને તપાસીને કોઈ મલમ લખી આપ્યો, પણ હોસ્પિટલના સ્ટોરમાં તે મલમ ન હોવાથી તે પાછો આવ્યો. તેની પાસે કેમિસ્ટની દુકાનેથી આ મલમ ખરીદવા જેટલા રૂપિયા નહોતા.

સફાઈ કામદારો મુંબઈની જરીપુરાણી ગટરોમાં ઉતરે છે અને તેમનું આખું શરીર માનવમળમાં ડૂબી જાય તે રીતે તેમણે આ ગટરો સાફ કરવી પડે છે. જો આ કર્મચારીઓ પોતાના જીવને જોખમમાં મૂકતી લાચારીથી આ કાર્ય ન કરતા હોય તો આખા મુંબઈ શહેરના રસ્તાઓની ગટરો ઊભરાતી જોવા મળે. આ કર્મચારીઓ લગભગ આખો દિવસ ગટરમાં રહેતા હોવાથી તેમના શરીરમાં અને

કપડામાં પણ એક જાતની દુર્ગંધ આવતી હોય છે. તેઓ જે સ્થળે કામ કરે છે, ત્યાં તેમને સ્નાન કરવાની કોઈ સુવિધા આપવામાં આવતી ન હોવાથી તેમણે આ ગંધાતા શરીરે જ ટ્રેન કે બસમાં બેસીને પોતાના ઘરે જવું પડે છે.

જે. જે. હોસ્પિટલના ટી.બી. અને શ્વસન તંત્રના રોગોના વિભાગના વડા ડૉ. કે. સી. મોહંતી કહે છે કે, "સફાઈ કામદારો આખો દિવસ ગંદકીમાં જ કામ કરતા હોવાથી તેમની રોગપ્રતિકારક શક્તિ હણાઈ જતી હોય છે. આ કારણે તેઓ ગંભીર પ્રકારની ચામડીની અને શ્વસનતંત્રની બીમારીનો ભોગ બને છે અને મોટા ભાગના સફાઈ કામદારો ૩૫ થી ૪૫ની ઉંમર વચ્ચે જ અકાળે મરણ પામે છે. આ કામદારો પોતાની શારીરિક અને માનસિક પીડાને ભૂલવા ચિક્કાર દારૂ પીતા હોવાથી તેઓ લિવરની બીમારીનો પણ ભોગ બને છે અને અકાળે અવસાન પામે છે. નવાઈની વાત એ છે કે બી.એમ.સી. તરફથી દર ત્રણ મહિને આ સફાઈ કામદારો માટે ૨૨,૦૦૦ ગ્લોબ્ઝ ખરીદવામાં આવે છે, પણ આ ગ્લોબ્ઝ ક્યારેય કામદારો સુધી પહોંચતા નથી. મ્યુનિસિપાલિટીના અધિકારીઓ આ ગ્લોબ્ઝના રૂપિયા હજમ કરી જાય છે. બી.એમ.સી.ની ચોકીઓમાં આ કામદારો માટે કપડાં બદલવાની પણ સવલત નથી.

મુંબઈ શહેરની ગટરો સાફ કરનારા કર્મચારીઓની જેવી દયનીય પરિસ્થિતિ છે, તેવી પરિસ્થિતિ દેશનાં એવાં તમામ શહેરોમાં છે, જ્યાં ફ્લશ ટાઈપના જાજરૂ અને આધુનિક ગટર વ્યવસ્થા અસ્તિત્વ ધરાવે છે. મહારાષ્ટ્રનાં પુણે શહેરમાં ગટરો સાફ કરતા ૨૨૭ સફાઈ કામદારો ૩૦ મહિનામાં જ અકાળ અવસાન પામ્યા હતાં. તેમની સરાસરી ઉંમર ૪૫ વર્ષની જ હતી. આ કર્મચારીઓનાં મરણનું કારણ ટી.બી., કેન્સર, હૃદયરોગ અને કમળા જેવી ગંભીર બીમારીઓ હતી. પુણે મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનના સફાઈ ખાતામાં કુલ ૬,૮૨૮ કર્મચારીઓ કામ કરે છે. તેઓ બધા આરોગ્યની સમસ્યાઓથી પીડાઈ રહ્યા છે. પુણે મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશન તરફથી આ રીતે ફરજ દરમિયાન મૃત્યુ પામતા કામદારના સગાને ૧૫,૦૦૦/- રૂપિયાનું વળતર ચૂકવવામાં આવે છે. જે કર્મચારીઓ આપણા શહેરની ગંદકી સાફ

કરવા માટે પોતાની જિંદગીનો ભોગ ધરી દે છે, તેમની જિંદગીની આટલી જ કિંમત આંકવામાં આવે છે.

સુપ્રિમ કોર્ટના એક ચુકાદા મુજબ સફાઈ ખાતામાં કામ કરતા તમામ કર્મચારીઓને ગ્લોબ્ઝ, ફેસ માસ્ક, ગમબૂટ વગેરે સુરક્ષાનાં સાધનો પૂરાં પાડવાની પ્રત્યેક મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનની ફરજ છે, પણ ભારતનાં કોઈ પણ શહેરમાં આ પ્રકારનાં સાધનો પૂરાં પાડવામાં આવતાં નથી. સફાઈ ખાતાનાં કર્મચારીઓએ ગટરો સાફ કરવા ઉપરાંત હોસ્પિટલના જીવાણુયુક્ત કચરાની પણ સફાઈ કરવાની હોય છે, જેના દ્વારા તેમના શરીરમાં ચેપી રોગના વિષાણુઓ પ્રવેશી જવાની સંભાવના પણ રહે છે. આ પ્રકારનું કાર્ય કરવા માટે હરિજન સિવાય કોઈ સમાજના કામદારો તૈયાર થતા નથી. આ કારણે મોટાં ભાગનાં શહેરોમાં ગટર સાફ કરવાનું કાર્ય હરિજનો કરે છે.

જો એકલાં મુંબઈ શહેરમાં દર વર્ષે ૨૮૮ સફાઈ કર્મચારીઓનાં મોત થતાં હોય, તો *સમગ્ર ભારતમાં દર વર્ષે ૨.૮૮ લાખ સફાઈ કામદારોનાં મોત થતાં હશે,* એવી ત્રિરાશી સહેજે માંડી શકાય. પ્રાચીન ભારતમાં હરિજનો કદાચ અસ્પૃશ્યતાનો ભોગ બનતાં હશે, તેમણે માથે મેલું ઉપાડવું પડતું હશે, પણ જેમાં જીવનું જોખમ છે, તેવું હલકું કામ કરવાની ફરજ તો તેમને પાડવામાં આવતી નહોતી. જો વર્તમાન કાયદા મુજબ હરિજનને માથે મેલું ઉપાડવાની ફરજ પાડનારને જેલની સજા થઈ શકતી હોય, તો માનવીના મળમૂત્રમાં સ્નાન કરવાની તેમને ફરજ પાડનારા મ્યુનિસિપલ અધિકારીઓને શી સજા થવી જોઈએ ? આ હરિજનોને વિટંબણાઓમાંથી મુક્ત કરવા આ ગટર સિસ્ટમનો અને ફ્લશ ટાઈપના ટોઈલેટનો વિકલ્પ શોધવો જોઈએ, એમ નથી લાગતું ?

-સમસ્ત મહાજન નેટવર્ક

સાધ્વાચાર અને પર્યાવરણ શુદ્ધિ

પૂ. મુનિરાજ શ્રી હિત વિજયજી મહારાજ

લેખાંક : બીજો

જૈન સાધુ-સાધ્વીના નિર્દોષ-નિષ્પાપ આચારોને કારણે ગંદકી, જીવોત્પત્તિ અને રોગચાળાનો અભાવ

સર્વવિરત મનુષ્યો : પાપથી ભય પામીને સંસારનો ત્યાગ કરનારા અને સર્વથા પાપના પચ્ચક્ખાણ (ત્યાગ) વાળા પૂ. સાધુભગવંતો અને સાધ્વીજી મહારાજો. ત્યાગી અને તપસ્વી હોય છે. એમનું જીવન નિયમબદ્ધ હોવાથી એઓ યથેચ્છપણે કોઈ પ્રવૃત્તિ કરી શકતાં નથી. એમને પ્રાણાતિપાત (હિંસા) વિરમણ આદિ પાંચ મહાવ્રતોનું અને છટ્ઠા રાત્રિ ભોજન વિરમણ વ્રતનું પાલન કરવાનું હોય છે, તેમ જ એમને જ્ઞાનાચાર આદિ પાંચ આચારો પાળવાના હોય છે, તથા ઈર્યાસમિતિ આદિ પાંચ સમિતિ અને ત્રણ ગુપ્તિનું પાલન કરવાનું હોય છે. ખાવું-પીવું, બોલવું-ચાલવું વગેરે સર્વ બાબતોમાં એમનું જીવન એટલું સંયમી હોય છે કે એમને બરફ, આઈસ્ક્રીમ, પાન-મસાલા-માવા વગેરે વસ્તુઓનો સર્વથા ત્યાગ હોય છે. એમને ધૂમ્રપાન આદિ કોઈ પણ જાતનું વ્યસન હોતું નથી.

પાંચ સમિતિમાં 'પારિષ્ઠાપનિકા' નામની પાંચમી સમિતિ છે. 'પારિષ્ઠાપનિકા સમિતિ' એટલે મળ, મૂત્ર, શ્લેષ્મ, થૂંક, બળખા વગેરે શરીરના મળનો અને જીર્ણશીર્ણ થયેલા વસ્ત્ર, પાત્ર, કાગળ વગેરે નકામી વસ્તુઓનો ત્યાગ જીવહિંસા અને જીવોત્પત્તિ ન થાય એ રીતે વિધિ સહિત જયણાપૂર્વક કરવાનો હોય છે. જૈન સાધુ-સાધ્વીઓને આ પારિષ્ઠાપનિકા સમિતિનું પાલન કરવાનું હોવાથી તેઓ સ્વચ્છંદપણે જ્યાં ત્યાં, જેમ તેમ શરીરના મળનો અને નકામી વસ્તુઓનો ત્યાગ કરી શકતા નથી.

પેટના મળનો ત્યાગ શક્ય હોય ત્યાં સુધી ગામની બહાર દૂર જઈને નિર્જન અને નિર્જીવ ભૂમિમાં કરે છે. એનો મોટો ભાગ તરત જ જમીનમાં શોષાઈને માટી સાથે ભળી જાય છે અને સપાટી ઉપરનો ભાગ સૂર્યના તાપથી અને વાયુથી થોડા સમયમાં જ સુકાઈ જાય છે. એનો ભેજ જરા પણ રહેતો નથી. ભેજના અભાવે ગંદકી થતી નથી. ગંદકી તો જ્યાં ભેજ રહેતો હોય ત્યાં જ થતી હોય છે. ગંદકીના અભાવે માખી-મચ્છર વગેરે જીવોની ઉત્પત્તિ અને રોગચાળા વગેરે થતાં નથી.

જૈન સાધુ-સાધ્વીઓ થૂંક, બળખા, શ્લેષ્મનો ત્યાગ રાખની કૂંડીમાં કે જાડા કપડામાં કરી એમાં એને મસળીને એને બે ઘડીમાં (૪૮ મિનિટમાં) સૂકવી નાખે છે, એનો ત્યાગ જ્યાં ત્યાં જેમ-તેમ રસ્તા ઉપર કરતાં નથી; એથી એ અંગેની પણ એમના દ્વારા જરાય ગંદકી થતી નથી અને માખી-મચ્છર વગેરે જીવોની ઉત્પત્તિ ને રોગચાળો પણ થતાં નથી.

જીર્ણ વસ્ત્રોનાં ચીંથરાં, નકામા કાગળના ટુકડા અને બીજી પણ નકામી વસ્તુઓનો ત્યાગ ગામની બહાર જઈને નિર્જન અને નિર્જીવ ભૂમિ ઉપર કરે છે. પણ પોતાની વસ્તી અર્થાત્ ઉપાશ્રયની આસપાસમાં રસ્તા ઉપર કે ગામમાં કોઈ પણ જગ્યાએ નાખતા નથી. તેથી સેંકડો સાધુ-સાધ્વીઓ પણ જ્યાં વસતા હોય ત્યાં એમનાથી ઉકરડો તો થાય જ નહિ. ઘણી જગ્યાએ ગામની મધ્યમાં ઉકરડા હોય છે, પણ એમાંથી કોઈ સાધુ-સાધ્વીના કપડાનું એક ચીંથરું, પાત્રાનો એટલે કે કાષ્ઠ પાત્રનો કે એમના કાગળનો એક ટુકડો અથવા એંઠવાડનો અંશ પણ શોધી આપે એ બનવાજોગ નથી.

સાધુ-સાધ્વીને રસોઈ કરવાની હોતી નથી. ગૃહસ્થોને ઘેરથી માધુકરી વૃત્તિથી ઉદરપૂર્તિ થાય એટલી જ ભિક્ષા લાવીને વાપરવાની હોય છે. એઓ ભિક્ષાનો એક કણ પણ એંઠો મૂકતાં નથી. પાણીથી ત્રણ વાર ભિક્ષાપાત્ર ધોઈને એ પાણી પી જાય છે અને ભીના પાત્રને કપડાથી લૂછી નાખીને એ કપડું પણ સુકવી નાખે છે. એમને પાત્ર ઉટકવાનાં હોતા નથી અને એંઠવાડનો અંશ પણ

હોતો નથી, એથી તેઓ જયાં વસે ત્યાં ઉકરડામાં એમના એંઠવાડનો અંશ પણ પડતો નથી, તેથી પણ એમના દ્વારા માખી-મચ્છર વગેરે જીવોની ઉત્પત્તિ થતી નથી અને રોગચાળો પણ થતો નથી.

માખી, મચ્છર, ઉંદર, વીંછી, વાંદા વગેરે જીવોની ઉત્પત્તિનું કારણ ભેજવાળો ઉકરડો છે. જુદા-જુદા ગૃહસ્થો દ્વારા ઉકરડામાં એંઠવાડ વારંવાર પડ્યા કરતો હોવાથી ઉકરડો અને એની આસપાસની જમીન હંમેશાં ભેજવાળી જ રહ્યા કરે છે, એને સુકાવાનો અવકાશ જરાય રહેતો નથી, તેથી એમાં જીવોત્પત્તિ થયા જ કરે છે અને રોગચાળો ફેલાયા જ કરે છે.

સંસારત્યાગી એવાં સાધુ-સાધ્વી કૂતરાં-બિલાડાં વગેરે પશુઓ અને મોર-પોપટ વગેરે પંખીઓ પાળતાં નથી. તેથી પાળેલા પશુ-પંખી-નિમિત્તક પણ મળમૂત્રાદિકની ગંદકી ઉપાશ્રયની આસપાસમાં થતી નથી.

ગંદકી, આગ અને ઉકરડાના કારણ-ભૂત, પૃથ્વી (માટી વગેરે), પાણી, અગ્નિ, વાયુ અને વનસ્પતિ આ પાંચનો વપરાશ ગૃહસ્થ જીવનમાં હોય છે, પાણી સિવાયનાં ચારનો ઉપયોગ સાધુ જીવનમાં હોતો નથી. સાધુ-સાધ્વી કાચા પાણીનો ઉપયોગ કે એનો સ્પર્શ પણ કરતાં નથી. એઓ પીવામાં અને કાપ કાઢવામાં અર્થાત્ વસ્ત્ર પ્રક્ષાલનમાં તેમજ અનિવાર્ય દેહ શુદ્ધિ માટે ઉકાળેલા અચિત્ત જળનો જ ઉપયોગ કરે છે, એ પણ જેમ બને તેમ ઓછો કરે છે, એનો દુરુપયોગ કે બગાડ કરતાં નથી, તેઓ સ્નાન કરતાં નથી, તેથી ઉપાશ્રયની આસપાસમાં પાણી ઢોળાતું નથી, જમીન ભેજવાળી રહેતી નથી, તેથી પણ ઉપાશ્રયની આસપાસમાં ગંદકી અને જીવોત્પત્તિ થતી નથી.

સાધુ-સાધ્વી કાપનું પાણી ઉઘાડા આકાશવાળી, નિર્જીવ અને સૂકી જમીન ઉપર પરઠવે છે, અર્થાત્ વિધિપૂર્વક ત્યાગ કરે છે. એનો મોટો ભાગ તરત જ જમીનમાં શોષાઈને માટી સાથે ભળી જાય છે અને સપાટી ઉપરનો ભાગ સૂર્યનાં તાપથી તેમજ વાયુથી થોડી જ વારમાં સુકાઈ જાય છે, તેથી ભેજ રહેતો નથી, ભેજના અભાવે ગંદકી થતી નથી અને ગંદકીના અભાવે

જીવોત્પત્તિ પણ થતી નથી.

સાધુ-સાધ્વી અગ્નિકાયનો ઉપયોગ કરતાં નથી, એથી એમને ગેસ, કેરોસીન, પેટ્રોલ, વીજળી વગેરેનો ઉપયોગ પણ કરવાનો હોતો નથી અને રસોઈ પણ કરવાની હોતી નથી, તેથી ઉપાશ્રયમાં આગ લાગવાના બનાવો બનવાની સંભાવના રહેતી નથી. એ કારણથી ઉપાશ્રયની આસપાસમાં વસનારા લોકોના જાનમાલની સલામતી રહે છે. તેમને ઉપાશ્રય તરફથી આગનો જરા પણ ભય રહેતો નથી અને રસોઈ-નિમિત્તક કોઈ ઉપદ્રવ પણ થતો નથી. ઉપાશ્રયને બદલે કારખાનાં વગેરે હોય તો આસપાસવાળાને આગનો ભય અને બીજી તકલીફો કેટલી રહે એ પણ વિચારણીય બાબત છે.

સાધુ-સાધ્વી સચિત્ત (જીવવાળી વસ્તુ)ના ત્યાગી હોવાથી એમને શાકભાજી-ફળ વગેરે લાવવાનું હોતું નથી, એઓ લીલા-સૂકા દાતણનો ઉપયોગ પણ કરતાં નથી, તેથી એ નિમિત્તનો છાલ-ગોટલા-દાતણની ચીર વગેરેનો કચરો પણ ઉપાશ્રયની આસ-પાસમાં ક્યાંય પડતો નથી. એમને બજાર માંથી કોઈ પણ ચીજ ખરીદીને લાવવાની હોતી નથી, તેથી એ સંબંધી કાગળ, પ્લાસ્ટિકની કોથળીઓ, પૂંઠાના કપ, નાસ્તાની રકાબીઓ, બરફની સળી વગેરેની કોઈ પણ જાતનો કચરો પણ એમના દ્વારા ઉપાશ્રયની આસપાસમાં પડતો નથી. અત્યંત સંયમી જીવનને કારણે એમના જીવનમાં કચરાનો સદંતર અભાવ હોય છે. એઓ ઓછામાં ઓછી જરૂરિયાતથી જીવે છે, જરૂરી વસ્તુઓની વપરાશ પણ જેમ બને તેમ ઓછો કરે છે. વપરાઈને નકામી બનેલી વસ્તુઓનો ત્યાગ ગામની બહાર નિર્જન ને નિર્જીવ ભૂમિ ઉપર કરે છે, તેથી એમના દ્વારા ગંદકી થતી નથી, ઉકરડો થતો નથી, રોગચાળો ફેલાતો નથી, એમની આસપાસમાં વસનારા કોઈનેય કોઈ પણ જાતનો અનર્થ કે ઉપદ્રવ થતો નથી.

સાધુ-સાધ્વી ફટાકડા ફોડતાં નથી, તેથી એ અંગેનો કાગળનો કચરો પડતો નથી અને બાળક, બીમાર માણસો વગેરેને ધડાકાના અવાજનો ઉપદ્રવ

થતો નથી.

સાધુ-સાધ્વી ભાષાસમિતિ અને વચન-ગુપ્તિરૂપ આચારનું પાલન કરતાં હોવાથી દિવસે પણ જરૂર પૂરતું જ બોલે છે અને રાત્રે તો પ્રાયઃ બોલતાં નથી, ખાસ કારણે બોલવું પડે ત્યારે અવાજ કાઢ્યા વગર અથવા એકદમ ધીમા અવાજે બોલે છે.

ઉપાશ્રયમાં ઘોડિયા-પારણાં બંધાતા નથી, તેથી રાત્રે બાળકના રડવાનો અવાજ પણ ત્યાં હોતો નથી. સાધુ-સાધ્વીઓએ પુત્રાદિક પરિવારનો ત્યાગ કરેલો હોવાથી બાળકોની બોલબેટ આદિ રમતનો અને ઘોંઘાટનો ત્રાસ તેમ જ બોલ દ્વારા થતા નુકસાનનો કે બોલ વાગવાનો ભય પણ હોતો નથી. વળી ત્યાં બાળકો દ્વારા પડતા કચરાનો પણ અભાવ હોય છે.

આમ સાધુ-સાધ્વી દ્વારા કોઈનેય ઘોંઘાટનો ત્રાસ હોતો નથી. એમનાથી રાત્રે કોઈનીય નિદ્રામાં ખલેલ પહોંચતી નથી, બીમાર માણસોને અને ભણતાં-ગણતાં વિદ્યાર્થી-વિદ્યાર્થીનીઓને ઘોંઘાટજન્ય ત્રાસ વેઠવો પડતો નથી.

આપણા વસવાટની આસપાસ ઉપાશ્રયનું નિર્માણ કેટલું બધું લાભદાયક બની શકે, એ આપણે વિસ્તારથી વિચાર્યું.

હવે વિચારણીય બાબત એ છે કે, ઉપાશ્રયની જગ્યાએ ગૃહસ્થોને વસવાના ફ્લેટો હોય તો ત્યાં તેમના દ્વારા કચરો અને એંઠવાડ કેટલા મોટા પ્રમાણમાં પડતો હોય ? તેમના દ્વારા નખાતા એંઠવાડથી ગંદકી કેટલી બધી થતી હોય અને એ ગંદકીને કારણે માખી-મચ્છર વગેરે જીવોની ઉત્પત્તિ કેટલી બધી થતી હોય ?

બહુમાળી ફ્લેટોમાં વસનારા કમનસીબ લોકો રાંધેલી રસોઈમાંથી સુપાત્રદાનનો લાભ લાગ્યે જ પામી શકે છે. ભિખારી, ગાય, કૂતરાં, બકરાં વગેરે ભૂખ્યા-તરસ્યા જીવોને રોટલાનો ટુકડો અને પાણી પણ આપી શકતા નથી. તેઓ દાળ-શાક વગેરે વધેલી રસોઈ ઉપરથી નીચે ફેંકે છે, તેમજ

મકાનના દાદરામાં પાનની પિચકારી મારીને ગંદકી ફેલાવે છે. વર્તમાનકાળની આ એક વિકૃતિ જ છે. તેથી ફ્લેટોની આસપાસ ગંદકી ઘણી થવાથી કીડા, ઉંદરડા વગેરે જીવોની ઉત્પત્તિ થાય.

ધર્મસ્થાનોમાં આવનાર માણસો પણ સારા જ હોય છે અને તેઓ ધર્મકાર્યો કરવા માટે જ આવતા હોય છે. તેથી ઉપાશ્રયમાં રોજ સેંકડો માણસોની અવરજવર થતી હોવા છતાં તેમના દ્વારા ત્યાં કોઈ જાતનો ભય હોતો નથી, કચરો પણ પડતો નથી.

આપણી આસપાસમાં લગ્નની વાડી હોય તો ત્યાં જમણવારો થતા રહે છે અને જમણવાર પૂરો થયા પછી ત્યાં એંઠવાડ આદિથી પારાવાર ગંદકી થતી હોય છે. આ બધું સહન કરાય છે. *વાંધો તો માત્ર ઉપકારી સાધુ-સાધ્વીનાં મળમૂત્ર સહન કરવામાં જ આવે છે. આ ઘણી મોટી કમનસીબી છે.*

પુત્ર પ્રત્યેના પ્રેમથી બાળકોના મળમૂત્રને ઘરમાં સારી રીતે સહન કરવામાં આવે છે. એવી જ રીતે ધર્મ પ્રત્યેના પ્રેમથી ધર્માત્માઓએ ધર્મ ગુરૂનાં માત્રાદિક સહન કરવા યોગ્ય છે. જેઓ આટલું સહન કરવા તૈયાર નથી તેઓ ગુરૂનાં મળમૂત્રાદિકની દુગંચ્છા કરીને પાપકર્મ (નીચગોત્રકર્મ) બાંધવા સાથે, સાધુ-સાધ્વીના સાન્નિધ્યથી મળનારી માનસિક શાંતિ તથા ઘણા મોટા આત્મિક લાભોથી વંચિત રહે છે.

સાધુ-સાધ્વીનું જીવન તપોમય હોય, મન-વચન-કાયાની પ્રવૃત્તિ નિષ્પાપ હોય, વિચાર, વાણી અને વર્તન સારાં જ હોય, ભાવના પોતાના આત્માનું અને જગતના જીવોનું ભલું કરવાની જ હોય. એમના તપ-ત્યાગ આદિના પ્રભાવે ઉપાશ્રયનું અને તેની આસપાસનું વાતાવરણ પણ શુભભાવનાની અસરવાળું રહે, કોઈને પાપ કરવાના વિચાર આવે નહિં, તેથી નિર્ભયતા રહે.

વળી સરકારી કાયદો પણ એવો છે કે કોઈ પણ ધર્મસ્થાનની આસપાસમાં અમુક હદ સુધી દારૂની દુકાન કે માંસાહારી હોટલ થઈ શકે

નહિં. તેથી ઉપાશ્રયની આસપાસમાં દારૂડિયા, માંસાહારી, ગુંડાઓ અને અધમ વૃત્તિવાળા દુરાચારી માણસો આવે નહિ. તેથી ઉપાશ્રયની આસપાસમાં વસનારા ગૃહસ્થોના ઘરની સ્ત્રીઓની છેડતી થાય નહિ, તેમની શીલધર્મની સલામતી રહે, બાળકોની પણ સલામતી રહે, તેમના અપહરણ થાય નહિ. આમ ઉપાશ્રયની આસપાસનું વાતાવરણ સર્વ પ્રકારે નિર્ભયતાવાળું રહે.

સાધુ-સાધ્વી કોઈ પણ ખોટી પ્રવૃત્તિ કરે નહિ, એથી એમના કારણે આસપાસના લોકોને તકલીફ થાય નહિ. સાધુ-સાધ્વી શાંતિથી જીવે અને આસપાસના લોકોને પણ શાંતિથી જીવવા દે. એના કારણે એ વિસ્તારનું વાતાવરણ સુખદાયક રહે. ઉપાશ્રયની આસ-પાસમાં વસનારા ગૃહસ્થોનાં સંતાનો કુસંગથી બચે તેમજ કુસંગ દ્વારા નફ્ફટ, તોફાની અને કુસંસ્કારી તેમજ વ્યસની બનેલાને, સત્સંગ દ્વારા અને જિનવાણીના શ્રવણ દ્વારા સુધરવાની અને સુસંસ્કારી બનવાની સોનેરી તક પણ મળે.

ઉપાશ્રય વગેરે ધર્મસ્થાનો જગતમાં હિંસા-જૂઠ-ચોરી-વ્યભિચાર આદિ પાપોનું નિવારણ કરનારા અને અહિંસાદિ ધર્મનો પ્રચાર કરનારા છે. તેથી જે ભૂમિનો અભ્યુદય થવાનો હોય ત્યાં જ દેરાસર, ઉપાશ્રય, જેવાં ધર્મસ્થાનો બંધાતા હોય છે, પણ જે ભૂમિનું અધઃપતન થવાનું હોય છે, ત્યાં બંધાતા નથી. ત્યાં તો હિંસાદિ પાપોના અને અધર્મનો ફેલાવો કરનારા થિયેટર, હોટલ જેવા પાપસ્થાનો જ બંધાતા હોય છે. જે ભૂમિ ઉપર દેરાસર-ઉપાશ્રય જેવા ધર્મસ્થાનો બાંધવાનું નક્કી થાય છે, તેની આસપાસની જમીનનાં મૂલ્ય રાતોરાત વધી જાય છે. જ્યારે પાપસ્થાનોના આસપાસની જમીનના મૂલ્ય રાતોરાત ઘટી જાય છે. આવું ઘણી જગ્યાએ જોવા મળે છે. પાપ કર્યા વગર ગૃહસ્થ જીવન જીવી શકાતું નથી અને પાપના ત્યાગ વગર તેમજ સંયમી બન્યા વિના સાધુ જીવન જીવી શકાતું નથી.

પરમ ઉપકારી શાસ્ત્રકાર ભગવંતોએ નિષ્પાપ અને સંયમી એવા સાધુ જીવન માટે સ્વપર હિતકારી એવા જે ઉત્તમ કોટિના આચારો બતાવ્યા છે, તેનું

પાલન કરનારા શ્રી જિનેશ્વર ભગવંતના સાધુ-સાધ્વીનું જીવન સ્વપરને સુખશાંતિ આપનારું અને સૌનું કલ્યાણ કરનારૂં હોય છે, પણ કોઈનેય અશાતા ઉપજાવનારૂં, ઉપદ્રવ કરનારૂં કે કોઈનુંય અકલ્યાણ કરનારૂં ક્યારેય હોતું નથી.

ઉપકારી સાધુ-સાધ્વીનું આટલું પણ સહન ન કરે ને એમનાથી દૂર જઈને વસે તે એમનાથી મળતા હજાર લાભ પણ ગુમાવે.

આમ છતાં કોઈ ઓછી સમજવાળા હોવાથી અથવા વૃદ્ધાવસ્થા, બીમારી, અશક્તિ, વિહાર આદિનો થાક વગેરે કારણસર કે પ્રમાદથી પારિષ્ઠાપનિકા સમિતિરૂપ પોતાના આચારનું પાલન સારી રીતે કરી શકતા ન હોય, માત્રું અને કાપનું પાણી યોગ્ય રીતે પરઠવી શકતા ન હોય ત્યારે તેની સૂગ કરીને નજીવા કારણોસર ઉપાશ્રયનું નિર્માણ થતું અટકાવવાનો પ્રયત્ન કરવાથી કે ઉપાશ્રયથી દૂર જઈને વસવાથી જાણ્યે-અજાણ્યે કેટલા બધા લાભોથી વંચિત રહેવાનું થાય અને કેટલા બધા અનર્થોની નજીક જવાનું થાય એ સ્વયં વિચારી લેવું જરૂરી છે. મહાપુરુષોએ કહ્યું છે કે, જેમના તરફથી પોતાના ઉપર નિત્ય ઉપકાર કરવામાં આવતો હોય, એમના તરફથી ક્યારેક થઈ જતા અપકારને પણ ગુણને જાણનાર સજ્જનો ઉપકાર જ ગણે છે.

આપણી આસપાસમાં થિયેટર હોય, તો થિયેટરનો શો છૂટ્યા પછી તે સ્થાનોમાં બીડી, સિગરેટનાં ઠૂંઠા, દીવાસળીઓ, કાગળના ટુકડા વગેરેનો કચરો કોથળા ભરાય તેટલો પડેલો હોય છે.

ઉપકારી સાધુ-સાધ્વીના મળમૂત્રની દુગંચ્છા (નફરત) કરનારા, પોતાના ઘરડાં અને બીમાર મા-બાપના મળમૂત્રની સાફસૂફીનું કર્તવ્ય શી રીતે બજાવશે ? અને મા-બાપના મળમૂત્રની પણ ભારે દુગંચ્છા થયા વગર રહેશે નહિ. જુવાન શરીર કરતાં વૃદ્ધ-બીમાર શરીરથી ગંદકી વધારે થાય. તેથી *'ઝટ જાય ખોખું તો ઘર થાય ચોખું'* એવું મા-બાપને અંગે પણ ઈચ્છ્યા કરે એ બનવાજોગ છે. વળી સાધુ-સાધ્વીનાં મળમૂત્રની દુગંચ્છા

કરનારા પોતે પણ જ્યારે ઘરડા અને બીમાર થશે, ત્યારે સાધુ-સાધ્વીનાં મળમૂત્રની દુગંચ્છા કરવાના અહિતકર સંસ્કાર પોતાનાથી જ પામેલો પોતાનો પરિવાર એનાં પોતાનાં મળમૂત્રની દુગંચ્છા નહિ કરે ? દુગંચ્છા કરશે તો કઈ હાલત થશે ? સમાધિ અને સદ્‌ગતિ દુર્લભ થવા સંભવ છે.

માણસ ક્યાંય એકલો વસી શકે એમ નથી. એને સમૂહમાં જ વસવું પડે તેમ છે. સમૂહમાં વસવા માટે આસપાસના લોકો તરફથી કાંઈ સહન કરવું ન પડે એ કદી પણ બનવાજોગ નથી. ધર્મી પડોશી ધર્મના આચારનું પાલન કરતા હોય તે નિમિત્તે પણ થોડું સહન કરવાનું આવે. એ સહન નહિ કરનાર અને ધર્મી પડોશીથી દૂર ભાગનારને જાણ્યે-અજાણ્યે કેટલા બધા લાભોથી વંચિત રહેવાનું થાય અને એને અધર્મી પડોશીઓના કારણે કેટલા બધા અનર્થોની નજીક જવાનું થાય એ ખાસ વિચારવું જરૂરી છે.

સાધુ-સાધ્વીએ રસ્તામાં પરઠવેલી માત્રાથી તો બાજુમાં ચાલીને પણ બચી શકાય, પણ પેટ્રોલ-કેરોસીનના ધૂમાડાથી તો કોઈ રીતે બચી શકાતું નથી.

ખરેખર ગંદકીનું કારણ તો નળ અને ગટર છે. નળને કારણે પાણી બંધિયાર બને છે અને ઘણા મોટા પ્રમાણમાં વેડફાય છે. વળી પાઈપના સંસર્ગથી પાણીની સાથેસાથે શરીર માટે હાનિકારક એવું સીસું પેટમાં જાય છે, એનાથી લીવરને અને પાચનતંત્રને નુકસાન થાય છે.

ઘણા વરસો પહેલા એક સામાયિકનાં લેખમાં એવું વાંચવામાં આવ્યું હતું કે, આદર્શ ગામ કોને કહેવું તે અંગે, પરદેશમાં પ્રાચીન-અર્વાચીન અનેક પદ્ધતિઓ અને ગામડાઓનો અભ્યાસ કરીને એક સ્કોલરે એવું જાહેર કરેલું કે, *'જે ગામમાં નળ અને ગટર ન હોય, એ આદર્શ ગામ જાણવું.'*

ગૃહસ્થો મળમૂત્રનો ત્યાગ સંડાસ દ્વારા ગટરમાં કરે છે. પાણી ગટરમાં વહાવે છે તેથી ઉપર ગંદકી દેખાતી નથી, પણ ગટર પાઈપ લાઈન અને પાણી પાઈપ લાઈન જમીનમાં ભળી જાય છે, ત્યારે ભારે રોગચાળો

ફેલાય છે. જમીનમાં ઊતરેલું ગટરનું પાણી કૂવા વગેરેના પાણીને અને નદીઓના તથા સમુદ્રના પાણીને પણ પ્રદૂષિત કરે છે. *ગટરો માનવ-જીવન માટે ભયરૂપ છે. મલિન જળને જમીન ઉપર જ સૂકવી નાખવાની આપણી પ્રાચીન પદ્ધતિ જ ઉત્તમ અને જોખમ વગરની છે.*

ગંગા જેવી પવિત્ર ગણાતી મહાનદીઓનેય ગંધાતી ગટરમાં ફેરવી નાખનાર ગૃહસ્થોના સંડાસો-બાથરૂમો તેમજ કારખાનાઓના રસાયણયુક્ત ઝેરી અને ગંદા જળ છે. પીવાના પાણીને ઝેરી અને ગંદું બનાવવું, એ મોટો અપરાધ છે. જો આખો માનવસમાજ જૈન સાધુ-સાધ્વીની જેમ સંડાસ-બાથરૂમનો ઉપયોગ બંધ કરી દઈને સૂર્યનો તાપ, વાયુ આદિથી જમીન ઉપર જ સુકાઈ-શોષાઈ જાય એવી રીતે મળ-મૂત્રાદિકનો ત્યાગ કરવાની આપણી પ્રાચીન, નિર્દોષ-નિષ્પાપ પદ્ધતિ અપનાવે તો તો પ્રાણીજગત ભયમુક્ત, રોગમુક્ત અને સુખી બન્યા વગર રહે નહીં.

પ્રાંતે આખાય લેખના સાર રૂપે કહેવાનું એટલું જ કે, સંયોગવશ ગૃહસ્થો પોતે આમ ન જ કરી શકે, તો છેવટે નિર્દોષ-નિષ્પાપ અને સ્વપર શ્રેયકર જીવન જીવનારાં એવાં સાધુ-સાધ્વીનાં મળ-મૂત્રાદિકના ત્યાગના કલ્યાણ-કારી આચારોનો આદર કરે, એના પ્રત્યે સૂગ ન ધરે, તોય તેઓ સંસારનાં અને છેવટે મુક્તિનાં શાશ્વત સુખ પામનાર બને !

- કલ્યાણ, આસો - ૨૦૫૬.

પાણી તો ઘીની જેમ વાપરવું જોઈએ, બેટા !

આ દેશના પછાત લોકોને, મોટા-મોટા બંધો બાંધીને સેંકડો ગામડાંના લાખ્ખો લોકોને ડૂબાડી દેતા તથા સ્વીમિંગ પુલમાં નાહતા-નાહતા વોટર કન્ઝર્વેશનની ડાહી-ડાહી વાતો કરતા આવડતું નહોતું, તે કાળ અને તે સમયની આ વાત છે. તારંગાની તળેટીમાં આવેલું ટીંબા નામનું નાનકડું ગામડું મારું મોસાળનું ગામ છે. એક જમાનામાં આ નાનકડા ગામડામાં છાપું તો શું ટપાલ પણ માંડ પહોંચતી, હજી આજે પણ જેને પોતાની સહી કરતાય માંડ આવડે છે તેવી-અક્ષરજ્ઞાન જ આ દેશની સઘળી સમસ્યાઓનો જાદુઈ ઈલાજ છે તેવું માની લિટરસી કેમ્પેન પાછળ આદુ ખાઈને પડેલા મિત્રોની પરિભાષામાં નિરક્ષર મારી માનું બાળપણ આ પછાત ગામડામાં વીત્યું હતું. આટલાં વર્ષોનાં અનુભવે એવા તારણ પર પહોંચ્યો છું કે કોઈ પણ વિષયનું તળપદું અને આધુનિકતાના પૂર્વગ્રહોના રંગો ચડ્યા વગરનું વાસ્તવિક જ્ઞાન મેળવવું હોય તો આપણી આજુ-બાજુના સૌથી અભણ (સ્કુલ-કૉલેજના પગથિયે પગ પણ ન મૂક્યો હોય તેવી) વ્યક્તિને શોધી કાઢી તેને પડપૂછ કરવાનું શરૂ કરવું જોઈએ, જુની-નવી જિવનશૈલીનાં બહુવિધ પાસાંઓની ફર્સ્ટ-હેન્ડ જાણકારી મેળવવા. આ બેમાંની અભણપણાની એક લાયકાત ધરાવતી મારી માને પૂછતા ઘણી વાર ક્ષુલ્લક દેખાતી પણ વર્તમાન વૈશ્વિક પરિપ્રેક્ષ્યમાં કદાચ ઘણી મહત્વની વાતો જાણવા મળતી. એક વાર મેં એને પૂછેલું કે તમે લોકો સવારના પહોરમાં ઉઠીને સૌથી પહેલાં શું કામ કરતા? ત્યારે જવાબમાં એણે મને કહેલું કે, ઉઠીને સૌથી પહેલા દેરાસર જઈ ભગવાનના દર્શન કરી પછી ઘરે આવીને પહેલા આટો તથા ચોખા પલાળીને પછી બીજા કામે લાગવાનું. બપોરે બાર વાગ્યે ખાવા જોઈતાં રોટલી-ભાત માટે સવારે છ વાગ્યે આટો ભાત પલાળવાનું રહસ્ય પહેલાં તો મને સમજાયું નહિ પણ પછી ખબર પડી કે છ વાગ્યે ચોખા

પલાળી દેવામાં આવે તો બાર વાગ્યા સુધીમાં એ પલળીને એટલા પોચા થઈ જાય કે એને પકવવા માટે ચૂલો અર્ધો સમય પણ બાળવો ન પડે. પેઢી દર પેઢી વારસામાં મળતા જ્ઞાનને વળગી રહી પાણીમાં ચોખા પલાળવા દ્વારા પાણીમાં રહેલી ઉર્જા (હાઈડ્રલ પાવર)નો ઉપયોગ કરી બળતણ બચાવતી અભણ માનું જિવન વધુ વૈજ્ઞાનિક હતું કે હોમ સાયન્સમાં ગ્રેજ્યુએટ થઈ સવારે આઠ વાગ્યે-ઉઠી સોફાસેટ પર બેસી બ્રશ કરતા કરતા છાપાં મેગેઝિન વાંચી, સવારની ટીવી સિરિયલ જોયાં પછી બાર વાગ્યે રસોઈનો સમય થાય એટલે નાછૂટકે ઊભા થઈ પ્રેશરકુકરમાં વૈજ્ઞાનિકતા અને છાણાં-લાકડાંના ચૂલાની પછાતતા ઉપર ભાષણ આપી શકવાની શક્તિ ધરાવતી તેની દીકરીનું જીવન વધુ વૈજ્ઞાનિક છે, તે સુજ્ઞ વાચકો સ્વયં નક્કી કરી લે.

એકાદ ઘરમાં થોડાક બળતણની આ વાત આમ તો સાવ મામૂલી લાગશે પણ ૮૦ કરોડની વસતી ધરાવતા આ વિરાટ દેશમાં ટીપે-ટીપે સરોવર ભરાય અને કાંકરે-કાંકરે પાળ બંધાયની કહેવત ભૂલવી ન જોઈએ. ઉર્જા બચાવની અને ઓછા ઉપયોગની આવી કેટલીય વંશપરંપરાગત ટેક્નિકો જુની પેઢીની વિદાય સાથે આજે વિદાય લેતી હશે, પણ આપણે ત્યાં પ્રગતિના આ જમાનામાં સાયન્ટિફિક ટેમ્પરનો (વૈજ્ઞાનિક સુચનાંક) (પ્રગતિનો) અર્થ એવો કરવામાં આવે છે કે સ્કેલ જેટલો જંગી અને પ્રક્રિયા જેટલી જટિલ તેટલી વસ્તુ વધુ વૈજ્ઞાનિક અને પ્રક્રિયા જેટલી સાદી તથા કદ જેટલું નાનું તેટલી ચીજ જુનવાણી. આવા જુઠ્ઠાણા ઈકવેશનને કારણે, હાઈડ્રલપાવર (જલ વિદ્યુત) પેદા કરવાની તોતિંગ યોજનાઓ ઉભી કરીને વિરાટકાય સરોવરો નીચે ગરીબ વનવાસીઓ, જંગલી પશુઓ અને ગીચ જંગલોને તથા વિશ્વબેંકના દેવાના દરિયા નીચે બાકી રહેલા દેશને ડૂબાડી દેવા માટે જેટલી જહેમત ઉઠાવાય છે તેના હજારમાં ભાગની મહેનત પણ હાઈડ્રલ પાવરનો ઉપયોગ કરવાની આવી ઘરેલું રીતિઓને જીવાડવા કે ફેલાવવા કરવામાં આવતી નથી.

આની પાછળનું એક બીજું કારણ માનવ અને વધુમાં વધુ પશુ-પંખી જગત સિવાયની સૃષ્ટિમાં રહેલા જીવત્વનો આદર કરવાનો ઈન્કાર કરતી

રેવરન્સ ફોર લાઈફને (જીવન પ્રત્યે સંવેદનશીલતા) નેવે મૂકતી અતિ સ્વાર્થકેન્દ્રીની એદંયુગીન વિચારસરણી છે. જૈનદર્શન તો માણસ તથા પશુ-પંખી ઉપરાંત પૃથ્વી, પાણી, અગ્નિ, વાયુ અને વનસ્પતિ જેવા પ્રકૃતિનાં અનેકવિધ અંગોમાં રહેલા જીવત્વનો આદર કરવાની વાત સદીઓથી કરતું આવ્યું છે. જગદીશચંદ્ર બસુ (બોઝ-તો અંગ્રેજને બસુ બોલતા આવડતું નહોતું માટે કહેતા હતા, ચટોપાધ્યાય અને બન્ધોપાધ્યાય બોલતાં નહોતું આવડતું માટે ચેટરજી અને બેનરજી કર્યુ તેમ) એ વનસ્પતિના જીવત્વને લેબોરેટરીમાં સાબિત કર્યુ તેનાથી સદીઓ પહેલાં વૈદિક ધર્માનુયાયીઓના 'જલે વિષ્ણુ:સ્થળે વિષ્ણુ વિષ્ણુ: પર્વતમસ્તકે' માં પણ કદાચ આ જ વાત કહેવાય છે. વિષ્ણુનો અર્થ જો ભગવાન કરવામાં આવે તો તો બહુ કઢંગી સ્થિતિનું સર્જન થાય માટે વિષ્ણુનો અર્થ આત્મા એટલે કે જીવ કરીને જલમાં, સ્થળમાં, છેક પર્વતની ટોચ ઉપર રહેલી શિલાઓમાં પણ જીવત્ત્વ રહેલું છે એવો અર્થ કરવામાં આવે તો જ આ શ્લોક-પંક્તિની સંગતિ થઈ શકે.

આધુનિક અર્થશાસ્ત્રીઓથી માંડીને પર્યાવરણવિદો જેને નેચરલ રિસોસીઝના (પ્રાકૃતિક ઉર્જા સ્રોત) નામે ઓળખે છે તેવા પૃથ્વી, પાણી, અગ્નિ, વાયુ અને વનસ્પતિમાં નિહિત ચૈતન્યની ભારતીય દર્શનની માન્યતાની આધારશીલા પર રચાયેલી ભારતીય જીવનરીતિ તેમાં રહેલા જીવત્વને આદર કરીને તેના ઓછામાં ઓછા ઉપયોગથી ચલાવી લેવાનું શીખવતી. એટલે પ્રાકૃતિક સંસાધનોનો આટલો અક્ષમ્ય વેડફાટ કરવામાં આવશે તો તે ખૂટી ગયા પછી માણસજાત જીવશે કેવી રીતે તેટલા માત્ર માણસજાતના ભવિષ્યને અંધારિયું બનાવતા અટકાવવા પૂરતું જ રિસોર્સ યુટિલાઈઝેશન (ઉર્જા સ્રોતોનો વપરાશ) ઘટાડવાના સંકુચિત ખ્યાલ કરતાં પણ ઘણો વ્યાપક આ દ્રષ્ટિ કોણ હતો. એમાં જંગલો, જમીન, જાનવર, કે જળનો આડેધડ ઉપયોગ કરીશું તો તેના વગર આવતી કાલે આપણે જીવીશું શી રીતે એટલો મર્યાદિત ખ્યાલ માત્ર નથી, પણ તે બધામાં પણ જેવી સંવેદના આપણામાં છે તેવી જ આત્મસંવેદના હોવાથી અનિવાર્ય ઉપભોગને છોડીને તેમને સ્પર્શસુદ્ધાં

દ્વારા ડિસ્ટર્બ કરવાનો આપણને અધિકાર નથી તેવો એક ઉદાત્ત વિચાર છુપાયેલો છે.

ઈંગ્લેન્ડમાં થયેલી ઔદ્યોગિક ક્રાંતિ પછીના=પોસ્ટઈન્ડ્રીયલ રિવોલ્યુશન એરોમાં જે ઉપભોક્તાવાદી સંસ્કૃતિ પાંગરી તેમાં આ વિચારનો અંશ પણ ન હોવાના કારણે કેવળ 'ઈટ, ડ્રિંક એન્ડ બી મેરી'નો સિદ્ધાંત તે સંસ્કૃતિનો આરાધ્યદેવ બની રહ્યો છે. ઊર્જાથી માંડીને જળ સુધીના ક્ષેત્રોમાં ઝળૂંબી રહેલાં ઘેરી કટોકટીના વાદળોનો ગર્ભ આ વિચારના પિંડમાંથી બંધાયેલો છે. સવારથી સાંજ અને ઘોડિયાથી ઘડપણ સુધીના આપણા જીવન તરફ એક આછોપાતળો દ્રષ્ટિપાત કરવામાં આવશે તો વાત હાથમાં રહેલા આમળાની જેમ સ્પષ્ટ થઈ જશે. એક સર્વેક્ષણ અનુસાર અમેરિકન ઘરોમાં નળમાંથી આવતા પાણીનો જથ્થો જો થોડોક પણ ઘટાડવામાં આવે તો રોજનું ૨૫ કરોડ ગેલન પાણી બચાવી શકાય. રોજનું ૪૫૦ અબજ ગેલન પાણી વેડફતા અમેરિકનોના ઘરવપરાશના પાણીના ૩૨ ટકા તો શાવર બાથ પાછળ અને ૪૦ ટકા પાણી ટોઈલેટ ફલશ કરવા પાછળ વેડફાય છે, તો ૧૪ ટકા પાણી તેમના વોશિંગ મશીનો ચાઊ કરી જાય છે.

આ જ જીવન પદ્ધતિનું અનુકરણ મુંબઈગરાઓ અને મુંબઈના પગલે પગલે દેશના અંતરિયાળ ગામડાંઓમાં વસતા લોકો પણ કરવા માંડયા છે. આપણા બાપદાદા દેશમાં ઘરના ઓટલે ત્રાંબા કે પિત્તળનો લોટો લઈને લીમડા-બાવળના દાતણથી દાંત સાફ કરવા બેસતા ત્યારે એક લોટો પાણીમાં જીવનના છેલ્લા દિવસ સુધી તેમના દાંત જેટલા ઊજળા રહેતા તેટલા ઊજળા દાંત તો આજકાલ ચૌદ-પંદર વર્ષના ટીન-એજર્સ છોકરાંઓના જોવામાં આવતા નથી. છતાંય વોશબેસિનનો નળ ચાલુ રાખીને કોલગેટ કે સિબાકાનો સફેદ રગડો મોંમાં ઘસાવાની તેની આદતને કારણે બ્રશ કરતી વખતે જ વીસથી પચીસ લિટર જેટલું પાણી વેડફી નાખે છે. તમે ધારો તો તેને બાળપણથી જ વોશબેસિનનો નળ ચાલુ રાખીને બ્રશ કરવાને બદલે લોટામાં પાણી લઈને દાતણ કરતા જરૂર શીખવાડી શકો. પણ ખાટલે મોટી ખોટ એ છે કે તમને જ

શેવિંગ કરતી વખતે બેસિનનો નળ ચાલુ રાખીને તેનાં કરતાં ત્રણથી ચારગણું પાણી ઢોળવાની આદત પડી ગઈ છે અને સંત જ્ઞાનેશ્વર નઠારા છોકરાને ગોળની બાધા આપતાં પહેલાં પોતે ગોળ છોડવાનો દાખલો બેસાડી ગયા હોવાથી તમે 'તેરી બી ચૂપ ઓર મેરી બી ચૂપ'નું વલણ અપનાવી આંખમિંચામણાં કરવાનું શરૂ કરી દો છો. પણ તમારા આંખમિંચામણા કરવાથી વાત અટકતી નથી. વેડફાટનો તમારો આ ભવ્ય(!) સંસ્કારવારસો તમારા બાળકથી આગળ વધતો વધતો છેક તમારા ઘાટી-રામા સુધી ઊતરી આવે છે. તમારા શાહજાદાને નળ ચાલુ રાખીને બ્રશ કરવા માટે આળસતા જોઈને તે શા માટે પાછળ રહે? તે પણ વાસણ માંજતી વખતે નળ બંધ કરવાનું કષ્ટ ઉઠાવતો નથી અને તમે તથા તમારા કુંવરસા'બ બ્રશ અને દાઢી કરવામાં જેટલું પાણી વેડફો છો તેનાથી દોઢું પાણી તે વાસણ માંજતી વખતે વેડફી નાખે છે. તમારી આ ત્રિપુટી જો બ્રશ, દાઢી વખતે અને વાસણ માંજતી વખતે નળ ચાલુ રાખવાની સાહ્યબી છોડી દે તો દર વર્ષે ઘરદીઠ લાખેક લિટર જેટલું પાણી તો અવશ્ય બચે જ બચે, કારણ કે માત્ર એક મિનિટ નળ ખુલ્લો રાખવામાં આવે તેટલી વારમાં ૧૩ થી ૨૨ લિટર જેટલું પાણી ગટરભેગું થઈ જતું હોય છે.

પાલનપુરના નવાબી રાજના વડગામમાં મારા બાળપણનો પહેલો દાયકો વીત્યો છે અને મને આજે પણ દીવા જેવું સ્પષ્ટ યાદ છે, વિઠ્ઠલભાઈ ધાંયજા (ઉત્તર ગુજરાતમાં હજામતનું કામ કરતી જ્ઞાતિના ભાઈઓને ધાંયજા તરીકે ઓળખવામાં આવે છે) કે તેમના ભાઈ જ્યારે ઘરે અમારા વાળ કાપવા કે પિતાજીનું વતું કરવા આવતા ત્યારે હજામત શરૂ કરતા પહેલાં પિત્તળની એક નાની ગોબાવાળી વાટકીમાં અમારી પાસે થોડું પાણી મંગાવતા. એટલી નાનકડી વાટકીના પાણીમાં ઘરના બધાની હજામતનું કામ થઈ જતું. હજી આજે પણ મુંબઈની ફૂટપાથો ઉપર પરંપરાગત નાઈભાઈઓ મોર્ડન હેર-કટિંગ સલૂનની સલૂકાઈથી એટલા જ પાણીમાં કામ પતાવતા હોય છે. એકવીસમી સદીમાં જ્યારે પાણીનો દુષ્કાળ ઘેરી વળશે ત્યારે દુનિયા આખીએ

-વાર્યા નહિ તો હાર્યા પણ- વોશબેસિનના શેવિંગ ઉપરથી પિત્તળની વાટકીની હજામત ઉપર આવવું જ પડશે. પરંતુ તે પહેલાં પ્રગતિ અને વિકાસની કલ્પનાઓમાં આમૂલ પરિવર્તન લાવવું પડશે. ગામડાના વસ્તારી કુટુંબના ઢગલો વાસણ ઘરના આંગણામાં પડેલી ધૂળ કે ચૂલામાં બચેલી છાણાંની રાખથી ઘસીને ઊજળા કરીને તે જ રાખથી ચોખ્ખા કરી દઈ પાણીનું ટીપું સુદ્ધાં ન વાપરવાની મારવાડના ગામડાની કન્યાને વિકસિત અને હુતાહુતીનાં બે વાસણ માટે બાવીસ બાલ્દી પાણી ઢોળી નાખનાર મુંબઈની અલ્લડ યુવતીને પછાત ગણવાના નૂતન માપદંડો વિકસાવવા પડશે.

'ચેરિટી બિગિન્સ એટ હોમ' (માનવતા પોતાના ઘરથી શુરુ થાય)ની બહુ ગવાયેલી, બહુ ચવાયેલી કહેવત અનુસાર દરેકે સૌથી પહેલો કુહાડો પોતાના પગ ઉપર જ મારવો જોઈએ. મુંબઈમાં વસતું નાનામાં નાનું માત્ર ચાર સભ્યોનું કુટુંબ રોજનો માત્ર પાંચ મિનિટનો શાવરબાથ લે તો પણ મુંબઈ મ્યુનિસિપલ કોર્પોરેશનને દર અઠવાડિયે ત્રણથી ચાર હજાર લિટર પાણીનું તેમના નામનું નાહી નાખવું પડે. આટલી લકઝરી છોડવાની પા-પા પગલીથી શરૂઆત કરીએ તો ચાર માણસના આ કુટુંબના પાંચ મિનિટના શાવરબાથનું એક અઠવાડિયાનું પાણી ઝૂંપડપટ્ટીમાં જીવતા એક માણસને ત્રણ વર્ષ સુધી પીવા માટે ચાલી શકે. ટીવી-વિડિયોની રંગીન સિરિયલોએ આપણી સંવેદનાને એટલી બુટ્ટી બનાવી દીધી છે કે, આપણને કદાચ આવો વિચાર પણ આવતો નથી. આપણે તો કાઠિયાવાડના ગામડાંમાં પિત્તળનો કળશિયો લઈને ઝાડે ફરવા જતા, તેને બદલે મુંબઈમાંથી કમાઈ આવીને નાનકડા ગામડાંના ઘરમાં પણ સંડાસ દાખલ કરવામાં સુધરી ગયાની અનુભુતિ કરતા હોઈએ છીએ. આપણને એ ખબર નથી કે નાના ગામડાંની ગામ બહારની વિશાળ ખુલ્લી જમીનમાં લોટો લઈને જંગલ જવામાં તો સવારના પહોરની ચોખ્ખી હવામાં ચાલવાનો અને એ હવા શ્વાસમાં લેવાનો મોટો ફાયદો છે. આ દેશનાં લાખો ગામડાંઓનાં કરોડો કુટુંબોની આ તંદુરસ્ત ટેવને કારણે, વીતતા વર્ષોની સાથે દેશની કોણ જાણે કેટલીય જમીનની ફળદ્રુપતામાં માનવમળમૂત્રથી વધારો

થાતો હશે તે એક સંશોધનનો વિષય છે. તેના બદલે વિશાળ ખુલ્લી જમીન ધરાવતા ગામડાંઓમાં પણ પ્રદુષિત કરનારની પ્રગતિ તેમને જ મુબારક.

અમેરિકાના એક સર્વેક્ષણ અનુસાર એકવાર ટોયલેટ ફલશ કરવામાં પાંચથી સાત ગેલન પાણી વપરાય છે (અહીં જ્યાં-જ્યાં વપરાય છે શબ્દનો ઉપયોગ થયેલો દેખાય ત્યાં-ત્યાં વેડફાય છે એમ વાંચવું). સામાન્ય ગણિતનો પણ ઉપયોગ કરીએ તો એક ઘરમાં ઓછામાં ઓછું દસવાર પણ ટોઈલેટ ફલશ થાય તો રોજના સરેરાશ ૬૦ ગેલનના હિસાબે મહિને ૧૮૦૦ ગેલન અને વર્ષે ૨૧,૬૦૦ ગેલન પાણી તો એક જ કુટુંબ ઢોળી નાંખે છે. માત્ર એક કરોડ લોકો પણ ગામડાંની જીવનશૈલીને તરછોડી શહેરી જીવન અપનાવે તો ૨૧૬ અબજ ગેલન પાણી આમ જ વેડફાઈ જાય. જેને ગેલનમાં ખબર ના પડતી હોય તે આ આંકડાને અંદાજે સાડાચારથી ગુણી કાઢશે, તો તેને લિટરનો આંકડો મળી જશે.

વિકાસની આ વાહિયાત વાતોને ઉભીને ઉભી ચીરી નાખનાર ગોવાના એક તેજી તોખાર પત્રકાર કલોડ, અલ્વારિસે તેના 'ડેવલપમેન્ટ મચ એણ્ડ ડુ અબાઉટ નથિંગ' નામના લેખમાં આજની પ્રગતિનો ઠઠ્ઠો ઉડાડતાં એક સરસ વાત લખેલી કે દેશી ઢબની ઉભડક પગે બેસીને શૌચ માટે જવાની પદ્ધતિને બદલીને યુરોપિયન સ્ટાઈલના કમોડ વાપરવા એ આધુનિક પ્રગતિની નિશાની છે અને પ્રગતિ માટે આપણે ગમે તેવા ભોગ આપવા તૈયાર રહેવું જોઈએ. તો પછી જો કમોડ વાપરવાનું શરૂ કરવાથી થોડી ઘણી કબજિયાત રહેવાની શરૂ થઈ જાય તો તંદુરસ્તીનો તેટલો ભોગ કમોડ વાપરવાની પ્રગતિ સામે કોઈ વિસાતમાં નથી અને ખરેખર કમોડની વાતને સાચી ઠેરવતા મુંબઈના અનેક નવધનિકોને ખૂબ અગવડદાયક પડતું હોય તો પણ સુધરેલા અને મોડર્ન ગણાવાની હરીફાઈમાં ઘરમાં કમોડ ફિટ કરાવતા જોયા અને રોજ કબજિયાતની ટીકડીઓ ખાઈને હેરાન થતા પણ જોયા છે.

જે જમાનામાં માઈક્રો-ઓર્ગેનિઝમ્સની (સૂક્ષ્મ જીવોની) કોઈ

કલ્પના પણ સામાન્ય જગતને નહોતી તે જમાનામાં મનીષી પુરુષોએ આગમ ગ્રંથોમાં પાણીના પ્રત્યેક બિંદુમાં રહેલા સૂક્ષ્મતમ જીવોની સંખ્યાનું અદ્‌ભુત વર્ણન વગર માઈક્રોસ્કોપે કર્યું છે તે મસ્તક ઝુકાવી દે તેવું છે. પાણીના પ્રત્યેક બિંદુમાં રહેલી અગણિત જીવોની સૃષ્ટિનું વર્ણન ગણિતિક આંકડાઓના ગજા બહારનું હોવાથી સંબોધસિત્તરી ગ્રંથમાં તેનું કલ્પનાતીત વર્ણન કરતા એમ લખ્યું છે કે, એ ઉદકબિંદુમાં રહેલા સૂક્ષ્મતમ જીવો જે અસત્ કલ્પનાથી પોતાનું શરીર સરસવના દાણા જેટલું કરી લે તો ૩૨૦૦ લાખ માઈલ લાંબા પહોળા જંબુદ્વીપમાં પણ સમાય નહિ. પોતાના કથયિતવ્યને સામાવાળાના હૃદયને સ્પર્શી જાય તે રીતે રજુ કરવાની આ પ્રભાવશાળી રીતથી એક વાર જેનું હૈયું વિંધાઈ જાય તે વ્યક્તિ પાણીના પ્રત્યેક ટીપાનો ઉપયોગ કેવી રીતે કરે અને એ માટે જ જૈન ધર્મી પરિવારોમાં ઉછરતાં બાળકને ગળથૂથીમાંથી જ એવા સંસ્કાર આપવામાં આવતા કે *બેટા, પાણી તો ઘીની જેમ વાપરવું જોઈએ.* આપણને તો જ્યારે કૂવો સૂકાય ત્યારે પાણીની કિંમત સમજાતી હોય છે અને તેમાંય રાજકારણીઓ તો કો'કનું ઘર બળતું હોય ત્યારે તેને ઓલવવાને બદલે એની ઊની આંચ પર પોતાની ખીચડી પકાવી લેતા તકસાધુઓની જેમ સુકાયેલા કૂવા કે દુકાળના ઓળાનો ઉપયોગ પણ પોતાની ગાદી સ્થિર અને તિજોરી તર કરી નાખનાર યોજનાઓ લોકોના ગળે ઉતારવા જ કરતા હોય છે. પરંતુ દિવસે દિવસે વધુને વધુ ભયાનક સ્વરૂપ ધારણ કરનારી પાણીની અછતની વિશ્વવ્યાપક સમસ્યાનો સાચો ઉકેલ વિરાટકાય બંધો કે પાતાળકૂવા દ્વારા ભૂગર્ભમાં જળ શોષી લેવામાં નહિ, પણ પાણી ઘીની જેમ વાપરવાની પેલા અભણ ડોશીમાંની સલાહમાં રહેલો છે તે નક્કી. ભારતના અજાણ ગામડાનાં ઘરડાં ડોશીમાનું આ વાક્ય પાણી બચાવોની વિશ્વવ્યાપી ઝુંબેશનો મુદ્રાલેખ બની જવો જોઈએ.

-અતુલ શાહ

વિક્રમ સવંત ૨૦૪૭

સમસ્યા પાણી ગાળવાની : સમાધાન વરસાદના પાણીના ટાંકાનું

ત્રિલોકગુરુ પરમાત્મા મહાવીરદેવની ઊજળી પરંપરાના આભૂષણ સ્વરૂપ શ્રી શય્યંભવસૂરીશ્વરજી મહારાજાએ 'દશવૈકાલિક સૂત્ર' નામના અજોડ ગ્રંથમાં નિષ્પાપ જીવનશૈલીનું વર્ણન ચાર પદના એક જ શ્લોકમાં કરતા કહ્યું છે કે, જે જયાણાપૂર્વક ઊભો રહે, બેસે, ચાલે, સૂએ, ખાય અને બોલે તે પાપથી બચે. આ આખાય વાક્યમાં 'જયણાપૂર્વક' એ કીવર્ડ (ચાવીરૂપ શબ્દ) છે. એક અપેક્ષાએ જોઈએ તો જયણા એ તો તીર્થંકરોપદિષ્ટ નિરારંભ જીવનશૈલીની આધારશિલા છે.

આધુનિક વિજ્ઞાન, કેળવણી અને યંત્રવાદના આગમન પછી મોટા ભાગના જૈન પરિવારોમાંથી આ જયણા ધર્મનુ દેવાળું નીકળી ગયું છે. જાડા કપડાંથી ગાળ્યા વગરના પાણીમાં સંખ્યાબંધ ત્રસ (હાલતા-ચાલતા) જીવો રહેતા હોવાથી આર્યાવર્તમાં માત્ર જૈન પરિવારોમાં જ નહિ પણ અજૈનોમાં યે પીવાનું કે વપરાશનું પાણી કપડાથી ગાળીને જ વાપરવાનો રિવાજ હતો. અજૈન પુરાણોમાં તો ત્યાં સુધીના વર્ણન આવે છે કે એક ઘડો અણગળ પાણી વાપરનારને સાત ગામ બાળવા જેટલું પાપ લાગે. ઈતિહાસ એ વાતની શાખ પૂરે છે કે પરમાર્હત્ મહારાજા કુમારપાળ પોતાના લશ્કરના (૧૧) લાખ ઘોડાઓને પણ પાણી ગળાવીને જ વપરાવતા. ગામડે ગામડે બહેનો વાવ, કૂવા કે નદી ઉપર પાણી ભરવા જતી ત્યારે ઘરે પાણી લાવીને, ગાળીને, બધું પાણી ભરાઈ જાય ત્યારે જે કપડાથી બધું પાણી ઘરે ગાળ્યું હોય તે ગળણું છેલ્લે વાવ, કૂવા કે નદી ઉપર લઈ જઈ ગળણાને પાણી ઉપર અદ્ધર બરાબર પહોળું કરીને ગાળેલા પાણીનો એકાદ લોટો તે ગળણા ઉપર ધીરેધીરે રેડતી. જેથી પાણી ગાળવાની પ્રક્રિયા દરમિયાન અણગળ પાણીમાં રહેલા જે જીવજંતુઓ તે ગળણામાં આવી ગયા હોય તે બધા ફરી પાછા મૂળ પાણીમાં પહોંચી જાય

અને પોતાનું કુદરતી આયુષ્ય પાણીમાં પૂરું કરી શકે. ગળણા ઉપર પાણી રેડીને અળગણ પાણીના જીવોને ફરી પાછા પાણીમાં (સ્વસ્થાને) પહોંચાડવાની આ ક્રિયાને સંખારો કાઢવાની ક્રિયા કહેવાય છે. જુદા-જુદા ઉષ્ણતામાનવાળા તથા ક્ષારનું જુદું-જુદું પ્રમાણ ધરાવતા પાણીમાં રહેલા જીવજંતુઓ જુદા ઉષ્ણતામાન તથા ક્ષારનું જુદું પ્રમાણ ધરાવતા પાણીમાં જાય તો ત્યાં જીવી શકતા નથી, એવા આજના વૈજ્ઞાનિક રિર્સચની જાણ ગામડાંની અભણ ડોશીઓને યુગોથી હતી. તેથી દેરાણી એક કૂવેથી (દા.ત. લીમડાવાળી શેરીને કૂવેથી) ચાર ઘડા પાણી લાવી હોય અને પાંચમો ઘડો લેવા જેઠાણી જતી હોય તો દેરાણી જેઠાણીને સૂચના આપી દે કે, 'હુ લીમડાશેરીના કૂવેથી પાણી લાવી છું એટલે મારા પાણીનો સંખારો (જીવો) તે કૂવામાં જ નાખજો.' આમ કહેવાનું કારણ એટલું જ કે જેઠાણી તો કદાચ પાણી ભરવા બીજા (દા.ક. પીપળાશેરીના) કૂવે પણ જાય અને જો આગલા કૂવાનો સંખારો (જીવો) પછીના બીજા કૂવામાં નંખાઈ જાય તો તેનું પાણી આગલા કૂવા કરતા થોડું પણ વધારે ઠંડુ કે ગરમ હોય, અથવા ઓછાવત્તા ક્ષારવાળું હોય તો તે જીવો તેમાં જીવી ન શકે. જીવનની નાની મોટી દૈનંદિન ક્રિયાઓમાં ભુતદયાને આટલી સૂક્ષ્મતાથી વણી લેનાર જીવનશૈલી કેટલી મહાન હશે!

પણ હેન્ડ-પંપ અને નળના આગમન સાથે જૈનપરિવારોએ પણ જયણા ધર્મને મહદ્ અંશે અલવિદા આપી દીધી છે. કૂવે-વાવે કે નદીએ પાણી ભરવા જતી પનિહારી લગભગ ભૂતકાળની વાત બની ગઈ છે. પાણી ગાળવાની એ ઉદાત્ત પરંપરાના પ્રતિકરૂપે મોટા ભાગના લોકો નળ ઉપર કપડાની (અને હવે તો નાયલોનની સાવ નકામી) કોથળી બાંધી દઈ પાણી ગાળ્યાનો મિથ્યા આત્મસંતોષ અનુભવતા થઈ ગયા છે. હકીકતમાં તો કોથળીમાં ગળાઈને પાણી આવે એનો અર્થ એ જ થયો કે અળગણ પાણીના જીવો કોથળીમાં રહી જાય અને ઘડી-બેઘડીમાં જ્યારે એ કોથળી સૂકાઈ જાય ત્યારે (પાણીમાં જ જીવી શકે તેવા) એ જીવો તરફડીને મરી જતા હોય છે. આમ, કોથળી બાંધવા પાછળનો અણગળ પાણીના જીવોની હિંસાથી બચવાનો

મૂળભૂત ઉદેશ તો તેમાં મરી જ જતો હોય છે. તો હવે આજના યુગમાં અમલમાં કરી શકાય તેવો આનો વ્યવહારૂ વિકલ્પ શું તે પ્રશ્ન સહેજે ખડો થાય જ. જ્યાં સુધી હાલ ચાલતા (નળને કપડાની કોથળી બાંધવાના) રિવાજને જાળવી રાખવો એટલા માટે ઉચિત જણાય છે કે, તેમાં જીવોની રક્ષા થતી ન હોવા છતાં પણ *પાણી તો ગાળીને જ વાપરવું જોઈએ* એ વિચારની રક્ષા જરૂર થાય છે. એટલે પરિણામ નિર્ધ્વંસ થતા અટકતા હોવાથી નળને કોથળી બાંધવાનું છોડી દેવાને બદલે (કોથળી સૂતી કપડાની જ બાંધવી) અને આપણા પરિણામની સાથે-સાથે જીવોની પણ રક્ષા થાય એ દિશામાં આગળ વધવું જોઈએ.

જ્યાં-જ્યાં હજુ પણ નાનાં ગામડાંઓમાં-શહેરોમાં-તીર્થોમાં કૂવાની વ્યવસ્થા હોય કે ઊભી કરી શકાય તેમ હોય ત્યાં ત્યાં કૂવામાંથી હાથે પાણી ખેંચીને સંખારો તે જ કૂવામાં કાઢવાનું એકદમ શક્ય છે. જેને જયણાનો તીવ્ર પરિણામ હોય એને આ વાત અશક્ય નહિ જ લાગે. મુંબઈ જેવા શહેરોમાં પણ આજેય એવા વૈષ્ણવ પરિવારો વસે છે કે જે તેમના ગૃહમંદિરમાં પધરાવેલા ઠાકોરજીના અભિષેક માટે નળનું પાણી ન વાપરવાના આગ્રહી હોવાથી નજીકમાં આવેલા કૂવામાંથી ઉ.પ્ર. બાજુના ભૈયાઓ પાસે પાણી ખેંચાવીને રોજ ઘડા દીઠ રૂપિયાની મજૂરી આપીને પણ ઠાકોરજી માટે તથા ચુસ્ત વૈષ્ણવો તો અંગત વપરાશ માટે પણ એ જ પાણી વાપરે છે. પૂર્વાવસ્થામાં મુંબઈ વાલકેશ્વર રોડ ઉપર આવેલ શ્રી સુપાર્શ્વનાથ ભગવાનના દેરાસરની પાછળ આવેલ કૂવામાંથી શીતલબાગ ખાતેના દેરાસરમાં પ્રભુજીના અભિષેક અને પીવાના પાણી માટે પાણી પહોંચાડે તેવી વ્યક્તિની શોધ કરતા ખબર પડી કે, આજે પણ ઉત્તર પ્રદેશના ભૈયાઓ સવારથી સાંજ સુધી વૈષ્ણવ પરિવારોમાં કુવાનું પાણી આવી રીતે હાથે ખેંચીને પહોંચાડે છે. જો વૈષ્ણવ પરિવારો મુંબઈ જેવા શહેરોમાં પણ વીસમી સદીમાંયે પોતાના ઠાકોરજી માટે નળનું પાણી ન જ વાપરવાનો આગ્રહ જીવનમાં અમલી બનાવી શકતા હોય તો, ત્રિલોકગુરુ પરમાત્માના ભક્ત જૈન પરિવારો માટે એ અઘરું છે? જો કે આજે પણ વાલકેશ્વરથી માંડીને ભૂલેશ્વર અને તારદેવ જેવા વિસ્તારોમાં એવા

વિધિઅનુરાગી જૈનો વસે છે કે જે આવા ભૈયાઓને મહિનાના પગારથી બાંધીને સંખારો કાઢેલું કૂવાનું પાણી મંગાવીને યથાશક્ય તેનો જ ઉપયોગ કરે છે.

જે યાત્રિકો સુખશીલીયા-સગવડ પ્રેમી હોય તેમને તીર્થસ્થાનોના વહીવટદારોએ દુભાતા દિલે કદાચ નળ જેવી જયણાવિહીન સગવડો તીર્થસ્થાનોમાં પૂરી પાડવી હોય તો પણ સાથે-સાથે તે વહીવટદારોએ જે યાત્રિકો તીર્થસ્થાનોમાં વિધિપૂર્વક પાણી ગાળીને સ્નાન-પૂજાદિ કરવા માગતા હોય તેમને તે માટેની કૂવા વગેરેની સગવડ તો અવશ્ય પૂરી પાડવી જોઈએ. તેને બદલે આજે તો મોટે ભાગે એવી પરિસ્થિતિનું સર્જન થયું છે કે, જ્યાં તીર્થસ્થાનોમાં જૂના સમયના કૂવા વગેરે હોય ત્યાં પણ અજ્ઞાન વહીવટદારો તે કૂવા બંધ કરી દઈ ઉપર મશીન બેસાડી દે છે. એટલે પાણી હાથે ખેંચીને કે તીર્થના કોઈ સ્ટાફ પાસે ખેંચાવીને સંખારો કઢાવી વાપરી શકાય તેવી વ્યવસ્થા પૂરી પાડવાની વાત તો બાજુ પર રહી પણ આવી વ્યવસ્થા ઉપલબ્ધ હોય તો તેનો પણ નાશ કરવામાં આવે છે. મુંબઈ જેવા શહેરો કરતાં યે નાનાં ગામડાં કે નાનાં શહેરોમાં તો હજી પણ કૂવેથી પાણી ખેંચીને લાવવું ખૂબ સરળ છે.

આજ કાલ ટ્યુબવેલો અને ડીઝલ-ઑઈલ એન્જિનો દ્વારા પાતાળમાંથી એટલું બધું પાણી ચૂસી લેવામાં આવ્યું છે કે, ઘણી જગ્યાએ કાં તો કૂવા સાવ સૂકાઈ ગયા છે. તો વળી બીજે કેટલેક ઠેકાણે પાતાળકૂવાવાળા સંડાસને કારણે ભૂગર્ભના જલસ્રોતો પ્રદૂષિત થયા હોવાથી આવા કૂવાઓનું પાણી વાપરવાલાયક રહ્યું નથી. ક્યાંક-ક્યાંક જમીનમાં પાણી ખારું હોવાને કારણે પણ તેનો ઉપયોગ થઈ શકે તેમ હોતો નથી. જે સ્થળોએ કૂવાનું પાણી વાપરવામાં ઉપરોક્ત મુશ્કેલીઓ ઉભી થાય એમ હોય ત્યાં પણ શક્ય બની શકે તેવા અલ્પદોષવાળો વિકલ્પ વરસાદી પાણીના ટાંકાનો છે.

અમદાવાદ, પાટણ, ખંભાત, રાધનપુર જેવા અનેક શહેરોના જૂના દેરાસરોમાં રંગમંડપની જ અથવા ચોકની નીચે ભૂગર્ભ (ભોંયરા)માં વરસાદનું પાણી સંઘરવા અંડરગ્રાઉંડ ટાંકા કરવામાં આવેલા છે. દેરાસરના

શિખર ઉપર કે ઘુમ્મટ ઉપર જે પાણી પડે તે (ઘુમ્મટની ચારે બાજુ નાનકડી પાળી બનાવી લીધી હોવાને કારણે નીચે પડવાને બદલે) નળિયાની કે બીજી કોઈ પણ પાઈપ દ્વારા સીધું ભૂગર્ભ ટાંકામાં વહ્યું જાય. ટાંકાનું ધાબું (સીલિંગ) પત્થરની પાટોથી ભરવામાં આવતું, જેમાં એકાદ ઘડો જઈ શકે તેટલી જગ્યાવાળું ઢાંકણું રાખી તેમાં ત્રાંબા-પિત્તળનું ઢાંકણું ખોલી ઘડા દ્વારા રસ્સી વડે પાણી ખેંચી તે જ ટાંકામાં સંખારો કાઢી લેવામાં આવતો. આમ, અણગળ પાણીના જીવોની વિરાધનાના મોટા પાપમાંથી બચી જવાતું. દરેક સ્થળે પોતાની આવશ્યકતા અને પ્રાપ્ત જગ્યાના આધારે ટાંકાની લંબાઈ, પહોળાઈ ને ઊંડાઈ અલગ-અલગ રહેતી. એક અર્થમાં જોઈએ તો ટાંકું એક પ્રકારનું ભોંયરું જ અથવા ભૂગર્ભ-ઓરડો જ રહેતો જેમાં પાણી ભરવામાં આવતું. આમ જમીનની અંદર જ દેરાસરની કે ચોકની નીચે જ ટાંકું બનાવવામાં આવતું હોવાથી એક પણ ઈંચ વધારાની જગ્યાની આવશ્યકતા રહેતી નહિ. અગાશીમાં બે છિદ્રો(કાણાં) રાખવામાં આવતા. જે છિદ્રમાંથી પાણી પાઈપ દ્વારા ટાંકામાં જાય તેમાં શિયાળા-ઉનાળા દરમ્યાન સામાન્ય રીતે લાકડાનો દટ્ટો ભરાવી રાખવામાં આવતો જેથી ધૂળ, જીવજંતુ વગેરે ટાંકામાં જાય નહિ. પહેલો વરસાદ પડે ત્યારે પણ આ દટ્ટો બંધ જ રહેતો જેથી અગાશીમાં વર્ષભરમાં જે ધૂળ-કચરો વગેરે ભેગા થયા હોય તે પહેલા વરસાદના પાણીમાં ધોવાઈને બીજા ખુલ્લા છિદ્ર દ્વારા બહાર નીકળી જવાથી અગાશી ચોખ્ખી થઈ જતી. તે પછી બીજા છિદ્રમાં દટ્ટો ભરાવી દઈ ટાંકીમાં પાણી જવા માટેના પાઈપનો દટ્ટો ખોલી દેવામાં આવતો જેથી પછીના વરસાદનું પાણી સીધું ટાંકામાં ભરવા લાગતું. ક્યારેક પહેલા વરસાદ પછી ચોખ્ખી થયેલી અગાશીમાં મરેલા ઉંદર જેવી અશુચિ મૂકી જવાથી કાગડાની ટેવ હોય છે એટલે બીજા વરસાદ પહેલાં તે અંગે નજર કરી લેવામાં આવતી.

નળ કે પંપના પાણીને ઘરોમાં ટાંકામાં ભરવામાં આવે ત્યારે તેમાં થોડા જ સમયમાં જીવાત-પોરા વગેરે થઈ જતા જોવામાં આવે છે. જ્યારે વરસાદના પાણીમાં એવો ગુણ છે કે, તે પાણી વર્ષો સુધી પડ્યું રહે તો પણ તેમાં જીવાત

તો નહિ પણ પાણીના પોરા પણ પડતા નથી. પાણી કાઢતી વખતે હાથ-વાસણ વગેરેની ચોખ્ખાઈ જાળવી હોય તો વર્ષો સુધી ચોખ્ખા રહેતા આ વરસાદના પાણીના ઔષધીય ગુણોનું પણ અઢળક વર્ણન આયુર્વેદિક ગ્રંથોમાં જોવા મળે છે.

'ચરકસંહિતા'ના સૂત્રસ્થાનમાં ૨૭મા 'અન્નપાનવિધિ' નામના અધ્યાયમાં જલવર્ગના વર્ણનમાં વરસાદના પાણી (દિવ્ય જળ)ને સ્વભાવે શીતવીર્ય, પવિત્ર, કલ્યાણકારી, સ્વાદે સુખકારી, નિર્મળ, પચવામાં હલકું, મેધા(બુદ્ધિ) વર્ધક, આરોગ્યકારી તથા સાતે ધાતુઓને વધારનારું અને રાજાઓને પીવા યોગ્ય કહ્યું છે. સુશ્રુત પણ સૂત્રસ્થાનના ૪૫મા અધ્યાયમાં ગગનજળને કફ, વાયુ અને પિત્ત ત્રણેનો નાશ કરનારું, બળપ્રદ, રસાયન, બુદ્ધિવર્ધક, અમૃતતુલ્ય અને એકાંતે કરીને અતિશય પથ્ય કહે છે. એમાંય ભાદરવા સુદ તેરસ (અગત્સ્ય-ત્રયોદશી)ના દિવસે અગત્સ્ય તારાના ઉદય પછી શરદ ઋતુમાં એકઠા કરાયેલા 'હંસોદક'ના નામે ઓળખાતા વરસાદના પાણીના તો અઢળક ગુણ ગવાયા છે. અષ્ટાંગહૃદયકાર તેના દ્રવદ્રવ્ય વિજ્ઞાનીય નામના પાંચમા અધ્યાયમાં આ બધા ગુણો ઉપરાંત હૃદયને માટે પણ તે હિતકારી હોવાનું જણાવે છે.

ચરકસંહિતાના જ યજ:પુરુષીય નામના ૨૫મા અધ્યાયમાં બધા તેલમાં તલનું તેલ, દૂધમાં ગાયનું દૂધ, કઠોળમાં મગ-એમ બધી શ્રેષ્ઠ વસ્તુઓનું વર્ણન કરતા 'અંતરિક્ષમ્ ઉદકમ્ ઉદકાનામ્' કહીને નદી, તળાવ, કૂવા, સરોવર, વાવ વગેરે બધા પાણીમાં વરસાદનું પાણી શ્રેષ્ઠ હોવાનું જણાવેલ છે. આ જ વાત કવિ ઋષભદાસે શ્રી શત્રુંજયની સ્તુતિમાં 'મંત્રમાંહે નવકાર જ જાણું, તારામાં જેમ ચંદ્ર વખાણું, જલધર જલમાં જાણું' બોલનારને પણ 'જલધર જલમાં જાણું'નો અર્થ ભાગ્યે જ ખબર હશે. જલધર એટલે જલને ધારી રાખે તે એટલે કે મેઘ-વાદળ, કવિવરનો આશય એમ છે કે જેમ બધા પાણીમાં જલધરનું એટલે કે વરસાદનું પાણી શ્રેષ્ઠ છે તેમ બધા તીર્થોમાં

શ્રી શત્રુંજય શ્રેષ્ઠ છે. માટે જ જૂના વૈદ્યો મંદ પાચન શક્તિવાળા દરદીઓને વરસાદનું પાણી જ વાપરવાનું કહેતા. ગામડાના જૂના લોકો માટીના મોટા-મોટા ગોળાઓમાં ચોમાસામાં ભરી રાખેલું વરસાદનું પાણી દાળ સીઝવવા, લગ્નાદિ પ્રસંગોએ પહેરવાની મૂલ્યવાન રેશમી સાડીઓ ધોવામાં તથા ચાંદી જેવી કિંમતી ધાતુના વાસણો માંજવામાં ઉપયોગમાં લેતા જેથી દાળ વગેરે જલ્દી સીઝી જાય તથા મૂલ્યવાન કપડાં-વસ્ત્રો એકદમ ઉજળા થાય. અત્યારે આરસનાં તથા ધાતુનાં પ્રતિમાજી કાળા પડી જતાં હોવાની ફરિયાદ વ્યાપક બનતી જાય છે તેમાં કેમિકલવાળા નળનાં કે પંપના પાણી દ્વારા થયેલો અભિષેક-પ્રક્ષાલ પણ કારણભૂત છે. આના બદલે જો(ટાંકામાં સંઘરેલા) વરસાદના પાણીથી અભિષેક કરવાનું શરૂ કરવામાં આવે તો પ્રતિમાજી ઉજળા થયા સિવાય રહે નહિ. વરસાદના પાણીનો અને તેમાંયે મઘા નક્ષત્રના પંદર દિવસ દરમ્યાન વરસેલાં પાણીનો આ દેશમાં ખૂબ મહિમા ગણવામાં આવતો.

ખંભાતથી લઈને બાડમેર સુધીના અનેક શહેરોમાં દેરાસરની જેમ જ ઘરે ઘરે ઘર વપરાશના પાણી માટે પણ ઘરની નીચે ટાંકું બનાવી અગાશી ઉપર પડતા વરસાદના પાણીને પાઈપ દ્વારા ઝીલી લઈ તેનો જ ઉપયોગ કરવામાં આવતો. ખંભાત જેવા શહેરોમાં આજે પણ ઘરે ઘરે આવા ટાંકાનાં પાણીનો જ ઉપયોગ કરવામાં આવે છે. શ્રીમંતોના ઘરોમાં તો એટલાં મોટાં ટાંકા રહેતાં કે તેમની આખી ન્યાતનો જમણવાર કરવામાં આવે તો પણ ટાંકાનું પાણી માંડ ચાર આંગળ જેટલું પણ ઓછું થતું નહિ. મોજશોખ માટે ટી.વી.-વિડીયોથી લઈને માવૃતિ-ફ્રિજ સુધીના સાધનો વસાવી શકનાર જૈનો જો ધારે તો જયણાના પાલન માટે પોતપોતાના ઘરે ટાંકા દ્વારા ગાળેલા પાણીનો ઉપયોગ કરવાનું આયોજન તેમના માટે જરાય અઘરું નથી.

મોટા શહેરોમાં તો પીવાના પાણીની અને ગટરની પાઈપો લીક થઈને એકબીજામાં ભળી જઈ રોગચાળો ફેલાવવામાં કારણ બન્યા હોવાના કિસ્સા પણ નોંધાયા છે. મોટા શહેરોમાં જંગી સરોવરો કે બંધોમાંથી તોતિંગ મશીનો દ્વારા વોટર વર્કર્સમાંથી પાઈપોનાં જાળા ઉભા કરવામાં જે ઘોર આરંભ

સમારંભ થાય છે તેનું કરાવણ-અનુમોદનનું પાપ તે નળનું પાણી વાપરનારને લાગ્યા વગર રહે? મ્યુનિસિપાલિટીના કેમિકલવાળા પાણી પીને રોગના ભોગ બનવું અને કો'ક વાર યુદ્ધ જેવા સંયોગમાં કો'ક આતંકવાદી આખા શહેરના મ્યુનિ.ના મુખ્ય ટાંકામાં પોટેશિયમ સાઈનાઈડ જેવું કાંઈક ઝેર નાખીને બધાને સામૂહિક રીતે જોખમમાં મૂકે તેવી પરિસ્થિતિના ભોગ બનવું તેના કરતાં દરેકના ઘરે પાણીની સ્વાવલંબી-જયણાયુક્ત ટાંકાની વ્યવસ્થા હોય તે વધુ સારું નથી?

સરકારને અપાતા કરવેરાનો ઉપયોગ કતલખાના જેવી મહાહિંસાના પ્રોત્સાહનમાં થતો હોય છે. તેનાથી ચિંતિત લોકોએ ખરેખર તો પોતાના પૈસાનો તેવો ઉપયોગ ન થાય તે માટે શક્ય તેટલી સરકારી સવલતોનો ઉપયોગ કરવાનું ટાળવું જોઈએ. તમે નળનો ઉપયોગ કરો તો તમારે મ્યુનિ.ને વોટર ટેક્સ(પાણી વેરો) ભરવો જ પડશે, અને તમે ભરેલા પાણી વેરાના પૈસા સરકાર ધર્મનાશક યોજનાઓમાં વાપરશે. પણ તમે ટાંકાનું જ પાણી વાપરતા હો ને નળનો ઉપયોગ કરતા જ ન હોવ તો કદાચ પાણી વેરામાંથી બચી પણ શકો. આમ, તમારા પૈસામાંથી થતી હિંસા એટલે અંશે અટકી શકે.

જો માત્ર એક ફૂટ લાંબા, એક ફૂટ પહોળા અને એક ફૂટ ઊંડા એટલે કે એક ઘન(ક્યુબિક) ફૂટ ટાંકામાં ૨૮ લીટર પાણી સમાઈ શકતું હોય તો એક કુટુંબની પાણીની જરૂરિયાતો જયણાપૂર્વક સંતોષી શકવા માટે બહુ મોટા ટાંકાની પણ આવશ્યકતા રહેતી નથી. હકીકતમાં તો શાસ્ત્રોમાં દેરાસર-ઉપાશ્રય જેવા ધર્મસ્થાનોનું બાંધકામ પણ પાણી ગાળીને જ કરવાનું વિધાન છે. જો દેરાસર ઉપરાંત ઉપાશ્રય-ધર્મશાળા જેવા ધર્મસ્થાનોની નીચે આવા વિરાટ ટાંકાની વ્યવસ્થા કરવામાં આવે તો તે ધર્મસ્થાનોના બાંધકામ ઉપરાંત સાધર્મિક-જમણ, સામૂહિક ઓળી જેવા ધર્માનુષ્ઠાનોમાં પણ ગાળેલું પાણી વાપરવાની વિધિ સાચવી શકાય. ઘરે-ઘરે ટાંકાના રૂપમાં આવા વિકેન્દ્રીત બંધની વ્યવસ્થા હોય તો નદીઓ પર વિરાટ બંધો બાંધી લાખો માણસોને બેઘર

કરવાની; કરોડો જળચર જીવોને મારવાની કે લીલાછમ જંગલોને કાપવાની જરૂર ન પડે, અને બબ્બે-ત્રણ વર્ષના કારમા દુષ્કાળમાં પણ પીવાના પાણીની સમસ્યા તો ઉભી જ ન રહે. સાંભળવા મુજબ આફ્રિકાની કે લેટિન અમેરિકાની કો'ક સરકાર તો નવા મકાનમાં ટાંકાનું આયોજન કર્યું હોય તો જ તેના નકશા મંજૂર કરીને બાંધકામ શરૂ કરવાની રજા આપે છે.

પાણીની આવશ્યકતા જ ન રહે તેવી વિદેહી સ્થિતિને પ્રાપ્ત કરીએ ત્યાં સુધી જે પાણી અનિવાર્યપણે વાપરવું પડે તો જયણાપૂર્વક જ વાપરવું છે તેવો સંકલ્પ હોય તો તેના બળે એક દિવસ એવી અક્ષય સ્થિતિ જરૂર પ્રાપ્ત થાય કે જ્યાં દેહાતીત બની ગયેલ આતમરામને આવા પરપદાર્થોની આવશ્યકતા જ ન રહે.

-મુનિ હિતરૂચિવિજયજી

પર્યુષણ પર્વ, વિક્રમ સંવત ૨૦૪૯

- દુનિયાનું સૌથી મોટું પુસ્તકાલય પેરિસમાં વિવ્વેલેથિક નેશનલ લાયબ્રેરી ૫૦ લાખ પુસ્તકો હસ્તલિખિત.
- ઇંગ્લેંડમાં બ્રીટિશ મ્યુજીયમ થોડુ નાનું પણ એમાં કિંમતી પદાર્થ ઘણા છે.
- રશિયામાં લેનીન ગ્રેડમાં ૪૫ લાખ ૬૦ હજાર પુસ્તકો, ૧ લાખ ૨૦ હજાર હસ્ત લિખિત પ્રત.

વીર શાસન તા. ૬/૧/૧૯૩૩ના અંકમાં.

તમારા ઓરડામાં અજવાળું પાથરનાર વીજળીની ચાંપ કો'ક ગરીબ ગામડિયાના જીવનમાં અમાસનો અંધકાર પણ રેલાવી શકે છે

વીજળીની શોધ નવીસવી થઈ હતી તે જમાનામાં કો'ક યુરોપિયન કંપનીનો એજન્ટ કાઠિયાવાડના એક દેશી રજવાડાના ઠાકોરને તેમના રાજમાં વીજળી દાખલ કરવા સમજાવવા આવેલો. રાજમહેલમાં રાજાસાહેબ આગળ વીજળીની જાતભાતની કરામતોનું વર્ણન ચાલી રહ્યું હતું. "બસ એક ચાંપ દબાવો એટલે અજવાળું થઈ જાય"થી માંડીને "ઉનાળાની ભરગરમીમાં ચાંપ દબાવો એટલે પંખો ચાલ્યા જ કરે" સુધીનું ગુણવર્ણન પૂરું થયા પછી ધીંગી કોઠાસૂઝ ધરાવનારા એક કાઠી દરબારે પેલા યુરોપિયનને પૂછ્યું કે "આ તો ભાઈ, તે બધી એના ફાયદાની વાત કરી, પણ એનો કોઈ ગેરફાયદો ખરો કે નહીં ?" એજન્ટે જ્યારે કહ્યું કે "ગેરફાયદાઓમાં તો એટલું જ કે કો'ક વાર કરંટ લાગે તો માણસ મરી જાય એવું બને" ત્યારે પળનાય વિલંબ વગર રાજાએ કહી દીધું કે "જે ચીજથી માણસ મરી જાય તેવી શક્યતા હોય તે ચીજમાં લાખ ફાયદા હોય તો પણ મારે એ ચીજ ન જોઈએ."

કાઠિયાવાડના એ ઠાકોરને તો વીજળીનો કરંટ લાગે તો માણસ મરી જાય એટલા એક જ ગેરફાયદાની ખબર હતી. જ્યારે ગાંધીનગર અને દિલ્હીમાં બેઠેલા ઠાકોરોને તો એ પણ ખબર છે કે જળવિદ્યુત મથકો, થર્મલ પાવર સ્ટેશનો અને ખાસ કરીને અણુવિદ્યુત મથકો તો દુનિયા આખીને મોતને આરે લાવીને ઉભી કરી દે તેટલા ખતરનાક છે અને છતાંય નારાયણ દેસાઈ જેવા સર્વોદયી આગેવાનોની ચેતવણીઓને ગણકાર્યા વગર તેઓ સુરત પાસેના કાકરાપારથી લઈને દેશભરમાં અણુવિદ્યુત મથકોનું જાળું વિસ્તારતા જ જાય છે.

જળવીજળી પેદા કરવા માટે જે વિરાટ બંધો બાંધવામાં આવે છે તેની

કેટલી ભારે સામાજિક પર્યાવરણીય કિંમત ચૂકવવી પડે છે તેનું અભ્યાસપૂર્ણ વર્ણન બ્રિટનના જગવિખ્યાત મેગેઝિન 'ઈકોલોજીસ્ટ'ના તંત્રી "એડવર્ડ ગોલ્ડ સ્મિથ અને નિકોલ હીલ્ડયોર્ડ" 'સોશિયલ એન્ડ એન્વાયર્નમેન્ટલ ઈફેક્ટસ ઓફ લાર્જ ડેમ્સ' (મોટા બાંધોની સામાજિક અને પર્યાવરણિક અસરો)ના ત્રણ વોલ્યુમમાં દુનિયાભરના મોટા બંધના કેસ સ્ટડી મૂકીને કર્યુ છે. હજારો લાખ્ખો ગરીબ માણસોને પોતાના બાપીકા ઘરમાંથી ઉખેડીને ફેંકી દેવા, સૂર્યનું કિરણ જ્યાં ધોળે દિવસે પણ પેસી ન શકે તેવા જંગલોને ડુબાડી દેવા અને આવી રીતે બંધો બાંધીને વીજળી પેદા કરી શ્રીમંતોના રેફ્રિજરેટર્સ કે એરકન્ડિશનર્સ ચલાવવામાં કે તમાકુના પાકને રાતદિવસ પાણી પૂરું પાડવા ઈલે. એન્જિનો ચલાવવામાં કયો કુદરતી ન્યાય છે એ એક ગહન કોયડો છે.

થર્મલ પાવર સ્ટેશનના કિસ્સામાં પણ 'વોહી રફતાર બેઢંગી' જેવી જ હાલત છે. રોડ કે રેલવે રસ્તે અમદાવાદ પાસેથી પસાર થતી વખતે સૌએ સાબરમતી પાસે (જેને મોટાભાગના લોકો મિલના ભૂંગળા માની લે છે) થર્મલ પાવર સ્ટેશનના તોતિંગ ભૂંગળા જોયા હશે. તમે કદાચ જિંદગીમાં જોયા ન હોય એવા ઝેરી ધુમાડાના થાંભલા (એને માટે ધૂમ્રસ્તંભો જેવો કાવ્યાત્મક શબ્દ વાપરવાથી એની પાછળ રહેલી મરશિયાની છાંટ ઓછી નથી થતી) એ ભૂંગળા ઉપરથી આકાશમાં ઉઠતા તમને જોવા મળશે. આજુબાજુના મકાનોની આગાશી ઉપર પાવરસ્ટેશનમાંથી ઉડતી ઝીણી કોલસીના થરનાં થર બાઝી જાય છે. સાબરમતીના ઉપાશ્રયમાં ચાતુર્માસ કરતા જૈન સાધુઓના શ્વેત વસ્ત્રો દિવસભર ઉડતી ઝીણી કોલસીને કારણે સાંજે શ્યામવર્ણા થઈ જતાં હોવાનો અનુભવ તેમને મુખેથી સાંભળવા મળે છે. અમદાવાદ મ્યુનિ. કોર્પો.ના એક ટોચની કક્ષાના અધિકારી સાથે થયેલી અનૌપચારિક વાતચીત દરમિયાન તેમણે સામે ચાલીને નિખાલસતાપૂર્વક કબૂલ કરેલું કે થર્મલ પાવર સ્ટેશનને કારણે સાબરમતીનો વિસ્તાર અમારો સૌથી વધુ પ્રદૂષિત વિસ્તાર છે. કોલસામાંથી વીજળી પેદા કરતા આ થર્મલ પાવર સ્ટેશનો વાતાવરણમાં ઢગલાબંધ સલ્ફર અને નાઈટ્રોજન ઓકસાઈડ્સ છોડતા હોય છે. ઊંચે

આકાશમાં તેમના બંધારણમાં રાસાયણિક પરિવર્તનો થયા પછી આજ કેમિકલ્સ એસિડના સ્વરૂપમાં વરસીને નદીનાળામાં રહેલી વનસ્પતિને, જીવસૃષ્ટિને ખતમ કરવા ઉપરાંત જ્યાં વરસે ત્યાં જંગલોનો નાશ કરે છે. ત્યાં સુધી કે આ એસિડથી તે વિસ્તારમાં આવેલા મકાનોને પણ ઘસારો પહોચે છે. ''ધ વર્લ્ડ રિસોર્સીઝ ઈન્સ્ટિટ્યૂટ'' 'બ્રેધિંગ ઈઝિયર' નામના પુસ્તકના આંકડા અનુસાર અમેરિકાની કેટલીક પૂર્વીય પર્વતમાળાઓમાં વરસતા વરસાદમાં તો બિનપ્રદૂષિત વર્ષાજળની સરખામણીમાં એસિડનુ પ્રમાણ બે હજારગણું વધારે નોંધાયું છે. આવી વિશ્વસનીય સંસ્થાનો રિપોર્ટ ન હોય તો આપણું મન માનવા પણ તૈયાર ન થાય કે ત્યાંના વરસાદમાં લીંબુના રસમાં હોય તેટલું એસિડનું પ્રમાણ હતું. એસિડ-વર્ષામાં મુખ્ય ગુનેગાર સલ્ફર ડાયોકસાઈડ (એક પ્રકારનું એસિડ જે વાહન અને કારખાનાઓ માંથી નિકળે તે) છે અને અમેરિકામાં વાતાવરણમાં ઉમેરતા કુલ સલ્ફર ડાયોકસાઈડમાંથી ૬૫ ટકાના મળમાં ઈલેક્ટ્રીક સાધનોનો વપરાશ હોય છે.

આ બધું વાંચીને ઈલેક્ટ્રીસીટીનો વપરાશ સદંતર છોડી દેવો એ તો કો'ક મહાસત્ત્વશાળી ડાયનેમિક વિરલાનું જ કામ છે. પણ દરેક વાચક ધારે તો એટલું તો ચોક્કસ નક્કી કરી શકે કે હવેથી બે દાદર ચઢવા માટે કે ચાર દાદર ઉતરવા માટે લિફ્ટનું બટન દાબવાને બદલે ચરણકમળને થોડુંક કષ્ટ આપીશું. ઈલેક્ટ્રીસીટીના ઉત્પાદનમાં સીધું-આડકતરું આટલું બધું શોષણ છે એ જાણ્યા પછી તારદેવ એરકન્ડિશન્ડ માર્કેટની સામે અરવિંદકુંજમાં રહેતા ધાનેરાના શ્રીમંત કુટુંબના સેવંતી શાહે પોતાના ઘરમાં વીજળીનો વપરાશ સદંતર બંધ કર્યો છે. ઘરમાં ડોર-બેલને બદલે તેમણે દરવાજાની બહાર એક દોરી બાંધી અંદર તેની સાથે જોડાયેલ ઘંટની વ્યવસ્થા કરી છે. બહારથી કોઈ પણ મહેમાન આવે તો દોરી ખેંચે એટલે અંદરનો ઘંટ વાગે. જે સાંભળીને દરવાજો ખોલવામાં આવે. મહેમાનો માટે નોવેલ્ટીની નોવેલ્ટી અને વીજળીક ડોરબેલનો ઉપયોગ ન કરવો પડે તે નફામાં. સૌ કોઈ સેવંતીભાઈની જેમ ડોર-બેલ પર હાથ નાખતાં પહેલાં દરવાજો સહેજ ખટખટાવીને કે એકાદ-બે બૂમ

મારીને દરવાજો ખોલવાની કોશિશ તો જરૂર કરી શકે. બહુ ગરમી લાગે તો ગયા ઉનાળામાં સેવંતીભાઈનો પરિવાર તેમની પત્નીને કરિયાવરમાં મળેલ મોતીભરતના સુંદર હાથવીંઝણાથી થોડીક ગરમી દૂર કરી લેતો પણ પંખાની સ્વીચને તેમણે હાથ પણ લગાડ્યો નથી. સાદા જીવનના પ્રેમી હોવાને કારણે શ્રીમંત હોવા છતાં એરકન્ડિશનર તો તેમણે વસાવ્યું જ નહોતું, પર ઘરમાંના રેફ્રિજરેટરને વિદાય આપી પાણી ઠંડું કરવા માટે અમદાવાદી ઘડાનો વપરાશ શરૂ કરી દીધો. આની એક આડપેદાશરૂપે અતિશય ઠંડા પાણી અને બીજા પદાર્થો ખાવાથી શરૂ થયેલી મંદાગ્નિ અને પાચન ન થવાની તેમની તકલીફો પણ દૂર થઈ ગઈ તેથી તેમનો વૈદ્ય પણ તેમની વીજળી હટાવો ઝુંબેશથી રાજી છે. અમેરિકાના તમામ અણુવીજમથકો (વીજળી પેદા કરવાનો એક અપેક્ષાએ સૌથી ખતરનાક રસ્તો) દ્વારા પેદા થતી વીજળીનો અરધો અરધ હિસ્સો, તો તેઓ રેફ્રિજરેટર્સ ચલાવવામાં જ ખર્ચી નાખે છે. અમેરિકામાં વપરાતી વીજળીના ૭ ટકા, રેફ્રિજરેટર્સ પાછળ વપરાય છે. જ્યારે શહેરોમાં વસતા મોર્ડન અમેરિકનો તો તેમના કુલ વીજવપરાશના ૨૫ ટકા ફ્રિજ પાછળ વેડફી નાંખે છે. અમેરિકનોને ફ્રિજ વાપરવાનું બંધ કરવા સમજાવવું અઘરું છે પણ ઘરનું વાસ્તુ જ ઘડો મૂકીને કરવા ટેવાયેલ ભારતીયો ધારે તો ફ્રિજના ઠંડા પાણીની બોટલોને બદલે મટકાકોલાથી ચોક્કસ ચલાવી શકે. ત્રાંબા-પિત્તળના વાસણનું અજોડ મ્યુઝિયમ ખડું કરનાર 'વિશાલા'વાળા સુરેન્દ્ર પટેલ અમદાવાદમાં સોલાથી ગોતા જતાં ભાગવત વિદ્યાપીઠની બાજુમાં આવેલા તેમના ગારમાટીના પેલેસની મુલાકાતે આવનાર મહેમાનોને હોંશે-હોંશે તેમનું વિજળી વગર ચાલતું દેશી ફ્રિજ અચૂક બતાવે છે. માટીનું આ નાનકડું સાધન વાતાવરણની ગરમી-ઠંડીને અંદર પેસતાં અટકાવી અંદરના શાકભાજી, ફળફળાદિની સાચવણી વગર વીજળીએ કરે છે. માનવતા, અનુકંપા, જનસેવા એ જ પ્રભુસેવા અને ગરીબોની હમદર્દીની મોટી મોટી વાતો કરનારને તો આમેય એરકન્ડિશનર કે રેફ્રિજરેટર વાપરવાનો અધિકાર નથી, કારણ કે ઓઝોન લેયરમાં ગાબડું પાડી દુનિયાભરમાં કેન્સર જેવા

રોગોનું પ્રમાણ બેહદ વધારી દેનારી સીએફસીના ઉત્પાદનમાં સૌથી મોટો ફાળો એરકન્ડિશનર્સ અને રેફ્રિજરેટર્સનો છે. સેવંતીભાઈનું આખું કુટુંબ મિશનરી ધગશવાળું છે એટલે એમની પત્ની પણ ચટણી વાટવાથી લઈને સૂંઠ-પીંપરીમૂળ જેવા મસાલા ખાંડવા ગ્રાઈન્ડર-મિકસર-જ્યુસરનો ઉપયોગ કરવાને બદલે પરંપરાગત સાધનોથી ચલાવી લે છે અને સ્કૂલમાં ભણતા તેમના બે દીકરા અને દીકરી કરિશ્મા રાત્રે વાંચવા માટે દિવેલના દીવાના અજવાળે વાંચીને પરીક્ષા આપવાનો આગ્રહ રાખે છે. વર્ષોથી સેંકડો રૂપિયાનું વીજળી બિલ ભરનાર પરિવારનું મીટર ઝીરોનો આંકડો બતાવવા લાગ્યું એટલે બેસ્ટનો માણસ આવ્યો અને જ્યારે તેણે જાણ્યું આ લોકો રાત્રે પણ ડ્રોઈંગરૂમમાં લાઈટને બદલે દીવો કરીને બેસે છે ત્યારે તેના મોંમાંથી પણ શબ્દો નીકળી પડ્યા, 'અરે! તુમ લોગ બમ્બઈ મેં જીતે હો ક્યા?' આ પરિવારે ચારિત્ર લઈ લીધું છે.

વીસ કરોડ અમેરિકનો ભેગા મળીને દર વર્ષે એક અજબ ઈલેક્ટ્રીક બલ્બનો ખુરદો બોલાવી દે છે. આટલા બલ્બ જો જમીન ઉપર પાથર્યા હોય તો રોજ ત્રણ એકર જમીન ભરાઈ જાય. મુંબઈના ગુજજુ આર્કિટેક્ટો પણ જો એટલું નક્કી કરે કે તેમના ગ્રાહકોના ઈન્ટિરિયરમાં સ્વીચ દાબવાથી એક સાથે બે કે ચાર બલ્બો ચાલુ થાય તેવા ફિટિંગ્સ ગોઠવવાને બદલે એક સ્વીચથી એક બલ્બ જ ચાલુ થાય તેવી ગોઠવણ કરે તો પણ વીજળીનો વપરાશ ઘટવા માંડે. ગરીબોના કૂબામાં તેલનું ટીપુંય દોહ્યલું કરવામાં શ્રીમંતોની કબર પર બળતા ઘીના દીવા કરતા મહાનગરોના આલીશાન ફ્લેટોના દીવાનખાનાના ઝુમ્મરોમાં એક સાથે બળતા દસ-દસ, વીસ-વીસ બ્લબોનો ફાળો ઘણો મોટો છે.

આપણે ભલે તેમને ધૂની, ચૌદમી સદીમાં જીવનારા કે જૂનવાણી કહીને વગોવી કાઢીએ પણ હિંસા અને શોષણના પાયા ઉપર ઉભેલી વીજળીથી ચાલતાં નાના મોટા કારખાનાની સંસ્કૃતિને હડસેલીને તેના વિકલ્પો લોકો સુધી

પહોંચાડવા જુદા જુદા ક્ષેત્રમાં અનેક તરવરિયા લોકો 'એકલો જાને રે'ને જીવનમંત્ર બનાવી પોતપાતાની રીતે સક્રિય અને કાર્યરત છે. ધોળકા તાલુકાના ગુંદીમાં સર્વોદય આશ્રમ ચલાવતા અંબુભાઈ શાહે જાહેર સંસ્થાઓમાં તથા મોટા જમણવારોમાં આટો દળવા માટે ઈલેક્ટ્રિક પાવરનો ઉપયોગ ન કરવો પડે તે માટે બળદથી ચાલતી તદ્દન સાદી આટો દળવાની ઘંટી બનાવડાવેલી. સક્રિય રાજકરણમાંથી નિવૃત થઈ સૌરાષ્ટ્રમાં કેશોદમાં અક્ષયધામ હોસ્પિટલ ચલાવતા રતુભાઈ અદાણીએ આવી ઘંટીની માંગણી કરતા અંબુભાઈએ પોતાના ગામડિયા સુથારને મોકલી કેશોદમાં આવી ઘંટી ફીટ કરાવી આપી છે. હેલ્થ ક્લબ કે જિમ્નેશિયમવાળા કમરની તંદુરસ્તી જાળવવા માટે હાથેથી ઘંટી ચલાવી અનાજ દળવાની ફેશન શરૂ ન કરે ત્યાં સુધી મુંબઈની શ્રીમંતાણીઓ આગળ ઘંટી જાતે તો નહીં પણ નોકર પાસે પણ ચલાવડાવી ગરીબોની રોજીમાં વધારો કરવાની વાત કરવાનો કોઈ અર્થ નથી, પરંતુ આવી બહેનો પણ ધારે તો બળદઘાણીનું તેલ વાપરી વીજળી બચાવવાની સાથે ગામડાના કો'ક ગરીબ ઘાંચીને રોટીની શોધમાં ધારાવીની ઝૂંપડપટ્ટીમાં અને બળદને દેવનારના કતલખાનામાં ધકેલતા જરૂર અટકાવી શકે. ગાંધીજીના ઘરડા અંતેવાસીઓ પણ બળદઘાણીમાંથી શ્રદ્ધા ગુમાવી બેસી ઘાણીના તેલના સંદિગ્ધ નામ નીચે પાવર ઘાણીનું તેલ વેચતા થઈ ગયા છે, તે જમાનામાં ઓપેરા હાઉસના વર્ધમાન સંસ્કૃતિ ધામના યુવાનોએ મુંબઈના સેંકડો પરિવારોને બળદઘાણીનું તેલ પૂરું પાડી તલનું તેલ વાપરતા કરી દીધા છે.

જેટલા અંશે તમે કારખાનાની વસ્તુ વાપરતા અટકીને માનવ ઊર્જા કે પશુ ઊર્જાના ઉપયોગથી બનાવાયેલી વસ્તુ વાપરો એટલા અંશે વીજળીનો વપરાશ ઘટે. આ સાદા ગણિતને અનુસરીને આ યુવાનો કારખાનામાં બનેલી ટૂથપેસ્ટથી લઈને બર્કિંગ પ્રોસેસમાં સતત ઉડતી ડસ્ટ વડે ફેફસાં ખલાસ કરી દઈ કારીગરોને ટી.બી.ના દરદી બનાવતા સ્ટીલના ભાણા સુધીની અનેક ચીજ-વસ્તુઓના વિકલ્પે ઘરગથ્થું દંતમંજન અને પરંપરાગત કંસારાઓ દ્વારા હાથે બનાવેલા કાંસાના વાસણ પૂરાં પાડે છે. ખાદી ગ્રામોદ્યોગનું નામ પડે ત્યાં

નાકનું ટેરવું ચડાવવા ટેવાયેલા લોકો પણ હવે તો કોટન્સ ઈન્ટરનેશનલ ટ્રેન્ડ બની ગયા હોવાથી ટોળેટોળામાં ખાદીભંડારોમાં ઉમટે છે. પણ છતાંય આવી વાતોમા હજી ઘણા લોકોને ઘડિયાળના કાંટા પાછા ફેરવીને દેશને અણુવિદ્યુત મથકોએ વીજળી પેદા કરવાના નામે અને રોશની પેટાવવાના નામે દુનિયાભરમાં ઠેર-ઠેર કેવા મોતનાં વાવેતર કર્યા છે તેનો વહીવંચો ઉખેળવામાં આવે તો વીજળીની રોશનીની પાછળ છુપાયેલા કાળા ડિબાંગ અંધારા નજરે પડશે.

અણુ વીજળી મથકોમાં વપરાતું પ્લુટોનિયમ એટલું બધું મારક છે કે એકાદ રતલ જેટલું પ્લુટોનિયમ પણ જો વાતાવરણમા ફેલાઈ જાય તો સમગ્ર પૃથ્વી ઉપરના પ્રત્યેક માણસને ફેફસાંનું કેન્સર લાગુ પાડી શકે. વીજળી પેદા કરવાની પ્રક્રિયામાં જે અણુ-કચરો નીકળે છે તેમાં પ્લુટોનિયમ નામનો આ દૈત્ય પણ હાજરાહજૂર હોય છે. પુરાણ કથાઓમાં અમરપટો લખાવીને આવેલા દેવતાઓ અને રાક્ષસોની વાતો ઠેર ઠેર આવતી હોય છે. પ્લુટોનિયમ નામનો આ રાક્ષસ પણ અમરપટો લખાવીને આવ્યો હોય છે. અણુ વીજળી મથકો ઉભા કરીને વીજળી પેદા કરી ગામડે- ગામડે વીજળી પહોંચાડી દઈ સો ટકા ગ્રામ્ય વીજળીકરણની સિદ્ધિઓની ગુલબાંગો હાંકનારની ૫-૨૫ નહીં પણ ૨૫ હજાર પેઢીઓ સ્મશાન ભેગી થઈ ગઈ હશે તે પછી પણ પ્લુટોનિયમ સક્રિય હશે. પાંચ લાખ વર્ષ પછી પણ જમીનમાં દાટેલા ભંડકિયામાંથી આ કિરણોત્સર્ગી રજ લીક થાય તો તે કાળના જીવોનું જીવતર ઝેર બનાવી દેવાની ક્ષમતા તેનામાં પડેલી છે. ૨૮૦૦ ડિગ્રીની ગરમીને અગનજવાળાઓ ઓકતા ચેર્નોબિલના ન્યુક્લિયર પાવર પ્લાન્ટના અકસ્માતના ૩૦૦ ચોરસ માઈલના વિસ્તારમાં વસતા દોઢેક લાખ લોકોને તાબડતોબ ત્યાંથી ખસેડી લઈને તેમની જનમભોમકાથી કાયમ માટે દૂર કરી દેવા પડેલા તે આપણે ભૂલવું ન જોઈએ. કાકરાપારના અણુ વીજળી મથકમાં આવું કાંઈ બને તો નજીકમાં જ આવેલા સુરત જેવા શહેરોની હાલત શી થાય તે તો કાકરાપાર સામે જંગે ચડેલા નારાયણ દેસાઈને પૂછવું જોઈએ. (સોવિયત

રશિયામાં પરમાણુ દુર્ઘટનાનું સ્થાન) ચેર્નોબિલનો મોતનો પંજો હજારો કિલોમીટર દૂર સુધી યુરોપના દેશોમાં ફેલાવાથી ત્યાં ખેતરો, જંગલો, સરોવરોને પણ કિરણોત્સર્ગી રજ અભડાવી ગયેલ. આ રેડિયો એક્ટિવિટીની અસરથી હજી તો સેંકડો માણસો ભાતભાતના રોગોથી રીબાઈને મરશે. અંદાજ એવો છે કે કેવળ રશિયા અને યુરોપમાં જ સિત્તેરથી એંસી હજાર માણસોને કેન્સરનો કોળિયો બનવું પડશે અને ચેર્નોબિલ તો પ્રતીક માત્ર છે. દુનિયાભરના દેશો જ્યારે અણુ વીજળી મથકોને તાળા મારી રહ્યા છે ત્યારે ભારત સરકાર આખા દેશમાં ઠેર ઠેર આવા મોતના અડા ઉભા કરવાની દિશામાં તદ્દન બેજવાબદારીથી આગળ વધી રહી છે. તેઓ અત્ર-તત્ર-સર્વત્ર ચેર્નોબિલ ઉભા કરી રહ્યા છે.

ગાંધીજીના અંગત સચિવ તરીકે ખૂબ જાણીતા મહાદેવ દેસાઈના પૌત્રી ડો. સંઘમિત્રા દેસાઈ પોતે સર્જન છે અને રાજસ્થાનના રાવતભાઠા ખાતેના અણુ વિદ્યુત મથકે આજુબાજુના ગરીબ ગામડિયાઓના આરોગ્યની જે બૂરી વલે કરી છે તેનો તેમણે કરેલો અભ્યાસ કોઈ પણ સંવેદનશીલ માણસની આંખમાં આંસુ લાવી દે તેવો છે. છાશવારે તમે છાપામાં જે તારાપુર અણુમથક ખોટકાયાની વાતો વાંચો છો ત્યાં અકસ્માતો એ અપવાદ નથી પણ નિયમ છે. આધુનિક પ્રગતિ પોતાના દુષ્કૃત્યો ઉપર ઢાંકપિછોડો કરવા માટે તેને રૂપાળા શબ્દોના વાઘા પહેરાવવામાં હોશિયાર છે. આવા અકસ્માતોને તેમણે અસામાન્ય ઘટનાઓનું નામ આપ્યું છે. ૧૯૮૦ સુધીમાં તારાપુર અણુમથકમાં આવી ૩૪૪ અસામાન્ય ઘટનાઓ બની ચૂકેલી. અને તે પછી દર મહિને સરેરાશ આવી પાંચ અસામાન્ય ઘટનાઓ ત્યાં બનતી. કોઈકે અણુ શક્તિના પંચના વડાને કહેવું જોઈએ કે તેમણે આવા અકસ્માત ન બને તેને અસામાન્ય ઘટના કહેવા જેટલો નાનકડો સુધારો તો તાત્કાલિક કરી લેવો જોઈએ. "સ્ટેટ ઓફ ઈન્ડિયાઝ એન્વાયર્નમેન્ટ: અ સિટિઝન્સ રિપોર્ટ" (ભારતીય પ્રકૃતિ અને વાયુ મંડલનું પરિદૃશ્ય-નાગરિકોની નજરે)ને નામે હિંદીમાં અનિલ અગરવાલે દિલ્હીથી બહાર પાડેલા અભ્યાસપૂર્ણ ગ્રંથમાં

૧૯૮૦ના માર્ચમાં તારાપુરમાં થયેલ એક અકસ્માતના નોંધાયેલા કિસ્સામાં ગરમ કિરણોત્સર્ગી પાણી બહાર ઢોળાઈ ગયેલું અને પ્લગ પણ તેની સાથે જ બહાર ફેંકાઈ ગયેલો. મોતના કૂવા જેવા આ કિરણોત્સર્ગી પાણીમાંથી આ પ્લગ શોધી લાવવાની જિગર તો કોની હોય? એટલે બાજુના ગામમાંથી અભણ ગામડિયાઓને પકડી લાવીને આ ખતરનાક ખાબોચિયામાંથી પ્લગ શોધી લાવવા તેમને ધકેલી દેવામાં આવ્યા. નિર્ઘૃણ શોષણ અને નઘરોળ હિંસાનો આનાથી વરવો નમૂનો કદાચ દીવો લઈને શોધતાં પણ ન મળે.

વીજળીક સાધનોના અતિશય વપરાશે શહેરી લોકોને એટલા બધા સુખશીલિયા બનાવી દીધા છે કે માનવીય અનુકંપાનો કોઈ પણ પ્રશ્ન તેમના એશઆરામમાં આડો આવે તો તેને ઈમ્પ્રેક્ટિકલ, અવ્યવહારુ અશક્ય કહીને વગોવી કાઢવા તેમનું ગુનાહિત માનસ તેમને પ્રેરે છે. એટલે તેમના બાપદાદાઓ હજારો પેઢીઓથી જીવતા હતા તેવી રીતે જીવવાનું તેમને કહેવાનો કોઈ અર્થ નથી. પણ ટીવી, વિડિયો, એરકન્ડિશનર, પંખા, જ્યુસર, મિક્સર, ગ્રાઈન્ડર, લિફ્ટ, ડોરબેલ, વોશિંગ મશીન, વેક્યુમ ક્લીનરથી લઈને ટ્યુબલાઈટ સુધીના કોઈ પણ સાધનનો ઉપયોગ કરવા તેમની આંગળી લંબાય તે વખતે તેમને એટલું પણ જો યાદ રહે કે વીજળીની જે ચાંપ તેમના ઓરડામાં અજવાળું પાથરી રહી છે તે કો'ક ગરીબ ગામડિયાના જીવનમાં અમાસનો અંધકાર રેલાવીને પેદા થઈ છે; તો એ હાથ કદાચ દસમાંથી પાંચ વાર તો અચૂક પાછો હઠી જશે.

-અતુલ શાહ

વિક્રમ સંવત ૨૦૪૦

'જોઈએ છે' સુખઃ નિર્ભેળ, સર્વપ્રકારક અને શાશ્વત

તમે ક્યારેય નાના બાળકને પતંગિયાની પાછળ દોડતું જોયું છે? કુદરતના આ "ઈસ્ટમેનકલર" સર્જનને પકડવા મથતું બાળક જેમ જેમ તેની પાછળ દોડે તેમ તેમ પતંગિયું તેનાથી દૂર ને દૂર ભાગતું જાય છે. હારી થાકીને બાળક જ્યારે પડતું મૂકે ત્યારે અચાનક જ એ પતંગિયું ક્યાંકથી આવીને હળવેથી એની હથેળી ઉપર બેસી જાય છે. સુખનું પણ આ પતંગિયા જેવું છે. તમે એને મેળવવા જેટલાં હવાતિયાં મારો એટલું એ તમારાથી દૂર ભાગે અને જેવા એ વલખાં બંધ કરી સ્થિર થઈ જાવ એટલે એ સામેથી આવીને તમારા દરવાજે ટકોરા મારે.

હિંસા અને શોષણ, પર્યાવરણ અને પ્રદૂષણ, ગરીબી અને બેકારી, જૂઠ અને પ્રપંચના આજના સઘળા પ્રશ્નો સુખ મેળવવાના રઘવાટમાં માણસજાતે ખોટી દિશામાં મૂકેલી દોટમાંથી પેદા થયેલા પ્રશ્નો છે. ઈંગ્લેન્ડમાં થયેલી ઔદ્યોગિક ક્રાંતિ માનવજાતના ઈતિહાસનું એક વરવું સીમાચિન્હ છે. એ પહેલાંની અને એ પછીની (પ્રિ અને પોસ્ટ ઈન્ડસ્ટ્રિયલ રેવોલ્યુશન એરાની) જીવનશૈલીમાં કંચન અને કથીર જેટલો ફરક પડી ગયો છે. સત્તરમી-અઢારમી સદી પહેલાંના સમગ્ર વિશ્વમાં પૂર્વની જીવનશૈલીનું ઓછે-વધતે અંશે પ્રભુત્વ હતું. પરંતુ એ પછી પશ્ચિમમાં જે જીવનશૈલી પાંગરી એના મૂળમાં સુખપ્રાપ્તિની ધરમૂળથી બદલાયેલી સંકલ્પનાઓ કામ કરી ગઈ.

'મોર ધી કોમોડિટિઝ, (ઉપભોગિક વસ્તુઓ માટે) મોર ધી હેપિનેસ' (ખુશી માટે)નું એક હેવમોરિયું સમીકરણ રચાયું. ફલતઃ એ જીવનશૈલીના અનુયાયીઓનું ઘર જાતભાતના રાચરચીલા અને ફર્નિચરનું સંગ્રહસ્થાન બની ગયું. ટી.વી. વીડિયો, ફ્રિજ, મારૂતિ, મર્સિડિઝ.... જેવી ચીજવસ્તુઓનો સંગ્રહ જેની પાસે વધુ એ સૌથી મોટો સુખી એવા ઈકવેશને તદ્દન વિપરીત એવી વાસ્તવિકતા તરફ ધરાર આંખમિંચણાં કર્યા. જો આ ઈકવેશન સાચું હોય તો

વાલકેશ્વરના ફ્લેટમાં તમામ અલ્ટ્રામોર્ડન ફેસિલિટિઝ ધરાવતા બધા લોકો સ્વર્ગીય સુખની અનુભૂતિ કરતા હોવા જોઈએ. અને બસ્તરના જંગલમાં લંગોટીભેર ફરતા તમામ વનવાસીઓ બચડા દુઃખી દૂઃખી હોવા જોઈએ પણ હકીકત આવી નથી એ આપણે જાણીએ છીએ. સેન્ટ્રલી એરકન્ડિશન્ડ ઓફિસમાં બેઠા બેઠા આઈસક્રીમની ડિશ ઝાપટનાર પણ ઘણીવાર એવી અગનજવાળાઓ વચ્ચે શેકાતો હોય છે કે ડનલોપની ગાદીમાં અર્ધી રાત સુધી આળોટ્યા પછી પણ તેને ટ્રાન્કિવલાઈઝર સિવાય ઉંઘ આવતી નથી. સામે પક્ષે કાઠિયાવાડના અંતરિયાળ ગામડામાં ગારમાટીના ઘર અને બાજરીના રોટલા સિવાય જેની પાસે કશું નથી એવા ગરીબ ગામડિયાને ગાભાની ગોદડીમાં પડતાવેંત ઘસઘસાટ સૂઈ જતાં પણ આપણે જોઈ શકીએ છીએ. સાધનસામગ્રી ઈઝ ઈકવલ ટુ સુખ આ સમીકરણ જો સાચું હોય તો આવું ન બને અને જો ખોટું હોય તો પછી સુખ મેળવવા ચીજવસ્તુઓને બદલે બીજે કેમ નજર ન દોડાવવી.

રેતીમાંથી તેલ નીકળે છે એવો સિદ્ધાંત તમે એકવાર પ્રસ્થાપિત કરો એટલે પછી તમારે દુનિયાભરની રેતી ઉપર કબજો કરીને તેમાંથી તેલ કાઢવાનો ભવ્ય પુરુષાર્થ આરંભવો જ રહ્યો. જરુરિયાતો વધારીને તેની પરિપૂર્તિ દ્વારા સુખપ્રાપ્તિના સિદ્ધાંતની નેચરલ કરોલીરે રૂપે પૃથ્વી, પાણી, અગ્નિ, વાયુ, વનસ્પતિ અને તિર્યંચોની સૃષ્ટિનું અમર્યાદ અને બેરહમ શોષણ શરૂ કરવામાં આવ્યું. માણસ એમ માની બેઠો કે પોતાની પાસે સમગ્ર પૃથ્વીનો 'ધણિયાપો' છે અને માનવેતર આખી સૃષ્ટિનું નિર્માણ તેના ઉપભોગ માટે જ થયું છે. આવા ઈન્ફરન્સ (ઉપસિદ્ધાંત) માંથી પેદા થયેલા મનુષ્યના ઘમંડે પૃથ્વી પરના માનવેતર જીવોનું જીવતર ઝેર કરી નાખ્યું છે.

આવા ઘમંડમાંથી જ પેદા થયેલો એક પ્રશ્ન વિનોબાને એક વાર જાહેરસભામાં પૂછાયેલો. કોઈક ઈશ્વર કર્તૃકવાદીએ તેમને પૂછેલું કે 'ગાય દૂધ આપે છે, બળદ ખેતીના કામમાં આવે છે. એટલે તેમનું સર્જન ઈશ્વરે શા

માટે કર્યું છે તે તો જાણે સમજાય છે, પણ વાઘ-સિંહ જેવા જંગલી પ્રાણીઓ તો કાંઈ કામમાં આવતા નથી. ભગવાને તેમને શું કામ બનાવ્યા હશે ? પ્રશ્નમાં છૂપાયેલા ઘમંડને વળતો ફટકો મારતા વિનોબાએ તેમની ચોટદાર શૈલીમાં જવાબ આપેલ કે, 'આ પૃથ્વી પર જે કાંઈ છે તે બધું મનુષ્યના ઉપભોગ માટે જ છે એવો ભ્રમ પેદા ન થાય તે માટે ઈશ્વરે તેમનું સર્જન કર્યું છે.'

સુખ નામના પ્રદેશની શોધ માણસના મનમાં કરવી જોઈએ અને વાસ્તવમાં જે ચીજવસ્તુમાં નહિ પણ સંતોષમાં-અનિવાર્ય ઉપભોગમાં-જીવમાત્ર પ્રત્યેના આદરમાં છે તેવી માન્યતાની આધારશિલા પર પૌર્વાત્ય જીવનશૈલીની ઈમારત ખડી થયેલ. કાંખમાં છોકરું હોય અને ગામમાં શોધવા નીકળે એવી ઘેલી જેવી હાલત કસ્તુરીમૃગ સમા આપણા સૌની થઈ છે.

સુખ ચીજ-વસ્તુઓમાં છે એવો વહેમ અને એ ચીજવસ્તુઓના ઢગલામાં આળોટવા માટે અમારી ચારેબાજુ (સંસ્કૃતમાં ચોફેર એટલે 'પરિ') ઉપર નીચે-દસે દિશિ રહેલા પૃથ્વી, પાણી, અગ્નિ,વાયુ, વનસ્પતિ અને બે ઈન્દ્રિયો ધરાવતા પ્રાણીઓના 'અનાવરણ' (પરિ + આવરણ + પર્યાવરણ)નો ખાતમો બોલાવવાનો અમને અબાધિત - નિરંકુશ અધિકાર છે એવો ઘમંડ - એનાથી ચડિયાતી હિંસા અને એનાથી ચડિયાતું શોષણ બીજું કયું હોઈ શકે ?

કીડીથી માંડીને કુંજર સુધીના તમામને જે સુખની અપેક્ષા છે તે સુખ વાસ્તવમાં ભૌતિક જગતમાં છે જ નહિ. જે વસ્તુ જ્યાં હોય જ નહિ ત્યાં તેને શોધવા માટે ફાંફાં મારવાની નરી મૂર્ખામી જ છે. ન્યૂટનના પદાર્થવિજ્ઞાનના ત્રણ નિયમોની જેમ, નિર્વ્યાજ સુખની અનુભૂતિ માટે ત્રણ શરતો પરિપૂર્ણ થવી જરૂરી છે અને ચીજ-વસ્તુઓના ભોગવટામાંથી પ્રાપ્ત થતા સુખમાં આ ત્રણે શરતો ક્યારેય પરિપૂર્ણ થતી નથી. બહુજન સમાજને આ ત્રણે શરતોનો સ્પષ્ટ ખ્યાલ નથી હોતો પણ કોન્શયલી કે અનકોન્શયલી જીવમાત્ર આ ત્રણે શરતોના ફુલફિલમેન્ટવાળું સુખ ઝંખતો હોય છે.

સૌથી પહેલી શરત છે: તેને જે સુખ જોઈતું હોય છે તે દુઃખના જરા

સરખાયે મિશ્રણ વગરનું નિર્ભેળ સુખ જ હોવું જોઈએ દુઃખનું ભેળસેળવાળું ભેળસેળિયું સુખ તેને જરાયે ઈષ્ટ નથી. અહીં 'પ્રથમ ગ્રાસે જ મક્ષિકા'નો ઘાટ ઘડાય છે. ભૌતિક જગતમાં દુઃખની ભેળસેળ વગરનુ નિર્ભેળ સુખ આકાશકુસુમવત્ છે. જૂના જમાનામાં નાતના જમણવારમાં દેશી ગોળના બનાવેલા ચૂરમાના લાડુ પીરસવામાં આવતા. બ્રાહ્મણભાઈને મોદક તો બહુ ભાવતા પણ મોદકમાં બરાબર મિશ્ર થયા વગર રહી ગયેલ એકાદી ગોળની ગાંગડી પણ રહી ન ગઈ હોય તેવા એકસરખા સ્વાદનો લાડુ ઈષ્ટ હતો. પણ હજી તો તેઓ મોદકના સ્વાદમાં મશગુલ થાય ન થાય ત્યાં જ પેલી ગોળની ગાંગડી ન જાણે ક્યાંકથી ટપકી પડતી. તમારી આજુબાજુ નજર નાખશો તો દરેકના સુખમાં આવી ગોળની ગાંગડી ક્યાંકથીયે ઘૂસી ગયેલી નજરે પડ્યા વિના નહિ રહે. જેને શ્રીમંતાઈનું સુખ મળ્યું હશે તેને કોઈ પણ ઘડીએ પડી શકતી ઈન્કમટેક્સની ધાડના ફફડાટની ગોળ-ગાંગડી સાથે ને સાથે મળી હોય છે. રૂપાળી પત્નીનું સુખ મેળવનાર સોક્રેટિસની પત્નીથી પણ સારી કહેવડાવે તેવા તેના કંકાસિયા સ્વભાવની ગાંગડી ભેગી જ આરોગતો હશે. કોન્વેન્ટ એજ્યુકેટેડ પતિની પ્રાપ્તિના સુખની જોડાજોડ તે દારૂડિયો અથવા વ્યભિચારી કે ક્રોધી હોવાનું દુઃખ લલાટે લખાયેલું હોય છે. દુઃખના મિક્સચર વગરનું એકાદ નિર્ભેળ સુખ કોઈક સદ્નસીબને મળી ગયું હોય તો પણ કન્ડિશન નંબર-૨માં વાંધો આવીને ઉભો રહે છે.

દુઃખની જરાયે ભેળસેળ વગરનું એકાદું સુખ મળી જાય એટલા માત્રથી જીવરાજભાઈને ધરવ થતો નથી. તેમને તો ઓલ એન્કમપાસિંગ-સર્વપ્રકારક સુખની અપેક્ષા છે. હી નીડ્ઝ ઈચ એન્ડ એવરી કાઈન્ડ ઓઊ હેપિનેસ અન્ડર સ્કાય એન્ડ ઓન ધી અર્થ. પતિ બધી રીતે ગુણિયલ હોય અને પતિ સંબંધી સુખમાં ગોળની એકાદ ગાંગડીયે ન હોય એટલા માત્રથી શું, જો ઘરમાં ટી.વી., ફ્રિજ કે મારૂતિ વસાવવા જેટલી શ્રીમંતાઈ ન હોય, પત્ની સારી હોય, રૂપાળી હોય, કામગરી હોય, બધી વાતે બરાબર હોય પણ પોતાની જ તબિયતનું ઠેકાણું રહેતું ન હોય તો પત્ની સંબંધી નિર્ભેળ સુખ આરોગ્યવિષયક

બીજા એક દુઃખને કારણે કડવું ઝેર બની જાય છે. સુખ પ્રાપ્તિના વિજ્ઞાનનો બીજો નિયમ એમ કહે છે કે ભૌતિક ચીજવસ્તુઓના જગતમાંથી પ્રાપ્ત થતું સુખ બદામના ટુકડા જેવું છે. મુઠ્ઠી ભરીને બદામનો ફાકડો મારવા મળે એ આમ તો ઈર્ષ્યા ઉપજાવે તેવી ચીજ છે. પણ એ બધી સ્વાદિષ્ટ બદામોમાં ઘૂસી ગયેલી એકાદી કડવી બદામ બધી મજા ઉપર પાણી રેડવા માટે કાફી છે. રૂપાળો પતિ, અઢળક સંપત્તિ, વાલકેશ્વરમાં બંગલો, મર્સિડિઝ બેન્ઝની લંગાર, સ્નેહાળ સાસરિયાં... લિસ્ટ સ્ટ્રેચ કરતા જ જાવ... સ્વાદિષ્ટ બદામોની મુઠ્ઠી ભરતા જ જાવ. પણ આ બધા લિસ્ટમાં છેલ્લે આવતી ખાલી ખોળાની- વંધ્યત્વની એકાદી કડવી બદામ સ્ત્રીના સુખમાં ચિનગારી ચાંપવા માટે પૂરતી છે. કારણ બસ એટલું જ કે તેને સર્વ પ્રકારક સુખની અપેક્ષા છે. દીકરો ન હોવા બાબતનું એકાદું દુઃખ પણ ચલાવી લેવા તૈયાર નથી અને મટીરિઅલ વર્લ્ડમાં સર્વપ્રકારક સુખ એ 'ન ભૂતો ન ભવિષ્યતિ' જેવી ઘટના છે.

આ બન્ને કોઠા જીતી જનાર વિરલ મહારથીએ ત્રીજે કોઠે તો ભૂ પીતા થવું જ પડે છે. નિર્ભેળ અને સર્વપ્રકારક એવું પણ સુખ સદાકાળ માટે ટકે તેવું શાશ્વત, કોઈ ક્યારેય ઝુંટવી ન જાય તેવું જોઈએ. સુખ માટે વલખાં મારતા કોઈને પણ પૂછશો તો આ ત્રીજી શરતની આકાંક્ષા પણ તેના હૈયામાં અચૂક બેઠેલી જોવા મળશે. શાશ્વતતા એ સુખની પૂર્ણ મઝા માણવા માટેની ત્રીજી શરત છે. તમે શેરબજારમાં એક પછી એક પગથિયાં ચડવા લાગો, ગ્રાફ અભૂતપૂર્વ આંકડાઓ વટાવતા જાય, આખા હિંદુસ્તાનમાં તમારા નામનો ડંકો વાગે, પણ આ બધું જો કાયમ માટે ટકવાનું ન હોય, કડાકાનો એક એવો દિવસ આવવાનો હોય કે જ્યારે પત્તાનો મહેલ કકડભૂસ થઈ જાય, અને કદાચ જેલના સળિયા જોવાનો વારો પણ આવે તો આવું સુખ તમને મંજૂર નથી. સુખની સાપસીડીની આ રમતમાં સાપનું અસ્તિત્વ જ ન હોય અને સીડી પરથી પટકવાનુ જ ન હોય એવી તમારી ઊંડી ઊંડી મહેચ્છા છે, પણ એટલીસ્ટ આપણી ઈચ્છાઓ કાંઈ ઘોડા નથી જેની ઉપર બેસીને સપનાના રંગીન

પ્રદેશમાં પહોંચી જવાય.

જો ગમે તેટલી હાયવોય, ધમાલ અને ઉંદરદોડ પછી પણ વસ્તુ ઉપભોગની દુનિયામાં નિર્ભેળ, સર્વ પ્રકારક શાશ્વત સુખની ઉપલબ્ધિ ન જ થવાની હોય તો સુખ નગરી તરફ દોડતી ગાડીનું સ્ટીયરીંગ બીજી કોઈ દિશામાં વાળવાની જરૂર નથી લાગતી ?

અંધશ્રદ્ધા, વહેમ જેવા શબ્દોને આપણે ધર્મ, જૂની જીવન-પ્રણાલી, ગ્રામ્યપ્રજા વગેરે સાથે અવિનાભાવી સંબંધથી જોડી દઈને તેના 'સિનોનિમ' (સમાનાર્થિ) બનાવી દીધા છે. હકીકતમાં તો સત્‌ને અસત્‌ અને અસત્‌ને સત્‌ માનવું, જે જેવું હોય તેને તેવું ન જ માનવું તે જ અંધશ્રદ્ધા અને તે જ વહેમ છે. રણમાં કમળ ન ઉગે કે રેતીમાંથી તેલ ન નીકળે તે હાથમાં રહેલા આમળા જેવું સ્પષ્ટ હોવા છતાં તેમ ન માનવું અને તે માટે મચી પડવું તેનું બીજું નામ અંધશ્રદ્ધા અને ત્રીજું નામ વહેમ છે. મેગા મશીનોના કન્વેયર બેલ્ટ પર જેટલી વસ્તુઓ પેદા કરશું અને અકરાંતિયાની જેમ વધુ ભોગવશું તેટલું વધુ સુખ મળશે એવી ઐદંયુગીન માન્યતા એ સુશિક્ષિત કહેવાતા માણસનો સૌથી મોટો વહેમ અને સૌથી મોટી અંધશ્રદ્ધા છે.

સવારના પહોરમા સ્નાન કરી, ધોતી ખેસમાં સજ્જ થઈ, કપાળે કેસરનો ચાંદલો કરી, પાષણની પ્રતિમામાં દેવત્વનું આરોપણ કરીને પોતાના આરાધ્યતત્ત્વ સાથે હૈયાની ગોઠડી માંડનારા શ્રદ્ધાળુ હૈયાની શ્રદ્ધાને અંધશ્રદ્ધા કહીને વખોડી કાઢનારા 'સાયન્ટિફિક ટેમ્પર' ધરાવનારા સૉ-કૉલ્ડ રેશનલિસ્ટ મિત્રો એટલું યાદ રાખે કે ઘડીભર તમારી વાતને સાચી માની લઈને તેમની શ્રદ્ધાને અંધશ્રદ્ધા ગણીને કાઢીએ તો પણ તેમની એ અંધશ્રદ્ધા એ જગતને જેટલું નુકસાન નથી કર્યુ તેનાથી કંઈ ગણું નુકસાન 'વધુને વધુ ઉપભોગ બરાબર વધુને વધુ સુખ'ના સમીકરણમાં આંધળી શ્રદ્ધા ધરાવનાર વહેમી સુશિક્ષિતોએ કર્યુ છે. ઉપભોક્તાવાદ અને કન્ઝ્યુમરીસ્ટ કલ્ચરના (ઉપભોક્તાવાદી સંસ્કૃતિ) આ વિનાશક પંજામાંથી પર્યાવરણને એટલે કે

સમગ્ર જીવજગતને બચાવવું હશે તો શ્રીમંતો, શહેરીઓ અને શિક્ષિતોના આ વહેમ અને આ અંધશ્રદ્ધાનો ભાંગીને ભૂક્કો કરવો પડશે.

-મુનિ હિતરૂચિવિજયજી

પર્યુષણ પર્વ, વિક્રમ સંવત ૨૦૪૯

ખાદી : એકવીસમી સદીના યુવાનોનું વસ્ત્ર

ઑક્ટોબર, ડિસેમ્બર અને માર્ચના ડિસ્કાઉન્ટ પિરિયડમાં ફોર્ટના ખાદી ભંડારમાં દેશવિદેશના ખાદી રસિયાઓ સેંકડો જાતની ખાદી ખરીદવા ઉમટી પડતા હોય છે. વર્ષ દરમિયાન વળતરના આવા ત્રણ ગાળા દરમિયાન કરોડોની ખાદીઅંગ્રેજી રૂઢિપ્રયોગનો ઉપયોગ કરીએ તો 'કઈક'ની જેમ અને કાઠિયાવાડી બોલીમાં કહીએ તો ગરમાગરમ ભજિયાંની જેમ વેચાતી હોય છે. પણ આ તો એવા લોકોની વાત થઈ કે જેઓ એક વાર આ ખાદી ભંડારની મુલાકાત લીધા પછી કાયમ માટે ખાદીના આશિક થઈ ગયા છે. હજી જિંદગીમાં ખાદીભંડારના પગથિયે પગ પણ ન મૂકનાર એવા હજારો લોકો છે કે જેઓ ખાદીનું નામ સાંભળતાં જ નાકનું ટેરવું ચડાવી મોં મચકોડે છે. તેમને મન ખાદી એટલે વહાણના સઢ કે અનાજની ગુણી જેવું જાડું ખદ્ધડ કપડું. પણ વાસ્તવિકતાની દુનિયા કાંઈ જુદી છે. છ કાઉન્ટના જાડા સૂતરના વહાણના સઢ જેવા કપડાથી લઈને ચારસો નંબરના સૂતરના ઢાકાની મલમલ જેવા બારીક કપડાં સુધીની આખી રેન્જનો વાચક 'ખાદી' શબ્દ છે. ભારતીય જીવન વ્યવસ્થાના જુદા જુદા પાસાંઓ ઉપર વાર્તાલાપોના નિમિત્તે અમેરિકામાં સિનસિનાટી કે યુરોપમાં એન્ટવર્પ-લેસ્ટર જેવા શહેરોમાં જવાનું થયું છે ત્યારે પણ 'બંગાળ ખાદી'ની કફની અને 'આંધ્ર દો સૂતી'ના ચૂડીદારથી મજેથી ચાલી શકે છે તેનો લેખકને જાતઅનુભવ છે. 'બાવા બન્યા એટલે હિન્દી બોલના જ પડે'ની જેમ ઘણા લોકોના મનમાં એવું ભૂત ઘૂસી ગયું હોય છે કે પરદેશ જઈએ

એટલે સૂટ હેંગર પર વળગાડેલા કોટ-પેન્ટ જેવો શોભતો હોય તેવા લોકો પણ પરદેશ જતી વખતે એરપોર્ટ ઉપર કોટ-પેન્ટમાં ફોટા પડાવે ત્યારે સંસ્કૃત નાટકના 'વિદૂષક' અને ભવાઈના 'રંગલા'ની યાદ એકી સાથે આવી જાય છે. *યુરોપિયનો ભારતમાં આવે ત્યારે ધોતિયું કે સાડી અપનાવતા ન હોય તો ભારતીયો ત્યાં જાય ત્યારે તેમનો જ ડ્રેસ પહેરવો તેવો આગ્રહ શાને ?* આજકાલ તો ઢાકાની મલમલને યાદ કરાવે તેવી પાતળી 'બંગાળ ખાદી' મુર્શિદાબાદ બાજુના બંગાળી વણકરો બનાવે છે. આવી પાતળી-મુલાયમ ખાદીનાં કફની-ચૂડીદાર પહેરીને ખાદી ઉપર પ્રવચન આપતી વખતે સભામાંથી એવો પ્રશ્ન પણ પૂછાયો છે કે 'ખાદીની વાત કરનાર તમે જ કેમ મિલના કપડાં પહેર્યા છે ?' કહેવાનો મતલબ એ કે મિલનો ભ્રમ થાય તેવા બારીક ખાદીનાં કપડાં પણ આજકાલ બને છે અને મળે છે.

કેટલાક લોકો માને છે તેમ ખાદી એ એડિસને શોધેલા વીજળીના બલ્બની જેમ ગાંધીનું ઈન્વેશન નથી. અગણિત વર્ષો પહેલાં આદિ રાજા ઋષભે પોતાના પુત્ર ચક્રવર્તી ભરત અને બાહુબલિને પુરુષની બોતેર કળાઓ અને સો શિલ્પો શીખવ્યાં તેમાં જ કાંતણ અને વણાટ (તન્તુવાય)ની કલાઓ પણ શીખવેલી. પછી તો એ વિજ્ઞાન દુનિયાભરમાં ફેલાઈ ગયું. ઘરે-ઘરે પાળવામાં આવતી ગાય દોહવાનું કામ મુખ્યત્વે ઘરની કુંવારી કન્યાનું રહેતું હોવાથી દોહવા માટે વપરાતા સંસ્કૃત ક્રિયાપદ 'દુહ્' પરથી બનેલો શબ્દ 'દુહિતા' કન્યાને માટે વપરાય છે તે જ રીતે અંગ્રેજીમાં કુમારિકા માટે વપરાતો Spin-Ster શબ્દ કાંતવા માટે વપરાતા અંગ્રેજી ક્રિયાપદ 'સ્પિન'પરથી બનેલો છે. પોતપોતાના વસ્ત્રોની જરૂરિયાતો સંતોષવા દુનિયાભરમાં ઘરે ઘરે રેંટિયો ચાલતો ને ખાસ કરીને કન્યાઓ આ કાંતણનું કામ કરતી માટે 'સ્પિનસ્ટર' શબ્દ જ કુંવારી કન્યાનો વાચક બની ગયો. ખાદી એ કપડાંની કોઈ જાતનું નામ નથી. ખાદી એટલે હાથે કાંતેલું, હાથે વણેલું કોઈ પણ કુદરતી રેસાનું કપડું. પછી તે સુતરાઉ પણ હોય, ઊન પણ હોય કે રેશમ પણ હોય.

બીજી અનેક કળાઓ અને વિજ્ઞાનોની જેમ વસ્ત્રકળાની બાબતમાં પણ હિન્દુસ્તાન જમાનાઓ સુધી 'ટોપ'ના સ્થાને હતું. રેશમ જેવા મુલાયમ વસ્ત્રો બનાવવાની કળામાં હિન્દુસ્તાનના પેંગડામાં પગ ઘાલવાની તાકાત દુનિયાના કોઈ દેશમાં નહોતી. આનાં અઢળક વર્ણનો આપણા અનેક ગ્રંથોમાં વેરાયેલા જોવા મળે છે. સંસ્કૃત-પ્રાકૃત જેવી દિવ્ય ભાષાઓને તરછોડીને વ્યાકરણદુષ્ટ અંગ્રેજીમાં ગોટ-પીટ કરવામાં ગૌરવ અનુભવતા આપણે ધર્મગ્રંથોના વાંચનથી વિમુખ થઈ ગયા છીએ. નહિતર આપણા ધર્મગ્રંથોમાં આત્મિક ઉર્ધ્વીકરણની સાથે સાથે આનુષાંગિક વિષયોની માહિતીનો જે દરિયો ઠલવાયો છે તે દંગ કરી દે તેવો છે. જૈનોના ૪૫ આગમમાં સૌથી પહેલાં આચારાંગ સૂત્રની શરૂઆતમાં જ સૂતરના જે વૈવિધ્યનું વિસ્તારથી વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે તે ટીકાકાર મહર્ષિઓની બહુમુખી પ્રતિભાની પણ ઓળખ આપનારું છે.

વનસ્પતિઓ અને ખનિજ દ્રવ્યોનું બનેલું જીવજડ જગત અનેક ચમત્કૃતિઓથી ભરપુર છે. માટે જ કદાચ આપણે ત્યાં પહેરવામાં આવતા વસ્ત્રોના શુભાશુભ પરમાણુઓની પણ એક ચોક્કસ અસર માનવામાં આવી છે. રેશમી વસ્ત્રોનું પ્રાચીન રીતરિવાજો, વિધિ-વિધાનોમાં જે મહત્ત્વ આંકવામાં આવ્યું છે તેમાં કદાચ આવું કોઈક પરમાણુ વિજ્ઞાન પણ કારણ હોઈ શકે. અમુક જાતની શ્રેષ્ઠ હરડે જો હાથમાં લેવા માત્રથી રેચ કરાવી શકતી હોય તો રેશમ, ઊન કે સૂતર જેવા કુદરતી રેસાનાં વસ્ત્રો પહેરવા માત્રથી તેની અસરો શરીર પર થતી હોવાનું માનવામાં કોઈ વાંધો હોઈ શકે નહી. રેશમના કીડાને મારીને બનાવાતા હોવાથી રેશમી વસ્ત્રોને બદલે આર્ટ સિલ્કના સિન્થેટિક રેસાઓનો પ્રચાર કેટલાક લોકો કરે છે અને ભોળી આમજનતા પ્યોર સિલ્કને બદલે પોલિયેસ્ટર કે ટેરેલિન પહેરતી થઈ જાય છે. પણ પ્યોર સિલ્કના કપડાં બનાવવામાં જો રેશમના કીડા મરતા હોય તો આર્ટ સિલ્કના કારખાનાનું પ્રદુષિત પાણી અને ધુમાડા તો નદીનાં માછલાંથી લઈને માણસ સુધીની આખી જીવસૃષ્ટિને મારે છે. આ તો કીડાની હિંસાનું બકરું કાઢવા જતાં સમગ્ર

જીવજગતની હિંસાનું આખું ઊંટ પેસી જાય તેવો ઘાટ થયો. બેંગલોર બાજુ બિરલાની રેયોન બનાવનારી મિલોએ કેવો કાળો કેર વર્તાવ્યો છે તેની જાણકારી જેને હોય તે પ્યોર સિલ્કના બદલામાં આર્ટ સિલ્ક કે તેવી જ બીજા કૃત્રિમ રેસામાંથી બનેલા વસ્ત્રોની ભલામણ તો નહીં જ કરે અને હવે તો જેને રેશમના કીડાની હિંસાના પણ ભાગીદાર થયા સિવાય પ્યોર સિલ્ક પહેરવું હોય તેને માટે ખાદીભંડારોમાં મળતું 'મટકા સિલ્ક' સૌથી સારો રસ્તો છે. એના નામમાં વપરાતા મટકા શબ્દને તમારા ઘરમાં પીવાના પાણી માટે વપરાતા મટકા શબ્દ સાથે કોઈ સંબંધ નથી. એનું ખરું નામ 'મુંહકટા સિલ્ક' છે. રેશમનો કીડો પોતાના મોંમાંથી જે લાળ ઝરાવે છે તે જ તેના શરીરની આસપાસ વીંટળાઈ જઈ કોશેટોના સ્વરૂપમાં પરિવર્તિત થઈ જાય છે. આ કોશેટાનો તાર એ જ રેશમ છે. રેશમનો આ તાર મેળવવા માટે લાલચુ વેપારીઓ કીડાને જીવતો ઉકાળી દઈ તાર ખેંચી કાઢે છે. જો આખો તાર મેળવવાનો લોભ જતો કરવામાં આવે તો કીડો થોડો મોટો થાય એટલે પોતાની જાતે જ મોંમાં રહેલા એસિડ વડે આજુબાજુ વીંટળાયેલા કોશેટામાં કાણું પાડીને બહાર નીકળી જાય છે. પાછળ બચે છે પ્યોર સિલ્ક(કોશેટા)ના ટુકડા. પરંતુ ટુકડા ટુકડા થઈ ગયેલા કોશેટાને ફરીથી કાંતીને તાર બનાવવો પડે છે. દેશી કળાઓને ખતમ કરવાની બસો વર્ષથી ચાલતી ઝુંબેશને પરિણામે આ ટુકડાને કુશળતાપૂર્વક કાંતી તેમાંથી એકસરખો 'સ્મૂધ્' તાર બનાવી શકનારા કારીગરો મળતા નથી એટલે આ મુંહકટા સિલ્ક (જિસમેં સે કીડા મુંહ સે કાટકર નીકલ ગયા હૈ)ને ઉકાળીને કાઢેલા તારમાંથી બનેલા સિલ્ક કરતાં થોડુંક ખરબચડું બને છે. આર્ટ સિલ્ક જેવા સિન્ટેટિક વસ્ત્રો ક્રુડ ઓઈલ જેવી ગંદી ચીજની આડપેદાશ છે. એ જાણ્યા પછી તેના ઉત્પાદનથી લઈને ડિસ્પોઝલ સુધીની પ્રક્રિયામાં નિહિત હિંસાથી બચવા ઘણા જૈનો ખાદી ભંડારના મટકા સિલ્કના તાકામાંથી ચાર અને ત્રણ વારનું કપડું ફડાવી દઈ પૂજા માટેની ધોતી અને ખેસ તરીકે તેનો જ ઉપયોગ કરતા થઈ ગયા છે.

જેટલા રોગો મટાડે છે તેના કરતાં કંઈ ગણા બીજા નવા રોગો પેદા

કરનારી એલોપથીની દવાઓનો પ્રચાર કરતી હોસ્પિટલોમાં લાખ્ખો રૂપિયાનું દાન આપતા શ્રીમંતોની દૃષ્ટિ આવા કળા-વિજ્ઞાનોને જીવતા કરવા તરફ વળે તો રેશમ કરતાંય સુંવાળા વસ્ત્રો વનસ્પતિના રેસામાંથી પણ બનાવી શકાય તેમ છે. આચારાંગ અને અનુયોગદ્વાર જેવા જૈન ગ્રંથો ઉપરાંત મનુ અને યાજ્ઞવલ્કયની સ્મૃતિઓ, મહાભારત અને રામાયણ તથા આઈન-એ-અકબરી જેવા મુસ્લિમ ગ્રંથોમાં પણ રેશમ જેવા ક્ષૌમ વસ્ત્રોના જે ઉલ્લેખ આવે છે તે ક્ષૌમ વસ્ત્રો અળસીના રેસામાંથી બનતા. શાસ્ત્રી શંકર દાજી પદે નામના વિદ્વાન મરાઠી બ્રાહ્મણે સો વર્ષ પહેલાં લખેલો 'શ્રી આર્યભિષક અથવા હિંદુસ્તાનનો વૈદ્યરાજ' નામનો ગ્રંથ 'સસ્તું સાહિત્ય' તરફથી છપાયેલો છે. તેમાં અરણ્યરુદન કરતા શાસ્ત્રીજી એમ લખે છે કે અળસીના રેસા (વાક)માંથી ઉત્તમ ક્ષૌમ વસ્ત્રો બનાવવાની પ્રણાલી હિંદુસ્તાનમાં પ્રાચીનકાળથી ચાલી આવતી પણ છેલ્લાં લગભગ બસો વર્ષથી એ રિવાજ બંધ થયો છે. સંશોધનના નામે ધોળા હાથીઓને વેંઢારતી જાત-ભાતની સંસ્થાઓ આવી બાબતોમાં સંશોધનો હાથ ઉપર લે તો એ કળાને ફરી જીવતી કરવાનું સાવ અશક્ય તો નથી જ.

ખાદી-રેંટિયો અને હાથશાળાના આ ક્ષેત્રને મરણતોલ ઘા મારતા રહેવામાં સૌથી પહેલો નંબર સરકારી પોલિસીઓનો છે. રોમેશચંદ્ર દત્તનું 'ઈકોનોમિક હિસ્ટરી ઓફ ઈન્ડિયા' જેણે વાંચ્યું હશે તેને ખ્યાલ હશે કે દેશી કાપડ ઉદ્યોગને ખતમ કરવાના બ્રિટિશ કાવાદાવા સામે દાદાભાઈ નવરોજીએ કેવો જંગ ખેલેલો! આઝાદ ભારતની ટેકસ્ટાઈલ પોલિસી જો તેમના જાણવામાં આવે તો દાદાભાઈ કબરમાંય ઊંચાનીચા થઈ જાય. લોકોની આંખમાં ધૂળ નાખવાના હાથચાલાકીના ખેલ શીખવા હોય તો કે. લાલે ગાંધીનગર અને દિલ્હીમાં કોચિંગ લેવું જોઈએ. મિલના કપડાના ઉત્પાદન ઉપર ૧૯૫૪માં સરકારે સિલિંગ નક્કી કરેલી-હાથથી કપડું પ્રિન્ટ કરતા કારીગરોને મદદરૂપ થવા માટે સ્તો! પણ એ સિલિંગ બધી મિલો મળીને કુલ જેટલું કાપડ બનાવી શકે તેના કરતાં ૫૦ ટકા વધારે હતી. ૧૯૬૨માં એ ટોચમર્યાદા ૭૫ કરોડ

વારથી વધારીને ૯૦ કરોડ મીટર સુધી લઈ જવામાં આવી. મિલોને પોતાનું ઉત્પાદન વધારવા માટે આ ખુલ્લું આમંત્રણ હતું. પરંતુ મિલમાલિકોને આટલું બંધન પણ પોસાય તેમ નહોતું. એટલે ૧૯૬૬માં છેવટે ટોચમર્યાદાના આ ફારસનો અંત લાવવામાં આવ્યો.

છઠ્ઠી યોજના દરમિયાન ૧૬૦ કરોડ મીટર કાપડનો ઉમેરો કરવાની ગણતરી છે. આ કામ માટે મિલોમાં માત્ર ૨૭,૦૦૦ લોકોને કામ મળે, જ્યારે જો મિલોને બાકાત રાખવામાં આવે તો આટલા જ કામમાં ચાર લાખ લોકોને રોટલો મળી રહે.

અંગ્રજોના જમાનામાં લેંકેશાયર અને માન્ચેસ્ટરની ઔદ્યોગિક ક્રાંતિને નષ્ટ થતી બચાવવા બંગાળ-બિહાર-આંધ્રના વણકરો ઉપર અમાનુષી સિતમ ગુજારવામાં આવેલો. ફતવો ઈ. સ. ૧૭૩૨માં આર્કટના નવાબને દબડાવી તેની પાસે બહાર પડાવી મફતના ભાવે માલ માગી, વેપારીને વેચે તો તેને મુશ્કેટાટ બાંધી, ઢોરમાર મારીને ભેંસના તબેલાને ઘણા સારા કહેવડાવે તેવા 'હેડ'માં તેમને બાંધવામાં આવતા. વણકર સાથે પણ તેના ગજા બહારનો માલ પૂરો પાડવાના કરાર બળજબરીથી કરીને માલ પૂરો ન પાડી શકે એટલે આળસુપણાનો-કામચોરીનો આરોપ મૂકીને તેના ખર્ચે તેના ઘરે ચોકીદાર બેસાડાતો. દેખરેખ રાખવાની સાથે સાથે તે બહેનોની હાજરીમાં ગાળાગાળી-મારપીટ કરવાનું કામ પણ કરતો. કરાર ન કરનાર પાસેથી બજારભાવ કરતાં ૨૦ થી ૬૦ ટકા ઓછા ભાવે માલ પડાવી લેવાતો. લોકોમાં કહેણી થઈ ગઈ છે તેમ ઢાકાના મલમલ વણનારાના અંગૂઠા અંગ્રેજોએ નહોતા કાપ્યા પણ અંગ્રેજોના આવા ત્રાસમાંથી બચવા-કપડું વણી જ ન શકાય તે માટે તેમણે જાતે જ પોતાના અંગૂઠા કાપી નાખેલા.

ક્લાઈવ અને વોટ્સનથી પણ ચડી જાય તેવા આધુનિક અર્થવ્યવસ્થાના ઘડવૈયાઓએ આ કામ વધુ સફાઈથી પતાવ્યું છે. દેશના કરોડો કાંતનારા અને લાખ્ખો વણકરોને રાહતના દેખીતા નાનકડા ટુકડા ફેંકીને સામે પક્ષે,

કારખાનાંઓ અને મિલોને રોડ, રેલવે, વીજળી, તાર, ટપાલ, ટેલિફોન, વીમો, બેન્ક અને ટેકનિકલ આસિસ્ટન્ટ્સથી લઈને ટેકસેશનમાં એટલી બધી 'હિડન સબસિડી' આપવામાં આવે છે કે રેંટિયો અને હાથશાળ તેની સામે ક્યાંય ટકી જ ન શકે અને આપોઆપ 'આઉટ' થઈ જાય.

ઔદ્યોગિકરણને નામે આ દેશના લાખ્ખો-કરોડો ગરીબ મનુષ્યોને ધારાવીની ઝૂંપડપટ્ટીમાં ઠાલવનાર પોલિસીઓની સામે 'આમ નાગરિક' માટે તો તેનો અંગત વપરાશ જ સૌથી હાથવગું હથિયાર છે. પોતાના પહેરવાના કપડાંમાં ખાદીને ઈન્ટ્રોડ્યુસ કરવામાં કદાચ તેણે 'સ્ટેપ બાય સ્ટેપ' આગળ વધવું પડે, પણ પથારીની ચાદર, ગાદલાની ખોળ, ટુવાલ, નેપકીન કે હાથરૂમાલ તો મિલના ન જ વાપરવાનો નિર્ણય આવતી કાલની સવારે પણ લઈ શકાય. વિશ્વ બેન્ક અને આઈ.એમ.એફ.ની કઠપૂતળી જેવા રાજકરણીઓ અને અધિકારીઓની જુગલબંધી સમગ્ર દેશને આર્થિક નાદારીના આરે લાવીને ઉભા રાખે તે પહેલાં આ નિર્ણય લેવા ખૂબ જરૂરી છે. અઢારેય કોમના ધંધા જીવતા કરતી ખાદી-ગ્રામોદ્યોગોની અર્થવ્યવસ્થા જ દેશની આર્થિક ઉન્નતિની આધાર-શિલા હોવાની આ માન્યતા એ કેવળ અતુલ શાહનો તરંગી વિચાર નથી, હાર્વર્ડ યુનિવર્સિટીમાંથી અર્થશાસ્ત્રની પીએચ.ડી.ની ડિગ્રી લઈને આવેલા Dr. નંદિની ઉમાશંકર જોશી પણ અમદાવાદની ઝૂંપડપટ્ટીથી લઈને ટોકિયોના સેમિનાર સુધી ઢોલ પીટી પીટીને આ જ વાત કહેતા ફરે છે.

-અતુલ શાહ

વિક્રમ સંવત ૨૦૪૭

કાગળખાઉ સંસ્કૃતિ આડને પણ મ્યુઝિયમ પીસ બનાવી દેશે

ભારતીય જીવનવ્યવસ્થામાં કુટુંબભાવના અને નિર્વ્યાજ સ્નેહના સીમાડા 'અમે બે અને અમારાં બે' સુધી સીમિત રહેવાને બદલે મામા-માસી, કાકા, ફોઈ અને બનેવી-સાળાના પહોળા વિસ્તાર સુધી લંબાતા અને તેનો પડઘો ભારતીય ભાષાઓનો શબ્દવૈભવ પણ બરાબર પાડે છે. અંગ્રજીમાં તમારે કાકા અને મામા વચ્ચે તફાવત પાડવા માટે અંકલ શબ્દને પેટર્નલ અને મેટર્નલના વિશેષણનું પૂછડું લગાવવું પડશે. તેવું જ માસી અને ફોઈનું. મા અને બાપ બંનેની બહેનો માટે આન્ટીથી ચલાવી લેવું પડે. બહેનના પતિ માટે સિસ્ટર્સ હસબન્ડ અને ભાઈની પત્ની માટે બ્રધર્સ વાઈફ વાપરનારા તેમની પાસે બનેવી કે ભાભી, દેરાણી કે જેઠાણી, નણંદ કે ભોજાઈ જેવા શબ્દો જ નથી. સંબંધવાચક શબ્દોની ઉણપ તેના દ્વારા વાચ્ય સબંધોની માતૃગૃહ માટે મોસાળ જેવો મોં ભરી નાખનારો શબ્દ હશે કે કેમ તે સવાલ છે. આ દેશમાં સ્ત્રી 'મા'ના લગ્ન પૂર્વેના સગાંઓનું પણ જે નૈકટ્ય 'મોસાળ' શબ્દ દ્વારા સ્ફૂટ થાય છે તે ભારતીય કુટુંબમાં 'મા'ના દરજ્જાનું સૂચક તો જરૂર છે.

વીજળીના ભડકા અને ડામર રોડના અતિક્રમણથી બચેલા મોસાળના ગામડે ઉનાળા-દિવાળીની રજાઓમાં જવાનું થતું ત્યારે જોયેલો નાળિયાના છાપરા નીચે લટકતો લાકડાના દટ્ટાવાળો લોખંડનો વાંકડિયો સળિયો મને આજેય બરાબર યાદ છે. લોકભાષામાં એને ફાળકો કહેતા. મોસાળથી ઘરે પહોંચ્યા પછી રાજીખુશીથી પહોંચી ગયાના ખબર આપતું અમે લખેલું રડ્યું-ખડ્યું પત્તું કે બાજુના કસ્બાના શહેરથી ખરીદેલાં સૂકા કોપરાંના બિલની નાનકડી ચબરખી એ જ એ ફાડકાનો વૈભવ. આનંદ કિલ્લોલથી જીવતા ગામડામાં 'સેઠ' ગણાતા એ બહોળા પરિવારનો કાગળનો કુલ વપરાશ એટલો ઓછો કે ક્યારેક એ નાનકડો સળિયો ભરાતાં બે-ત્રણ વર્ષ પણ વીતી

જાય. ઘરમાં જે કોઈ નિમિત્તે કાગળદેવીનું આગમન થાય તેની પ્રતિષ્ઠા કાગળમાં નાનકડું કાણું પાડીને એ સળિયામાં કરી દેવામાં આવે. ખરી ખૂબીની વાત તો હવે આવે છે. બે-ચાર વર્ષે જ્યારે એ સળિયો કાગળથી ભરાઈ જાય ત્યારે તમારા હાથમાં રહેલા એક દિવસના છાપાના કાગળ કરતાં પણ ઓછા કાગળના એ જથ્થાને ફેંકી નહીં દેવાનો. મારી માનાં મા મણિબહેન નામના ૬૦ વર્ષના અભણ વૃદ્ધા કાગળના એ બધા ટુકડાને પલાળી ગોળ, ગૂગળ, મેથી જેવાં ચીકાશ (બોન્ડેજ) લાવનારાં જાતભાતનાં દ્રવ્યો તેમાં ઉમેરી એ કાગળના માવામાંથી શેરબશેર વજન સમાય તેવી ટોપલીઓથી લઈને મણ બે મણ અનાજ સંઘરવાની ક્ષમતા ધરાવતા મોટા સૂંડલા બનાવતાં. બગલાની પાંખ જેવા ઉજળા એ ટોપલા વજનમાં એટલા હલકા બનતા કે મણ-બે-મણ ધાન સમાય એવો ટોપલો ખાલી હોય ત્યારે નાનું છોકરું પણ પોતાની તર્જની અને અંગૂઠાથી એને સાવ આસાનીથી ઊંચકી શકે. કાગળના બેહદ વધેલા વેડફાટને કારણે જંગલોના નીકળતા સત્યાનાશ ઉપર જ્યારે સેમિનાર યોજાય ત્યારે મંચ ઉપર બેનરની જગ્યાએ આ ટોપલો ટીંગાડવો જોઈએ. પેપર-મેશના ફેશનેબલ નામ નીચે કાગળના માવાની બનેલી કાશ્મીરી આઈટમો ખરીદવા ખાદી ભંડારોમાં ઉમટતાં દેશી-પરદેશી ટોળાંઓને જોયાં ત્યારે મને મારાં એ નિરક્ષર માતામહીની યાદ સહજ જ આવી ગયેલી. કન્ઝર્વેશન શબ્દનો અર્થ કહી બતાવવા જેટલું ભણતર એમની પાસે નહોતું પણ શબ્દ દ્વારા ધ્વનિત અર્થને જીવનમાં જીવી જાણવાનું ગણતર એમને વંશપરંપરાગત મળેલું. વેસ્ટમાંથી બેસ્ટ બનાવતા શીખવનારા કોચિંગ ક્લાસીસનું તો તેમણે નામ પણ નહોતું સાંભળ્યું પણ પેઢી દર પેઢી તેમને ગળથૂથીમાં જ એવા સંસ્કાર પાવામાં આવેલા કે પ્રકૃતિદત્ત કોઈ પણ ચીજવસ્તુનો વેડફાડ તેમના જીવનકોશમાં શોધ્યો નહોતો જડતો.

અધ્યાત્મના પાયા ઉપર ચણાયેલાં ભારતીય દર્શનો સ્પષ્ટપણે માનતાં કે દુનિયાની તમામ ચીજવસ્તુઓનો મનફાવે તેમ ઉપયોગ-ઉપભોગ કરવાનો મનુષ્યને અધિકાર છે જ નહિ. જીવનયાત્રાના ઊર્ધ્વીકરણના માર્ગે મુસાફરી

કરતા કરતા અનિવાર્યપણે જે વસ્તુનો ઉપભોગ કરવો જ પડે તેટલા પૂરતી જ છૂટ રહેતી અને માટે જ દેહાતીત થઈ ગયા હોવાને કારણે સુખપ્રાપ્તિ માટે જેમને કોઈ ભૌતિક પદાર્થના ઉપયોગની આવશ્યકતા રહેતી નથી તેવા તત્ત્વને (તેવા પદાર્થને) શુદ્ધ આત્મતત્ત્વ તરીકે કલ્પ્યું છે. આપણા મોડર્ન મિત્રો માને છે તેમ ભગવાન, સાધુ, ધર્મી, પાપી જેવી કેટેગરીઓ એ કોઈ સાંપ્રદાયિક જડતાની સૂચક નથી. વસ્તુતત્ત્વના તારતમ્ય સુધી પહોંચીએ તો ભગવાન એનું નામ જેમનું રિસોર્સ યુટિલાઈઝેશન શૂન્ય હોય. સાધુ એનું નામ કે જેઓ ઝીરો કન્ઝમ્પ્શનના આદર્શને આંબવાના લક્ષ્ય સાથે ઓછામાં ઓછી વસ્તુઓના ઉપભોગ દ્વારા જીવનયાપન કરતા હોય. સૌ કોઈનું એ ગજું નથી હોતું કે સ્વૈચ્છિક ગરીબીને સ્વીકારી લઈ લઘુત્તમ પાયાની જરૂરિયાતોથી ચલાવી શકે પણ કમ-સે-કમ આવું લક્ષ્ય પણ જેનું બંધાયેલું હોય અને બિનજરૂરી પાણીનો પ્યાલો પણ વેડફાય ત્યારે તેનો સાચકલો ડંખ જેના હૈયામાં જીવતો હોય તેનું નામ ધર્મી અને પાપી શબ્દ આપણે એવી વ્યક્તિને માટે પ્રયોજી શકીએ કે જેને માટે વર અને કન્યાને પણ મારીને પોતાનું તરભાણું ભરનાર ગોરની જેમ 'ખાઓ, પીઓ ને મજા કરો'ની સંસ્કૃતિ જ જેના જીવનનો મુદ્રાલેખ હોય.

પાપીમાંથી ધર્મી, ધર્મીમાંથી સાધુ અને સાધુમાંથી ઈશ્વર ભણીની ઉત્ક્રાંતિની દિશા ચીંધતા જીવનદર્શનમાં અલ્પતમ ઉપભોગનો જ ખ્યાલ હતો તેને આપણે પછાતપણાનું લક્ષણ માની બેઠા અને આ દેશને બીજું અમેરિકા બનાવવાના અરમાન સાથેનું સોશિયો-ઈકોનોમિક ડેવલપમેન્ટનું (સામાજિક-આર્થિક પ્રગતિ) ભૂલભરેલું મોડલ આ ઘેલછાના પરિપાકરૂપે અપનાવી દેશને દુર્દશાની ગર્તામાં ધકેલી બેઠા. વર્ષે માંડ વપરાતા શેર-બશેર કાગળને પણ નકામા ન જવા દેતી અણવિકસિત અને અવિકસિત દેશોની જીવનશૈલીની સાથે-વિકસિત કહેવાતા પેલા બીજા વિશ્વના દેશોના પ્રતીક-અમેરિકાની જીવનશૈલીને સરખાવવાની વગર ટિપ્પણીએ આ વાત સ્પષ્ટ થઈ જશે. દુનિયાભરની ફાલતુ વસ્તુઓ વેચીને પોતાની તિજોરી તરબતર કરવા મથતી અમેરિકન કંપનીઓ ગ્રાહકોના દિલદિમાગમાં એનું અછતું મહત્ત્વ ઘુસાડી દેવા

જાહેરાતના અને કેટલોગ વગેરેના ફરફરિયાનો મારો, પોસ્ટ દ્વારા અમેરિકાના ઘરે ઘરે કરતી રહે છે. કચરા જેવા બજારું ખોરાકને માટે વપરાતા 'જંક ફૂડ' શબ્દની જેમ આવી કચરા જેવી ટપાલને પણ તેઓ 'જંક મેઈલ' તરીકે ઓળખે છે. 'ફિફ્ટી સિમ્પલ થિંગ્સ યુ કેન ડુ ટૂ સેવ ધ અર્થ' (પૃથ્વીને બચાવવાના ૫ સરલ ઉપાયો)ના લેખકોએ મૂકેલા એક અંદાજ મુજબ માત્ર આ જંક મેઈલ માટે એટલા બધા કાગળ બગાડવામાં આવે છે કે એ કાગળોને જો અસત્-કલ્પનાથી બાળવામાં આવે તો તેમાંથી અઢી લાખ ઘરોમાં એર હીટર્સ ચાલી શકે તેટલી ગરમી પેદા થાય.

દરેક અમેરિકનના ઘરે નાખવામાં આવતી 'જંક મેઈલ' એક વર્ષ સુધી ભેગી કરવામાં આવે તો તેનો સરવાળો ઘરદીઠ દોઢ ઝાડ જેટલો થાય. આખા અમેરિકામાં માત્ર આ 'કચરા-પત્રો' માટે દસ કરોડ વૃક્ષોને કુહાડાના હાથાનો ભોગ બનવું પડે છે. આ દેશમાં પણ ધીમે ધીમે આ જંક મેઈલનો ચેપ લાગવાની શરૂઆત થઈ ગઈ છે. લગભગ રોજ છાપું ખોલવામાં આવે ત્યારે છાપાની ગડી વચ્ચેથી સરી પડતું જાહેરાતનું ફરફરિયું આનો જ એક પ્રકાર છે. અમેરિકનો દર વર્ષે કુલ મળીને વીસ લાખ ટન જેટલી જંક મેઈલ ટપાલમાં મેળવે છે. જેમાંની ૪૪ ટકા ટપાલો તો ખોલવાની પણ તસ્દી લીધા વગર તેઓ સીધી કચરાટોપલી ભેગી કરે છે. આ તો ખોલ્યા વગર ફેંકી દેવાતી જંક મેઈલની વાત થઈ પણ જે ટપાલો ખોલવામાં આવે છે તે સમયના ટુકડાઓનો સરવાળો કરવામાં આવે તો તેના જીવનના કુલ મળીને આઠ મહિના જેટલો સમય તો આ કચરાને ખોલવામાં જ જાય છે. માત્ર એક લાખ અમેરિકનોને આ જંક મેઈલના ત્રાસમાંથી મુક્તિ આપવામાં આવે તો દર વર્ષે દોઢ લાખ ઝાડ બચે. દસ લાખ અમેરિકનો આ મફતની હજામતમાંથી ઊગરે તો પંદર લાખ ઝાડની ફાંસીની સજા ટળે.

આધુનિક જીવનશૈલી આમેય માણસના મગજને 'ઈનોવેટિવ' (નવા વિચારવાલો આધુનિકતા વાદી) બનાવે છે. રોજ કાંઈક ને કાંઈક નવું શોધવાની પ્રેરણાના પાન તે માનવજાતને સતત કરાવ્યા કરે છે. કાગળ વેડફવાનો આ તો

એક જ રસ્તો થયો. આવા તો બીજા અનેક 'શેરને માથે સવાશેર' જેવા રસ્તા તેમણે શોધી કાઢ્યા છે, અને તે દિશામાં તેમની પ્રગતિની કૂચ હજી પણ વણથંભી જારી છે. અમેરિકાની સફર કરીને આવેલો ગ્રીનકાર્ડ હોલ્ડર તમને ત્યાંની જે અનેકવિધ વાતો કરશે તેમાંની એક વાત હશે ત્યાંના દળદાર વર્તમાનપત્રોની. પુસ્તકમેળામાં રાતોના ઉજાગરા કરીને હોંશે હોંશે વેચવામાં આવતા પ્રવાસવર્ણનોમાં પણ દોઢસો-દોઢસો અને બસો-બસો પાનાંના દળદાર છાપાઓ દસ જ મિનિટમાં વાંચીને પસ્તીમાં પણ આપવાની દરકાર કર્યા સિવાય ભૂગર્ભ મેટ્રો-ટ્રેનમાં જ મૂકીને ઉભા થઈ જનાર ડેવલપ્ડ યુરોપિયનો કે અમેરિકનોની વાતો તમે ઘણીવાર વાંચી હશે. ગુજરાતના ગામડાની બે બહેનપણીઓ દિવસ દરમિયાન જોયેલા કે સાંભળેલા કૌતુકની વાત કરવા ભેગી થાય અને ગૂસપૂસ કરતા કરતા એકબીજીને "અલી, જોયું? અલી સાંભળ્યું ?" કહેતી જાય ત્યારે કાંઈક અલૌકિક જોયાનો કે સાંભળ્યાનો જે ભાવ તેમના શબ્દોમાં નીતરતો હોય છે તેવો જ અચરજ દીઠાનો ભાવ આવા પ્રવાસવર્ણનની બે લીટીની વચ્ચે રહેલું લખાણ વાંચવાનું સામર્થ્ય ધરાવનાર વાચક પારખી શકશે. આવાં રસાળ વર્ણનો લખીને, દસબાર પાનાંના પ્રમાણમાં નાનાં છાપા વાંચનારના મનમાં, પોતે કાંઈક પછાત દેશના નાગરિક હોવાની લઘુતાગ્રંથિ પેદા કરનાર લેખકોને ખ્યાલ પણ નહીં હોય કે બસો બસો પાનાંના એ દળદાર છાપાની સામાજિક પર્યાવરણીય કિંમત શી છે.

અમેરિકામાં પ્રગટ થતાં છાપાંઓની ખાલી એક જ રવિવારની આવૃત્તિનો હિસાબ ગણીએ તો તેને માટે જોઈતો કાગળ બનાવવા પાંચ લાખ ઝાડ કાપવાં પડે. વર્ષમાં આવા તો બાવન રવિવાર હોય છે અને દરેક રવિવારને સોમથી શનિ સુધીના બીજા છ વારનું તગડું ફેમિલી હોય છે એ બધું ગણીએ તો સરવાળો કયાં પહોંચે એ હિસાબ જાતે જ કરી લેજો. અમેરિકન પેપર ઈન્સ્ટિટ્યૂટના સર્વે મુજબ સરેરાશ અમેરિકન દર વર્ષે ૧૨૦ પાઉન્ડ જેટલો ન્યુઝપ્રિન્ટ વાપરે છે. એટલે કે દર વર્ષે તે છાપું વાંચવા માટે પૃથ્વીના પટ પરથી એક ઝાડ ઓછું કરે છે. વર્તમાનપત્રોને માટે 'ચોથી જાગીર' (ફોર્થ એસ્ટેટ)

અને 'લોકશાહીના પ્રહરી' જેવા શબ્દોના સાથિયા ભલે પૂરતા હોય (હકીકતમાં તો શબ્દોના આવા તોરણ બાંધનાર પણ પત્રકારો જ હોય છે. એટલે મોસાળે જમણ ને મા પીરસનાર જેવો ઘાટ ઘડાય છે.) પરંતુ વાસ્તવમાં તો છાપું ચલાવવા પાછળ કાગળખાઉ સંસ્કૃતિ ઝાડને મ્યુઝિયમ-પીસ બનાવી દેશે, નકરા ધંધાકીય ઉદ્દેશ સિવાય બીજું કાંઈ હોતું નથી. દુનિયાભરની બાબતોની જાણકારી ગામડે ગામડે પહોંચાડવાની ડાહીડમરી વાતો તો બ્રેઈનવૉશિંગ અને પબ્લિસીટી બિઝનેસનો એક ભાગ માત્ર છે. બાકી એલિઝાબેથ ટેલરને હાલ કોની સાથે લફરું ચાલી રહ્યું છે કે બકિંગહામ પેલેસમાં ડાયેનાની કૂખે દીકરો અવતર્યો કે દીકરી તેની જાણકારીથી સામાન્ય માણસને તસુભાર જેટલોય ફાયદો થતો નથી. ડ્રોઈંગરૂમમાં સોફાસેટ પર બેઠા બેઠા હર્ષદ મહેતાથી માંડીને ગાભાજી ઠાકોર સુધીનાઓની વાતોના તડાકા બોલાવી મગજને દુનિયાભરનો કચરો ભરવાની કચરા ટોપલીમાં ફેરવી નાખનાર લોકોને સારા માણસ તરીકે કેમ જીવવું તેની માહિતી મેળવવાની ફુરસદ જ રહેતી નથી. ઘરમાં દીકરાને ઝાડા થયા હોય તો સૂંઠની ફાંકી આપવી કે પીંપરીમૂળની અથવા તો દિવસમાં દસ વાર પત્ની-બાળકો ઉપર લાલ-પીળા થઈ જવાતું હોય તો તે ગુસ્સાને અંકુશમાં રાખવા શું કરવું તેની જાણકારી ઘણી જરૂરી છે અને તે મેળવવા છાપા-ચોપાનિયા વાંચવાની કોઈ જરૂર નથી. ઘણાને તો ચા કરતાંય વધારે આકરું વ્યસન છાપાનું પડી ગયું હોય છે. ડ્રગ એડિક્ટની જેમ ન્યુઝ એડિક્ટના દર્દીઓ માટે પણ કોઈક ઉપચાર ગોતી કાઢવો જોઈએ. તકલીફ તો એ વાતની છે કે લીલાછમ ઝાડોને રહેંસી નાખી મસાલેદાર માલ પીરસતા આ છાપા સામે તમે દબાતા સૂરે પણ અવાજ કાઢો ત્યાં તો છાપાદેવીના ભક્તો તમને કોપીબુક સ્ટાઈલની ચવાઈ ગયેલી દલીલોથી ઝૂડી કાઢશે, છાપા ન હોત તો તમે આ સારા વિચારોનો પ્રચાર કેવી રીતે કરી શકત? માહિતી અને જ્ઞાનના વિસ્ફોટના આ યુગમાં વર્તમાનપત્રોએ તો આખી દુનિયાને એક સાંકળે બાંધવાનું કામ કર્યું છે વગેરે વગેરે. જાણે છાપાના માલિકો દુનિયાને એક તાંતણે બાંધવા અને તમારા સારા વિચારોનો

પ્રચાર કરવા જ છાપું ચલાવતા ન હોય! એને કોણ સમજાવે કે ભલા ભાઈ, તુલસીના જમાનામાં નહોતું છાપું, નહોતા પ્રિન્ટિગ પ્રેસ કે નહોતી કાગળની મિલો અને છતાંય તુલસીનું રામચરિત માનસ અને વ્યાસનું મહાભારત હિન્દુસ્તાનના ગામડે ગામડે અને ઘરે ઘરે વંચાતું અને સદીઓ સુધી કરોડો લોકોએ તેમાંથી સજ્જનતાના ગુણો ઝીલી પોતાના જીવનને ઉર્ધ્વગામી બનાવ્યું છે.

વૃક્ષારોપણની અને વનમહોત્સવની ઝુંબેશ ચલાવનારાઓએ લોકોને જાણ કરવી જોઈએ કે તેઓ રોજ બાર પાનાનું જે પતલું છાપું વાંચે છે તેનું વજન જો માત્ર ૭૫ ગ્રામ જેટલું હોય અને સવાર-સાંજ મળીને આવા માત્ર બે છાપા વાંચવાની તેમને ટેવ હોય તો દર વર્ષે, તેમના વતી એક લીલા ઝાડનું અસ્તિત્વ નાબૂદ કરી દેવામાં આવે છે. સમાજવાદના નારા લગાવનારો આ દેશ વાંસના ટોપલા બનાવી ગુજરાન ચલાવનારી વાદી કોમની ભટકતી જાતિના ભાઈઓને જે ભાવે વાંસ વેચે છે તેના કરતાં સેંકડો (રિપીટ, સેંકડો) ગણા ઓછા ભાવો ન્યુઝપ્રિન્ટ બનાવનારી પેપરમિલો એ જ વાંસ પડાવી જાય છે અને કાચો માલ આટલા સબસીડાઈઝ્ડ (બજાર કરતા ઓછા ભાવે, સરકારના માથે નુકશાન) ભાવે મળ્યા પછી પણ ન્યુઝપ્રિન્ટસના ઉત્પાદન ખર્ચ જેટલા ભાવ માગવામાં આવે તોય કાગારોળ મચાવી દેવામાં આવે છે. દેશભરમાં સૌથી વધુ પ્રદુષણ ફેલાવનાર ઉદ્યોગમાં પેપર મિલોનું સ્થાન અવ્વલ નંબરનું છે. તેમના દ્વારા ફેલાવાતા પ્રદુષણની સોશિકાલ કોસ્ટ કરદાતાની તિજોરીને બદલે કાગળની કિંમત પર ચડાવવામાં આવે તો કાગળ કદાચ એટલો મોંઘો થઈ જાય કે તમારે સરખા વજનની રૂપિયાની નોટો આપીને કાગળ ખરીદવો પડે.

છાપા વધુને વધુ વેચીને પાવડે પાવડે રૂપિયા ઘસડી જવાની રેટ-રેસમાં દુનિયાભરમાં છાપા પાનાંની સંખ્યા અને પ્રિન્ટની નકલોનું પ્રમાણ વધારતા જાય છે. ન્યૂયૉર્ક ટાઈમ્સ અને વોશિંગ્ટન પોસ્ટ કે ઈન્ડિયન એક્સપ્રેસ અને

ટાઈમ્સ ઑફ ઈન્ડિયાની આ પાડાલડાઈમાં બિચારા ઝાડની (લીટરલી) ખો નીકળી જાય છે.

એવરેજ અમેરિકન બધું મળીને વર્ષે ૫૮૦ પાઉન્ડ કાગળ વાપરતો હોય છે. આખા અમેરિકાનો સરવાળો પાંચ કરોડ ટન થાય. આટલા કાગળ માટે ૮૫ કરોડ ઝાડ કાપવા પડે. ચંડીપ્રસાદ ભટ્ટની ચિપકો સ્ટાઈલથી આટલા ઝાડ બચાવવા હોય તો એટલા ઝાડને બાઝી પડવા માટે આખા હિન્દુસ્તાનને ત્યાં લઈ જવો પડે. તેમ યુગો સુધી મહેનત કરીને હિન્દુસ્તાનની પ્રત્યેક વ્યક્તિને દર વર્ષે એક નવું ઝાડ રોપવા (અને ઉછેરવા) તૈયાર કરો તો જેટલા ઝાડ પેદા થાય એટલા ઝાડ તો અમેરિકન બંધુઓ દર વર્ષે તેમની કાગળભૂખ સંતોષવા જ કાપી નાખે છે. તેમને એમ લાગે છે કે આ કાગળખાઉ... કાગળખાઉની રાક્ષસી સંસ્કૃતિને હડસેલી દીધા વગર માત્ર વનીકરણની ઝુંબેશો ચલાવતા રહી તમે દુનિયાને લીલીછમ બનાવી શકો ?

ચકમ જેવા છાપા અને મેગેઝિનોનો ઢગલો ટિપોય ઉપર કરીને સવારનો સોનેરી સમય તેની પાછળ વેડફી દેવાને બદલે ચિરંજીવ મૂલ્ય ધરાવનારા કો'ક સુંદર પુસ્તકમાં ડૂબકી મારવાથી એકાદું સાચકલું મોતી પ્રાપ્ત થાય તેવું ન બને? કોન્વેન્ટવાળાને તો વટ પાડવાનો હોય છે પણ બાકીનાં બાળમંદિરો અને પ્રાથમિક શાળાઓ નોટબુકોની સાથે સાથે સ્લેટ-પેનનો ઉપયોગ શરૂ કરાવે તો દર વર્ષે બચતી નોટબુકોનો ઢગલો પર્વત જેટલો ઊંચો થઈ જાય. રેલવેના બુકસ્ટોલ તથા રસ્તાની ફૂટપાથ ઉપર વંચાતી ફાલતુ ચોપડીઓને અડીશ પણ નહીં તથા બજારમાં જઈશ ત્યારે મારી ખરીદીને પ્લાસ્ટિકની તો નહીં જ પણ કાગળનીય કોથળી કે રેપરમાં મઢાવવાને બદલે ઘેરથી લઈ ગયેલી કપડાની થેલીનો જ ઉપયોગ કરીશ જેવી નાનકડી શરૂઆતો કરવામાં આવે તો પણ પેપર મિલના પ્રદુષિત પાણીથી સડી ગયેલી કિડનીથી મરી ગયેલ જુવાનિયાની વિધવા માના હાયકારામાંથી આપણે તો જરૂર બચી જઈશુ.

રાધનપુરના એક ચુસ્ત જૈન સાથે થયેલી વાતચીતમાં તેણે તેના બાળપણની તાજી કરેલી એક વાત આપણે સૌએ હૃદયમાં કંડારી રાખવા જેવી છે. જૈનો જ્ઞાનની જેમ જ કાગળ જેવા જ્ઞાનના સાધનો-ઉપકરણોને પણ પવિત્ર માનતા હોય છે. એ ભાઈના કહેવા મુજબ નાનપણમાં રાધનપુર રહેતા હતા ત્યારે ઘરે મહેમાન આવે એટલે મા કંદોઈને ત્યાં પેંડા લેવા મોકલે. પણ પેંડાનું બોક્સ પણ કાગળનું બનતું હોવાથી તેની આશાતના (દુરૂપયોગ) ન થાય એ માટે મા ઘરેથી પિત્તળનો ખાલી ડબ્બો લઈને જ મોકલે અને કંદોઈ બોક્સ આપે તો પણ ના પાડીને તેઓ પિત્તળના ડબ્બામાં જ પેંડા લઈને આવતા. કાગળના ટુકડામાં જેને ઝાડ પર ઉગામાયેલ કુહાડીનું ચિત્ર દેખાતું હોય તે વ્યક્તિ રાધનપુરી જૈન પરિવારના આ જૂનવાણી રિવાજ ઉપર આફરીન પોકાર્યા વિના નહિ રહે.

- અતુલ શાહ - વિક્રમ સંવત ૨૦૪૭

- મા–બાપનું લોહી ચુસતો હાલનો હિંદી કોલેજીયન એવી કેળવણીમાં આગ મુકો.

-વીર શાસન તા. ૨૩/૮/૧૯૩૫

- મીસરમાં સ્ત્રિઓને સીનેમા જોવાની મનાઈ છે.

-વીર શાસન તા. ૫/૧૦/૧૯૩૪

- ચેયનચેરો ખાતે એક ક્રિશ્ચીન સ્ત્રીએ નાણાની સગવડ નહીં હોવાથી, જન્મેલું બાલક ફક્ત ૬ આનામાં વોર્ડ બોયને વેચી દીધું હતું.

-વીર શાસન તા. ૮/૯/૧૯૩૩

- ઓરિસ્સા પ્રાન્તની એક વિધવાએ પોતાના ૩ વર્ષના બાળકને ૩॥ રૂપિયામાં વેચ્યો.

-વીર શાસન તા. ૮/૯/૧૯૩૩

ઝેરનાં જમણ દ્વારા કવેળાનાં મરણ

આજના કેમિકલ યુગમાં આપણે અખાદ્ય કહેવાય તેવાં રસાયણો ખાઈએ છીએ. બહારનું ખાવાનું વધ્યું છે અને ખાવામાં ફેશન વધી છે. ભારતમાં ખવાતાં કેમિકલ્સ અમેરિકા કરતાં ખૂબ વધુ જોખમી છે. કારણ કે ચકાસણીનું ધોરણ જોઈએ તેવું નથી. ભ્રષ્ટાચાર વ્યાપક બની ગયો છે. સવારે ઊઠીએ ત્યારે નાસ્તામાં ચા કે દૂધ, મુખ્યત્વે બ્રેડ સાથે ચીઝ, બટર કે જામ અથવા બિસ્કિટ અને ટોસ્ટ, બાળકો માટે ઝટપટ બની જતાં નૂડલ્સ, બપોરના જમણ સાથે બજારૂ અથાણાં-પાપડ વગેરે વસ્તુઓ હોય છે.

આજકાલના બાળકોને એકલું દૂધ તો ભાવે નહીં, તેથી જાત-જાતના મિલ્ક પાવડર ઉમેરીને અપાય છે. ઠંડા પીણા, શરબત પેકેટ માંથી બનાવાય છે. મીઠાઈઓ ફરસાણ બહારથી મંગાવવાના. ઈડલી-ઢોંસા, ગુલાબજાંબુ બનાવવાના તૈયાર પેકેટ મળે. આ બધી ખાદ્ય સામગ્રીમાં એડિટિવ્સનો (કૃત્રિમ રસાયણો) ઉમેરો કરવામાં આવે છે. કૃત્રિમ રંગમાં ગંધ, સ્વાદ, આકાર જાળવી રાખવા જુદાં-જુદાં રસાયણો બધાં એડિટિવ્સ છે. જે આરોગ્ય માટે હાનિકારક પૂરવાર થયેલા છે. દા.ત. ઠંડા પીણામાં ઊભરાને લાંબો સમય ટકાવી રાખવા બી.વી.ઓ. બ્રોમિનેટેડ વેજીટેબલ ઓઈલનો ઉપયોગ થાય છે. વધુ પ્રમાણમાં બી.વી.ઓ. શરીરમાં જાય તો કેન્સર થઈ શકે છે. આ વાતની વર્તમાનપત્ર દ્વારા લોકોમાં ખબર પડતાં જ ઊહાપોહ જાગ્યો. ભારત સરકારે કાયદો બનાવી બી.વી.ઓ. બંધ કરાવ્યો. હવે તેની જગ્યાએ 'એસ્ટર-ગમ'નો ઉપયોગ શરૂ થયો. જે એક પ્રકારનો ગુંદર છે. તેનો બબલગમ, ચ્યુઈંગમમાં ઉપયોગ થાય છે. આ એસ્ટરગમ રંગરોગાન કરવાના પેઈન્ટ્સ-વાર્નિશમાં વપરાય છે. જે શરીરને નુકશાનકારી છે. (જેનાથી કેન્સર જેવો રોગ થાય છે.) રસાયણશાસ્ત્રી એન. જી. વાગલે કહે છે કે એસન્સનો ખાદ્ય પદાર્થમાં વિશિષ્ટ સુગંધ માટે ઉપયોગ કરાય છે. એસન્સમાં વિવિધ રંગ ઉમેરવામાં આવે છે. એમાં કેટલાક ઉત્પાદકો કપડાં રંગવાના રંગો પણ વાપરે છે. જુદા-જુદા રંગના

આઈસ્ક્રીમ ખાનારાઓએ આ યાદ રાખવા જેવું છે કે રંગ એ ધીમું ઝેર છે.

ચોકલેટ બનાવવા કોકો પાવડર, દૂધનું મિશ્રણ અને કોકો બટર વપરાતું હોય છે. કોકો બટર મોંઘું હોઈને તેના બદલે સાલ ફેટ નામની ચરબી ઉમેરી દેવામાં આવે છે. બજારમાં મળતાં બટરમાં પીળા રંગનું મિશ્રણ હોય છે. આવરદા વધારવા પ્રિઝેવેટિવ મીઠું ઉમેરવામાં આવે છે. ટોમેટો કેચ-અપમાં લાલ રંગ જામ હોય છે. રંગવાળી તમામ વસ્તુ આરોગ્ય માટે હાનિકારક છે.

ચીઝ બનાવવા રેનિન વાછરડાના જઠરમાંથી મેળવાય છે. જેલીના મિશ્રણમાં જિલેટિન વપરાય છે, જે પ્રાણીઓના હાડકામાંથી બને છે. જુદા-જુદા શરબતની બનાવટ કૃત્રિમ હોય છે. જે રાસાયણિક પ્રક્રિયાથી બને છે. જેને સિન્થેટિક કહેવાય છે. જેમાં રંગ-ગંધ-સ્વાદ બધું એડિટિવ્સને આભારી છે. ચોકલેટમાં આવતું નિકલ હાનિકારક છે. ચોકલેટને પીગળતી અટકાવવા માટે કોકો બટરમાં વનસ્પતિ ઘી ઉમેરવામાં આવે છે. વનસ્પતિ ઘી બનાવવાની પ્રક્રિયામાં નિકલ હોય છે. સાદા તેલ પર નિકલની મદદથી રાસાયણિક પ્રક્રિયા કરીને તેમાંથી વનસ્પતિ ઘી કે તેલ બનાવાય છે. આ નિકલ ચોકલેટમાં આવે છે. વધુ પડતું નિકલ નુકસાન કરે છે. ચોકલેટ ખાવાથી દાંત જરૂર બગડે છે. ચાના છોડ ઉપર જે જંતુનાશક દવા છાંટવામાં આવે છે તેમાં નિકલનું પ્રમાણ ઘણું હોય છે. આથી ચાથી ચેતવું જોઈએ.

ખોરાકમાં કન્ટેમિનેશન એટલે કે બગાડ/ચેપ લાગવાનો વધુ ડર શિંગના દાણામાં છે. ભેજને કારણે શિંગમાં ફૂગ આવે છે. આ ફૂગમાં આફ્લાટોકસિન નામનો પદાર્થ છે. આ દાણા તેલ બનાવતાં પીલી નખાય છે. આવા તેલથી યકૃતનું કેન્સર થવાનો ભય છે. નદી-નાળાં કે જમીનમાં રહેલા પાણીમાં કારખાનાઓ દ્વારા રસાયણના ઝેરી અંશો ભળી જાય છે. જે ખોરાકમાં પ્રવેશી જાય છે, જે નુકસાનકારી છે. વાપી આજકાલ મોટું રાસાયણિક કેન્દ્ર બની રહ્યું છે. લાલ-લીલા-પીળા રંગના પાણીના પ્રવાહ જોવા

મળે છે. આ પાણી જમીનમાં ઊતરી શુદ્ધ પાણીને દૂષિત કરે છે. સૌરાષ્ટ્રમાં જેતપુરની આજુબાજુ પ્રદૂષિત પાણીની સ્થિતિ છે. ઉલ્હાસનગર પાસે ઉલ્હાસ નદી, પાતાળગંગા નદીમાં રસાયણો મળી આવ્યા છે. મોટા-મોટા કારખાનાઓ નદી-કિનારે છે. પાણીમાં ભળેલા રસાયણો છૂટા પાડી શકાતા નથી. શાકભાજી-ફળો પાક ઉપર જંતુનાશક દવાઓ છાંટવાના કારણે ઘણું ઝેર પેટમાં ઠલવાય છે. સફરજનના જલ્દી ઉછેર માટે 'એલાર' નામના પદાર્થનો છૂટથી થતો ઉપયોગ ચિંતાજનક છે. ખાદ્ય પદાર્થોમાં આ રીતે આવી જતા ઝેરી તત્ત્વો વિશે ઘણો વર્ગ અજાણ છે. વધુ દૂધ માટે ભેંસને હોર્મોન્સના ઇંજેક્શન અપાય છે. તેવી ભેંસોનું દૂધ નુકસાન કરે છે.

જમીનના પાણીમાં રહેલાં રસાયણો કેટલી હદે ઊંચાઈએ જઈ શકે છે તે માટે નાળિયેરીના મૂળમાં ઇંજેક્શન આપી પ્રયોગ કરતાં જણાયું કે, ૩૦ ફૂટ ઊંચે નાળિયેરીના પાણીમાં રસાયણ મળી આવ્યું. ક્લોરાઈડવાળા ટૂથપેસ્ટ પણ હાનિકારક બની શકે છે. મોટે ભાગે સોડિયમ ક્લોરાઈડ વાપરવામાં આવે છે, જેનાથી કેન્સર અને હૃદયરોગ થઈ શકે છે. પીણાઓમાં કેલેરી ઓછી કરવા સાકરને બદલે સેકરીનનો ઉપયોગ થાય છે. સેકરિન કેન્સર જેવા રોગને આમંત્રણ આપે છે. તૈયાર પાઉચમાં મળતા પાનમસાલા, સુગંધી સોપારીઓ અને રંગીન વરિયાળી ઉપર સેકરિનના પડ ચઢાવેલા હોય છે. આજે પેકિંગમાં વપરાતા હલકા ડબ્બાઓ તથા પેકીંગ ઉપર વસ્તુ ક્યારે બની ? તેમાં શું ઉમેરવામાં આવ્યું છે વગેરે હકિકતો લખવામાં આવતી નથી. ડુપ્લીકેટ માલ બજારમાં વેચાતો હોય છે. બટર-જામ-કેચ-કસ્ટર્ડ પાવડર મસાલાઓ વગેરેના પેકેટો ઉપર માહિતીઓનો અભાવ હોય છે. પી.એફ.એના નિયમ મુજબ પેકેટ ઉપર પદાર્થ બનાવવા વપરાયેલી સામગ્રી, ઉમેરા કરાયેલા પ્રિઝર્વેટિવ, ઈમલ્સીફાયર, કલર વગેરે દરેક પ્રકારના એડિટિવ્સની યાદી લખવાની હોય છે. બ્રેડ ઉપર તારીખ નાખવામાં આવતી નથી. વાસીબ્રેડથી ખૂબ જ નુકસાન સંભવી શકે છે. બિસ્કિટ વગેરે બનાવવા માટે મેંદાની ગુણોનો ગોદામમાં સંગ્રહ થાય છે. માખીઓ બણબણે છે. તેને દૂર

કરવા ઝેરી દવા છંટાય છે. મિલ્ક બિસ્કિટમાં દૂધના કારણે ફૂગ લાગી જાય છે. બાળકો માટે બનાવાતાં બિસ્કિટો બાળકો માટે જ સૌથી વધારે હાનિકારક સાબિત થતાં હોય છે. આઈસ્ક્રીમને દળદાર બનાવવા બ્લોટિંગ પેપરને ભીંજાવીને તેનો માવો બનાવી દૂધમાં મેળવીને વેચાતો જોવા મળ્યો હતો, જે આવકવેરાવાળાએ પકડી પાડેલ. આમ આજકાલ બહારની વસ્તુમાં ઘણી ભેળસેળ ચાલી રહી છે.

બિસ્કિટમાં ઘી અથવા સ્પેશિયલ બેકરી ફેટને બદલે પ્રાણીની ચરબી વાપરવામાં આવે છે. મટન ટેલોનો વપરાશ વધી ગયો છે. કોફીમાં ચીકોરીનો પાવડર તો ક્યારેક ચીચૂરાનો પાવડર ઉમેરાય છે. ચીકોરી એક જાતનું શક્કરીયા જેવું કંદમૂળ છે. ચાંદીના વરખને બદલે એલ્યુમિનિયમના વરખ લગાડવામાં આવે છે. પીળા રંગને બદલે 'મેટોનિલ યલો' ખાવાના ગોળથી માંડીને સેવ, ગાંઠિયા, જલેબી એવી અનેક વસ્તુમાં ચોરી છૂપીથી વપરાતો આ રંગ વધારે પ્રમાણમાં શરીરમાં જાય તો કેન્સર થઈ શકે છે. દૂધમાં ૩૩ ટકા જેટલી ભેળસેળ પુરવાર થઈ છે. મસાલામાં ૧૨ ટકા, તેલમાં ૮ ટકા અને બીજા ખાદ્ય પદાર્થોમાં ૬ ટકા ભેળસેળ ચકાસણીમાં જણાઈ આવી છે. વગર ચકાસણીની ઢગલાબંધ વસ્તુઓ બજારમાં વ્યાપી ગઈ છે. સૌરાષ્ટ્રમાં ૮૬૨ માર્કાના સિંગતેલનો ભેદ આ રીતે છે. ૧૬ કિલો ડબ્બામાં ૮ કિલો સિંગતેલ, ૬ કિલો રેપસિડ ઓઈલ-એક પ્રકારના સસ્તા તેલબિયાનું તેલઅને બે કિલો દીવેલ હોય છે. આવા મિશ્રણ કરીને સિંગતેલ વેચવામાં આવે છે. ભેળસેળિયા તેલને 'ડિસ્કો તેલ' કહેવાય છે. બ્રેડ અને બિસ્કિટના માવાને પગથી ગૂંદવામાં આવે છે. કેરી ઈંજેક્શનોથી કે દવાથી પાકે છે. પપૈયા, કેળાનું પણ એમ જ છે. મૂળા, ગાજર, ભાજીમાં ગટરના કે નદીના પાણીમાં રહેલા રસાયણો ઉમેરાઈને આવે છે. લાલ દેખાતા ચણા-વટાણા ઉપર કેમિકલ્સનો રંગ ચડાવેલો હોય છે. જે આરોગ્ય માટે હાનિકારક હોય છે.

– 'અભિયાન'માંથી સાભાર.

આપણા વપરાશમાં ગાયના હાડકાં

હિન્દુઓ ગાયને માતા માનીને પૂજે છે. ગાયને વંદન પણ કરે છે. પરંતુ કેટલાંક દુષ્ટ હિન્દુઓ ગાયનું માંસ છૂપી રીતે આરોગે છે, એવી જ રીતે ગાયના હાડકાંના પાવડરમાંથી બનેલી વાનગીઓ તો અનેક શાકાહારીઓ જાણ્યે-અજાણ્યે ખાય છે. કેન્દ્ર સરકારનો પ્રતિબંધ હોવા છતાં દેશમાં અનેક સ્થળે ગેરકાનૂની રીતે ગાયની કતલ થાય છે. કેરળમાં તો ખુદ સરકારે ગોવધ પ્રતિબંધનો સૌથી આકરો પ્રતિકાર કર્યો છે. તેનું રહસ્ય શું છે, તે ખબર છે ? આપણા દેશમાં ગાયના હાડકાંનો સૌથી વધુ પુરવઠો કેરળમાંથી જ મળે છે. થોડાંક સમય પહેલાં જાપાનની વિખ્યાત મીત્સુબીશી કંપનીના સહયોગમાં એક કારખાનું કેરળમાં નંખાયું હતું. આ કારખાનામાં ગાયના હાડકાંની માગ દર વર્ષે ૧૦,૦૦૦ ટનની હતી. દૂર દૂરના ગામોમાંથી ગાયોના મડદાં અહીં લાવીને તેના હાડકાં કાઢી તેનો ભુક્કો કરવામાં આવતો. ત્યારબાદ તે વિવિધ ઔદ્યોગિક ઉત્પાદનમાં વપરાતો, હવે જો ગોવધ પર પ્રતિબંધ આવે, તો કરોડોનું મૂડી રોકાણ ધરાવતાં આવા ઘણા ઉદ્યોગો બંધ થઈ જાય. સામાન્ય વાચકને થશે કે ગાયના હાડકાંને કાચા માલ તરીકે વાપરીને કારખાનું કઈ ચીજ પેદા કરતું હશે? તેમાંથી શું બનતું હશે ? તેનો જવાબ વીજળીના ઝાટકા જેવો છે. ગાયના હાડકાંમાંથી જીલેટીન તરીકે ઓળખાતો પાવડર બને છે અને આઈસ્ક્રીમ, બજારૂ પુડીંગ, ફ્રૂટ સલાડ વગેરેમાં તે જીલેટીન વપરાય છે.

આ સિવાય ગાયના હાડકામાંથી ગુંદરી પદાર્થ બને છે. તેને અંગ્રેજીમાં એડહેસીવ કહે છે. ગ્લુ પણ કહેવામાં આવે છે. આપણા દેશમાં થોડાં વર્ષ પહેલાં ટપાલના પરબીડીયા ચોંટાડવા હોય, તો પાકા ગુંદાનો રસ વપરાતો હતો. દૈનિકોની અને મેગેઝિનોની કચેરીમાં સ્ટાર્ચમાંથી બનાવેલી લાઈ ચોંટાડવા માટે વપરાતી. યુરોપમાં ગાય-ભેંસના હાડકાંને અને ચામડાને ઉકાળીને તેમાંથી ચોંટાડવાનો પદાર્થ બનાવવામાં આવતો હતો. જેને 'સરસ'

પણ કહે છે.

આ ગુંદરીયા પદાર્થ અર્થાત્ એડહેસિવ, (કૃત્રિમ રસાયણ જે વસ્તુઓને જોડે- ઉદા. : ફેવીકોલ) ગ્લુ ગાયના હાડકાં-માંથી બને છે અને રસાયણોમાંથી પણ બને છે. કુદરતની કરામત તો જુઓ કે, જેટ એન્જિનના તોતીંગ ભાગો લોખંડના બનેલા હોય, તેને ચોંટાડવા માટે ગાયના હાડકાં માંથી બનાવેલું ચીકણું ગ્લુ વપરાય છે. લીમડાં કે વડલાના ઝાડ માંથી નીકળતા દૂધનો પણ બે પદાર્થો ચોંટાડવામાં ઉપયોગ થઈ ચૂક્યો છે. ૧૯૩૦માં કેમ્બ્રીજની ફીનીટી કોલેજનાં પ્રોફેસર ડૉ. નોર્મન 'દ' બ્રુદનીએ એરોપ્લેનના અમુક ભાગો, લાકડાના બનાવ્યા હતા અને એ લાકડાને ચોંટાડવા માટે તેણે નવી જાતનો રાસાયણિક ગુંદર શોધી કાઢ્યો. અત્યારે આ રાસાયણિક ગુંદર અવનવી ચીજોને ચોંટાડવા વપરાય છે. બુટથી આખો સોલ છૂટો પડી જાય તો મોચી એને દોરાથી સાંધવાને બદલે હાથમાં ચીકણુ પ્રવાહી લઈ બુટ નીચે લગાવીને બે મિનિટમાં બુટના ચામડા સાથે સોલને ચોંટાડી દે છે ! આ ચીકણો પદાર્થ ફોયકોલને મળતો એક પ્રકારનો રબરી સોલ્યુશન છે.

અત્યારે કાઠીયાવાડના ઘણા ગામડામાં ખેડૂતો પણ આ ચીકણો પદાર્થ વાપરવા માંડ્યા છે. ગાયના હાડકાં વિષે આપણે મોડેથી વાત કરીશું. પણ ગાયના હાડકાં ઉપરાંત બીજા પદાર્થોમાંથી રાસાયણિક ગુંદર બનાવાય છે, તે 'ગુંદર'નો કેવો વિવિધ ઉપયોગ થાય છે, તે જાણવા જેવું છે.

તમે પરબીડીયા ચોંટાડવા માટે ગુંદરની બોટલ માંગો છો, પણ તેમાં તમારી કલ્પના મુજબનો ગુંદર હોતો નથી. તેનું ખરું નામ તો ગ્લુ હોય છે. મોટરની બ્રેકની લાઈનીંગ, હેલીકોપ્ટરના રોટોર્સ (પંખાની ધરી) અને સેફટીકાચ પણ આ ગ્લુથી સાંધી શકાય છે. અરે, કાતિલ મિસાઈલ અને અણુબોમ્બની ઉપરના કાંચલાને જોડવા પણ આ ગ્લુ વપરાય છે. રોમન લોકો પક્ષીઓને પકડવા માટે જાળ પાથરતાં, તેમાં તેઓ ગાયનાં હાડકાંને ઉકાળીને રસ કાઢતાં, તે રસ ચોપડતા. આ રસ ન મળે, ત્યારે ઓકવૃક્ષ ઉપરના વેલાનો

રસ ઉકાળીને ચોપડતા જેથી પક્ષીઓ જાળ ઉપર બેસીને ચણ ચણે ત્યારે ચોંટી જાય. વેલા, વૃક્ષો, લોહી, હાડકાં, દૂધ અને બટાટા માંથી ગ્લુ બને છે. તમે જીભ લગાવીને એટલે કે જીભેથી પરબીડીયાના 'ગુંદર'ને ભીંજવો છો, તે 'ગુંદર' હાડકાં બટાટા કે રસાયણોનો બનેલો હોઈ શકે છે.

"પોલીમર-કેમ્સ્ટ્રીએ" ચીકણા પદાર્થ માટેની સમસ્યા હળવી કરી નાખી છે. પોલીમર એટલે એક જાતના અણુમાંથી બનેલા મિશ્ર અણુઓનું રસાયણ ! ગાયનાં હાડકાં કે બીજા પદાર્થની તંગી હોય, ત્યારે આ રસાયણમાંથી ગ્લુનો ઉપયોગ થવા માંડ્યો. મોન સાન્ટો પ્લાસ્ટીક્સ-નામની અમેરિકાની મશહૂર કંપનીના માલિક કહે છે કે 'બચપણમાં મારા પિતા સુથાર તરીકે બે લાકડાને ચોંટાડવા તેમાં મરેલા ઘોડાના હાડકાંને ઉકાળીને તેનો રસ ઉપયોગમાં લેતા હતા.'

હવે તો ચીકણા રાસાયણિક પદાર્થમાં અનેક ચીજો ઉમેરીને આ રાસાયણિક ગુંદર વધુ ચીકણો, આગ સામે વધુ પ્રતિકાર બની શકે તેવો બનાવાય છે. આ ગ્લુ કે એડહેસીવનો ઉપયોગ એટલો વધ્યો છે કે, અત્યારે જગતમાં રૂ. ૨૪૦ અબજનો ગુંદર વપરાય છે. આપણે માથાદીઠ દર વર્ષે છ રતલ ગુંદર વાપરીએ છીએ અને તેમાં અડધો રતલ ગુંદર ગાયના હાડકામાંથી બનેલો હોય છે. આ 'ગુંદર' આપણે વિવિધ સ્વરૂપે વાપરીએ છીએ. જેમ કે તમે ડાઈનીંગ ટેબલ ઉપર જમો છો. તેનું સનમાયકાનું આવરણ ગુંદરથી ચોટાડ્યું હોય છે.

મોટર ઉદ્યોગમાં વેલ્ડિંગ અર્થાત રેણથી જોડવાને બદલે ગુંદરથી જોડવાથી કામ પતી જાય છે. ઈલેક્ટ્રીક મોટરમાં તડ પડી હોય કે બારણામાં તડ પડી હોય કે પેટ્રોલની ટાંકીમાં તડ પડી હોય તે ખાસ પ્રકારના ગ્લુથી જોડાય છે.

ટેલિફોનની ઘંટડી બરાબર વાગે માટે ટેલિફોનના નાજુક ભાગોને સ્ક્રુથી જોડવાને બદલે એડહેસિવથી જોડવામાં આવે છે. પ્લાસ્ટીકના બે ભાગને

જોડવામાં નટ બોલ્ટ કે ખીલી વપરાય તો પ્લાસ્ટીક ટુકડા થઈ જાય કે તિરાડ પડે છે. આ તકલીફ નિવારવા માટે ગ્લુ વપરાય છે. કઈ કંપની ક્યા પદાર્થ માંથી ચીકણો પદાર્થ બનાવે છે. એ હમેશા ગુપ્ત રાખે છે. કારણ કે ગાયના હાડકા માંથી ગ્લું બનાવાય છે. એ વાત ભારતના લોકો જાણે તો ઘણા લોકો તે ચીજ ન વાપરે.

છેલ્લે અમેરિકાની ફિનીટી કોલેજના એક પ્રોફેસરે એરોબીક એડહેસીવ શોધ્યું છે તે પ્રવાહી ગુંદર માત્ર દવાના સંસર્ગમાં રહે ત્યાં સુધી પ્રવાહી રહે છે. જ્યારે બે સપાટી વચ્ચે તે ગુંદરને ભીંસાવાય ત્યારે તે એટલું નક્કર બની જાય કે સપાટીને કોઈ અલગ પાડી ન શકે. આ ગુંદર ને તે પ્રોફેસરે લોકટાઈટ નામ આપ્યું છે અને મોટર ઉદ્યોગમાં 'લોકટાઈટ' બહુ વપરાય છે.

અમેરિકન કંપનીઓ ગ્લુ બનાવે છે તેની સ્પર્ધા જાપાનની કંપનીઓ કરે છે. ભારતમાં કેરળ ખાતે 'કેરાલા કેમિકલ્સ એન્ડ પ્રોટીન્સ લિમિટેડ' નામની કંપની સ્થપાઈ છે. તેણે જાપાની કંપનીનો સહયોગ લીધો છે. આ કંપનીના જાપાની ટેકનિશીયનોને ગ્લુ અને જીલેટીનમાં ગાયના જ હાડકાં શું કામ વાપરો છો ? તેમાં ઘોડા, ગધેડા કે બીજા પ્રાણીના હાડકા કેમ વાપરતા નથી. તેવો પ્રશ્ન પૂછાંતા જાપાની નિષ્ણાતે કહ્યું કે, ગાયના હાડકાનો ભુકો તે પણ એક જાતનું કુદરતી પોલીમર છે, તે હાડકાંમાં એમિનો એસીડ વધુ ઊંચી કક્ષાનો હોય છે. ગાયના હાડકાંના ભાવ ટન દીઠ રૂ. ૧,૬૦૦ થી ૧,૭૦૦ ઉપજે છે, અમુક કારખાનાવાળા કબૂલ કરતા નથી, પણ ગ્લુ કે જીલેટીન બનાવવા માટે માનવીના હાડકાં પણ વપરાય છે. ભારતથી યુરોપ ખાતે જે માનવીના હાડકાં નિકાસ કરાતા હતા, તેમાંથી આઈસ્ક્રીમ માટે વપરાતું જીલેટીન બનતું હતું.

માનવ મરે ત્યારે એક પાઈની કિંમતનો હોતો નથી, તેમ આપણે કહીએ છીએ, પણ મરેલાં માણસના ઓછામાં ઓછા રૂ.૧૦૦૦ તો નિપજે છે. તેના હાડકાં કીમતી છે. ગાય મરે ત્યારે તેના હાડકાં રૂ. ૪૦૦ થી રૂ. ૫૦૦

ની કિંમતના થઈ જાય છે.

ગાયોનાં અસ્થિની ચરબીમાંથી જીલેટીન બનાવવાનું કાર્ય જરા પણ સારું નથી.

ગાયના હાડકાં માંથી જે જીલેટીન અને બીજા પદાર્થો બને છે તેની યાદી જોશો, તો થશે કે હિન્દુ અને જૈન હોવા છતાં આપણે રોજ કોઈને કોઈ સ્વરૂપે સવારે મસ્તીપૂર્વક ગાયના હાડકાં ચાવીએ છીએ.

કેપ્સ્યુલ એટલે કોઈ પણ ટીકડીને નક્કર બનાવવા ગાયના હાડકાંનો ભૂકો વપરાય છે.

કોડ લિવર ઓઈલ, ઊંચી જાતની કન્ફેક્શનરી, આઈસ્ક્રીમ, સોસેજ, ફોટો ફિલ્મ, અમુક ઊંચી જાતના કાગળ વગેરેમાં ગાયના હાડકાં તેમજ ભેંસના લીવરનો અર્ક વપરાય છે.

ફિલ્મ અને કેમેરા બનાવતી આગેવાન કંપની કોડાક દર વર્ષે ગાયનાં હાડકાંની અંદર ચરબીમાંથી જિલેટીન બનાવવા કતલખાનાઓમાંથી ગાયનું આઠ કરોડ પાઉન્ડ હાડપિંજર ખરીદે છે.

ગાયનાં હાડકાંની કિંમત છેલ્લા બે વર્ષોમાં ૨૫ ટકા વધી ગઈ છે. દહીંથી માંડીને વિટામિનની ટિકડીઓના કેપ્સમાં વપરાતું હોવાથી જીલેટીનની ઘણી માંગ છે.

જીલેટીનની બનાવટમાં ચડિયાતો અંકુશ જમાવવા જ્યોર્જ ઈસ્ટમેને ૧૯૩૦માં કોડાક પ્લાન્ટ સ્થાપ્યો હતો. રાઈના બી ખાનાર ઢોરોનાં હાડકાંમાંથી જીલેટીન બનાવવાથી તે પાયમાલ થવાની અણી પર પહોંચી ગયો હતો. આવા હાડકાંમાંથી બનાવેલી જીલેટીનની ફિલ્મો પિક્ચર લેવાય તે પહેલાં ખરાબ થઈ જતી હતી.

સોળ ફૂટ ઊંચા ગાયનાં અસ્થિના ઢગલામાંથી દુર્ગંધ આવતી હોય છે. આ અસ્થિના ધાણી જેટલા નાના કદના ટુકડા કરાય છે. 'બોન્સમેન' તરીકે

ઓળખાતો માણસ આ અસ્થિના ટુકડાનું ઊંચી જગ્યાએ બેસીને નિરીક્ષણ કરે છે. તે ત્યારબાદ હાથની મુઠ્ઠીમાં આ અસ્થિની ચીપ્સ બરાબર થઈ કે નહીં તે જુએ છે.

હાડકાંની આ ચિપ્સને કન્વેયર બેલ્ટ વડે મીઠાના તેજાબની ટાંકીમાં મોકલાવાય છે. કેલ્શિયમ અને પોટેશિયમના ક્ષારોને દૂર કરવા હાડકાંને ત્યાં એક અઠવાડિયું રખાય છે. ત્યારબાદ તેને આઠ અઠવાડિયા સુધી ચૂનાના દ્રાવણમાં રખાય છે, ત્યાં તે પ્રવાહી સ્વરૂપ ધારણ કરે છે. તેને ત્યારબાદ પાણીની ટાંકીઓ અને ફિલ્ટરની સિરિઝ વડે સિરપ સ્થિતિમાં લવાય છે. ત્યારબાદ તેને ઠંડુ કરીને સૂકવવામાં આવે છે અને તેનો પાઉડર બનાવાય છે અને જ્યારે બીજા રસાયણો સાથે મિક્ષ કરવામાં આવે છે, તો તે ફિલ્મની સ્ક્રિપ્સ પરનું ફોટો સેન્સિટી ઈમલ્સ બને છે.

આમ ગાયનાં હાડકાંનું બજાર બહુ મોટું છે. તેના ઘણા ધંધાદારી ઉપયોગો છે. જીવતી ગાયોને કતલખાને ધકેલીને તેનાં હાડકાં કાઢી લેવા એ પાપી કૃત્ય ગણાય. અને મરેલા પશુના હાડકામાંથી બનેલા દ્રવ્ય વાપરવા એ પણ પાપી કૃત્ય ગણાય.

- આશ્લેશ શાહ,

- 'ગુજરાત સમાચાર' માંથી સાભાર

- વીર શાસનના તા. ૯/૮/૧૯૩૫ના અંકમાં–
  કમ્બોડિય ગામની પાસે ૪૫૪ ફિટ ઉંચી પ્રતિમા મલી છે.
- તા. ૫/૧૦/૧૯૩૪ના અંકમાં કોટાયન ગામમાં એક સ્ત્રીને ૧૨ ઇંચ લાંબા શીંગડાવાળું બાળક અવતર્યું છે.

ક્યાં છે સ્વતંત્રતા ? ક્યા છે સ્વરાજ્ય ?

આજનો યુગ ભારે વિચિત્ર છે કહેવાતા 'સ્વરાજ્ય'ને પણ પચાવવાની તાકાત આજે ક્યાં જોવા મળે છે ? આઝાદી, સ્વરાજ્ય અને સ્વતંત્રતાના ગાણાં આજે ગવાઈ રહ્યા છે, પણ હકીકતમાં પરતંત્રતા અને સ્વચ્છંદતાના બંધનમાં આપણે વધુને વધુ જકડાતા-બંધાતા જઈએ છીએ. વધારે દુ:ખદ બાબત તો એ છે કે, આજની સરકાર અને સત્તાલોલુપ નેતાઓ એવા જ માર્ગે આગળ વધીને પ્રજાને પણ આગળ વધારી રહ્યા છે કે, જેના કટુ પરિણામ રૂપે પ્રજા વધુને વધુ ભોગલોલુપ બનતી જાય અને દેશના રાજકારણ પર પાશ્ચિમાત્ય-પરતંત્રતાના પડછાયા ઘેરા બનતા જાય છે.

સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમના નેજા હેઠળ આજે વિકૃતિઓને વેગ મળી રહ્યો છે અને ભોગવિલાસમાં સૌ ફસાતા જાય છે. ભારતીય-પરંપરા, લજ્જા-મર્યાદા, પ્રમાણિકતા આદિ મૂળભૂત આદર્શો પર આજે અગ્નિ ચંપાઈ રહ્યો છે. *જેથી આજની નારી વેશ્યા કરતાય વધુ વિલાસિની બનીને ઠેર-ઠેર ઘૂમતી જોવા મળે છે. પ્રાચીન કાળની વેશ્યાઓ તો ચાર દીવાલોની ચોકી વચ્ચે વિલાસ કરતી હોવાથી એનો ચેપ બીજાને ઓછો લાગતો હતો, જ્યારે આજે તો સિનેમા અને ટી.વીના માધ્યમે છડેચોક આવો ચેપ ફેલાઈ રહ્યો છે અને એનું અનુકરણ કરતી આપણી મા-દીકરીઓ ઘર ઉપરાંત, બજારમાં પણ ઘૂમતી જોવા મળે છે.*

વિલાસ-મોજ-શોખનો ચેપ આજે એટલો વ્યાપક બન્યો છે કે, આભ ફાટ્યા જેટલી સ્થિતિ સરજાઈ છે, હવે એ ફાટને કઈ રીતે સાંધવી, અને એના માટે શું કરવું ? એ જ યક્ષ પ્રશ્ન થઈ પડ્યો છે. નગ્નતાના પ્રદર્શનમાં થી જાતને બચાવી લેવા માટે હવે તો એ જ ઉપાય જણાય છે કે, સત્સંગ વચ્ચે જીવવું અને સતત સત્સાહિત્યનું વાંચન કર્યા કરવું. સમાજને સન્માર્ગે લાવવાના આજ બે ઉપાય કંઈક આશાપ્રદ જણાય છે. માટે આના પ્રચાર-પ્રસાર અર્થે આપણે સૌએ પુરુષાર્થ કરવો જ જોઈએ.

-હીરાચંદ સ્વરૂપચંદ ઝવેરી, મુંબઈ-૯.

છાપાઓમાં છપાતાં ભગવાનના ફોટા

અનેક પ્રકારે થતી ભયાનક આશાતનાઓથી બચવાનો પ્રયત્ન કરીએ

હમણાં હમણાં છાપાંઓમાં, સામાયિકોમાના મુખપૃષ્ઠ ઉપર પણ અને આમંત્રણ પત્રિકાઓમાં ભગવાનના ફોટા ખૂબ ખૂબ છપાવા લાગ્યા છે. કોઈ દેરાસરમાં પ્રભુજીની ભારે અંગરચના કરવામાં આવી હોય ત્યારે આશાતનાનું પાપ નહિ જાણનારા કેટલાક અજ્ઞાન શ્રાવકો પોતાની જાતે આંગીવાળા પ્રતિમાજીનો ફોટો પાડીને કે છાપાંવાળાઓને બોલાવીને એમની પાસે ફોટો પડાવીને છાપાંઓમાં સહર્ષ છપાવે છે. છાપાવાળાઓ તો પાપના ભય વિનાના ને મતલબી હોય છે. તેઓ તો ભગવાનના ફોટા છાપીને વાસ્તવમાં પોતાનું છાપું ખપાવવાની જ મહેનત કરી રહ્યા હોય છે. ભગવાનના ફોટા જાતે પાડીને કે છાપાંવાળા પાસે પડાવીને એને છાપાંઓમાં છપાવનારા શ્રાવકો લાભની ભ્રામક કલ્પનામાં રાચી રહ્યા હોય છે ને જાણ્યે-અજાણ્યે આશાતનાનું ભયાનક પાપ જાતે બાંધવા સાથે છાપાં ખરીદનારા અનેક આત્માઓને પણ બંધાવી રહ્યા છે. પ્રભુજીનો ફોટો પાડીને છાપાંવાળાને અપાય, ત્યાંથી માંડીને ઘર-ઘર માંથી છાપાં પસ્તીમાં પધરાવાય અને એ પસ્તી ખાદ્ય પદાર્થોના પડીકે બંધાઈને ગટરમાં કે ઉકરડામાં જાય, ત્યાં સુધીમાં ભગવાનના ફોટાની જે ભયાનક આશાતનાઓ થાય છે એ જોતાંય આંખો મિંચાઈ જાય છે. એ આશાતનાઓની વાતો કરતાં ને વાતો સાંભળતાં પણ જીભ થથરી ઊઠે છે તે કાનમાં શૂળ ભોંક્યા સમાન વેદનાનો અનુભવ થાય છે.

ભગવાનના ફોટાની જેવી ભયાનક આશાતનાઓ થાય છે એવી આશાતનાઓ ભગવાનની પ્રતિમાજીની ક્યારેય થઈ શકતી નથી. સ્થાપના નિક્ષેપાની દૃષ્ટિએ ફોટો અને પ્રતિમાજી બંને સમાન હોવા છતાં પ્રતિમાજીની આશાતનાને આપણે ચલાવી લેતાં નથી. પરંતુ ફોટાની આશાતનાઓને તો જાણે

હોંશે-હોંશે આવકારવામાં આવી રહી હોય એવું જોવાઈ રહ્યું છે.

મોબાઈલમાં દેવ-ગુરુના ફોટા લેવા, ભગવાનના ફોટાને ગંદા હાથે અડવું, એને ખીસામાં રાખીને આહાર-પાણી કરવા ને સંડાસ-બાથરૂમમાં પણ જવું, એને ઉપરથી નીચે પછાડવો, એને હાથમાં લઈને દૂર ફગાવવો, એને અપવિત્ર જમીન ઉપર મૂકવો, એને પગતળે કચડવો, એના ઉપર બેસવું, સૂવું, એને ઓશીકા નીચે પણ મૂકવો, ફાડીને ફેંકી દેવો, એને રસ્તામાં, ઉકરડામાં ને ગટરમાં પણ નાખવો : આમ અનેક રીતે આશાતનાઓ શક્ય છે.

ભગવાનના ફોટાની આમ અનેક પ્રકારે ભયાનક આશાતનાઓ સહેલાઈથી કરી શકાય છે. ભયાનક પાપ બંધાવનારી આવી આશાતનાઓ પ્રભુની પ્રતિમાજીની કોઈનાથી ક્યારેય થઈ શકતી નથી. કોઈનાથી ક્યારેક અજાણતાં પ્રતિમાજીની નજીવી આશાતના પણ થઈ જતી હોય છે ત્યારે એનું હૃદય કંપી ઊઠે છે ને ગુરુ મહારાજ પાસે આવી આલોચના-પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને આશાતનાના પાપની શુદ્ધિ પણ કરે છે, જ્યારે જે વ્યક્તિ દ્વારા ભગવાનના ફોટાઓની અનેક પ્રકારે ભયાનક આશાતના કરાતી હોય છે ત્યારે એ આશાતનાઓના પાપના ભયથી એનું હૃદય જરાય કંપતું હોય એમ જણાતું નથી. વળી અનેક પ્રકારે ફોટાની આશાતના કરનારાઓ ગુરુ મહારાજ પાસે આવી ને આલોચના-પ્રાયશ્ચિત્ત કરવા દ્વારા આશાતનાના પાપની શુદ્ધિ કરતા હોય એવું પણ મહદંશે જોવામાં આવતું નથી.

પ્રભુની પ્રતિમાજીને જોતાં દર્શન કરતા હૃદયમાં જેવો આદરભાવ, પૂજ્યભાવ ને ભક્તિભાવ પ્રગટે છે એવો આદરભાવ, પૂજ્યભાવ ને ભક્તિભાવ ભગવાનનો ફોટો જોતાં કે એના દર્શન કરતા હૃદયમાં ઉત્પન્ન થતો હોય એમ અનુભવાતું નથી.

એક દૃષ્ટિએ વિચારીએ તો મૂર્તિ કરતાંય ફોટાઓમાં વધુ તાદૃશતા આવતી હોવાથી ફોટાઓ હૃદયમાં વધુ આહ્લાદ પેદા કરવા સમર્થ બનતા હોય છે. એથી એની આશાતના ટાળવાનો પ્રયત્ન તો વધુ ચીવટથી કરવો જોઈએ.

ભગવાનના ફોટાઓનાઅઢાર અભિષેક ન કરવામાં આવ્યા હોય, એટલા માત્રથી એવા ફોટાઓની પણ આશાતનાઓ કરવાની છૂટ મળી જતી નથી.

અંતમાં ભારપૂર્વક કહેવા યોગ્ય એ છે કે મુંબઈ, અમદાવાદ જેવાં મોટાં-મોટાં શહેરોનાં દેરાસરોના વહીવટદારો ઉપર જણાવી એ બધી ભગવાનના ફોટા દ્વારા થતી કે કરાતી ભયાનક આશાતના-ઓને જાણે, સમજે, વિચારે અને આશાતના-પાપના ભયવાળા બનીને પ્રભુ-પ્રતિમાજીના ફોટા પાડવાનો જ નહિ, પણ કેમેરા સાથે દેરાસરમાં દાખલ થવાની મનાઈ ફરમાવતો કડક કાયદો કરે અને એનો અમલ સખ્તાઈથી કરે ને કરાવે એ ખૂબ-ખૂબ જરૂરી છે.

-પૂ. મુનિરાજ શ્રી હિત વિજયજી મહારાજ

પ્રતિષ્ઠાઓ, અંજનશલાકાઓ અને મહોત્સવોમાં ફોટાઓ વીડિયોનો જે પ્રચાર વધ્યો છે, તેના ઊપર પણ અંકુશ મુકવા જેવો છે. (સં.)

- અનેકાંતવાદનો ઉપયોગ પણ એકાંતે કરવાનો નથી, જ્યારે સત્ય સમજાઈ જાય ત્યારે સત્યના પક્ષે રહેવું એ કદાગ્રહ નથી.
- હું સાચો છું એવું માનવામાં કદાગ્રહ નથી પણ બાકી બધા ઝુઠા એવું માનવામાં જરૂર કદાગ્રહ છે.

-કલ્યાણ નવેમ્બર-૨૦૧૦, પૃ.-૮

નારી... નારી... સન્નારી

નારી તત્ત્વ વિષે પરમજ્ઞાની શ્રી તીર્થંકર-ગણધર ભગવંતોએ, મહર્ષિ-પરમહર્ષિઓએ તેમજ વિદ્વદ્વર્યોએ ઘણું ઘણું લખ્યું છે. 'અનંતપાપરાશિઓ ભેગી થાય ત્યારે સ્ત્રીપણું મળે' એવા કડક શબ્દોમાં નારી તત્ત્વનું બ્યાન આપ્યુ છે. મુખ્યત્વે માયા-કપટ કરવાથી સ્ત્રીવેદમોહનીય કર્મ બાંધે, સ્ત્રીપણું પામે- એવો એક સનાતન સિદ્ધાંત જગત સામે મૂક્યો છે.

સ્ત્રીઓના પદ્મિની, હસ્તિની, શંખિણી અને ચિત્રિણી, આ ચાર વિભાગ પાડી ઉત્તમ,મધ્યમ, અધમ, અધમાધમ સ્ત્રીઓનું પૃથક્કરણ કરવામાં આવ્યું !

સમગ્ર જીવનમાં જે સ્ત્રીઓએ મનથી પણ ક્યારેય પરપુરુષનો વિચાર નથી કર્યો તેમજ જે સ્ત્રીઓ શીલધર્મની અગ્નિ પરીક્ષામાં, કપરી કસોટીમાં અણીશુદ્ધ પાર ઊતરી ગઈ; તે સતી અને મહાસતી સ્ત્રીઓને જગત પૂજ્ય અને જગદ્વંદ્ય તરીકે બિરદાવી.

વંચકતા (ઠગવાપણું) નિર્દયતા, ચંચળતા અને કુશલપણું વગેરે સ્ત્રીના સહજ સ્વાભાવિક અગણિત દોષો-મહાદોષો જોઈ-જાણીને જ્ઞાનીઓ એ વાઘણ, નાગણ, વિષકંદલી વગેરે ૯૩ ઉપમાઓ આપીને એને વખોડી છે.

એક ચારિત્રપાત્ર મહાત્મા એક નારીની આંખમાં વસી ગયા. તે પછી કામ અને ક્રોધથી વિફરેલી એ નારીએ મહાત્માને પોતાની લપેટમાં લીધા. ચારિત્ર રક્ષાના મહાત્માના બધા જ પ્રયત્નો નિષ્ફળ ગયા. ચારિત્રના ચૂરેચૂરા થઈ ગયા. આ હકીકત એક લેખકે જાણી અને અક્ષરશઃ એ સત્ય ઘટના ઉપર લેખમાળા લખી, એ લેખમાળાનું શિર્ષક આપ્યું- *"नारी तिक्ष्ण कृपाण !"*

એક અનુભવી કવિરાજે લખ્યુ છે કે- "स्त्रीणां चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं,

દેવો ન જાનાતિ કુતો મનુષ્યઃ ।'' આ સુભાષિતથી સ્ત્રીના ચરિત્રની અને પુરુષના ભાગ્યની ગહનતા સ્પષ્ટ કરી છે.

એક રાજાએ જ્યારે સ્ત્રીઓનાં નવ લાખ ચરિત્ર છે એમ સાંભળ્યું, ત્યારે એ રાજા પંડિત પાસે રોજ એક-એક સ્ત્રી ચરિત્ર સાંભળતો ગયો અને એક-એક સ્ત્રીનો ત્યાગ કરતો ગયો.

વળી એક મહાકવિએ સરસ કહ્યું છે- આ ઘોર ભયંકર સંસાર અટવીમાં જો નારી નામની દુસ્તર નદી ન હોત તો આ સંસારના અનંતાનંત જીવો ક્યારનાય મોક્ષે પહોંચી ગયા હોત !

આપણે અહીં સન્નારીનો વિચાર કરવો છે. સાડા પચ્ચીશ આર્યદેશોમાં આર્ય સન્નારીઓ અગણિત-અસંખ્ય-અનંત થઈ ગઈ ! એમના શીલ-સદાચાર, વિનય-વિવેક, મર્યાદા વગેરે અગણિત ગુણોની પ્રશંસા જ્ઞાની મહાપુરુષોએ કરી છે. ગુણોની ટોચે પહોંચી એ સ્ત્રીઓએ તીર્થંકર નામ ગોત્ર બાંધ્યાં છે. એ સન્નારીઓનાં શીલના પ્રભાવે અગ્નિ પાણી બને છે. સર્પ ફૂલની માળા બની જાય છે. વિષ અમૃત બને છે અને સિંહ શિયાળ જેવો બની જાય છે.

સન્નારી માટે એક વિદ્વાન મહોદયશ્રીએ કહ્યું છે કે- ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः ।''

આજ કાલના કેટલાક અર્ધદગ્ધ વિદ્વાનો આ મહાનસૂત્રાત્મક પદનું ઓઠું લઈને નારીનું જગતમાં પ્રદર્શન કરવાની, ઘરના ખૂણામાં મર્યાદાબદ્ધ રહી શીલની રક્ષા કરતી, વડિલોની સેવા કરતી, ગૃહભાર સંભાળતી નારીને જગતના ચોગાનમાં લાવવાની વાતો કરે છે.

એક અધ્યાત્મયોગી તત્ત્વચિંતક મહાપુરુષે ઉપરોક્ત પદનું અર્થઘટન કર્યું કે- શીલધર્મથી જગત્પૂજ્ય બનેલી નારીની કુક્ષિએ જન્મ મેળવવાના મનોરથ દેવો કરે છે.

સન્નારીના ગુણવૈભવનું દર્શન કરનાર એક આર્ષદ્રષ્ટાના મુખમાંથી

શબ્દો સરી પડ્યા- *"नारी तुं नारायणी"* હવે *"पतिदेवो भव"* ના આશીર્વાદ પામીને સાસરે ગયેલી સન્નારી; કુલવધૂ બનીને પોતાના દામ્પત્ય જીવનને કેવું શોભાવે છે, સુખમય બનાવે છે; એ એના અદ્‌ભુત છ ગુણોથી સમજવાનો પ્રયત્ન કરશું.

कार्येषु मन्त्री करणेषु दासी, भोज्येषु माता शयनेषु रम्भा ।
धर्मे सहाय्या क्षमया धरित्री, षड्‌गुणयुक्ता त्विह धर्मपत्नी ।।

સન્નારી કોઈપણ પુરુષની ધર્મપત્ની બને છે એ સન્નારીપણાને શોભાવનારા છ ગુણથી યુક્ત હોય છે. એ છ ગુણ નીચે મુજબ છે.

(૧) **कार्येषु मन्त्री** :- સન્નારી પતિના કાર્યમાં, મૂંઝવણભર્યા પ્રસંગમાં, કોઈ જટીલ સમસ્યામાં બુદ્ધિમાન મંત્રી જેવી બની, યોગ્ય સલાહ સૂચન આપી સમસ્યાનો ઉકેલ કરે છે, કાર્યને સફળ બનાવે છે. આ સદ્‌ગુણ તેજપાળની પત્ની અનુપમા દેવીમાં ખૂબ સારો ખીલેલો ઈતિહાસના પાને વાંચવા મળે છે.

(૨) **करणेषु दासी** :- પતિનું કામ કરવામાં અર્થાત્ સેવા શુશ્રૂષામાં દાસી જેવી બની જતી દેખાય છે. ત્યાં એ પોતે શેઠાણી હોય તો શેઠાણીપણું ભૂલી જાય છે. કોઈપણ જાતના કંટાળા વગર પતિનું કામ ઉમંગથી કરે છે. આ સદ્‌ગુણ ધારણ કરતી ઘણી સન્નારીઓ આપણને આજે પણ આર્યકુટુંબોમાં જોવા મળે છે.

(૩) **भोज्येषु माता** :- સન્નારી પોતે જ પતિને જમાડતી હોય છે, અને તે પણ માતા જેવા પ્રેમથી જમાડતી હોય છે. માતા જેવા પ્રેમથી પીરસેલું ભોજન ગુણકારી બને છે. તૃષ્ટિ-પુષ્ટિનું કારણ બને છે. પશ્ચિમની ઝેરીલી સંસ્કૃતિ કૂદકેને ભૂસકે વિસ્તાર પામતી હોવા છતાં આજે પણ આર્યદેશની હજારો-લાખો સન્નારીઓ આ ત્રીજા સદ્‌ગુણને ધરનારી જોવા મળે છે.

(૪) **शयनेषु रंभा** :- પતિને વિષય સુખથી તૃપ્ત કરવામાં સન્નારી રંભા જેવી હોય છે. જેથી પતિ પરસ્ત્રીગમનાદિ દૂષણથી દૂષિત થતો નથી.

(૫) **ધર્મે સહાય્યા** :- ઘણી સ્ત્રીઓ બીજા ઘણા સદ્‌ગુણો ધારણ કરનારી હોવા છતાં પતિને ધર્મ કરવામાં અંતરાય કરતી હોય છે. સન્નારીમાં પતિને ધર્મમાં સહાય કરવાનો મહાન ગુણ જોવા મળે છે. સામાન્ય રીતે સ્ત્રીઓને સુખ-દુઃખમાં સહભાગિની કહેવાય છે પણ સન્નારીમાં ધર્મમાં સહભાગીપણાના ગુણનો સુંદર વિકાસ થયેલો હોય છે.

(૬) **ક્ષમયા ધરિત્રી** :- પૃથ્વી જેવી સહનશીલતા :- એ સન્નારીનો છેલ્લો મહાન સદ્‌ગુણ છે. સ્ત્રી જીવનમાં માતા-પિતાનાં, ભાઈ-ભાભીનાં, બહેનો અને બનેવીઓનાં, કાકા-કાકીનાં, સાસુ-સસરાનાં, જેઠ-દિયરનાં, દેરાણી-જેઠાણી અને નણંદનાં, પુત્ર-પુત્રીઓનાં, પુત્રવધુ અને જમાઈઓ વગેરેનાં કટુવચનો સાંભળવાના સેંકડો-હજારોવાર પ્રસંગો આવે છે. ઘણા પતિદેવો તો આખા ગામનો ગુસ્સો સ્ત્રી ઉપર ઠાલવતા હોય છે. આક્રોશ અને રુઆબ કરતા હોય છે. ઘણી સ્ત્રીઓ એની સામે ક્રોધ, આક્રોશ અને જુસ્સો ઠાલવે છે, આગ વરસાવે છે. ક્યારેક રણચંડીનું રૂપ ધારણ કરે છે અને અવળચંડી પણ બને છે. ભારતીય સન્નારીનો, આ કટુવચનો, આક્રોશ, રોષ કે કટકટ સામે કોઈ જુદો જ અભિગમ હોય છે. એ ધીરતા, ગંભીરતા, પૃથ્વી જેવી ક્ષમા અને સહિષ્ણુતા વગેરે ઉત્તમ ગુણોના સહારે અગ્નિ પરીક્ષામાંથી પાર ઊતરી જાય છે. ક્યારેક તો એની સૌમ્યતા, સ્મિતભરી મુખમુદ્રા વગેરે દ્વારા જીત મેળવી જાય છે. સામાઓને હાર ખાવી પડે છે અને સળગતા દાવાનળ જેવો ઘર-સંસાર નંદનવનની રમણિયતાને ધારણ કરે છે.

સન્નારીના જીવનનું ઊજળું પાસું એના અદ્‌ભુત છ ગુણો દ્વારા આપણે જોયું-જાણ્યું અને માણ્યું, બાકી તો બીજા પણ એના સદ્‌ગુણો દ્વારા એણે પોતાના દિવ્યવ્યક્તિત્વની શાશ્વતપ્રતિષ્ઠા વિશ્વના વિશાળ ચોગાનમાં કરી છે.

-ધર્મદૂત ૨૦૫૨-આસોજ

મા : એક અનુભૂતિ, એક ચમત્કૃતિ

મા-બાળકનો સંબંધ આ પૃથ્વી પર સૌથી સુંદર, અતિશય ઊંડો અને વારસામાં મળતા પ્રેમના બીજ જેવો છે. માતાના દૂધમાંથી વ્યક્તિને પ્રેમનો પાઠ મળે છે.

મા-બાળકના પ્રેમને તમે શબ્દોમાં ન ઉતારી શકો. સમર્થમાં સમર્થ લેખક કે વક્તા પણ મા-બાળકના પ્રેમને આબેહૂબ વર્ણવી શકતો નથી. માતાનો પ્રેમ અનિર્વચનીય છે. એને શબ્દોમાં સમાવી શકાતો નથી. હા, એને હૃદયમાં ભરી આંખમાંથી ટપકતા આંસુ દ્વારા વ્યક્ત કરી શકાય છે. સૃષ્ટિમાં તમે કયાંય પણ જાવ, માના ખોળા જેવો વિશ્રામ, માની હુંફ જેવી શાતા ને માના હેત જેવી પ્રતીતિ કયાંય નહીં મળે. માનું પાત્ર આ સૃષ્ટિ પર સૌથી મોટો ચમત્કાર છે.

પિતાને કોઈ વાત પહોંચાડવી હોય તો મોટે ભાગે માતા દ્વારા જ પહોંચાડાતી હોય છે. માતા બાળક માટે બફરનું કામ કરે છે. પિતાનો ગુસ્સો કે રોષ પણ મા વચ્ચે ઊભી રહીને પી જાય છે. પોતાના બાળક માટે એ સદા ઢાલ બનીને જીવે છે. અને સંસારના તમામ દુઃખો પોતે જ ઝીલી લેવા તત્પર હોય છે.

સૃષ્ટિ પર જન્મતાની સાથે જ વ્યક્તિનો પહેલો સંબંધ મા સાથે બંધાય છે. મા જ બાળકને પોષણ, પ્રેમ અને હૂંફ આપે છે. બાકીના બધા ગમે તેટલા નિકટ હોય, તો પણ દૂર જ રહે છે અને એટલે વ્યક્તિનો મા સાથેનો સંબંધ વધુ ઊંડો, આત્મીય અને નિખાલસ હોય છે. તમે જેને પ્રેમ કરો તેનાથી ભયભીત નથી થતા. તમે એને બધું જ કહી શકો છો. મા પર ગુસ્સો કરી શકાય. મા સાથે લડી ઝઘડી શકાય કેમકે માનું પાત્ર એટલું નિકટ છે. જેને તમે પ્રેમ કરો છો, તેના પર ગુસ્સે થવાનો હક્ક પણ આપોઆપ મળી જાય છે. જોકે એ ગુસ્સામાંય મમતા, આત્મીયતા અને ઊંડો પ્રેમ હોય છે.

પશુ હોય, પક્ષી હોય કે માણસ, સૃષ્ટિ પર જેટલા પણ જીવ છે, એની

માતાનો સ્વભાવ સદા એક સરખો છે. એના અણુઅણુમાં મમતા, વાત્સલ્ય અને સમર્પણના જીવંત પ્રવાહને જોઈ શકાશે.

નાભિનાળ કપાયા પછી મા બાળકનો સંબંધ અખંડ અને અકબંધ રહે છે. સંતાન ભલે માતાને ભૂલી જાય, મા-પોતાના બાળકને ભૂલી શકતી નથી. દિકરો કે દિકરી છોને પોતાનો નવા સંસાર શરૂ કરે અને એમાં ખોવાઈ જાય, પણ મા માટે તો પોતાનાં સંતાનો જ આખા એક સંસાર જેવાં હોય છે. પોતાના સંતાનના સુખ માટે એ આખા સંસારને પણ છોડી શકે છે.

પ્રસૂતિ વખતે મા અથવા બાળક, બેમાંથી એકને બચાવી શકાય તેમ હોય, તો પુરુષ ઈચ્છશે કે પોતાની પત્ની બચી જાય, પણ સ્વયં મા તો એવું જ ઈચ્છશે કે પોતાનો જીવનદીપ બુઝાય તો ભલે બુઝાય, પણ પોતાનું સંતાન, પોતાના પ્રેમનું બીજ કે પ્રતીક બચી જાય.

મા બનતા પહેલાં (થોડા સિઝેરિયનને બાદ કરીએ તો) પ્રત્યેક સ્ત્રી પ્રસૂતિની પીડામાંથી પસાર થાય છે. જેણે આ પીડા અનુભવી હોય, તે જ જાણે કે 'મા' થવા માટે એણે કેવી કેવી પરિસ્થિતિમાંથી પસાર થવું પડ્યું હોય છે, પુરુષને જો આ પ્રક્રિયામાંથી પસાર થવું પડતું હોય, તો સંસારનો આ સંતાન તંતુ કયારનોય અટકી ગયો હોત ! ક્યો પુરુષ બાળકના મળમૂત્ર સાફ કરે? કયો પિતા બાળક માટે ધાવણની ધાર બનીને રહે ? - અને છતાં માતાની મહાનતા તો જુઓ, એના સમર્પણનો વિચાર તો કરો, બાળકને એ પોતાનું નહીં, પિતાનું નામ આપીને ગૌરવ અનુભવી શકે છે. સંતાન પાછળ પિતાનું નામ જોડી સમાજમાં એની ઓળખ ઊભી કરી શકે છે. પોતે પાછળ છુપાઈને બધો યશ પિતાને આપી શકે છે, અને એટલે જ કદાચ પરમાત્મા પછી સૃષ્ટિ પર બીજું સ્થાન માતાનું છે. જીવનના સુકોમળ તંતુને અતૂટ રાખવા માટે સૌથી મોટું યોગદાન માતાનું છે. દીવામાંથી જેમ દીવો પ્રગટે એમ જ માતા દ્વારા જીવનમાંથી જીવનનો પ્રવાહ આગળ વધે છે.

માતા આ સૃષ્ટિ પર સૌથી મોટી કલાકાર છે. તમે એક સુંદર કાવ્ય

લખો, નવલકથા, વાર્તા કે કોઈ ચિંતનસભર પુસ્તક આપો, જગત પર એક મનોરમ શિલ્પ મૂકીને જાવ, લોકો કાયમ યાદ કરે એવું કોઈ કામ કરીને જાવ. પરંતુ તમારું કોઈ પણ સર્જન માતાની તોલે ન આવે. મા પોતાના પેટમાં, પોતીકા હેતથી પોષીને એક નવા જીવનને જન્મ આપે છે. એના માટે બધું જ કરે છે. સમય આવ્યે પોતાના જાનની બાજી લગાવી શકે છે. સ્ત્રીનું સર્વશ્રેષ્ઠ સર્જન છે એનું બાળક. બાળક માટે માતા રાતભર જાગે છે. ફૂલની જેમ એનું જતન કરે છે. બાળકના સુખ માટે પોતાનું સુખ જતું કરે છે. બાળના પોષણ અને વિકાસ માટે પોતાનું જીવન નીચોવી નાખે છે. પોતાના બાળક માટે માની છાતીમાંથી દૂધ ઊભરાય એ સૃષ્ટિનો સૌથી મોટો ચમત્કાર છે. મા એક જીવતો પ્રવાહ છે. એ પોતાના સંતાન માટે પીગળીને વહી શકે છે. આપવામાં આનંદ અનુભવે છે. સતત શુભેચ્છાનો પ્રવાહ બનીને જીવી શકે છે. 'મા' એ કોરો શબ્દ નથી. એ એક અનુભૂતિ, એક ચમત્કૃતિ છે.

માતા માટે બાળક કંઈપણ કરે, માતાના સમર્પણ અને વાત્સલ્ય સામે એની કોઈ વિસાત નથી. મોટામાં મોટો માણસ પણ 'મા'ના ચરણમાં નમે છે. એ ભલે મોટો ઉદ્યોગપતિ હોય, દેશનો વડો પ્રધાન કે રાષ્ટ્રપતિ હોય, જેની સામે અનેક લોકો નમતા હોય, એવો માણસ પણ 'મા'ના ચરણમાં નમે છે. પોતાની માતા સામે એ કાયમ નાનો છે. સ્વયં ભગવાન પણ બચપણમાં તો માની આંગળી પકડીને જ ચાલે છે.

માત્ર જન્મ આપવાથી જ કોઈ સ્ત્રી માતા થતી નથી. 'મા' થવા માટે તો પ્રત્યેક સ્ત્રીએ સાધના કરવી પડે છે. બાળકને પ્રેમ, પોષણ, સંસ્કાર અને સમજ આપવાથી જ કોઈ સ્ત્રી સાચી માતા બને છે. આજકાલ બાળકને પોષણ, સગવડ બધું મળે છે, પણ માતાનો પ્રેમ કે માતાની હૂંફ મળવામાં થોડી કચાશ રહે છે અને એથી જ મા-બાળકના સંબંધમાં કયારેક સ્વાર્થ, ઔપચારિકતા અને એકબીજા તરફનો ધિક્કાર પ્રવેશી જાય છે. ઘણીવાર એક પણ બાળકને જન્મ ન આપ્યો હોય એવી સ્ત્રીનું હૃદય પણ માતૃત્વથી છલકાતું હોય છે.

માતૃત્વનો સંબંધ માત્ર શરીર સાથે નથી. એ અંતરમાંથી પ્રગટતી ભાવના છે. માતૃત્વના વાત્સલ્યનો વ્યાપ એટલો મોટો કરી શકાય કે, આખા જગત પ્રત્યે પ્રેમ આત્મીયતાનો ભાવ ઉભરાવા લાગે.

વિદ્યા વેચાય નહિ

આપણો સમાજ આજે અર્થપ્રધાન બની ગયો છે. જેમની પાસે પૈસો છે, તેમની બધા પૂજા કરે છે અને આરતી પણ ઉતારે છે. જાહેર અને ધાર્મિક સમારંભોમાં પણ અધ્યક્ષનું સ્થાન શોભાવવા માટે શ્રીમંતોને જ આમંત્રણ આપવામાં આવે છે. શ્રીમંત અને સત્તાધીશ હોય તેમની આજુબાજુ ચમચાઓનો ઘેરાવો હોય છે અને લોકો તેમને હારતોરા કરવા આતુર હોય છે. 'ધર્મબિંદુ' ગ્રંથમાં હરિભદ્રસૂરિજી મહારાજ ફરમાવે છે કે, 'સદ્‌ગૃહસ્થે સંયમમાં રહેલાની અને જ્ઞાનવૃદ્ધોની સેવા કરવી જોઈએ.'

આ વિધાનમાં 'જ્ઞાનવૃદ્ધ'નો અર્થ સમજવાની જરૂર છે. ઉંમરથી જે વૃદ્ધ હોય તેની તો સેવા કરવી જ જોઈએ; પણ જ્ઞાનથી વૃદ્ધ હોય તેની પણ વિશેષ સેવા કરવી જોઈએ. જ્ઞાનને ઉંમરનાં બંધનો નડતાં નથી. આઠ વર્ષનું બાળક પણ વેદના પાઠ ભણી શકે છે અને મોટા પંડિતોને ભણાવી શકે છે. તેની સેવા કરનારને પણ જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ થાય છે.

આર્ય સંસ્કૃતિમાં કદી વિદ્યા અને રાંધેલું અનાજ વેચવામાં આવતું નહોતું. રાજાની સ્વદેશમાં પૂજા થતી હતી, પણ વિદ્વાનની દુનિયાભરમાં પૂજા થતી હતી. જેમની પાસે વિદ્યા હોય તેમને રાજદરબારમાં આદર મળતો હતો અને શ્રીમંતો પણ વિદ્યાવાનને માનપાન આપતા હતા ગુરુ પોતાના શિષ્યને હંમેશા કોઈપણ જાતના આર્થિક વળતરની અપેક્ષા વગર જ વિદ્યાદાન કરતા હતા. તેની સામે આપણો સમાજ ગુરુને દેવ ગણીને તેમની પૂજા કરતો હતો, વિદ્વાનોના જીવનનિર્વાહની તમામ જવાબદારી રાજાઓ અને શ્રેષ્ઠિઓ

સંભાળી લેતા હતા. તેને કારણે વિદ્વાને પોતાની વિદ્યા વેચવી પડતી નહીં. આજે આપણી શિક્ષણ સંસ્થાઓની જે દુર્દશા થઈ છે, તેના મૂળમાં વિદ્યાને વેચવાની પ્રવૃત્તિ છે. આજે ખાનગી મેડિકલ અને ઈજનેરી કૉલેજોમાં બેઠકોની રીતસર હરાજી કરવામાં આવે છે. તેને કારણે જેમની પાસે રૂપિયા હોય તેઓ જ પોતાની મનગમતી લાઈનમાં જઈ શકે છે. શિક્ષકોને પણ આજે સ્કૂલમાં ભણાવવા કરતાં ટ્યૂશનમાં વધુ રસ પડે છે. કારણ કે તેમાં તગડી કમાણી છે. શ્રીમંતોના નબીરાઓ હવે એવું માનવા લાગ્યા છે કે તેઓ શિક્ષકને રૂપિયા ચૂકવે છે, માટે શિક્ષક તેમના પગારદાર નોકર છે. આ કારણે તેમની અંદર શિક્ષક માટે કોઈ આદર રહ્યો નથી. વિદ્યાર્થીઓમાં વિનય નથી એટલે તેમને વિદ્યા ચડતી નથી.

આજકાલના વિદ્યાર્થીઓ જ્ઞાનવૃદ્ધોની પૂજા નથી કરતાં, કારણ કે જેમની પાસે જ્ઞાન છે, તેઓ જ્ઞાન વેચે છે. જૂના જમાનામાં જ્ઞાની બ્રાહ્મણો સમાજનો ત્યાગ કરીને જંગલમાં કુટિર બાંધીને રહેતા હતા. તેમની પાસે ગરીબોના, શ્રીમંતોના અને રાજાના નબીરાઓ પણ ભણવા માટે આવતા હતા. તપોવનના ગુરુ બધાને મફતમાં વિદ્યાનું દાન કરતાં. કોઈની પાસે તેઓ ધનની અપેક્ષા રાખતા નહીં. આ કારણે વિદ્યાર્થીઓમાં તેમના પ્રત્યેનો પૂજ્યભાવ અકબંધ રહેતો હતો. વળી તપોવનમાં ગરીબ બાળકો અને શ્રીમંત બાળકો વચ્ચે કોઈ ભેદભાવ રાખવામાં નહોતો આવતો. સંદિપની ઋષિના આશ્રમમાં જે વ્યવહાર શ્રીકૃષ્ણ સાથે કરવામાં આવતો તે જ સુદામા સાથે કરવામાં આવતો હતો. પ્રાચીન પદ્ધતિના તપોવનોમાં પૈસાની બોલબાલા નહોતી, એટલે, શુદ્ધ સમાજવાદ પ્રવર્તમાન હતો.

તપોવનની શિક્ષણ પદ્ધતિમાં કોઈ વિદ્યાર્થી પાસેથી ફી લેવામાં નહોતી આવતી. શિક્ષણ તદ્દન મફત હતું. જેને કારણે સમાજના તમામ વર્ગોના વિદ્યાર્થીઓ શિક્ષણનો લાભ ઉઠાવી શકતા હતા. ત્યારના ગુરુઓ પણ નિઃસ્પૃહી હતા. તેઓ ધનના લોભી નહોતા. પોતાના પરિવારનો જીવનનિર્વાહ

થઈ શકે એટલું ધન મળી જાય એટલે તેઓ સંતોષ માનતા હતા. આટલું ધન તેમને સાહજિક રીતે રાજા તરફથી કે શ્રીમંત વિદ્યાર્થીઓના માતા-પિતા તરફથી વગર માંગ્યે સ્વમાનપૂર્વક મળી રહેતું હતું. તપોવનમાં ગુરુદક્ષિણા પણ મરજીયાત હતી. જેની જેવી શક્તિ એવી ગુરુદક્ષિણા વિદ્યાર્થીઓ આપતા હતા. ગુરુ માટે બધા વિદ્યાર્થીઓ સરખા રહેતા હતા.

આજે જેમની પાસે વિશેષ જ્ઞાન છે, તેઓ વધુ લોભી બની રહ્યા છે. આ પશ્ચિમી સંસ્કૃતિની અસર છે. વિદેશોમાં શિક્ષકો, પ્રોફેસરો, કન્સલ્ટન્ટો, લેખકો, પત્રકારો, સ્કોલરો, સંશોધકો, નિષ્ણાતો, વકીલો વગેરે પોતાના જ્ઞાનની કિંમત વસૂલ કરે છે. આ ચેપ ભારતમાં પણ લાગુ પડ્યો છે. હકીકતમાં આ બધા પોતાની વિદ્યાને વેચી રહ્યા છે. અનાજ અને કરિયાણાનો વેપારી પોતાની ચીજવસ્તુઓ વેચે છે તેમ વિદ્યા વેચવાની ચીજ નથી. જે દિવસથી ગુરુઓ પોતાની વિદ્યા વેચવા લાગ્યા છે તે દિવસથી તેમનો આદર ઘટી ગયો છે. જૈન સાધુઓ અને સંતો વર્ષો સુધી તપ અને જપ સાથે જ્ઞાનની સાધના કરે છે અને પ્રવચનોના માધ્યમથી આ જ્ઞાનની પ્રજાને લહાણી કરે છે. રામાયણના કેટલાક કથાકારો ફી નથી રાખતા પણ કથામાં જે દાન પ્રાપ્ત થાય તે પોતાની સંસ્થામાં લઈ જવાની શરત રાખે છે, જેને કારણે લોકોને તેમના માટે અભાવ થઈ જાય છે.

જ્ઞાનીઓએ જેમ સમાજ પાસેથી ધનની અપેક્ષા રાખવી જોઈએ નહીં, તેમ સમાજે પણ જ્ઞાનીઓના જીવનનિર્વાહની જવાબદારી સહર્ષ ઉપાડી લેવી જોઈએ. આપણા સમાજમાં વિદ્યાગુરુ, જ્યોતિષ, વૈદ, બ્રાહ્મણ, પુરોહિત વગેરે નિઃસ્વાર્થ ભાવે સમાજની સેવા કરતા હતા, જેને કારણે સમાજમાં તેમનું આદરણીય સ્થાન હતું. તેઓ પોતાની કોઈ પણ સેવાની સામે ધનની અપેક્ષા રાખતા નહોતા. તેની સામે સમાજના લોકો તેમની બધી જ જીવન જરૂરિયાત પૂરી કરતા હતા. જ્ઞાનવૃદ્ધો નિઃસ્પૃહી હતા, માટે લોકો તેમની પૂજા કરતા હતા. આજે તેઓ પણ ધનના લોભી બની ગયા હોવાથી લોકોની પૂજાને લાયક પણ

રહ્યા નથી.

આ જગતનો નિયમ છે કે મનુષ્ય પોતે જેવા બનવાની ભાવના સેવે તેવો થાય છે. જેઓ સજ્જન બનવાની ભાવના સેવે તેઓ સજ્જન થાય છે અને જેમને ખોટા ધંધા કરવા હોય તેઓ દુર્જન થાય છે. આપણે જેમની સેવા કરીએ છીએ તેમના જેવા થઈએ છીએ. જેઓ સદાય ઈશ્વરની ભક્તિ કરે છે તેઓ એક વખત ઈશ્વરનું સ્વરૂપ પ્રાપ્ત કરે છે. જેઓ સંતોની સેવા કરે છે, તેઓ સજ્જન બને છે. જેઓ દુરાચારી શ્રીમંતોની ચમચાગીરી કરે છે, તેઓ શ્રીમંત નથી બનતા પણ દુરાચારી જરૂર બની જાય છે. આજના કાળમાં બધાને સફળ થવાનો ચસકો લાગ્યો છે, પણ સારા કોઈને થવું નથી, આજના સમાજમાં ચારિત્ર્ય કરતાં ધનને વધુ મહત્ત્વ આપવામાં આવે છે. જેમની પાસે જ્ઞાન અને ચારિત્ર્ય છે તેઓ જો ધનવાન ન હોય તે તેમનો કોઈ ભાવ પણ પૂછતું નથી. આજના સમાજની આ મોટી કરૂણતા છે.

જે સમાજમાં જેની પૂજા કરવામાં આવે તેને પ્રોત્સાહન મળે છે અને તેની સંખ્યા અને શક્તિ પણ વધે છે. આજના સમાજમાં બેઈમાન રાજકારણીઓની અને અનીતિમાન શ્રીમંતોની પૂજા કરવામાં આવે છે, માટે તેમની શક્તિ વધી રહી છે. એક સમયે રાજાના દરબારમાં કવિઓ, વિદ્વાનો, સંગીતકારો, જ્યોતિષિઓ, રાજવૈદો વગેરેને આદર અપાતો હતો; માટે તેમની શક્તિ વધુ હતી. ચાણક્ય તદ્દન અકિંચન હતો તો પણ મગધનો રાજા ચન્દ્રગુપ્ત તેની આજ્ઞામાં રહેતો હતો. આજના નેતાઓ વિદ્વાનોને પોતાના પગની જૂતી સમજે છે, કારણ કે વિદ્વાનો લોભી થઈ ગયા હોવાથી તેમને રૂપિયા આપીને ખરીદી શકાય છે.

આ દુનિયાની કોઈ કીમતીમાં કીમતી ચીજ હોય તો તે ચારિત્ર્ય છે. જ્યારે ચારિત્ર્યનો નાશ થાય છે ત્યારે કાંઈ બચતું નથી, અને જો ચારિત્ર્ય સાબૂત હોય તો બાકીની ચીજો વગર પણ માણસ સુખી બની શકે છે. આ વાતમાં લોકોનો વિશ્વાસ આજે ડગમગી ગયો છે. માટે જ લોકો ચારિત્ર્યવાનોની

અને જ્ઞાનિયોની પૂજા કરવાને બદલે રાજકારણીઓની અને ધનવાનોની પૂજા કરવા દોડે છે. જે દિવસે આપણા સમાજમાં ધન કરતાં જ્ઞાનની અને સત્તા કરતાં સદાચારની કિંમત વધશે ત્યારે જ આપણા સમાજનો ઉદ્ધાર થશે.

જેલવાસ પુત્રનો પિતાને સણસણતો પત્ર

પ્રત્યેક મા-બાપને આ વાંચવું ફરજિયાત છે. એક પુત્રનો જેલમાંથી લખાયેલો આ પત્ર છે. ઠેકાણું : જેલ.

પરમપૂજ્ય માતા-પિતાશ્રીને,

મારા હિતૈષી, મારા જીવનના ઘડવૈયા, આપના પાવન ચરણે આપના કમભાગી કુપુત્રના નમસ્કાર. હું જ્યારે જન્મ્યો ત્યારે નિર્દોષ હતો, ચાલતો થયો ત્યાં સુધી સારો, પવિત્ર હતો. 'પાપ' શું ચીજ છે, તેની મને ખબર સુદ્ધાં ન હતી. અપરાધ કોને કહેવો તેનું જ્ઞાન પણ ન હતું. તમો મને મોટો થવા દીધો એ આજે તમારો દિકરો જેલમાં છે.

મારે જેલમાં કેમ આવવું પડ્યું ? હું તો સજ્જન હતો, તો આટલો દુષ્ટ કેમ થયો ? તેનાં કેટલાંક કારણો મારા માથામાં ઘુમરાયા કરે છે. મને અહીં સુધી પહોંચાડનાર કોણ છે ? હે પૂજ્ય માતા-પિતા અલબત્ત, માફ કરજો, આપની સામે મારી ફરિયાદ નથી, પણ ઊભરાતો આક્રોશ હવે અંદર સમાવી શકતો નથી, એટલે પત્ર દ્વારા તમારા ઉપર પાઠવી રહ્યો છું. તમે જરા જવાબ આપવા કૃપા કરજો.

હું બાળક બની તમારે ત્યાં આવ્યો. સંપૂર્ણતયા તમારો આશ્રિત હતો. તમારી જ આંગળી પકડીને ચાલતો હતો. મારા યોગ અને ક્ષેમ તમારે જ હવાલે હતા. મારું આખુંય ભવિષ્ય આપના ભરોસે હતું. તો પછી મને જવાબ આપશો કે, મારા પવિત્ર મનમાં દુષ્ટ ભાવોને ધરબી દેનાર ટી.વી., સિનેમા અને ફિલ્મો

જોવાની સગવડ કોણે કરી આપી ? તમે કહેશો કે, બેટા ! તું જુવે એમાં અમે શું કરીએ ? તો શું આ બરાબર છે ? ફિલ્મોથી તમારા બાળકનું ભવિષ્ય કેવું થશે, તે શું આપને ખબર જ ન હતી ? આપે મારો રસ્તો કેમ ન રોક્યો ? તમે જ તો મને મોબાઈલ અપાવેલો. તમે જ તો મને હીરો હોન્ડા પણ અપાવેલું. મોબાઈલ અને હીરો હોન્ડા દ્વારા તમારો પુત્ર શું કરશે, તેની શું તમને ખબર ન હતી ? ઘરમાં જ ટી.વી. ચેનલો લાવી આપી દુનિયાની જાણકારી આપે જ કરાવેલી અને સિગારેટ પીતાં તો આપને જોઈને જ શીખ્યો છું. આપના જ ખિસ્સામાંથી પડીકી ચોરીને ખાતાં પણ શીખ્યો છું !

તમારા વ્હાલસોયા આ દિકરાને હોટલોમાં લઈ જઈ ઈંડાના રસવાળી બોર્નવીટા અને રેસ્ટોરન્ટના ચસકા કોણે કરાવ્યા ? આર્ય સંસ્કૃતિના ભુક્કા બોલાવતી, સર્વનાશ કરતી એવી સ્કૂલોમાં લાખો રૂપિયાના ડોનેશન આપી હરખાતા હરખાતા મને કોણ મૂકવા આવેલું ? આનો જવાબ હું કોની પાસેથી મેળવું ? કોને પૂછું ? ખરાબ મિત્રો સાથે રાતના મોડા સુધી ભટકતા મને આપે કેમ રોક્યો નહિ ! બીયર બારમાં જતા તમારો દિકરો બગડી જશે, ગુંડાઓના ટોળામાં ભળી ગુંડો બની જશે, એવો ડર શું તમને ન લાગ્યો ? એ વખતે શું તમે ગાઢ નિદ્રામાં હતા ? આ બધું હું કોને પૂછું ?

હું તો એ વખતે અણસમજુ હતો. જવાબદારી શું તમારી ન હતી ? તમોએ મને વ્યસન-ફેશન અને વિલાસો જીવન તરફ ધકેલાતો કેમ ન અટકાવ્યો. તે વખતે તો હું આપનો જ આશ્રિત હતો. બતાવો તે વખતે મેં આપની વાતને ક્યારે ઉડાવી હતી ? શું તમારી આજ્ઞા ક્યારેય મેં નકારી હતી ?

તમારાથી જુદો પડ્યાને આજ ત્રણ ત્રણ વર્ષ થયા. જુગાર રમતો થયો, રૂપ રમણીયો જોડે રંગરેલિયા મનાવતો થયો, રોજ પૈસાની જરૂર પડવા લાગી, એટલે મારા એ આનંદ ખાતર મિત્રોની સાથે દાણચોરીનો ધંધો ચાલુ કર્યો અને એક વર્ષ પૂર્વે રેડ હેન્ડેડ પકડાઈ ગયો. કુમિત્રની સોબતે ચડી જઈ મેં મારું સર્વસ્વ ગુમાવી દીધું છે. તમે તો ખાનદાન છો, હું તો સંપૂર્ણ ગુંડો બની ચૂક્યો છું. જેલના સળિયા પાછળ ડૂબી રહેલા મારા ભવિષ્યના સૂરજને

ભયભીત નજરે જોઈ રહ્યો છું.

મને અત્યંત અફસોસ થાય છે. વીતી ચૂકેલા ભૂતકાળ ઉપર સખત નફરત થાય છે. સાથે તમને આવી કઠોર ભાષામાં અવિનીત બની ઠપકારવાનુ મન થાય છે. માફ કરજો પૂજ્યો ! કાશ ! ઊગતા જ છોડને સાચી દિશામાં વાળીને વધવા દીધો હોત તો કદાચ છોડ વૃક્ષ બની ગયો હોત. સજ્જનોના પરિચય કરાવ્યા હોત તો ગુંડાઓના ટોળામાં ભળી જવાનો વારો ન આવ્યો હોત, પરંતુ આપ પણ શું કરી શકવાના ? આપને તમારા આ બાળકને પૂછવાનો કે વાત્સલ્ય આપવાનો, પ્રેમથી બે વાતો કરવાનો ટાઈમ જ કયાં હતો? ટી.વી. માં સેક્સી અને હોરર ફિલ્મો જોતાં મને આપે કયારેય વાર્યો નથી. ટી.વીમાં ઢીશ્યુમ જોઈ ઘરમાં તોફાન કરી કાચનો સૌથી મોંઘો ફલાવરવાઝ તોડી નાંખેલો, ત્યારે પણ મારા આ તોફાનને તમે કયારેય અટકાવ્યું નહિ. એ ફલાવરવાઝ તો આપ બીજા જ દિવસે નવો લઈ આવેલા પણ તૂટી ગયેલી મારી આ જિંદગી હવે હું ક્યાંથી પાછી લાવીશ ? હોટલોના બદલે મને કયારેય આંગળી પકડી શિક્ષણ શિબિરના માંડવે લઈ ગયા હોત, તો તમારી સાત પેઢીની ખાનદાનીની અંતિમ યાત્રા મારા હાથે જ કાઢવાનો વારો ન આવ્યો હોત.

હું આપને ખૂબ જ વ્હાલો હતો ને ! એટલે જ મને ફટકાવ્યો હતો. અભક્ષ્ય ભોજનો, ઉદ્ભટ વેશ પરિધાન અને છેલબટાઉ મિત્રોને તમે જ આવકાર્યા હતા ને ? બોલો કેમ ચૂપ છો ? મારો આપને ખુલ્લો આક્ષેપ છે. હું જે હતો તે આપના થકી નથી ? તમો મને બચપણથી જ સદાચારનું પ્લેટફોર્મ આપ્યું હોત, કુલાચારોને બળજબરીથી પણ પળાવ્યા હોત, મોજ-શોખને મર્યાદાના બંધને બાંધ્યા હોત, તો આજે મારે જેલના સળિયાને કદાચ ગણવા પડતા ન હોત. તમે રાગવશ અને અજ્ઞાનતાવશ મને મોર્ડન બનાવવા ગયા અને હું મારામાંથી માણસાઈ જ ખોઈ બેઠો.

હવે પાછો હું માણસ બની શકું એવું મારી આસપાસ કોઈ વાતાવરણ રહ્યું નથી. વીતેલા સમયને આંસુઓના સિંચનથી ભીનો કરી રહ્યો છું. મારું

ચાલે તો દુનિયાને ઢોલ વગાડીને કહી દઉં કે, માતા-પિતાઓ ! તમારા બાળકની આવી વલે થવા ન દેશો ! એને પ્રેમની સાથે શિક્ષા પણ આપજો ! એને મોબાઈલની સાથે તમારી થોડીક હુંફ પણ આપજો ! જન્મ આપીને તમારા બાળકોને ભાગ્ય ભરોસે છોડશો નહિં ! નાસ્તિક શિક્ષકો અને માત્ર જમાનાવાદી પ્રોફેસરોના હવાલે કરશો નહિં ! ઘરમાં ભણતરની સાથે થોડુંક ગણતર પણ આપજો. મોટા સંત કે સજ્જન થવા જન્મેલા બાળકને તેને યોગ્ય વાતાવરણ પૂરું પાડવા કૃપા કરજો !

મને ખબર છે, આપ મારા વિયોગમાં રડી રહ્યા હશો. હું પણ રડી રહ્યો છું. થાય છે કે આપને વધારે દુઃખી કરવાને બદલે મારું જીવન જ ટુંકાવી દઉં, તો કમસે કમ થોડીક ઈજ્જત બચી જશે. તેમજ આપને મને જોઈને દુઃખી ન થવું પડે અને મારે હવે વધારે પાપ કરી દુષ્ટ ન થવું પડે. બાળકની ભૂલોને માફ કરશો. હવે આપને કયારેય નહિ મળી શકું. કયારેય હવે ફરિયાદ નહિ કરું, કયારેય... નહિ...

તમારો લાડલો પુત્ર

(જેલ નિવાસી)

● જૈનોની સંખ્યાનું વર્ણન–

ખારવેલના સમયમાં ૪૦ ક્રોડ, કુમારપાલના સમયમાં ૧૨ ક્રોડ, અકબરના સમયમાં ૧ ક્રોડ, ૧૮૮૧માં ૧૫ લાખ,

૧૯૨૧માં ૧૧,૭૮,૧૯૬ની સંખ્યા હતી. અને હિન્દુસ્થાનની જન સંખ્યા ૧૮૮૧માં ૨૫ ક્રોડ અને ૧૯૨૧માં ૩૨ ક્રોડ.

આમાં જૈનોની સંખ્યા ઘટી જ છે.

વર્તમાન પરીક્ષા પદ્ધતિના અનિષ્ટો

- શ્રી એ. આઈ. લાલીવાલા

વર્તમાન કેળવણી દ્વારા નવો વર્ગ કેળવાઈને તૈયાર થઈ શકતો નથી, એમ આપણે જોઈ શકીએ છીએ. ચાલુ શિક્ષણપ્રણાલીમાં પરીક્ષાની વર્તમાન પદ્ધતિએ અનેક અનિષ્ટોને જન્માવ્યા છે. તેણે વિદ્યાર્થીઓનાં જીવનની અનેક શક્તિઓને રૂંધી, કેવળ પરીક્ષા પાસ કરવા માટે જ કેળવણી છે, એવું વાતાવરણ સરજ્યું છે. તદુપરાંત; વિદ્યાર્થીઓની બુદ્ધિ, પ્રતિભા વગેરેને અનેક રીતે રોક્યા છે. આજની પરીક્ષા પદ્ધતિમાં અનિષ્ટ પરિણામોની આ લેખમાં ચર્ચા કરવામાં આવી છે.

હમણાં હમણાંનો કેળવણીના માધ્યમનો પ્રશ્ન ઠીક-ઠીક ચર્ચાવા લાગ્યો છે. અત્યાર સુધી વિદ્યાર્થી અને વિદ્યાર્થી જીવનની ઘણી વાતોની ઘણા પ્રશ્નોની ચર્ચા થઈ ગઈ છે, પરંતુ કેળવણી અને વિદ્યાર્થી જીવન સાથે જે પ્રશ્ન ગાઢ સંબંધ ધરાવે છે, તે પ્રશ્ન ઉપર કોઈએ ખાસ ધ્યાન આપ્યું હોય એમ લાગતું નથી. એ પ્રશ્ન છે આધુનિક પરીક્ષા પદ્ધતિ. આ પ્રશ્ન એટલો મહત્ત્વનો છે કે, તેના પ્રત્યે જે દુર્લક્ષ્ય સેવવામાં આવે છે તેથી આપણને આશ્ચર્ય થાય છે. હાલનું આખું વિદ્યાર્થી જીવન પરીક્ષાની આસપાસ આંટા-ફેરા ફરે છે એ ખાસ ધ્યાન ખેંચે એવી બાબત છે.

સ્કૂલ કે કૉલેજમાં કેળવણીનું પવિત્ર વાતાવરણ પ્રવર્તે છે કે કેમ એ શંકાસ્પદ છે. કેળવણીનું પવિત્ર વાતાવરણ પરીક્ષાના ભયથી કલુષિત બની ગયું છે. હાલની પરીક્ષા પદ્ધતિ જ એવી છે કે, દરેક વિદ્યાર્થી દરેક વિષયનો પરીક્ષાની દૃષ્ટિએ જ અભ્યાસ કરે છે. પરીક્ષામાં પાસ થવાનો આધાર બુદ્ધિ કરતાં યાદશક્તિ ઉપર વિશેષ રહેલો છે. બુદ્ધિ અને યાદશક્તિ બન્ને માનસિક ક્રિયાઓ (Mentel Processes) છે. પણ યાદશક્તિ Passive છે. જ્યારે બુદ્ધિ Active છે. બુદ્ધિને એક ફેકટરી સાથે સરખાવી શકાય કે જે કાચો માલ મેળવી કંઈક નવું જ ઉત્પન્ન કરે છે, જ્યારે યાદશક્તિને એક

ગોડાઉન સાથે સરખાવી શકાય કે જે માલનો ફક્ત સંગ્રહ જ કરે છે.

Intelligence may be compared with a workshop which produces somothing new and original while memory is just like a warehouse which merely stores goods.

બુદ્ધિ એટલે કંઈક નવું ઉત્પન્ન કરવાની શક્તિ, અને કારણ (Cause) અને અસર (Effect) વચ્ચેના સંબંધને સમજવાની શક્તિ. યાદશક્તિ તેજ કહી શકાય કે જે બુદ્ધિપૂર્વક મેળવેલ જ્ઞાનનો સંગ્રહ કરે. અને જે બુદ્ધિપૂર્વક મગજમાં ઠસેલું હોય છે તે જલ્દીથી ભૂલાતું નથી. યાદશક્તિને આધાર બુદ્ધિ ઉપર મોટે ભાગે રહેલો છે, હવે પરીક્ષા માટે જે યાદશક્તિની જરૂર પડે છે, તે બુદ્ધિ ઉપર રચાયેલી હોતી નથી. પરીક્ષાના હેતુથી જે જ્ઞાન મેળવાયેલું હોય છે તે બુદ્ધિપૂર્વક મેળવાયેલું હોતું નથી. આથી જ પરીક્ષા પછી વિદ્યાર્થીઓ મોટા ભાગનું ભૂલી જાય છે.

સ્કૂલ અગર કૉલેજમાં બુદ્ધિશાળી અને ફર્સ્ટકલાસ ગણાતા કેટલાક વિદ્યાર્થીઓ જીવનમાં સામાન્ય રીતે નિષ્ફળ નીવડે છે. એનું કારણ ? એક કારણ એ આપી શકાય કે હાલની કેળવણી પદ્ધતિ વિદ્યાર્થીઓને જીવન જીવતાં નથી શિખડાવતી. બીજું કારણ એ આપી શકાય કે તે વિદ્યાર્થી પોતાની યાદશક્તિના જોરે જ બુદ્ધિશાળી ગણાતો હોય છે. પણ જીવનમાં યાદશક્તિ કરતાં બુદ્ધિની વધારે જરૂર પડે છે.

પરીક્ષામાં પાસ થવાં અને સારા માર્કસ મેળવવા માટે બુદ્ધિના ભોગે યાદશક્તિનો વિકાસ કરવો પડે છે. જે વિદ્યાર્થીઓ પોતાની બુદ્ધિને રૂંધીને યાદશક્તિનો વિકાસ કરવામાં સફળ નીવડે છે, તેઓ ફાવી જાય છે અને બીજા લટકતા રહી જાય છે ! બુદ્ધિને રૂંધી યાદશક્તિનો વિકાસ કરવો એ ખરેખરા બુદ્ધિશાળી વિદ્યાર્થીઓના સ્વભાવ વિરુદ્ધ હોઈ તેઓ આ પ્રકારની પરિસ્થિતિને તાબે થવાની ચોકખી ના પાડે છે અને તેમને જ વધુ સહન કરવું પડે છે. હાલની પરીક્ષા પદ્ધતિ જ એવી છે કે ગોખણપટ્ટી એ પાસ થવાનો અને

સારા માર્કસ મેળવવાને બાદશાહી રસ્તો (Royal Road) બની ગઈ છે. જે વિદ્યાર્થી કેવળ ગોખણપટ્ટીથી જ પાસ થાય છે અને સારા માર્કસ મેળવે છે તેની સમાજ વાહ વાહ પોકારે છે અને ખરેખર બુદ્ધિશાળી વિદ્યાર્થી તો આ લાભથી વંચિત જ રહી જાય છે. આમ, જે માન મેળવવાને ખાસ લાયક ન ગણી શકાય તેને સમાજ માન આપે છે અને જે માન મેળવવાને ખરો હકદાર છે તેને કોઈ પૂછતું જ નથી ! આથી બુદ્ધિશાળી વિદ્યાર્થીઓને સમાજ તરફથી કોઈ પ્રેરણા મળતી નથી. પોતાની બુદ્ધિના લીધે જ બુદ્ધિશાળી વિદ્યાર્થીને સહન કરવું પડતું હોઈ તે નિરાશ બની જઈને આખરે ગોખણપટ્ટીનો આશરો શોધે છે. પાસ થવાનું અને સારા માર્કસ મેળવવાનું ગોખણપટ્ટીએ મોટામાં મોટું સાધન છે. એ હકિકતનો કમને પણ સ્વીકાર કરવાની અને ગોખણપટ્ટી કરવાની બુદ્ધિશાળી વર્ગને ફરજ પડે છે. એ સિવાય બીજો રસ્તો જ નથી. આમ, ગોખણપટ્ટીના ભાર નીચે બુદ્ધિ દબાઈ જાય છે.

પરીક્ષા એ કેળવણીનું ફક્ત એક સાધન જ (Means) હોઈ શકે. ધ્યેય નહિ. આધુનિક પરીક્ષા પદ્ધતિ જ એવી છે કે વિદ્યાર્થી પરીક્ષાને ધ્યેય (End) માનતો થઈ જાય છે. આમ, સાધન (Means), ધ્યેય (End) બની જાય છે. પરીક્ષાને લીધે જ વિદ્યાર્થીઓ છેલ્લા દિવસમાં અભ્યાસ કરતા હોય છે. વર્ષની શરૂઆતથી બહુ થોડા વિદ્યાથીઓનું અભ્યાસમાં ધ્યાન હોય છે. આમાં મોટા ભાગનો દોષ પરીક્ષા પદ્ધતિનો જ છે. વિદ્યાર્થીનો નહિ. આખા વર્ષ દરમિયાન અભ્યાસ અને કેળવણીમાં વિદ્યાર્થીનું ધ્યાન ચોંટાડી રાખે એવું કોઈ જ તત્ત્વ હાલની પરીક્ષા પદ્ધતિમાં નથી. વિદ્યાર્થી ધ્યાનથી અભ્યાસ કરે એ જ પરીક્ષાનો મૂળ હેતુ હતો. પરંતુ એથી ઊંધું જ પરિણામ આવ્યું છે. જેથી વિદ્યાર્થી શરૂઆતના દિવસોમાં સહેલાઈથી અભ્યાસ પ્રત્યે દુર્લક્ષ્ય કરી શકે છે. પરીક્ષાના છેલ્લા દિવસોમાં જે અભ્યાસ થાય છે તેને અભ્યાસ કે જ્ઞાનનું નામ જ ન આપી શકાય. એ કેવળ પરીક્ષાની જ તૈયારી હોય છે. કેળવણીના જે જે હેતુઓ હોઈ શકે તે હેતુઓને પરીક્ષા જ નિષ્ફળ બનાવે છે. પરીક્ષા વિદ્યાર્થીઓનો મોટો દુશ્મન છે એટલું જ નહિ પણ તે કેળવણીના હેતુઓના

મૂળમાં જ ઘા કરે છે.

પરીક્ષાના ભય હેઠળ શિક્ષણ આપવાનો આખરે હેતુ શો છે ? ભય પેદા કર્યા વગર શું શિક્ષણ નથી આપી શકાતું ? નાનાં બાળકોને તેમનાં મા-બાપ જેમ ધમકીઓ આપીને અને ભયજનક વાતો કરીને કાબૂમાં રાખે છે તેવી જ રીતે આપણા કેળવણીકારો પરીક્ષાના ભય દ્વારા વિદ્યાર્થીઓને શિક્ષણ આપવાનો પ્રયત્ન કરી રહ્યા હોય એમ લાગે છે. પરંતુ એટલું યાદ રાખવું ઘટે કે વિદ્યાર્થીઓ કંઈ નાનાં બાળકો નથી કે તેઓ ભય હેઠળ જ શિક્ષણ અને જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરી શકે. વિદ્યાર્થીમાં નિર્ભયતા ખીલવવી અને કેળવવી એ શિક્ષણનો એક હેતુ હોવો જોઈએ, અના બદલે પરીક્ષા દ્વારા ભયજનક વાતાવરણ ખડું કરવામાં આવે છે એ શોચનીય છે. ભયના શિક્ષણથી નિર્ભયતા મેળવી કે કેળવી શકાય નહિ.

પરીક્ષાના દિવસોમાં વિદ્યાર્થીઓ કેવા ભયગ્રસ્ત અને ચિંતાગ્રસ્ત હોય છે અને ભય તથા ચિંતાની વિદ્યાર્થીના માનસ ઉપર કેવી અસર પડે છે, તેની તપાસ કરવા માનસશાસ્ત્રીઓની કમિટી નીમવી જોઈએ. ભય અને ચિંતા, માનસિક અને શારીરિક તંદુરસ્તી (Mental and Physical Health)ના કેવા ભયંકર શત્રુઓ છે તે માનસશાસ્ત્રી બરાબર જાણે છે. માનસશાસ્ત્રના અભ્યાસી કેળવણીકાર માટે આ પરિસ્થિતિ સમજવી કંઈ મુશ્કેલ નથી.

પોતે વિદ્યાર્થી હશે ત્યારે દરેક કેળવણીકારે પરીક્ષા દ્વારા થતાં નુકશાનો અનુભવ્યા હશે. છતાં જ્યારે પોતે કેળવણીના ક્ષેત્રમાં ફેરફાર કરી શકે એવા હોદ્દાએ પહોંચે છે ત્યારે તે કેમ ચૂપ બની જાય છે, એ મને સમજાતું નથી. વિદ્યાર્થીનું શિક્ષણ, તેના સુખ, શાંતિ અને પ્રગતિના મોટા શત્રુને દૂર કરવો એ શું કેળવણીકારોની ફરજ નથી ? વિદ્યાર્થીના ખરા દુઃખ પ્રત્યે આંખ આડા કાન કરવાથી આખરે ફાયદો શો ? -(વિશ્વ વિજ્ઞાન)

-કલ્યાણ-સપ્ટેમ્બર-૧૯૫૪

તમારા નહેરુના બનાવટી સમાજવાદ કરતાં ભગવાન મહાવીરનો સમાજવાદ લાખ ગણો બહેતર હતો...

અહિંસા, સત્ય, અચૌર્ય, બ્રહ્મચર્ય અને અપરિગ્રહ એટલે ધર્મ. આવા ધર્મને આચરે તે ધર્મી. આ ધર્મ જેનો સ્વભાવ બની ગયો હોય, જેના વાણી, વર્તન અને વિચારમાં આ પાંચેયની ઝલક જણાતી હોય તેવા સઘળા સહયાત્રી એ સમાન ધર્મી. આ જ શબ્દનું રૂપ જરા જુદી રીતે કરીએ તો શબ્દ બને સાધર્મિક. આવા સાધર્મિકના સુખ-દુઃખમાં સહભાગી બનવું, તેના માટે ઘસાઈ છુટવામાં જાતને સૌભાગી માનવી તે સાધર્મિક વાત્સલ્ય. આ પાંચેય વ્રતોનો સ્વીકાર અંશથી પણ જેના જીવનમાં ન હોય પણ દિલમાં જો તલસાટ એનો જ હોય તો તે પણ સાધર્મિકની વ્યાખ્યામાં હક્કનું સ્થાન ધરાવે છે. પાંચેય વ્રતોના દેશ (અંશ)થી પાલનનો પ્રશ્ન એને પૂછાય તો એની 'હા' હોવી એ જરૂરી નથી, પણ એની 'ના'માં પણ એક વ્યથા હોવી જોઈએ.

આવા સાધર્મિકને પણ રાહતનો, ભીખનો, મદદનો ટુકડો ફેંકી દેવાનો નથી. એ કોઈ લાચાર, અસહાય અસ્તિત્વ નથી, જેને ઉપકારના ભાર તળે ચગદી નાખવાનું હોય. સાધર્મિક વાત્સલ્ય નામના સામાસિક પદનું ઉત્તરપદ પણ એટલું જ અગત્યનું છે. વાત્સલ્ય સાધર્મિકનું જ હોય, તો સાધર્મિકનું પણ વાત્સલ્ય જ હોય, મદદ કે રાહત નહીં.

ગામ-પરગામ અને દેશ-પરદેશ વસતા, જુદી-જુદી ભાષા અને બોલીઓ બોલતા, ચિર-પરિચિત કે સાવ અજાણ્યા આવા સાધર્મિકનો સમૂહ એ જ સંઘ, નાના કે મોટા, ગરીબ કે તવંગર, ભણેલા કે અભણ સઘળાયે સાધર્મિકો એ તો સંઘપુરુષનાં અંગત પ્રત્યંગો છે. સંઘદેહના એક પણ અંગને નાની સરખી પણ પીડા હોય અને સમગ્ર શરીરને એનું સમસંવેદન ન થાય એ ત્રિકાળમાં ન બને. કાન દુઃખતો હોય અને આંખ રડ્યા વગર રહે એ બને ? જે અંગને બીજા અંગની પીડા ખટકે નહિ એને સમજવું કે પોતે ખોટું પડી

ગયેલું, જૂઠું પડી ગયેલું અંગ છે. તે શરીરમાં લટકતું હોય છે એટલુ જ, બાકી એને ને શરીરને કોઈ લેવા-દેવા હોતા નથી. માની વત્સલતાથી સમાનધર્મીની આંખના આંસુ લૂછવાં, સંયોગોએ એને ધર્મથી દૂર ફેંકી દીધો હોય તો તેના હૈયામાં ધર્મની પુનઃપ્રતિષ્ઠા કરવી એનું નામ સાધર્મિક વાત્સલ્ય અથવા તો સાધર્મિકભાઈની ભક્તિ. પર્યુષણના કર્તવ્યપંચકમાં અમારિપ્રવર્તન પછી સીધું આ સાધર્મિક ભક્તિનું સ્થાન છે. અમારિપ્રવર્તન એ દ્વેષની ગાંઠોને ફૂટતી અટકાવે છે તો સાધર્મિક વાત્સલ્ય એ નિર્વ્યાજ સ્નેહના અંકુરાનું ઉદ્‌ગમસ્થાન છે. વાઘ, વરૂ અને ચિત્તાની હિંસકતા દૂર કરવાનું કામ જો અમારિપ્રવર્તન કરે છે, તો પારકું ઝૂંટવી લેવાની અને ભૂખ્યા જાતભાઈની જોડાજોડ બેસી ભર્યુંભાણું આરોગવાની શ્વાનવૃત્તિનું નિવારણ સાધર્મિક વાત્સલ્યથી થાય છે.

જો કે એક જમાનામાં તો સૌ પોતપોતાના ગામમાં, બાપીકા ધંધાઓમાં સ્થિર હોવાથી બે ટંકના રોટલાનો, અંગ ઢાંકવા કપડાનો અને માથે છાપરાનો સવાલ સરળતાથી ઊકલી જતો. પરંતુ ઔદ્યોગિક ક્રાંતિએ ફૂંકેલાં યંત્રવાદના વાવાઝોડાએ સૌના બાપીકા ધંધાના બદ્ધમૂલ વડલાને ભોંય ભેગો કરી નાખ્યો. શરાફીના ધંધાથી સમગ્ર દેશના નાણાં વ્યવહારનું કેન્દ્રબિન્દુ બની અર્ધી રાતે પણ ગામના જરૂરતમંદની ભીડ ભાંગનાર શાહુકારની કેડ બેંકોના જાળા દ્વારા ભાંગી નાખવામાં આવી. આ દેશના અર્થકારણ, રાજકારણ, વિદ્યાકારણ અને ધર્મકારણ પર પકડ મેળવવામાં શાહુકારો, દેશી રાજાઓ, વિદ્વાન બ્રાહ્મણો અને ખાખી સંતો અંગ્રેજ રાજને મન મોટો અવરોધ હતા. રાજાઓને વેસ્ટમિન્સ્ટર મૉડેલની લોકશાહી દ્વારા, બ્રાહ્મણોને મેકાલેની એજ્યુકેશન સિસ્ટમ દ્વારા અને સંતોને ભોગવાદી સંસ્કૃતિના ડમ્પિંગ દ્વારા ફેંકી દેવાયા તો શાહુકારોના અર્થતંત્રને તોડી ફોડી નાખવા યંત્રવાદ ઉપરાંત બેંકોનો પંજો ઉગામ્યો. આ દેશના શાહુકારને મન હાથમાં લીધેલા પાણીની કિંમત લાખ રૂપિયાના સ્ટેમ્પ પેપર કરતાં વધુ હતી. એની ઉપરનો આ વિશ્વાસ તોડી તેને ઉખેડી નાખવાનું એટલું સહેલુ નહોતું, એટલે ગોબેલ્સનો તરીકો અપનાવ્યો. પાંચ-પંદર ટકા શાહુકારોની વ્યાજખાઉ અપ્રમાણિકતાને આગળ કરી આખી

શરાફીને વગોવી નાખવામાં આવી. કૂતરાને મારી નાખવા તેને હડકાયો જાહેર કરવો જરૂરી હતો. 'સત્તર પંચા પંચાણું'ના જૂઠ્ઠા પાઠ વહેતા મુકાયા. વિધવા ડોશીના ઘરેણા જબાનની સાખે સાચવનારા અને જરૂર પડયે અર્ધી રાતે પણ ગાંઠનાં નાણાં ધીરનાર શરાફોની સામે-પોતાના પૈસા ઉઠાવવા માટે પણ શનિવારની બપોરે મોડા પડ્યા હોઈએ તો સોમવારની સવારનો વાયદો આપનાર બેંકોને મજબૂત કરવા ઋણ રાહતધારાનો ઉપયોગ થયો. માથે દેવું હોય ત્યાં સુધી ભોજનમાં ચપટી ધૂળ નાખીને જમનાર દેશમાં દેવાળું એ કૂવો પૂરવાની નહીં, મજાકની વાત બની ગઈ. બધી રીતે સાણસામાં લેવાયેલો શાહુકાર ગામ છોડી જવા મજબૂર બન્યો. બાકીના જે અનાજ, કરિયાણા કે કાપડની નાની મોટી હાટડીઓના ધંધા હતા તેમને પૂરા કરવાનું કામ યંત્રવાદે કર્યું. ફેકટરીની સંસ્કૃતિએ અઢારે વરણના ધંધા ખતમ કર્યા હોવાથી માર્જિનલાઈઝ્ડ થયેલા મોચી, ધાંચી, વણકર, કુંભાર, સુથાર, લુહાર અને ખેડૂત ભાઈઓએ પણ વેપારમાં પ્રવેશવું પડયું. સીમિત વેપારમાં સ્પર્ધા અસીમિત થઈ જવાથી સાધર્મિકોને પોતાની દુકાનોને પણ તાળાં મારી દેવા પડ્યાં. મોટે ભાગે સાધર્મિકોના બે જ ધંધા હતા. શરાફી અને વેપાર. બેય ભાંગી જવાથી લાચાર થઈ ગામડું છોડવું પડયું. જેનામાં તેવડ હતી તેઓ શહેરોમાં આવી યંત્રવાદના ધંધાઓમાં માલેતુજાર થઈ ગયા અને શેષ બહુમતી. બે ટાંટીયા ભેગા કરવા ભાયંદરથી ચર્ચગેટ અને થાણાથી વિરારની ટ્રેનોમાં લટકતી થઈ ગઈ. પૈસે ટકે જેમ પૂરા થઈ જવાયું તેમ ગામડાં છોડવાથી ધર્મનું દેવાળું નીકળી ગયું. ગામડાનો મેલોઘેલો શેઠનો દિકરો પણ મુંબઈ આવી એમ ટી.વી. અને ઝી ટી.વી.ની ફિલ્મોમાં, ડિસ્કો દાંડિયાની ધમાલમાં અને ખાણીપીણીની મહેફિલમાં ધર્મને કયાંય વિસરી ગયો. ન્યાયનીતિને નેવે મૂકી ગમે તે રસ્તે કમાઈને ભોગવાય તેટલું ભોગવી લેવું તેનો ધર્મ બની ગયો.

સાધર્મિકોની આર્થિક અને ધાર્મિક બેહાલીનું આ છે તદ્દન ટૂકું પણ વાસ્તવિક ચિત્ર. સાધર્મિકોની અવદશા કરનાર છૂપો દુશ્મન જ્યાં સુધી પરખાય પણ નહિ ત્યાં સુધી ટીપ-ટપોરાં કે ફંડ-ફાળા દ્વારા સાધર્મિકના

ઉત્કર્ષનો સંતોષ માનવો. એ જાતને ઠગવા માટે ઠીક છે બાકી એનું કોઈ ઝાઝું મૂલ્ય નથી. સાધર્મિકોને ઝૂંપડપટ્ટીમાં ઠલનાર કો'ક બીજું જ હોય અને વાર-તહેવારે દેરાસરોને અને નવકારશીઓને, ઉજમણાં અને ઉપધાનોને, સંઘો અને અટ્ટાઈ ઓચ્છવોને ગાળો ભાંડવામાં આવે એમાં તો નજરે ચઢ્યો એને ફાંસીએ ચડાવી દેવાનો ન્યાય છે. પેટ દુઃખતું હોય તો પેટનો દુખાવો મટાડનારી દવા કરવી જોઈએ, માથું કૂટવાથી તો ઉપરથી માથાનો દુખાવો ઘર ઘાલી જાય અને પેટ પેટને ઠેકાણે રહે. મેલેરિયાની દવાથી ટાઈફોઈડ મટાડનારો કોઈ ડૉક્ટર હજી પૃથ્વીના પાટલે જન્મ્યો નથી. દુનિયાભરના તમામ દેરાસરોના દાગીના વેચી નાખો તથા ઉજમણાં, ઉપધાન, સંઘો અને અટ્ટાઈ-ઓચ્છવોને વીસ વર્ષની કેદની સજા ફટકારી દો તો પણ રોગના મૂળ કારણને દૂર કર્યા સિવાય સાધર્મિકની બેહાલી દૂર કરી શકાય એમ નથી. સાધર્મિકનું દુઃખ જોઈને આંખમાં આંસુ આવી જવા એ એક વાત છે અને તેનાં મૂળ કારણો જાણી તેને દૂર કરવાની દિશામાં લાંબાગાળાના પ્રયત્નો શરૂ કરવા એ બીજી વાત છે. જો આંસુ સારવાથી જ રોગ દૂર થઈ જતો હોય તો તો દુનિયાની તમામ હોસ્પિટલોમાં બહેનોને ડૉક્ટર બનાવી દેવામાં આવી હોત.

મારા ગુરુજી કે'તા કે એમના જમાનામાં મહિને પંદર રૂપિયાની વ્યાજની આવક ઉપર પણ વિધવા ડોશીઓ મજેથી જીવન પૂરું કરતી. કારણ, વર્ષમાં ચાર મહિના તો જમણવાર ચાલતો હોય. કોક'દિ લગનનું જમણ હોય તો કોક'દિ મરણનું. આજે સંઘ નવકારશી હોય તો કાલે નાતનો જમણવાર હોય. મોટા પ્રસંગે ઝાંપે ચૂંદડી કે ધુમાડાબંધ હોય. જુના ડીસા સંઘના ૮૦ વર્ષ જૂના ચોપડા હાથમાં આવ્યા ત્યારે ખબર પડી કે આજના જેવી પૈસાની છાકમછોળ એ જમાનામાં નહોતી. પણ દેરાસરની પ્રતિષ્ઠા વખતે ૨૧ દિવસ તો સવાર સાંજની નવકારશી થયેલ. એમાંયે વિધવા ડોશીઓ તો જમણવારમાં જમવા જાય નહિ એટલે તેમના માટે ઘરે ભાણું આવે. ભાણું મોકલનાર પાછો એવો ઉદાર હોય કે મીઠાઈ બીજા બે દા'ડા ચાલે એટલી મૂકે. હવે કહો, એ ડોશીઓનો રસોડા ખર્ચ કેટલો આવે ? ગરીબમાં ગરીબ સાધર્મિકને પણ વર્ષમાં

છૂટાછવાયા થઈને ૩૦-૪૦ જમણવારોમાં ચોખ્ખા ઘી, ગોળ અને મીઠાઈનું પોષણ એટલું મળી રહે કે બાકીના દિવસો કદાચ લુખ્ખા રોટલા અને મરચાંથી ચલાવવું પડે તો પણ અપોષણની બીમારીના ભોગ બનવું ન પડે. વળી પાછું, જમણવારની પંગતમાં કરોડપતિ શ્રીમંત અને તેનો મહેતાજી બંને બાજુમાં બેસીને જમે એટલે સાધર્મિક તરીકે એનું ગૌરવ અકબંધ રહે. તમારા ફંડ-ફાળા અને ટીપ-ટપોરાંમાં તો સાધર્મિકની ભક્તિ નહિ, કમબખ્તી કરી નાખવામાં આવે છે. ગરીબ સાધર્મિકોને આવકના ધોરણે રેશનિંગ કાર્ડ આપીને દર મહિને સસ્તા દરે અનાજ, તેલ અને ઘી વહેંચવામાં એની ગરીબાઈનું ભાન સતત જાગ્રત રાખવામાં આવે છે. જ્યારે પ્રસંગે થતી તાંબા-પિત્તળનાં વાસણોની લહાણી તો શ્રીમંત કે ગરીબ સૌના ઘેર જતી હોવાથી તેના સ્વમાનને જરા સરખીયે ઠેસ પહોંચતી નથી. આજે પણ મારવાડમાં જીવતી આ લહાણી પ્રથાના પુણ્યે તો સામાન્ય માણસને ઘરવખરીનો પાઈ પૈસો પણ ખર્ચવો પડતો નથી. જમણવારો અને લહાણીના રસ્તે શ્રીમંતોનો પૈસો સ્વેચ્છાએ ગરીબોના પેટ અને ઘર સુધી જતો. તમારા નેહરુના બનાવટી સમાજવાદ કરતા ભગવાન મહાવીરનો આ સ્વૈચ્છિક સમાજવાદ લાખ ગણો બહેતર હતો. તેમાં ગરીબ ઓશિયાળો નહોતો બનતો અને આપનારો અભિમાની નહોતો બનતો.

પરંતુ આજે તો જમણવારો અને નવકારશીનું નામ પડે ત્યાં કેટલાકને તાવ આવી જાય છે. સાધર્મિક વાત્સલ્યો સામે ઝેર ઓકતી તેમની કલમોમાં તમને વીંછીના ડંખની વેદનાનાં દર્શન થશે. (એમના અંગ્રેજ સાહેબોએ હિંદુસ્તાની સમાજ વ્યવસ્થાની જમણવારોની પ્રથા સામે નાક મચકોડ્યું હતું એટલે તેમણે પણ મચકોડવું જ પડે એ ઢાળ.) એ લોકોને જમણવારોમાં પૈસાનો ધુમાડો દેખાય છે. એક માણસ એકલપેટો થઈ ઘરના ખૂણે પેટ ભરવાના બદલે પોતાના સમાનશીલ વ્યક્તિઓના સમૂહને જમાડી સાથે જમે તેનું નામ ધનનો ધુમાડો? જમણવાર તો અમારૂં સોશિયલાઈઝેશનનું પ્રતીક, સોશિયલ સેન્ટર હતું. હિન્દુસ્તાનીઓ જ્યારે કલબો અને જિમખાનાઓના રવાડે નહોતા ચડ્યા ત્યારે આવા ધાર્મિક-સામાજિક પ્રસંગો તેમને પરસ્પર

ઈન્ટર-એક્શનની એક સુંદર તક પૂરી પાડતા. એ ચોરાની કે ધર્મસ્થાનની ગરજ સારતા રોજિંદા સંસારી જીવનની ઘરેડમાંથી બહાર આવી બાળકો, બહેનો અને પુરુષો અહીં અરસ-પરસના જીવનમાંથી ધાર્મિકતાના પાઠ શીખતા. હા, એને બગાડ કે વેડફાટ જરૂર કહેવાય જો ફાઈવસ્ટાર હોટલોમાં યોજાતા સમારંભોની જેમ એમાં સવાસો રૂપિયાની ડિશમાંથી થોડુંક ચાખીને બાકીનું છોડી દેવાની ફેશન હોય. ઉલ્ટાનું અહીં તો જીભડીના ચટકાને ગણકાર્યા વગર શીરો અને ચોળા જેવી બે કે ત્રણ વસ્તુઓથી જ પેટ ભરીને અનાજનો એક દાણો પણ એંઠો મૂકવામાં પાપ માનવામાં આવતું. અછત કે દુષ્કાળના સમયમાંય આવા જમણવારો ઉપર તો પ્રતિબંધ ન મૂકાવો જોઈએ, તેને પ્રોત્સાહન મળવું જોઈએ. એમાં તો લાર્જસ્કેલનો ઈકોનોમિનો બેનિફિટ મળે. જ્યાં સ્મોલ સ્કેલની જરૂર હોય ત્યાં લાર્જસ્કેલની અને જ્યાં લાર્જસ્કેલમાં ફાયદો હોય ત્યાં સ્મોલસ્કેલની તરફદારી કરવામાં એમને મજા પડે છે.

રોટીનો પ્રશ્ન ઉકેલવામાં જમણવારોની અને પ્રભાવનાઓની મદદ મળતી, કપડાં તો જાતે કાંતીને ગામમાં જ વણાવી લેવાનાં રહેતા, ઘરવખરી લહાણીમાંથી મળી જતી અને છાપરું બાપદાદાનું ચાલ્યું આવતું. રોજ ઊઠીને ગામ બદલવાનું તો હતું જ નહિ. ચાલીનાં ભાડાં અને સસ્તા આવાસની યોજનાનો પ્રશ્ન તો એટલા માટે ઊભો થયો કે પરંપરાગત ધંધા ભાંગવાથી પહેલાં ગામ છોડીને નજીકના શહેરમાં પછી અમદાવાદ, સુરત તથા મુંબઈ જેવાં મહાનગરોમાં ઠલવાવું પડ્યું. કચ્છ, કાઠિયાવાડ કે ઉત્તર ગુજરાતના ગામડામાં રહેવાના ઘરનો સવાલ કયા સાધર્મિકને હતો ? રોટી, કપડાં અને મકાનનો સવાલ આમ સહેલાઈથી પતી જતો હોવાથી પાંચ-પંદર રૂપરડીની મુફલિસ આવકમાંથી પણ તેમના બે પૈસા બચતા અને એ બચેલા બે પૈસા સારા માર્ગે ખર્ચી જીવન સાર્થક કરતા.

અવળે પાટે ચડી ગયેલી જીવન વ્યવસ્થાની આખી ગાડીને સવળે પાટે ચડાવવાનું કામ અતિશય કપરું છે. વૈશ્વિક, સમષ્ટિગત સ્તરે એ પ્રશ્ન ઉકેલવાનો છે પણ થાગડ-થીંગડ પ્રયત્નો કરતી વખતે પણ આપણું 'દર્શન' તો

સ્પષ્ટ હોવું જ જોઈએ. આ લેખનો પ્રયત્ન પર્યુષણના દિવસોમાં સાધર્મિક વાત્સલ્યના બીજા કર્તવ્યના મિષે એ દર્શનની આગળ વળી ગયેલી ઝાંખપને દૂર કરવાનો છે.

-મુનિ હિતરુચિવિજયજી

પર્યુષણ પર્વ, વિક્રમ સંવત ૨૦૪૯

આપણે ક્યા માર્ગે ?

ચતુર્વિધ સંઘની વર્તમાન પરિસ્થિતિ સંતોષજનક નથી એમ સહુને લાગે છે. સંઘોનાં પદાધિકારીઓ મળે, ત્યારે અનેક પ્રકારની વાતો થાય અને વર્તમાન પરિસ્થિતિ પરનો સખ્ત અણગમો વ્યક્ત કરે. પછી આગળ કોઈ કાર્યવાહી થતી નથી.

થોડા વખત પહેલા તા. ૧૬-૧-૯૧નાં 'પ્રબુદ્ધ જીવન'માં 'અભિધાન રાજેન્દ્ર કોશ'નાં રચયિતા સ્વ. પૂ. શ્રી રાજેન્દ્ર સુરિજી મહારાજ સાહેબના જીવન પર એક લેખ પ્રકાશીત થયો છે. તેમાં તે વખતે સાધુ સાધ્વીઓનાં યતિજીવનમાં કેટલા દુષણો ઘુસી ગયાં તેનું વર્ણન છે. તે સામે પૂ. મહારાજ સાહેબે ઉગ્ર ઝુંબેશ ઉઠાવતા યતિઓ તરફથી શ્રી સમાધાનનાં પ્રયાસો શરૂ થયા. અનેક ચર્ચાઓ થતાં પૂ. શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિજી મહારાજ સાહેબે યતિ જીવનની સુધારણા માટે નવ નિયમો તૈયાર કરી સમાજ સામે રાખ્યા હતાં. તે નિયમ રસપ્રદ હોવાથી નીચે ઉદ્ધૃત કરૂં છું.

(૧) સવારે અને સાંજે સંઘની સાથે જ પ્રતિક્રમણ કરવું. રોજ નિયમિત વ્યાખ્યાન આપવું. જિન મંદિરે દર્શન કરવા જતી વખતે કે અન્ય વખતે પાલખીનો ઉપયોગ ન કરવો. સોના ચાંદીના કોઈ ઘરેણાં ધાર્મિક અનુષ્ઠાનને નિમિત્તે પણ પહેરવા નહિ કે પાસે રાખવા નહિં. બન્ને સમયે સ્થાપનાજીનું પડિલેહન કરવું.

(૨) ગૃહસ્થો પાસે ધનનો અપવ્યય ન કરાવવો. ઘોડાગાડી વગેરે વાહનનો ઉપયોગ ન કરવો.

(૩) છરી તલવાર વગેરે હિંસક શસ્ત્ર પાસે ન રાખવા. આભુષણોને સ્પર્શ સુદ્ધાં ન કરવો.

(૪) સ્ત્રીઓ સાથે એકાંતમં બેસવું કે રહેવું નહિ, સ્વાધ્યાય નિમિત્તે પણ સાધ્વીજી કે શ્રાવિકાઓ સાથે એકાંતમાં ન બેસવું. સ્ત્રીઓ સાથે હસીને મજાક મશ્કરી ન કરવી કે ટોળટપ્પાં ન મારવા.

(૫) બટાટા, કાંદા, લસણ વગેરે અભક્ષ્ય ન ખાવાં, રાત્રિભોજન ન કરવું. ભાંગ, ગાંજો વગેરે માદક પદાર્થનું સેવન ન કરવું. જે યતિઓએ આ પ્રમાણે કરવાનું ચાલુ કર્યુ હોય અને બંધ ન કરે તેમને સમુદાય બહાર મુકવા.

(૬) દંતમંજન વગેરે કરવા નહિ, કુવા, તળાવ વગેરેનું કાચું પાણી વાપરવું નહિ. વનસ્પતિ વગેરે કપાવવી નહિ.

(૭) સંઘ તરફથી થતી નોકરો વગેરેની વ્યવસ્થા જરૂર પુરતી મર્યાદિત રાખવી. વળી તેમાં પણ દુરાચારી, માંસાહારી વ્યક્તિને નોકર તરીકે ન રાખવી.

(૮) શ્રી પૂજ્યે કે અન્ય કોઈ યતિઓએ દ્રવ્ય ખર્ચ કરવા માટે સંઘ પાસે હઠાગ્રહ કરવો નહિ.

(૯) પગમાં જોડા, ચાખડી વગેરે પહેરવાં નહિ. શતરંજ, પાસા વગેરેની રમત રમવી નહિ. રાતના ઉપાશ્રયની બહાર જવું નહિ.

ઉપરોક્ત હકીકત આજથી લગભગ ૧૪૦ વર્ષ પહેલાની છે. તે વખતે તો લગભગ બધા યતિઓએ ઉપરોક્ત નવ નિયમોનો સ્વિકાર કરી પોતાના જીવન સુધારી લીધાં હતાં કારણ કે શ્રાવકોનો આગ્રહ હતો.

આપણે વર્તમાન પરિસ્થિતિનો વિચાર કરીએ. ઉપરોક્ત નવ નિયમોમાં લખેલ શું શું પ્રવૃત્તિઓ અત્યારે થઈ રહી છે તે અંગે પુર્વગ્રહ રહિત,

તટસ્થ અને ન્યાયી વિચારણા કરી આજના સંદર્ભમાં પણ જરૂરી નિયમોના પાલનનો આગ્રહ રાખવામાં આવે તો જૈન સમાજને ખુબ જ ઉપયોગી થાય તેમ લાગે છે. નૈતિક હિંમતપૂર્વક શ્રાવક સમાજ ચતુર્વિધ સંઘના ઉત્કર્ષ માટેની આચાર-સંહિતાનું પાલન કરે-કરાવે તે આજની માંગ છે તેમ કહીએ તો અસ્થાને નહીં લાગે.

અખિલ ભારતીય સ્થાનકવાસી જૈન કોન્ફરન્સ પાસે જો કોઈ પણ મહત્ત્વમાં મહત્ત્વનું અને અગત્યનું કામ હોય તે આ નવ નિયમો અત્યારે લાગુ કરાવવા પ્રયત્નશીલ થવું અને તે અંગે જે પગલાં લેવાં ઘટે તે લેવા એજ રહેલું છે.

- સુજ્ઞેસુ કિ બહુના

(જૈન પ્રકાશ ૨૦-૧-૧૯૯૨)

- નવધા ભક્તિ (૧) શ્રવણ ભક્તિ, (૨) કિર્તન ભક્તિ, (૩) સ્મરણ ભક્તિ, (૪) અર્ચન ભક્તિ, (૫) પાદ સેવન ભક્તિ, (૬) વંદન ભક્તિ, (૭) દાસ્ય ભક્તિ, (૮) સખ્ય ભક્તિ, (૯) આત્મ નિવેદન ભક્તિ.

  આજે એ પુનઃ સમય આવવા લાગ્યો છે કે પરિમિત સંખ્યામાં રહેલા જૈન સાધુ-સાધ્વિયોનું સંઘ સૂત્ર અહંતા, મમતા, અસહનશીલતા અને પોકળધર્મના નામે ચાલતી પારસ્પરિક ઈર્ષ્યાને લીધે ભિન્ન-ભિન્ન, અસ્ત-વ્યસ્ત અને પાંગલું બની ગયું છે.

-બૃહત્કલ્પ સૂત્ર પ્રાંસગિક કથન પેજ નં.-૯૪

વિવિધ રૂપાળા ખુશ્બુદાર ફૂલોનો રસ ચૂસવાનો શોખીન ભ્રમરબ્રાન્ડ

યુવાન ત્યજેલી યુવતીને પુનઃ પ્રેમ પંથે ડગલાં માંડવા આજીજી કરે છે...

પંડિતજી,

મારું નામ ઈશ્વરી છે. હું બાવીસ વર્ષની ગ્રેજ્યુએટ થયેલી યુવતી છું. હું એક પ્રાઈવેટ કંપનીમાં સર્વિસ કરું છું. આમ તો કંપનીમાં ત્રીસેક કર્મચારીઓ છે, પણ સૌને પોતપોતાના કામ સાથે નિસ્બત... ટાઈમ થાય એટલે ઘેર જવા ઉતાવળા બને.

આ કર્મચારીગણમાં રાહુલ પણ સર્વિસ કરે છે... તે હેડકલાર્ક છે, પણ મારે એના હોદ્દા કે પગાર સાથે કોઈ જ નિસ્બત નથી... પણ પંડિતજી, મને નિસ્બત છે તેની માદક આંખો, ગમી જાય તેવી હાઈટબોડી અને સ્માર્ટનેસ સાથે... પ્રથમ દિવસે મેં તેને જોયો ત્યારથી જ તે મને ગમી ગયો હતો. મારી નજર સતત એનો પીછો કરતી હતી... ને મને લાગ્યું કે એ પણ મને તીરછી નજરે જોયા કરે છે. હું પણ કોઈ યુવાનને ગમી જાઉં એટલી રૂપાળી છું.

છેવટે એ જ થયું, જે થવાનું હતું... અમે બંને એક-મેકને ચાહવા લાગી ગયાં... સાંજે છુટ્યા પછી તે મને તેની બાઈક ઉપર બેસાડતો, ને હુંય તેને બેઉ હાથ વડે ભીંસી દઈને તેની પાછળ બેસી જતી. તે મને મારી સોસાયટી સુધી મૂકી જતો ને સવારે દસ વાગે તે મને ઘર નજીકના સ્ટેન્ડ પર લેવા પણ આવતો. અમે બિન્ધાસ્ત હરતાં-ફરતાં... એકાંતમાં પણ મળતાં. એકવાર તે મને તેના મિત્રને ત્યાં લઈ ગયો હતો. મિત્ર કોઈનો ફોન આવતાં બહાર જતો રહ્યો હતો. ને અમે બંને એ કલાકો સુધી એકાંત માણ્યું હતું... તમારાથી નહિ છુપાવું. પંડિતજી ! તે દિવસે અમે તમામ મર્યાદાઓ તોડી નાખી હતી. થોડાક દિવસ તો સારું ચાલ્યું. પણ એક દિવસે રજા હોઈ હું મારા મામાને ત્યાં રિક્ષામાં જઈ રહી

હતી ત્યારે મેં બાઈક પર જતા રાહુલને જોયો. પણ તે એકલો નહોતો. તેની પાછળ કોઈ રૂપાળી યુવતી તેને ભીંસાઈને બેઠી હતી. બીજા દિવસે મેં પૂછ્યું તો કહે : 'એ તો મારી સગી છે !'

એક દિવસે હું પેલા મિત્રને ત્યાં પહોંચી ગઈ. મને થોડીક શંકા પડી ગઈ હતી. ઘરનાં બારણાં માત્ર આડાં કરેલા જ હતાં. મેં ધક્કો માર્યો ને એ સાથે જ બારણાં ખુલી ગયા. મેં જોયું તો કોઈ ત્રીજી જ યુવતી રાહુલને વીંટળાઈને બેઠી હતી ને રાહુલ એના વાળ રમાડી રહ્યો હતો. મેં ત્રાડ નાખી 'રાહુલ ! તારું અસલ સ્વરૂપ આ છે ?'

'હા, આજ છે ! તે અમને જોઈ જ લીધાં છે તો સાંભળી લે, હું આ રોમાના પ્રેમમાં છું. આ અમારો સાચો પ્રેમ છે.'

'ને હું ?'

'મારી જાસૂસી કરે છે ને ? સાંભળ, તારી સાથેનો સંબંધ તો માત્ર કામ ચલાઉ જ હતો !'

'પણ તેં મને બરબાદ કરી એનું શું ?'

'તારી ઈચ્છાથી જ તું બરબાદ થઈ છે... હવે કર્યા કર્મ ભોગવ...'

બસ, હું ભારોભાર નફરત સાથે ત્યાંથી નીકળી ગઈ હતી મેં નોકરી પણ બદલી નાંખી છે. દોઢ વર્ષ થઈ ગયું છે આ વાતને એક દિવસે રસ્તામાં રાહુલ મને મળી ગયો હતો કહે- 'ઈશ્વરી, મને માફ કરી દે. મેં તારું દિલ દુભવ્યું છે... રોમા તો માત્ર પૈસા માટે જ મારી સાથે પ્રેમનું નાટક કરતી હતી... પણ તારો પ્રેમ સાચો છે... ચાલ, આપણે નવેસરથી પ્રેમ પંથ પર ડગલાં માંડીએ.'

મેં એક શબ્દ પણ ન કહ્યો.

'તું વિચાર કરીને જવાબ આપજે.' કહીને તે તો જતે રહ્યો, પણ હું મુંઝાઈ ગઈ છું, પંડિતજી ! સાચું કહું, રાહુલને હું ભૂલી શકું તેમ નથી. હું તેને સાચો પ્રેમ કરી બેઠી છું મારે હવે શું કરવું ? તેને માફ કરી દેવો ? તમે જ મને

માર્ગ બતાવો, પંડિતજી... !

-ઈશ્વરી.

ઈશ્વરી, તને ભલે ખોટું લાગે પણ પ્રારંભમાં જ તને એક વાત કહી દઉં કે, જુવાનીના ઘેનમાં તું કંટક અને કુસુમની પરખ કરવાની ક્ષમતા ગુમાવી બેઠી છે ! ઈશ્વરી, મારે તને કહેવું છે કે આમાં જેટલો દોષ રાહુલનો છે, એટલો જ દોષ તારો પણ છે. કોઈ યુવાન ગમી જાય, મનને ભાવી જાય એટલે તેના ચરણે બેશરમ બનીને સર્વસ્વ સમર્પિત કરતાં પહેલાં સો વાર વિચાર કરવો જોઈએ. પણ તું વિચાર કરી શકી નથી ! કારણ ? યૌવનના ધસમસતા પ્રવાહ, બેકાબૂ બનેલા આવેગો અને દૈહિક આવેશોએ તને બક્ષેલું અંધત્વ... અલબત્ત, વૈચારિક અંધત્વ... !

અને એના કારણે તું વિચાર વિહોણું મૂર્ખતાપૂર્ણ પગલું ભરી બેઠી છે. તારા શીલને તે એક સ્ત્રીભૂખ્યા નરાધમ સમક્ષ લૂંટાવી દીધું છે. અસ્મતની રક્ષા કાજે તો સ્ત્રી રણચંડી પણ બને છે. જ્યારે તું ? રાહુલે મિત્રના મેળાપીપણાથી તેના ઘરમાં બિછાવેલી જાળમાં ફસાઈ ગઈ ! ફોન આવ્યો ને મિત્ર જતો રહ્યો- એ તો અગાઉથી નક્કી કરેલું નાટક જ હતું. પણ તું એટલી ભોળી અને સમજણનાં દ્વારે બંધ કરીને બેઠેલી છે કે તું રાહુલના એ નાટકને સમજી જ ન શકી ! આને તું સાચો પ્રેમ કહે છે. ગાંડી ? પ્રેમ નથી, આ તો તારું ગાંડપણ છે... તારું ભોળપણ છે, તારી મૂર્ખતા છે... જે કોઈપણ કુંવારી યુવતી કયારેય ન કરે, એવું અવિચારી કર્મ તું કરી બેઠી છે ! સાચી વાત તો એ છે કે રાહુલના દિલમાં પ્રેમ જેવી કોઈ ચીજ જ નથી. એ તો જુદા જુદાં રૂપાળાં અને ખુશ્બુદાર ફૂલોનો રસ ચૂસવાનો શોખીન ભ્રમર છે... ને એની આ ભ્રમર વૃત્તિનો શિકાર તું બની ગઈ. ઈશ્વરી ! તારો નંબર ક્યો હશે એ તો માત્ર રાહુલ જ જાણે ! તે રોમા સાથે પ્રેમનો ખેલ કરતા એ ચારિત્ર્યહીનને જોઈ લીધો ને એની નફ્ફટાઈ પછી તે એને છોડી દીધો છતાં તું કહે છે કે હું તેને સાચો પ્રેમ કરું છું. ને તેને ભૂલી શકું તેમ નથી ! તું હજીય સચ્ચાઈને પારખી શકી નથી અને ભ્રમણાનું જાળુ રચી

રહી છે. બીજીવાર તને મળ્યો તે પણ તેના નાટકનો બીજો અંક જ છે બનાવટ કરી રહ્યો છે તે એના નકલી નાટકથી તું બચી જા, ઈશ્વરી !

એ માફી માગે છે, એ નાટક છે એ મગરના આંસુ સારે છે, એ નાટક છે. એ પુનઃ પ્રેમ પંથે ડગલાં માંડવાનું કહે છે, એય નાટક છે. ફરી તું ફસાઈશ, ઈશ્વરી, તો તું ક્યારેય નહિ બચી શકે !

ભૂલી તો સાચા પ્રેમીને ન શકાય ! આ તો નાટકબાજ છે. આવાં તો અનેક નાટકો એણે કર્યા હશે. ને બીજી વાત સાંભળી લે, છોકરી ! એણે તારો શીલ ભંગ કર્યો છે. ખેર, જે થવાનું હતું તે થઈ ગયું તે અનેક છોકરીઓના સંપર્કમાં આવ્યો હશે. એટલે કદાચ યૌન રોગનો ભોગ પણ બન્યો હોય ! તું ગુપ્ત રીતે ડૉક્ટરી તપાસ કરાવી લેજે ને હવે પછી તારા દિલો-દિમાંગમાંથી રાહુલનું નામ કાઢી નાખ. એને યાદ કરવાની વાત તારી મોટામાં મોટી મૂર્ખાઈ હશે... તું સાચો માર્ગ પકડી લે ને કોઈ યોગ્ય યુવાન સાથે મા-બાપને સાથે રાખીને પ્રભુતામાં પગલાં માંડી લે. પણ એક વાત યાદ રાખજે, છોકરી કે તારા પતિ સમક્ષ ભૂતકાળની આ અણગમતી ઘટનાને કયારેય પ્રગટ ન કરતી.

-યુવા ગુજરાત તા. ૨૦/૦૬/૨૦૧૨.

● ચારિત્રના પંથે જનાર મુમુક્ષુ કુમાર અને કુમારિકાના હૈયામાં પોતાના ફોટાને જાહેરમાં, પત્રિકાઓમાં મુકવામાં ઘેલછા ન જ હોવી જોઈએ. પણ આજે આ પ્રથા ખુબ-ખુબ વીક્સી છે.

એમાં પણ દીક્ષાર્થિનિઓના ફોટા લેટેસ્ટ ફેશનેબલ પોજીશન છપાવીને રોડ પર લગાડવામાં આવે છે. તેથી કેટલા આત્માઓને વિકારનું પોષણ થાય છે. તે પાપ તે ફોટાવાળીને ફાળે પણ જાય છે. ચતુર્વિધ સંઘ વિચારે...

-સંપાદક

શિસ્ત, મહેનત અને સમાજલક્ષી અભિગમ તમારા ફાયદામાં છે

દેશમાં સર્જાતી કોઈ પણ મુશ્કેલી અથવા ગેરવહીવટ માટે પ્રજા મોટે ભાગે કેન્દ્ર સરકારને, રાજ્ય સરકારને અથવા શહેરની સેવા સંસ્થાને દોષ આપતી હોય છે. ટ્રાફિકના પ્રશ્ન માટે પોલીસને દોષ આપતી હોય છે પરંતુ જો આપણે પ્રમાણિકતાપણે વિચારીએ તો આપણે પ્રજાજનો પણ મુશ્કેલીઓ સર્જવામાં સૌથી મોટો ભાગ ભજવીએ છીએ. અભણ પ્રજાને જવાદો, પણ ભણેલી પ્રજા પણ જ્યારે ગેરશિસ્ત આચરી પ્રશ્નો ઊભા કરે ત્યારે સરકારને દોષ દેવો વ્યાજબી નથી.

સામાજિક પ્રશ્નો ઉપરના એક ટી.વી. પ્રોગ્રામમાં એક અંધજને સત્ય કહ્યું કે રસ્તા ઉપર કેળાની છાલ ફેંકનાર માણસને કારણે કોઈ અંધ તે કેળાની છાલને કારણે પડે અને ઘાયલ થાય તેમાં સરકારનો શો વાંક ? બસની અંદર અપંગ માનવોની જગ્યાઓ ઉપર બેસનાર વ્યક્તિ અપંગ મુસાફર માટે જગ્યા ખાલી કરી ના આપે તેમાં સરકારનો શો વાંક ? કરોડો માનવ માટે કરોડો પોલીસ રાખી ના શકાય. શું રોડને ગંદા કરતી ગાયો-ભેંસો માટે પોલીસ જવાબદાર છે ?

પાનના ગલ્લા ઉપર રોડ પરના ટ્રાફિકને અડચણ થાય તે રીતે કાર પાર્ક કરનારને એ વાતનો ખ્યાલ નથી રહેતો કે તેના કારણે ઘણા વાહનોની ગતિ તૂટી જાય છે અને પેટ્રોલનો ખોટો ખર્ચ વધે છે. ટ્રાફિકમાં ગીચતા થાય છે. તેને એમ છે કે હું તો પાંચ મિનિટ જ ઊભો રહેવાનો છું. પણ ત્યાં દર પાંચ મિનિટે આવા મૂરખ લોકો આવીને ઊભા રહેતા હોય છે. આપણે આપણા સ્વાર્થ ખાતર શિસ્તભંગ કરી સરકારને દોષ દેવાનું ચુકતા નથી. ચાર રસ્તા ઉપર જમણી બાજુ જવા માંગતી વ્યક્તિ છેક ડાબી બાજુ ઉભા રહે છે અને પછી જમણી બાજુ જવા બેથી ત્રણ લાઈનમાં જતાં વાહનોને ખોટી કરે છે. અહીં પોલીસનો શું વાંક છે ? દરેક ચાર રસ્તા ઉપર ૧૦ પોલીસ ઊભા રાખો તો પણ

આવા મૂર્ખ માણસોને સુધારવા તે અતિ કપરું કાર્ય છે. સીગ્નલ લાઈટ ટ્રાફિકને વ્યસ્થિત રાખવા માટે છે પરંતુ જે વ્યક્તિઓ પોલીસની હાજરીમાં જ સીગ્નલને નકામા ગણી વાહનો ચલાવવામાં બહાદુરી સમજતા હોય ત્યાં ટ્રાફિક પોલીસનો વાંક કાઢવો તેમાં કેટલું ડહાપણ છે ? એવી વ્યક્તિઓ જ્યારે પોલીસ હાજર નથી હોતી ત્યારે કેવી રીતે વર્તે છે તેનો આપણને સૌને અનુભવ છે. અમદાવાદના સી.જી. રોડની ડીઝાઈન ટ્રાફિક સરળતાથી થાય તે માટે કરેલી છે પરંતુ જ્યારે નો પાર્કિંગ હોવા છતાં રીક્ષા, કાર, બાઈક વગેરે પાર્ક કરવામાં આવે અને થોડું ચાલવું પડે અથવા પાર્કિંગના રૂપિયા બચાવવા માટે આડેધડ પાર્કિંગ કરવામાં આવે અને ગીચતા વધારવામાં આવે એમાં ટ્રાફિક પોલીસનો કેટલો વાંક ? જ્યારે પોલીસ આવાં વાહનોને ટો કરી જાય છે ત્યારે પ્રજા જ વિરોધ કરે છે. પોલીસ સખત પગલાં ભરે તો પણ પ્રજાને વાંધો, પોલીસ નરમ બને તો પણ પ્રજાને વાંધો. આવા સમયે લોકશાહી માટે આપણે કેટલા લાયક છીએ તેનો વિચાર કરવાનો સમય આવી ગયો છે.

આપણે ઘરને ચોખ્ખાં રાખવાં અને પબ્લીક પ્લેસમાં ગંદકી કરવી તેને નિયમ માની ઘણા લોકો વર્તતા હોય છે. આપણે ઘરના ખૂણા પાન ખાઈ થૂંકથી લાલ કરતા નથી પણ સરકારી ઓફિસોના ખૂણા, લીફટની ભીંતો ઉપર ફ્લેટના દાદરના ખૂણાઓને થૂંકીને લાલ રંગના કરી નાંખવામાં કોઈ શરમ અનુભવતા નથી. ખુલ્લામાં લઘુશંકાએ જઈ રોડ ગંદા કરવામાં આપણે નાનમ અનુભવતા નથી. કોઈ કહેશે કે કુદરતી આવેગને રોકી કેવી રીતે શકાય ? તેને માટે સગવડો તો હોવી જોઈએને ? સગવડો શક્ય છે પણ જેમ બીજા દેશોમાં જાહેર શૌચાલયોમાં પૈસા આપવા પડે છે તેવી આપણા લોકોમાં પૈસા આપવાની તૈયારી છે ?

ભારતનો માનવી પરદેશમાં જઈ ત્યાં કુદરતી આવેગોને રોકી ચોખ્ખાઈ રાખી શકે છે તેજ દેશમાં આવી પરદેશની ચોખ્ખાઈની વાતો રોડ ઉપર મૂત્રદાન કરતાં કરતાં કરતો હોય છે.

ઘણી વાર સુંદર બાગની બહારની બાજુએ જાહેર શૌચાલય બનાવાય છે પરંતુ ત્યાં ઊભા રહેતા લારીઓવાળાઓ, ફેરિયાઓએ તેને નર્કમાં ફેરવી નાખ્યું છે. ત્યાં શાકની લારીઓ આડેધડ ઊભી રાખે છે, શાક લેવા આવનાર ભાઈ-બહેનો આરામથી રોંગ સાઈડમાં પોતાનું વાહન ઊભું રાખી શાક ખરીદે છે. ત્યાં ઘણી વખત આવતી બસને રોકાઈ જવું પડે છે. તેને કારણે બીજા વાહનોને ધીમા પડી જવું પડે છે અને ડીઝલ-પેટ્રોલનો ખોટો ધૂમાડો થાય છે. પોતાની આસાની માટે બીજાને મુશ્કેલીમાં મૂકતા, નિયમોને તોડતા અશિષ્ટ આચરતા માણસોને સરકારનો વાંક કાઢવાનો કેટલો અધિકાર છે ? અમદાવાદમાં આવું ઘણી જગ્યાએ બની રહ્યું છે અને અકસ્માતો વધતા રહે છે. આવું હિન્દુસ્થાનમાં ઘણે સ્થળે બની રહ્યું છે.

આખું વર્ષ મોજ મઝામાં કાઢતા વિદ્યાર્થીઓ થોડાં અઘરાં પેપર આવે તો બૂમાબૂમ કરે છે. વિકલ્પો ના આપવામાં આવે તો બૂમાબૂમ કરે છે. યુનિવર્સિટીનો વાંક કાઢે છે. જીવનમાં સફળતા મેળવવા માટે શોર્ટકટ ચાલતા નથી. જે વિદ્યાર્થીઓ અઘરા પ્રશ્નોના જવાબ આપી શકે છે તે જ જીવનમાં કંઈક કરી બતાવતા હોય છે. લીલાલહેર કરનાર વિદ્યાર્થીઓમાંથી પાછળથી સફળ થયા હોય છે તે તેમની પાછળથી થયેલી મહેનત જ હોય છે. લીલાલહેર કરનાર મોટાભાગના વિદ્યાર્થીઓ સામાન્ય નોકરી કરીને જ જીવન પસાર કરતા હોય છે.

યુવાન વાચકો, આ દેશનું ભવિષ્ય તમારા હાથમાં છે. તમે જેટલી શિસ્તબદ્ધ મહેનત અને સમાજલક્ષી બનશો તેટલો તમને અને તમારા સંતાનોને લાભ થશે. જો આ અશિસ્ત ચાલતી રહેશે તો એક સમય એવો આવશે કે તમારા સંતાનો ઘરની બહાર પણ નહીં નીકળી શકે કારણ કે બહાર જતાં જ જીવન જીવવું ખૂબ જ મુશ્કેલ હશે.

-રોહિત પટેલ - યુવા ગુજરાત, તા. ૨૦/૦૬/૨૦૧૨

આપણા રસોડા

-લેખિકા : ધનલક્ષ્મી મુલજી ગડા

તે દિવસે ઠંડે કલેજે પાન ચાવતા ચક્કીવાળાને ચક્કીમાં અર્ધી ગુણી ઘઉં સાથે ધનેડાને પણ દળતો જોઈ મારા શરીરનાં રૂવાડાં ઊભા થઈ ગયા. "આટલા બધા ધનેડાવાળા ઘઉં કોનાં છે ? કોઈ હોટલવાળાનાં હશે નહીં ?" એમ પૂછતા જવાબ મળ્યો. "સામેનાં જૈન મંદિરનાં !" ફરી એક ધ્રુજારી મારા શરીરમાંથી પસાર થઈ ગઈ. મારા માન્યામાં એ વાત આવતી નહોતી. પણ એ એક સત્ય બીના હતી.

"આવા જીવડાવાળા ઘઉં તું શા માટે દળે છે ? આ તો તને પાપ લાગશે." મેં કહ્યું "બેન પાપ અને પુણ્યમાં અમે શું સમજીએ ? અમારે તો કામ સાથે કામ !" ચક્કીવાળો જરા હસ્યો ને બોલ્યો. એની વાત કેટલેક અંશે ખરી જ હતી. જૈન મંદિરનાં આયંબિલ ખાતાવાળાઓને જ્યાં જીવ-અજીવની પડી નહોતી. ત્યાં આ તો એક અન્ય ધર્મી, અજ્ઞાન ચક્કીવાળો એની પાસે શું અપેક્ષા રાખી શકાય?

'એમ કર, આ બધા ઘઉં તું ચક્કી બંધ કરીને બહાર કાઢ ને મને ચારણી આપ, હું તને એ બધા હમણાં જ ચાળી આપું જેથી બધા જીવડાં નીકળી જશે અને પાછળ અમારો લોટ પણ ખરાબ નહીં થાય...!' મેં એને નમ્ર સૂચન કર્યું.

"એવું મારાથી કેમ થાય ? એ શક્ય નથી. બાકી તમે કહો છો તો, આ સાવરણીથી બધા જીવડા હમણાં જ બહાર સેરવી લઉં છું. ગરમીને લીધે આમેય જીવડા તો બધા ઘઉંમાંથી ઉપર ચઢી જ આવે છે, એટલે બધા થાળા બહાર નીકળી જ જશે." આ કહી એણે નાની સાવરણી લઈ થાળા ઉપર ચઢેલા ને બહાર જવાની વ્યર્થ કોશિષ કરતા ધનેડાને એક ઝડકે વાળી નાખ્યા. થોડી વાર થઈ ને પાછા બીજા ધનેડા દળાતા ઘઉંમાંથી ઉપર ચઢવા લાગ્યા

ચક્કીવાળો એમ માનશે નહીં... ! મનોમન મેં બડબડાડ કર્યો "આ રીતે જૈન મંદિરમાંથી શું અવાર-નવાર જીવડાવાળા ઘઉં દળાવા આવે છે ?" મેં કુતુહલવશ પૂછ્યું. "હા, એવું તો ચાલ્યા કરે. એ લોકો તે મારા બહુ જુના અને મોટા ઘરાક છે. કેટલીય જાતના અનાજ ત્યાંથી ડબ્બાનાં ડબ્બા ભરીને દળાવવા આજ ચક્કીમાં આવે છે." એણે ગૌરવ લેતાં કહ્યું.

"પણ, તું મંદિરનાં મહેતાજીને આ જીવડાવાળા અનાજની ફરિયાદ કેમ નથી કરતો ?" મેં કહ્યું. "બહેન, ફરિયાદ કરું ને તો તો ત્યાંનો રસોયો ને કામવાળો અનાજ બીજી ચક્કીમાં જ મોકલતો થઈ જાય મારે મોટો ઘરાક જાય એ કેમ પોસાય ? ચક્કીવાળાએ પોતાની મુશ્કેલી રજુ કરી.

મનોમન હું મંદિરનાં બેદરકાર અધિકારીઓ પર સમસમી ગઈ ! "હવે શું કરવું" તે ઘડીભર નક્કી ન કરી શકી. મારા સાફ સુથરા ઘઉં તો ડબ્બો છોડીને જાઉં ને પાછી આવા સડેલા ઘઉં પર મારા સારા ઘઉં તરત દળાઈ જાય અથવા બદલાઈ જાય કે ઓછા થઈ જાય તે પણ પાલવે એમ ન હતું. બીજી ચક્કીઓમાં પણ સડેલું અનાજ નહીં દળાતું હોય એની કોઈ ખાત્રી નહોતી.

દળાઈ રહેલા સડેલા ઘઉંમાંથી થોડાક જીવોને પણ જો બચાવી શકું કે એને પ્રત્યક્ષ બતાડીને જૈન મંદિરનાં અધિકારીઓની આંખ ખોલી શકું તો આજનો દિવસ મારો કંઈક સાર્થક ગણાશે એમ મનમાં વિચારો આવતા હતા. દરવાજા પાસે ઊભી રહીને ત્યાંથી કોઈ જૈનભાઈ કે ઓળખીતા બેન પસાર થાય તો, મારો હેતુ સફળ થાય એ આશાએ હું ચુપચાપ પ્રતિક્ષા કરવા લાગી.

મારી પ્રાર્થના જાણે ઈશ્વરે સાંભળી હોય તેમ મારા વડીલ મિત્રસમા ને ધાર્મિકવૃત્તિનાં રંજનબેન થોડીવારે સામી ફુટપાથ પરથી પસાર થતા દેખાયા. મારા જીવમાં જીવ આવ્યો. મેં દોડીને એમનો હાથ પકડીને ચક્કી તરફ દોર્યા ને જૈન મંદિરનાં અંધેરનું પ્રત્યક્ષ દર્શન કરાવ્યું. એમનાં મોંમાંથી પણ અરેરાટી છૂટી ગઈ ! તરત જ ક્ષણનોય વિલંબ કર્યા વગર એ જૈન મંદિરમાં દોડ્યા.

કમનસીબે મહેતાજી અને રસોયા સમેત રંજનબેન આવ્યા ત્યાં સુધી તો અર્ધી ગુણી ઘઉં દળાઈને બાજુએ મુકાઈ ગયા હતાં. "પુરી એક અંધેરીને ગંડુરાજા, ટકે શેર ભાજી ટકે શેર ખાજા." કવિતાની જેમ તરત જ મહેતાજીએ ચક્કીવાળાનો, ચક્કીવાળાએ રસોયાનો, રસોયાએ અનાજ ભરનાર કોઠારવાળાનો... એમ એકબીજા પર આક્ષેપોની પરંપરા શરૂ થઈ ગઈ ! ગુનો કબુલ કરવા કોઈ તૈયાર ન હતા. પાંગળા બચાવો બધા કરવા લાગ્યાં. અંતે આવું જીવડાવાળું અનાજ કયારે પણ જૈન મંદિરમાંથી આવે તો તારે દળવું નહીં ને મને ફરિયાદ કરી મોકલવી. તારી ચક્કીને બદલે બીજે કયાંયે અમારું અનાજ દળાવા નહીં જાય. એની ખાત્રી રાખવી, ડરવું નહીં...", વગેરે વગેરે ભલામણો મહેતાજી તરફથી થઈ.

આખરે છોભીલા પડેલા મહેતાજી અને રસોયો મંદિરમાં પાછા ગયા. પણ રંજનબેને એમનો પીછો ન છોડ્યો. એમણે તો મંદિરના ઉપાશ્રયમાં બિરાજતા મહારાજ સાહેબ અને મહાસતીઓને પણ આયંબિલ ખાતાની બેદરકારી વિષે વાકેફ કર્યા. આંયબિલ ખાતાનાં કોઠારમાંથી બધા અનાજના પીપડા અને પીસેલા અનાજના વિવિધ ડબ્બાઓ ખોલાવ્યા બધાનાં આશ્ચર્ય વચ્ચે દરેકે દરેક અનાજના પીપમાંથી અને ડબ્બાઓમાંથી અસંખ્ય ધનેડા, ઈયળો અને ફુંદા જેવા બાદર જીવોનો ઢગલો થવા માંડ્યો. ત્યાં ઉભેલા સૌના મોં પર ગ્લાની તથા અનુકંપા છવાઈ ગઈ... ! સૌએ આ બાબત આકરી ટીકા કરી આયંબિલ ખાતામાં આવીને આયંબિલ કરનારા ભાણા પરથી તે દિવસે હાથ ધોઈને અધવચ્ચે ઉભા થઈ ગયા. વિપરિત વાતાવરણ જોઈને ત્યાંના અધિકારીઓનાં માથા શરમથી ઝુકી ગયા. રંજનબેનની ધાંધલ તે દિવસે ખરેખર કામિયાબ નીવડી...!

આ બનાવના બે-ચાર દિવસ બાદ મેં એમની પાસેથી પાછળનાં સમાચારો માગ્યા ત્યારે, રંજનબેને દુઃખી હૃદયે વળી એથીયે ચોંકાવનારી વાત કરી. એમણે કહ્યું કે બેન, બીજું બધું તો ઠીક. પણ તે દિવસે એ બધો

જીવડાવાળો અલગ-અલગ પ્રકારનો લોટ અને સડેલું અનાજ નિર્દોષ જગ્યાએ પરઠવાને બદલે આસપાસની દુકાને વેચાવા ગયેલું ત્યાં જેને ખબર હતી તેણે ન ખરીધ્યું તો બીજી બજારોમાં વેચાવા પાર્સલ થઈ ગયું. આ બધી બાબતો પર અધિકારીઓએ આંખ આડા કાન કર્યા. આ બધા ઠગ ભગતોને કેવા કહેવા ?" બાકી હવે ઉહાપોહને લીધે અધિકરીઓને અનાજ સંગ્રહ કરવાની "ના" પાડી દીધી છે અને રસોડાના સ્ટાફને બદલી દીધો છે. જાગૃતિ સારી આવી છે અને રસોડાનાં કાયદા કાનૂન કડક થઈ ગયા છે. લાગે છે કે હવે જીવોની યત્ના સારી થશે.

"ચાલો, જાગ્યા ત્યારથી સવાર" એમ કહીને મેં મન મનાવ્યું. પણ પ્રિય વાચકો, આ પ્રસંગ બાદ જ્યાં જ્યાં હું આયંબિલ ખાતાનાં બોર્ડ વાંચુ છું ત્યારે એક જ પ્રશ્ન ફરી ફરીને મનમાં ઉઠે છે, કે "એકાસણા અને ઉપવાસથી યે આયંબિલ કરીને વધુ પૂણ્ય કમાવાનાં શુભ હેતુસર આવનાર લોકો અહીં પણ પેલા આયંબિલ ખાતાની જેમ છેતરાતા તો નહીં હોયને ? પૂણ્ય બાંધવાને બદલે પાપનાં ભાગીદાર તો નહીં બનતા હોય ને? અને હા, લાખોનાં દાન કરનાર ઉદાર દિલ દાતાઓનાં દાનની ગંગા, પ્રવાહ બદલીને નર્કની વૈતરણી તરફ તો નહીં જતી હોયને ? ઠેરઠેર જૈન મહિલા મંડળો સ્થપાયા છે, બે બહેનો અઠવાડીયે એક દિવસ આંયબિલનાં રસોડાનું ચેકીંગ કરવા મદદ ન કરી શકે?

જૈન પ્રકાશ ૨૦/૦૧/૧૯૯૨ પેજ-૧૭,

(સત્ય ઘટનાનાં આધારે)

(મહારાજની ગોચરીમાં આયંબિલ ખાતામાંથી જીવાતવાળો આહાર આવી ગયો છે. - સંપાદક)

આ લેખ તકેદા-ી -ાખવા--ખાવવા માટે છે, નિંદા માટે નથી.

"ગર્ભપાત – દેશ–વિદેશમાં"

– શ્રી ચીમનલાલ એમ. શાહ

વર્તમાનપત્રના એક ખુણામાં એક નાનકડા કોલમમાં છપાયેલા સમાચાર વાંચવામાં આવ્યાં. ભાગ્યે જ કોઈની નજર પડે એવી રીતે છપાયા હતા છતાં તે આપણને ચીમકી આપનાર હતા ઉપર નાનું હેડીંગ હતું "ગાદીત્યાગ" અને નીચે સમાચાર હતા કે બેલ્જીયમના રાજવી મી. બોદુઈએ ગાદી ત્યાગ કર્યો હતો કારણ કે ગર્ભપાતના કાયદા ઉપર સહી કરવા એમના આત્માનો અવાજ તૈયાર નહોતો. આવી એકાએક ઊભી થએલી બંધારણીય કટોકટીના ઉકેલ માટે પ્રધાનમંડળની બેઠક રાતભર ચાલી હતી. રાજવીની જાહેરાત પછી પ્રધાનમંડળે રાજવીની સત્તાઓ લઈ ને ગર્ભપાતનો કાયદો પસાર કર્યો હતો.

બેલ્જીયમ યુરોપનો દેશ છે. વિકસિત છે. હીરાના વ્યાપાર માટે પ્રખ્યાત છે. પશ્ચિમના આ દેશમાં ગર્ભપાતનો કાયદો નહિ હોય એમ જણાય છે. પ્રધાનમંડળે ગર્ભપાતનો કાયદો પસાર કર્યા પછી રાજવીની સહી માટે આવ્યો. રાજવી પોતે આ કાયદા પર સહી કરવા ઈચ્છતા ન હતા. તેમની ઈચ્છા ન હતી કે આ કાયદો પસાર થાય. તેમની પોતાની સમ્મતિ આપવી ન હતી તેથી ગાદી ત્યાગ કર્યો. પોતાની રાજવી તરીકેની પદવીનો ત્યાગ કર્યો કેટલો મોટો ભોગ? ગર્ભપાતને એ કેવું સમજતા હોય ત્યારે ગાદી ત્યાગ કરે ? પછી ભલે પ્રધાનમંડળ તેમને ફરી ગાદી આપે પણ આ પ્રશ્ન ઉપર પોતે કેટલા મક્કમ રહ્યા તે વિચારવાનું છે. તે માટે તેમને જેટલા ધન્યવાદ આપીએ તેટલા ઓછા છે. પશ્ચિમની હવામાં, સમુદ્ર દેશના રાજવીમાં કેવી માનવ દયાની ભાવના છે. અને ગર્ભસ્થ શીશુની બચાવવાની કરૂણા છે. તે આ ઉપરથી પ્રતીત તાય છે. આપણને આ સમાચાર જાગ્રત કરનાર છે.

આપણા દેશમાં થોડા વર્ષો અગાઉ "ગર્ભપાત" એ ગુનો ગણાતો હતો, પાપ ગણાતું હતું અને કલંક પણ મનાતું હતું. જે લોકો ગર્ભપાત કરતા હતા

તેઓ ચોરી છુપીથી બહાર લોકો જાણે નહિ તેમ કરતા જ્યારે વસ્તીવધારાના સંદર્ભમાં ગર્ભપાત કાયદેસર કરવાની પ્રસ્તાવના આવી ત્યારે ખરેખર ધાર્મિક સંસ્થાઓએ તેનો પૂરજોશથી વિરોધ કરવો જોઈતો હતો પણ ન છુટકે કહેવું પડે છે કે આપણી ધર્મ સંસ્થાઓ પોતાના વિધિ વિધાનોમાં, ઉત્સવોમાં એટલી ઓતપ્રોત રહે છે કે આવા મહત્ત્વના પ્રશ્નોની ઉપેક્ષા સેવે છે. સૌ કોઈ જાણે છે કે ગર્ભપાત એટલે અપરિપક્વ બાળકની હત્યા. જૈન દૃષ્ટિએ પંચેન્દ્રિય મનુષ્યની હત્યા. જો જૈન સમાજે ધાર્યું હોત તો બીજા ધર્મોની સાથે મળીને આ કાયદો થતા પહેલા જોરશોરથી વિરોધ કર્યો હોત અને તાત્કાલીક કાયદો થતો અટકાવ્યો હોત. એમ બન્યું નહિ અને તે સહેલાઈથી કાયદો બની ગયો. *હજુ યુરોપના ઘણા દેશોમાં ગર્ભપાત કાયદેસર નથી.* તેથી ગર્ભપાત કરાવવા માટે એક દેશના માણસો બીજા દેશમાં જાય છે. *જેઓ રોમન કેથોલીક ધર્મ પાળે છે તેવા ડૉકટરો, નર્સો ગર્ભપાતના ઓપરેશનો કરતા નથી. પોતાની નોકરી જતી હોય તો જવા દે છે પણ સિદ્ધાંતને વળગી રહે છે.*

કાયદો બન્યો તેથી ગર્ભપાતનું પાપ ઓછું થઈ જતું નથી. ફક્ત એટલું જ કે સરકાર તે માટે છૂટ આપે છે. દરેક સમાજ યા ધર્મ ધારે તો પોતાના ધર્મના સિદ્ધાંતોની રૂએ પોતાના સમાજને તે અપનાવતા અટકાવી શકે. જૈન સમાજમાં અટકાયત થવી જોઈતી હતી પણ તેમ બન્યું નહિ તેથી જૈન સંઘના લોકો ગર્ભપાત કરાવવા લાગ્યા છે. અલબત્ત પૂજ્ય સાધુ-સાધ્વીજીઓ ઉપદેશ આપે છે. પણ જોઈએ તેવી જોરદાર ઝુંબેશ નથી. ગર્ભપાતનું કૃત્ય એક માસુમ બાળકનું ખૂન કરવા બરાબર છે, પંચેન્દ્રિયની ઘાત છે, તેથી તે ન જ થાય, એ માટે કેટલાક બીન અનુભવી લોકો એમ સમજાવે છે કે જીવનો સંચાર ગર્ભમાં અમુક અઠવાડિયા પછી થાય છે. ખરેખર તો ગર્ભાધાનના દિવસે જ જીવનો પ્રવેશ થાય છે. મોટુ પાપ માનીને તેના દરેક યુવક વર્ગને પ્રત્યાખ્યાન કરાવવા જોઈએ.

તબીબી વિજ્ઞાન-વ્યવસાયના નિયમો પ્રમાણે ગર્ભપાત કરી શકાય

નહિ. વર્લ્ડ મેડીકલ એસોસીએશનની જીનીવામા મળેલી એસેમ્બલીએ જે નિયમો મંજુર કર્યા છે તેમાં જણાવવામાં આવ્યું છે કે-

"માનવ જ્યારથી ગર્ભમાં આવે ત્યારથી તેને માટે હું સન્માન જાળવીશ. ધમકી મળે તેવા સંજોગોમાં પણ માનવતાના નિયમ વિરૂદ્ધ હું મારા જ્ઞાનનો ઉપયોગ નહિ કરૂં. આજ પ્રમાણે નર્સો જે ગર્ભપાતમાં ભાગ ભજવે છે. તે તેમના વ્યવસાયના નિયમ વિરૂદ્ધ છે. વસ્તીવધારાને અટકાવવાના બીજા ઘણા ઉપાયો જોવામાં આવે છે. તેમાં સૌથી વધારે અનિષ્ટકારી હોય તો તે ગર્ભપાત છે, ધાર્મિક દૃષ્ટિએ જ નહિ, આરોગ્યની દૃષ્ટિએ પણ જેમને બાળક ન જોઈતું હોય તે બીજા ઉપાયથી અટકાવી શકે છે પછી ગર્ભપાતની જરૂર કયાં રહી? પોતાના બેદરકારીના કારણે પંચેન્દ્રિય કુમળા બાળકનો ભોગ લેવો ? એ ન્યાય કયાં નો ?

માનવ જીવનના ઘણા ઘણા ગુણો ગવાયા છે. એવા માનવ જીવનને ટુંકાવી નાખવામાંથી માતાઓ અને બહેનો બચે અને પંચેન્દ્રિયની હિંસાથી વિરમે.

- જૈન પ્રકાશ, ૨૦/૧૨/૧૯૯૨

- ભગવદ્ ગીતામાં કહેલ છે કે– અગર આત્માની શુદ્ધતા જોઈએ તો બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરો.
- શિવ સંહિતામાં કહેલ છે કે– વીર્યના ટીપારૂપી મહારત્નના સંગ્રહથી પૃથ્વી પર એવી કોઈપણ સમૃદ્ધિ નથી કે તેને પ્રાપ્ત ન થાય.
- તથાગત બુદ્ધ કહે છે કે– દુઃખના મૂળને છેદવા માટે બ્રહ્મચર્યનું પાલન જરૂરી છે.

ન શોભતા કાર્યો

- હીરાભાઈ મગીયા

રાષ્ટ્રમાં આપણી વસ્તી એક ટકાથી પણ ઓછી હોવા છતાં, આપણો સમાજ આજે બધી જ રીતે આગળ છે. આપણું શાસન અને સંસ્કૃતિ પણ અનાદિકાળની છે, તેથી જ આજે ટકી રહી છે. તેના મૂળમાં મારી દૃષ્ટિએ સત્ય, અહિંસા, અચૌર્ય, તપ, ત્યાગ, સંયમ, અપરીગ્રહ, દાન, કરૂણા, ન્યાય, નીતિ, સદાચાર, પ્રમાણિકતા, વ્યસનમુક્તિ વિગેરે મુખ્ય છે. આ બધો ભૂતકાળનો વારસો આજદિન સુધી ટકાવી રાખવામાં આપણાં સંત-સતીજીઓનો મહત્વનો ફાળો છે તેમ હું માનું છું.

અનેકાન્તવાદ અને સ્યાદવાદને ન સમજવાને કારણે જ, આપણા અનેક સંપ્રદાયો થયા પછી પણ, હજી આપણો સંઘ ઠીક ઠીક એકતા અનુભવે છે. પરંતુ આજે કળીકાળમાં અગર તો પાંચમાં આરાને લીધે, આપણો સંઘ પછાત વર્ગને પણ ન શોભે, તેવી રીતે જીવવા લાગ્યો છે, ત્યારે એટલું જ કેહવાનું મન થાય છે કે :

(૧) જૈન સંઘ આજે કર્મવાદના સિદ્ધાંતોને માને છે ખરો ? તેમાં શ્રદ્ધા ધરાવે છે ખરો ?

(૨) લીલોતરી અને કંદમૂળ ન ખાનારો સંઘ, આજે માંસાહાર અને ઈંડા ખાવામાં પણ શરમાય છે ખરો ?

(૩) પાણીને પણ ગાળ્યા સિવાય ન વાપરનારો સંઘ, આજે ગમે તેવી હોટલોમાં જઈને, અને રસ્તા ઉપરની રેકડી પાસે ઊભો રહીને, જે જાતની ખાણી-પાણી કરી રહ્યો છે. તેની લાજ શરમ કોઈને લાગે છે ખરી ? ઘર બંધ કરીને રવિવારે સાંજની રસોઈ બંધ કરીને બાળકો સાથે હોટલોમાં જઈને ખાવા-પીવાની આંધળી હરિફાઈઓ, દેખાદેખી કરતા કોઈને જૈન ધર્મ સાથે સ્નાન સૂતક હોય તેવું લાગે છે ખરું ?

(૪) શ્રાવકનો પ્રથમ બોલ છે કે આપણી આજીવિકા અને કમાણી ન્યાય સંપન્ન હોવી જોઈએ. તેને શું આપણે આચરણમાં ઉતારી ?

(૫) જૈન કુળમાં જન્મેલાને કોઈ જીવને દુઃખ થાય કે ત્રસજીવની ઘાત થાય તેવું કાર્ય કરવું ન શોભે. છતાં દિવાળીના પવિત્ર દિવસે, ભગવાન મહાવીરના નિર્વાણ મહોત્સવના દિને તથા લગ્નના શુભદિને ફટાકડા ફોડતાં કેમ અચકાતો નથી, રસ્તે ચાલતા ભાંગડા નૃત્યમાં કેમ રાચે છે ? વનરાજીનો વિનાશ કરી ફૂલોનો કચ્ચરઘાણ કરી લગ્નમંડપ શોભાવવો કેમ ગમે છે ?

(૬) જૈનનો દિકરો, વેવિશાળ અને લગ્ન ફોક કરવાની હિંમત કરી શકે ખરો ? અને કરે તો આવી વ્યક્તિઓને જૈન કહેવડાવાનો હક્ક હોઈ શકે ખરો ?

(૭) અલ્પારંભ અને મહાઆરંભની આજે કોઈને ખેવના છે ખરી ? આપણા સામાજીક, ધાર્મિક પ્રસંગોમાં પણ જ્યાં એઠવાડ ન મુકવાનો કોઈને વિચાર થતો નથી, કે કોઈ પોતાની ફરજ સમજતું નથી. ત્યાં છકાયના જીવોની રક્ષાની વાત જ કરવા જેવી રહે છે ખરી?

(૮) મનોરંજનના સાધનો ઓડિયો-વિડીયો, ટી. વી., નાટક, સીનેમા, બ્લ્યુ ફિલ્મ વગેરે જોતા આપણે આપણી જાત ઉપર કાબુ રાખીને અગર છાતી ઉપર હાથ મૂકીને કહી શકશો આ બધા દૃષ્યો કુટુંબ સાથે બેસીને જોઈ શકાય તેવા છે ? ન હોય છતાં આજે આ બધા સાધનો જૈન સંઘના ઘરમાં જ વધુને વધુ જોવા મળે છે, ત્યારે આપણો સંઘ સદાચારોને જાળવી શકશેખરો? સંયમની સાધના કરી શકશે ખરો ? બ્રહ્મચર્યને જાળવી શકશે ખરો ? મારે મન આ બધા ભોગ વિલાસના સાધનો છે. તેથી તેનો સદ્‌ઉપયોગ કરતાં વધુમાં વધુ દુરુપયોગ થયા વિના રહેવાનો નથી. જેથી આપણો સંઘ પોતાની જાતે જ સર્વનાશ નોતરશે અને દાંપત્ય જીવનનો આનંદ ખોઈ બેસશે. તે દૃશ્ય જોઈને છોકરા-છોકરીઓ પણ મનસ્વી જીવન જીવતા થઈ ગયા છે. જેથી વેવિશાળ અને લગ્નજીવનની સ્થિરતા જોવા મળશે નહિ. માટે આવા સાધનોનો મોહ

જૈન સંઘે છોડવા જેવો છે પરંતુ આ વાત આજે કોઈને ગળે ઉતરતી નથી. તો આગ લાગ્યા પછી તો ભસ્મ જ હાથમાં આવે છે. તો સર્વનાશને પંથે ડુબ્યા પછી પાછા વાળવા કઠીન બને છે.

(૯) આપણા ધર્મમાં ચમત્કારોની કોઈ વાત નથી તેમજ અંધશ્રદ્ધાની કોઈ વાત નથી તેમ છતાં આજે આપણો જૈન સંઘ કર્મવાદના સિદ્ધાંતો ભૂલીને અંધશ્રદ્ધા મિથ્યાત્વી, દેવ-દેવીઓ, હવન-હોમ, ચંડીપાઠ, વાસક્ષેપ, દોરા-ધાગાને માદળિયામાં વધુને વધુ ફસાવા લાગ્યો છે. ત્યારે આપણો સાધુ સંઘ પણ આપણા સમાજને આવા ખોટા માર્ગેથી પાછો વાળવાને બદલે નિમિત્ત રૂપ બની રહ્યો છે. તેથી હવે લાગે છે કે આગ પાણીમાં લાગી રહી છે ત્યારે આવા રૂડા જૈન સંઘને ને સિદ્ધાંતોને કોણ બચાવશે ?

- જૈન પ્રકાશ, ૦૫/૦૩/૧૯૯૨

શ્રાવક શ્રાવિકાઓ અને માઈક

-લેખક : હીરાલાલ મોહનલાલ તુરખીઆ

વર્તમાન કાળ એ અત્યંત વિષમ કાળ છે અને એ કાળના પ્રવાહમાં હકીકતમાં શુદ્ધ માર્ગ શું છે. તેનું લક્ષ વિસ્મૃત થતું જાય છે. અને તે કારણે આપણા ગુરુવર્યો માઈકમાં ન બોલતા હોય પણ આપણને બોલવામાં કયાં હરકત છે, એમ વિચારી આપણે સાધુ-સાધ્વીની હાજરીમાં, આપણો મોટો ભાગ માઈકનો ઉપયોગ કરે છે. પણ હકીકતમાં તેનો ઉપયોગ આપણે કરી શકતા નથી. તે માટે સિદ્ધાંતને અનુલક્ષીને અહીં વાત રજુ કરવામાં આવે છે.

(૧) સૌ પ્રથમ શ્રાવક, સાધુ-સાધ્વી પાસે આવે ત્યારે પાંચ અભિગમ સાચવીને આવે. તેમાં પ્રથમ અભિગમ સચિતનો ત્યાગ છે, આપણી પાસે જેમ બદામ, એલચી, સોપારી જેવી સચિત વસ્તુ ન હોય, તેમ સચિત એવું અગ્નિકાયના આરંભરુપ માઈક આપણે કેવી રીતે લાવી શકીએ ? જે લાવે તેને અભિગમ કયાં રહ્યો ? અને અભિગમ નથી ત્યાં વિનય પણ કયાં રહ્યો ?

(૨) સિદ્ધાંતમાં શ્રાવકને ત્રણ મનોરથ કહ્યાં, તેમાં પ્રથમ મનોરથ આરંભ પરિગ્રહ (અલ્પ કે મહા પરિગ્રહ) કયારે છાંડું? તો જ્યાં માઈકનો આરંભ છે, ત્યા પ્રથમ મનોરથ જ કયાં રહ્યો?

(૩) ધ્યાન ચાર કહ્યાં. તેમાં ધર્મ ધ્યાનના ચાર પાયા કહ્યાં. પ્રથમ પાયામાં છ કાય જીવોની રક્ષા કહી, બીજા પાયામાં જીવોને દુઃખનાં પાંચ કારણો, કહ્યાં તે મિથ્યાત્વ, અવ્રત, પ્રમાદ, કષાય, અશુભયોગ. તો માઈકના પ્રયોગમાં કદાચ પહેલું કારણ છોડી દઈએ તો બાકીના ચાર કારણો જીવને દુઃખરુપ છે. તો માઈકનો પ્રયોગ જીવને દુઃખરુપ છે માટે હેય છે. આદરવા યોગ્ય નથી.

(૪) ભગવતી શતક ૧૨, ઉ. ૭ માં જયંતી શ્રાવિકાના પ્રશ્નના જવાબમાં ભગવંતે કહ્યું છે કે જીવ ભારે શાથી થાય અને હળવો શાથી થાય ? તો ૧૮ પાપના સેવનથી જીવ ભારે થાય અને આયુષ્ય વર્જીને સાથે કર્મની પ્રકૃતિ શિથિલને ગાઢ કરે, અલ્પકાળની હોય તે લાંબા કાળની કરે, મંદરસને તીવ્ર રસવાલી કરે, અલ્પ પ્રદેશને બહુ દેશવાલી કરે અને ૧૮ પાપના સેવન નહીં કરવાથી જીવ હળવો થાય અને સાથે કર્મ પ્રકૃતિને ગાઢ હોય તેને શિથિલ આદિ કરે. તો ધર્મસ્થાનમાં આપણે બધાએ કર્મથી ભારે થવું કે હળવા થવું તે વિચારવું. માઈકમાં પ્રાણાતિપાતરુપ પ્રથમ પાપ પ્રત્યક્ષ છે. બીજા પરોક્ષ છે.

(૫) માઈકનો ઉપયોગ તે ગૃહસ્થોને શબ્દ સાંભળવાની અનુકૂલતારૂપ ઈષ્ટનો સંયોગ અને અનિષ્ટના વિયોગરૂપ છે. આ બંન્ને ભાંગા આર્તધ્યાનના છે. તેમજ માઈકની બહુ સારી વ્યવસ્થા હતી એ ચિંતવી ખુશી થાય, આનંદ મનાવે, તો માઈકમાં થતી અગ્નિકાય, વાયુકાયની હિંસાને વખાણી, તે રૌદ્રધ્યાનની વૃદ્ધિ માટે છે. અને સામાયિકમાં તો બન્ને અશુભ ધ્યાનનો ત્યાગ છે. તો માઈકનો ઉપયોગ તે આર્ત અને રૌદ્રધ્યાન છે. પણ ધર્મધ્યાન નથી.

(૬) શ્રાવક-શ્રાવિકા જેઓને સામાયિક છે, હિંસા કરવાના તેમજ કરાવવાના બન્નેના મન, વચન કાયાથી છ કોટીએ પચ્ચક્ખાણ છે તો શ્રોતેંદ્રિય,

ચક્ષુઈન્દ્રિય, વગેરે પાંચે ઈન્દ્રિયનો સમાવેશ કાયાની અંતર્ગત થાય છે તો કાયા વડે હિંસક વસ્તુનું સેવન, શ્રોતેંદ્રિયથી સાંભળવારૂપ મારે પચ્ચક્ખાણ છે. તો માઈકના શબ્દ સાંભળવાથી મારી સામાયિકના પચ્ચક્ખાણ મેં કાનવડે હિંસક વસ્તુનું સેવન કર્યું તેથી ભાંગી ગયા તે વ્રત મેં પાળવા માટે લીધું છે. ભાંગવા માટે નહીં માટે માઈકના શબ્દ સાંભળી શકાય નહિ જેમ કે રેડિયો સ્ટેશનથી જે કોઈ ધાર્મિક પ્રોગ્રામ આવે તે સાંભળી શકાય નહિ, ભક્તામરની ટેપ સાંભળી શકાય નહિ. હારમોનિયમ, વાંસળી, ખંજરી, વાયોલીન વગેરે વાજીંત્રો સાંભળી શકાય નહિ. જેમ કાનનો વિષય સાંભળવાનો તેમ આંખનો વિષય જોવાનો. તો સામાયિકમાં ટી. વી. પર આવતા પ્રોગ્રામો જોઈ શકાય નહિ. ઉપાશ્રયમાં સિનેમાની સ્લાઈડ જોઈ શકાય નહિ. દીક્ષાના આલ્બમો જોઈ શકાય નહિ, તેમજ ઉપાશ્રયના હોલમાં લાઈટ કરી શકાય નહિ, લાઈટમાં વાંચી શકાય નહિ. તેમજ નાકથી સેન્ટ સુંઘી શકાય નહિ, સ્પર્શેન્દ્રિયને સાતા પહોંચાડવા પંખાની હવા ખાઈ શકાય નહિ, એરકન્ડીશનમાં બેસી શકાય નહિ. હીટરથી તાપી શકાય નહિ કારણ આંખ નાક કે સ્પર્શેન્દ્રિય તે વિષય સેવન કરવાથી વ્રતનો ભંગ થાય છે. આપણે સમજીએ છીએ, તો જીવોની હિંસા બધામાં સમાન છે. પછી કાનનો વિષય માઈકમાં સાંભળવું આપણાથી કેવી રીતે સેવન થઈ શકે ? કારણ ત્યાં પણ વ્રતનો ભંગ છે. તો છકાયની હિંસાનો પચ્ચક્ખાણ કરી, પછી વ્રતને ભાંગવું તે હિતકારી કહેવાય ? ઉપવાસમાં એક અન્નનો કણ ન ખાઈએ અને અહીં બે ઘડીનું ચારિત્ર ભાંગીને ભુકો થાય તેના માટે સાવધાની કેમ નહી ? તે ખૂબ જ વિચારવા જેવું છે.

(૭) તેજ પ્રમાણે જ્યાં સંવત્સરી પ્રતિક્રમણ માઈકમાં થાય છે. તે સમયે પ્રતિક્રમણ બોલાવનાર વ્યક્તિ પોતાની જવાબદારી સમજે, પ્રથમ તો મારું વ્રત ભાંગે છે. અને સાથે હજારોની સંખ્યામાં શ્રાવક-શ્રાવિકાઓની સામાયિક મારા માઈકમાં બોલવાથી ભાંગે છે. તેજ રીતે સંવત્સરી પ્રતિક્રમણ સિવાયના અન્ય તપસ્યાના, બહુમાનના કે શ્રદ્ધાંજલી સભાઓના પ્રસંગોમાં પણ જે જે સંઘના હોદ્દેદારો વગેરે વ્રતધારીઓની સભામાં માઈકમાં બોલે છે,

તેઓ પણ બીજાઓની સામાયિક ભંગાવવામાં નિમિત્ત બને છે અને વર્તમાનમાં જે શ્રાવકપણું મને પ્રાપ્ત થયેલ છે, તે આગામી કાલે શ્રાવકપણું અને ચારિત્રની પ્રાપ્તિ બહુ દુર્લભ થશે.

કારણ બીજાના વ્રત પાલનમાં સહાય કરવી જોઈએ તેના બદલે બીજાનાં વ્રત મેં ભંગાવ્યા તો તેના ફલસ્વરુપ મને ચારિત્રની પ્રાપ્તિ કેમ થાય ? વળી, પ્રતિક્રમણ એટલે પાપથી પાછા ફરવું, તો હિંસાની ક્રિયા ચાલુ જ છે. પછી પાપથી પાછા ફરવાપણું જ કયાં રહ્યું અને હકિકતમાં પ્રતિક્રમણ જ કયાં રહ્યું ? વળી સંવત્સરી જેવું સર્વ જીવોને અભયદાન આપવા રૂપ મહાપર્વ સર્વ જીવો સાથે ક્ષમાપના કરવાનું પર્વ છે.

"ખામેમિ સવ્વે જીવા" ના પાઠમાં સર્વે ખમાવીએ છીએ, સર્વ જીવો મારા અપરાધની ક્ષમા આપો એમ ભાવના ભાવીએ છીએ તેમજ જગતના સર્વ નાના મોટા જીવો સાથે મારે મૈત્રી ભાવ છે એમ બોલીએ છીએ. તો જ્યારે અગ્નિકાય અને વાયુકાયના જીવોની હિંસા ચાલુ જ છે, પછી તેમની સાથે ક્ષમાપના કયાં થઈ? તેમની સાથે મૈત્રી ભાવ કયાં રહ્યો ? એક શિષ્ટચાર કર્યાનો ભલે કદાચ સંતોષ લઈએ પણ હકીકતમાં તે જીવો સાથે ક્ષમાપનાના બદલે વૈરનો બંધ થયો.

(૮) હવે માઈકમાં બોલવું તે

(૧) ધર્મ નથી પણ અધર્મ છે, (૨) સંવર નથી પણ આશ્રવ છે, (૩) ઉપાદેય નથી પણ હેય છે, (૪) નિર્જરા નથી પણ બંધ, (૫) સ્વભાવ નથી પણ વિભાવ, (૬) શુભ યોગ નથી પણ અશુભ યોગ, (૭) હળવાપણું નથી પણ ભારેપણું, (૮) સુખનું કારણ નથી પણ દુઃખનુ કારણ છે; આર્તધ્યાન છે અને વિષમય છે, (૯) વળી આપણે માઈકમાં સાંભળવું એટલે અગ્નિકાયના આરંભમાં બેસવું જો બેસી શકતા હોઈએ તો જેમ પૃથ્વીકાય ખોદાતી હોય. સ્નાન વસ્ત્ર ધોવા માટે પાણીનો આરંભ થતો હોય. વાયરાના આરંભરૂપ પંખા ચાલુ હોય. સુગંધી પદાર્થો ખંડાતા હોય, વનસ્પતિનું જ્યાં છેદન ભેદન થતું હોય

ત્યાં બેસી શકાતું નથી. તેવી જ રીતે અગ્નિકાય પણ એકેન્દ્રિય હોવાથી માઈક ચાલુ હોય ત્યારે સામાયકિ લઈ બેસી શકાતું નથી. (૧૦) વ્યાખ્યાન કે પ્રતિકમણ સાંભળવા રૂપ ધર્મ ઘણાને સંભળાવી શકાતો હોય અને થોડું નુકશાન અને ઘણો લાભ થતો હોય એમ જે દલીલ કરાય છે. તે પણ બરાબર નથી. *જૈનાગમમાં કયાંય પોતાનું બગાડીને બીજાનું ભલું કરવાની વાત છે જ નહી.* એ માટે એ દલીલ ટકી શકે નહીં. (૧૧) ભગવંતની આજ્ઞા જીવદયાની છે. દયા છે ત્યાં જ વીતરાગનો ધર્મ છે. અહિંસા એજ ધર્મનો પાયો છે. વીતરાગની આજ્ઞા ચારે તીર્થને એક સમાન છે સાધુને આજ્ઞા જુદી અને શ્રાવકોને આજ્ઞા જુદી એવું છે જ નહીં. માટે સંઘના વડીલો, હોદ્દેદારો, અન્ય મહત્વની વ્યક્તિઓ જે સાધુ-સાધ્વીની હાજરીમાં તેમજ વ્રતધારીની હાજરીમાં માઈકમાં બોલવા રૂપ છુટ લઈ રહ્યા છે તે વ્રતધારીના વ્રતના ભંગમાં નિમિત્ત રૂપ હોવાથી તે છુટ હકીકતમાં આપણે લઈ શકતા નથી. જો તેમની હાજરીમાં અગ્નિકાયનો પ્રયોગ થઈ શકતો હોય તો પછી બીડી-સીગરેટ, ચલમ, હોકો સળગાવવારૂપ અગ્નિનો આરંભ કરવામાં શું હરકત ? માટે આપણે સૌ વીતરાગ શાસનને વફાદાર રહીએ. વીતરાગ માર્ગને ઉજ્જવળ કરીએ અને આરાધક બનીએ એજ સુંદર ભાવના સાથે વિનંતી.

જૈન પ્રકાશ ૨૦/૦૮/૧૯૯૪

(સકળ ચતુર્વધ સંઘ આ વિષયમાં ચિંતન મનન કરી માઈકની હિંસાને જિનશાસનમાંથી દૂર કરે એજ યોગ્ય છે.)

શુદ્ધ રેશમી વસ્ત્રો અંગેની તલસ્પર્શી માહિતી

- નલીન ઝ. મહેતા

રેશમી વસ્ત્રોને બનાવવા લાખો ઈયળોને મૃત્યુના મુખમાં હોમી દેવાય છે.

માનવીએ જે વિવિધ પ્રકારના કાપડનું સર્જન કર્યું છે તેમાંનું કદાચ સૌથી આકર્ષક નરમ, સુંવાળું અને તેજસ્વી તો રેશમનું કાપડ જ હશે. લગભગ ઘણા વર્ષોથી આ સુંદર કાપડની આયાત ચીનથી થતી અને તેથી જ સંસ્કૃતમાં તે "ચીનાંશુક" ને નામે ઓળખાતું. તેના ઉત્પાદનની પદ્ધતિ કે મૂળ વિશેની માહિતી એક અત્યંત ગુપ્ત રહસ્ય હતું.

રેશમની ઈયળ પોતાનો કોશેટો બનાવવા જે તાર કાઢે છે તે આ રેશમનો તાર ઈયળમાંથી કીટક અને તેમાંથી ફૂદડાંમાં પોતાનું રૂપાંતર થાય તે દરમિયાનની પોતાની નિષ્ક્રિય સ્થિતિમાં પોતાનું રક્ષણ કરવા માટે કવચ રૂપે તે આ કશોટો બનાવે છે.

માદા ફૂદડું આશરે ૪૦૦ થી ૬૦૦ ઈંડા મુકે છે લગભગ ૧૦ દિવસમાં સેવાય છે તેમાંથી ૧/૧૨"ની ઈયળ નીકળે છે તેને લગભગ ૨૦થી ૨૭ દિવસ સુધી શેતુરના પાન ખવરાવાય છે, ત્યારે તે ૩"- ૩ ૧/૨" લાંબી થાય છે.

આ પૂર્ણ વૃદ્ધિએ પહોંચેલી ઈયળ પોતાના મોંમાંથી લાળ જેવો ચીકણો પદાર્થ તાર રૂપે કાઢીને-પોતાના શરીરની આસપાસ ઉપરા ઉપરી વીંટે છે જેથી ૨-૪ દિવસમાં કોશેટો તૈયાર થાય છે. બીજા ૧૨-૧૫ દિવસોમાં ઈયળમાંથી કીટક અને તેમાંથી ફૂદડામાં તેનું રૂપાંતર થાય છે. હવે બહાર નીકળવા માટે તેને મોંથી કોશેટો કાતરવો પડે, અને આમ થવા દેવાથી રેશમના તારના ટુકડા થઈ જાય. તેથી કોશેટો કપાતો અટકાવવા તે સમય પહેલાં જ તેને ઉકળતા

પાણીમાં નાખીને અથવા ગરમ હવામાંથી પસાર કરીને અથવા તડકે સુકવીને મારી નાખવામાં આવે છે, ત્યારબાદ કોશેટાનો તાર કાઢીને વીંટી લેવામાં આવે છે.

૧૦૦ ગ્રામ રેશમી વસ્ત્ર તૈયાર કરવા માટે આશરે ૧૫૦૦ કીડાને મારવામાં આવે છે.

આમાંના કેટલાક કોશેટાને પસંદ કરીને, ફૂદડાને બહાર નીકળવા દેવા માટે બાજુ પર રખાય છે તેમાંથી નીકળતાં નર અને માદાને સાથે રાખવાથી નર માદાને ફળાવે છે અને પછી જ્યારે માદા ઈંડા મુકે ત્યારે તેને કચરી નાખીને તપાસે અને જો તે રોગિષ્ટ નીકળે તો તેના બધા ઈંડાનો નાશ કરી નાખે.

ભારતમાં જુદા જુદા ચાર જાતના ફૂદડાનું રેશમ મેળવાય છે- "મલબેરી" (શેતુરી), ટસર, એરી અને મુગા. રેશમનું ઉત્પાદન કરતાં ચીન, જાપાન, રશિયા, ઈટાલી, દ. કોરિયા વગેરે દેશો પણ "મલબારી" રેશમનું ઉત્પાદન કરે છે. પરંતુ એરી અને મુગા તો ફક્ત ભારતમાં જ બને છે.

શુદ્ધ રેશમ જેવા લાગતાં બીજા કાપડો બને છે, માનવસર્જિત તાંતણાંમાંથી સામાન્ય રીતે એ "આર્ટિફિશિય" સિલ્ક (આર્ટસિલ્ક) ને નામે જાણીતા છે. આમાંથી રેયોન (વિસ્ફોસ) વનસ્પતિજન્ય છે, જ્યારે નાયલોન અને પોલીએસ્ટર (ટેરિન) પેટ્રોલિયમ પદાર્થ છે.

શુદ્ધ રેશમી કાપડનો ઉપયોગ ઘણી જાતના વસ્ત્રો બનાવવામાં થાય છે. દા.ત. બાંધણી, ચુડીદાર, ચુન્ની-દુપટ્ટો, ચણિયા-ચોળી, ઓઢણી, ઘરચોળા, મેસી, મીડી, સાડી, સ્કાર્ફ સોકીંગ (પગના લાંબા મોજાં), હાથના મોજાં, પાકીટ તથા પૂજાના વસ્ત્રો (ખેસ, ધોતિયાં) કફની, સુરવાળ, શેરવાણી, જાકીટ, ટોપી, મોજડી, ખમીસ, કોટ, પેન્ટ, ટાઈ તથા નૃત્ય વખતના પહેરવેશ વગેરે. ઉપરાંત ભારે પડદા, ફર્નિચરનાં કવર, પલંગ પરની સુશોભિત ચાદર, લેમ્પ શેઈડ, ગાલીચાં, દીવાલ પર લગાડવાના સુશોભનો, વગેરેમાં પણ રેશમ

વપરાતું હોય છે.

રેશમ કાપડરૂપે જુદાં-જુદાં નામે ઓળખાય છે. વણાટ, શૈલી, ભાત અને જ્યાં વણાતું હોય તે સ્થળ વગેરે પર આ ઓળખનો આધાર છે. બોસ્કી, શુદ્ધ કેપ, શુદ્ધ ચીનોન, શુદ્ધ શીફોન, શુદ્ધ સાટિન વગેરે જેવા કાપડ ૧૦૦ ટકા રેશમના બનેલા હોય છે. વળી બનારસ, બેંગ્લોર, ભાગલપુર, ધર્માવરમ, કાશ્મીર, ખંભાત, કાંચીપુરમ (કાંજીવરમ), મુર્શિદાબાદ વગેરે સ્થળોની સાડીઓ, પટોળાં (પાટણ, (પોચમપલ્લી) હૈદ્રાબાદ તથા ઓરિસ્સાનાં) અને ઢાકાઈ, તનછોઈ, ટસર, ટિશ્યુ, ટેમ્પલ સાડી, મહારાષ્ટ્રની પૈઠન સાડી વગેરે પણ ૧૦૦ ટકા શુદ્ધ રેશમની બનેલી હોય છે.

કલકત્તા, ગઢવાલ, મદુરાઈ તથા શાંતિનિકેતનની સાડી સંપૂર્ણ રેશમી અથવા સંપૂર્ણ સુતરાઉ હોય છે.

આંધ્ર પ્રદેશના નારાયણપેઠની "ઈરકલ" સાડી સંપૂર્ણ રેશમની અથવા સુતર મિશ્રિત રેશમની હોય છે. વેંકટગિરિ સાડી સંપૂર્ણ સુતરાઉ અથવા રેશમ મિશ્રિત સુતરાઉ હોય છે.

ચીંદરી, ટીશ્યુ, મહેશ્વરી, પુના અને વેંકટગિરિની સાડીમાં તાણામાં રેશનો તાર હોય છે અને વાણામાં સુતરાઉ તાર હોય છે.

મણીપુરી કોટા તથા મુગા કોટાની સાડીમાં રેશમી તથા સુતરાઉ બંને તાર હોય છે.

"મટકા" સીલ્ક પણ શુદ્ધ રેશમી તારનું બનેલું હોય છે. આમાં તાણાનો તાર સામાન્ય રીતે વપરાતા રેશમનો તાર હોય છે, જ્યારે વાણામાં ફૂદડાએ બહાર નીકળવા માટે કાપી નાખેલા કોશેટાના તૂટેલા તાર વપરાય છે. આ ફૂદડા ઈંડા મુકે ત્યારબાદ તેને કચડી નાખવામાં આવે છે.

કેપ, ચીનોન, શીફોન, ગજી, જ્યોર્જેટ, સાટિન જેવા કાપડ માનવસર્જિત રેસા એટલે કે "આર્ટસિલ્કના" પણ બને છે. સસ્તી તનછોઈમાં તાણામાં શુદ્ધ રેશમ અને વાણામાં "આર્ટ સિલ્ક"ના તાર વપરાતા હોય છે.

જાપાનથી આયાત થતું અને હમણાં ભારતની મિલોમાં પણ બનતું "ચાઈના સિલ્ક" નામનું કાપડ એ શુદ્ધ રેશમનું નથી પણ પોલીએસ્ટરનું હોય છે.

ક્યા કાપડમાં શું વપરાય છે તે જાણવું હોય તે તેનું પરીક્ષણ નીચે મુજબ કરીને જાણી શકાય છે. પ્રાણીજન્ય, વનસ્પતિ જન્ય, તથા માનવસર્જિત પેટ્રોલિયમમાંથી બનેલા તાર-ત્રણેની બળવાની રીત જુદી છે. માણસના વાળ પણ રેશમની જેમ જ બળતા હોવાથી ખરેલા વાળ અથવા વાળની ગુંચ બાળી જોવાથી આ સમજવું સહેલું થઈ પડશે. વાળને ચીપિયાથી પકડીને બાળતી વખતે તેનું નિરીક્ષણ કરો. વાળ બળી રહેશે ત્યારે ટાંચણીના માથા જેવડી રાખની ઝીણી દડી બની રહેશે. તેને આંગળી વચ્ચે લઈને ચોળીને સુંઘી જુઓ. વાળ, રેશમ, ઉન, પીછાં અને ચામડું આ બધા એકસરખી રીતે બળશે અને ગંધ પણ એકસરખી આવશે. વસ્ત્રમાંથી રેશમના તાર તાણાના (ઊભા) અને વાણાના (આડા) થોડાક જ કાઢી જુદા જુદા બાળી જોવા. જો વસ્ત્રમાં એવું વણાટ હોય કે તાર જાડો અને પાતળો લાગે અથવા ચમકમાં ફરક લાગે તો તે બીજી જાતનો તાર પણ થોડો કાઢી બાળી જોવો. આમાં સમજીને ૨-૪ તાર કાઢવાથી વસ્ત્રને કોઈ નુકશાન નથી થતું.

જો તે તાર વનસ્પતિજન્ય (સુતરાઉ કે રેયોન) હશે તો તે ભડકે બળશે, દડી નહીં બને અને ગંધ પણ રેશમ જેવી નહીં હોય. જો તે નાયલોન કે પોલીએસ્ટર જેવા વસ્ત્રનો તાર હશે તો ભડકે બળીને કાચ જેવી કડક દડી થઈ જશે.

નોંધ : ૧૯૮૪માં જામનગરમાં મુનિ શ્રી અરુણવિજયજી મહારાજની નિશ્રામાં બ્યુટી વિધાઉટ ક્રુએલ્ટી દ્વારા ફિલ્મ દેખાડીને પ્રવચન થયા હતા. ત્યારે ૭૦ થી વધુ લોકોએ રેશમ, હાથીદાંત જેવી વસ્તુઓ ન વાપરવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી હતી.

("સત્ત્વાનુકંપા" માંથી સાભાર)

જાતને યોગ્ય બનાવો, તકની પ્રતીક્ષા કરો

-શ્રી કનૈયાલાલ મિશ્ર "પ્રભાકર"

એક દિવસ બાદશાહે પોતાના વજીરને કહ્યું- "મારે એક માણસની જરૂર છે. તમારી નજરમાં કોઈ આવે તો લઈ આવજો, પણ એટલું ધ્યાન રાખજો કે માણસ સાચો હોવો જોઈએ."

ઘણા દિવસની શોધખોળ પછી વજીરને એક માણસ ગમ્યો. વજીરે એની પાસે એની નોકરી છોડાવી દીધી અને સારા ભવિષ્યની આશા આપી એને બાદશાહની સેવામાં હાજર કર્યો. કયાંય સુધી તો બાદશાહને યાદ જ ન આવ્યું કે પોતાને માણસની જરૂર શા માટે હતી. પછી તેમણે કહ્યું- "હા, એ વખતે મનમાં કંઈક વિચાર હતો, પણ હવે એવું કંઈ નથી.

વજીરે કહ્યું- "હજુર ! હજારોમાંથી મેં એને પસંદ કર્યો છે અને એની સારી નોકરી છોડાવી, હું એને અહીં લઈ આવ્યો છું."

બાદશાહે જરા વિચાર કરીને કહ્યું- "મારી પાસે તો અત્યારે કાંઈ કામ નથી, પણ તમારો આગ્રહ હોય તો આપણે એને આપણા કાર્યાલયમાં ચપરાસીનું કામ આપીએ. પગાર પંદર રૂપિયા મળશે."

વજીરને ખોટું લાગ્યું, પણ પેલા યુવકે કહ્યું- "મારે માટે તો બાદશાહની ચાકરી કરવાની તક મળે એ જ સૌથી મોટો પગાર છે." એ તો એને માટે તૈયાર થઈ ગયો. વજીર એને બાદશાહની કચેરી બતાવવા ગયો, પણ ત્યાં તો નરી ધૂળ જ ધૂળ છવાયેલી હતી, કારણ કે બાદશાહ ન ત્યાં દિવસે બેસીને કામ કરતા, ન ત્યાં કદી જતા હતા. વજીરને બહુ દુઃખ થયું, પણ પેલા યુવાને તો આવું સારૂં કામ અપાવવા બદલ એનો આભાર જ માન્યો. એને આ કામ મળ્યું તેનો સંતોષ હતો.

દિવસો સુધી પેલા યુલાને કચેરી સાફસૂફ કરી, બધી વસ્તુઓ ઠીકઠાક ગોઠવી અને બાદશાહની આબરૂને છાજે એવી એણે કચેરી બનાવી દીધી. એક

દિવસ બાદશાહ ત્યાંથી નિકળ્યા તો ઓળખી જ ન શક્યા કે એ એમની કચેરી છે ! આવી સુઘડ કચેરી જોઈ તેમને ખૂબ આનંદ થયો.

એ કચેરીમાં એક નાનો ઓરડો હતો. યુવકે તપાસ કરી તો ખબર પડી કે છેલ્લા વર્ષોમાં બાદશાહ ઉપર આવેલા પત્રોનાં પરબીડિયાનો ઢગલો ત્યાં પડ્યો હતો. એમાંના ઘણા પરબિડિયાં પર સોનાની નકશી હતી. તો કેટલાંક પર હીરા-મોતી જડેલાં હતાં. આ પરબીડિયાં બીજા રાજાઓ અને અમીર ઉમરાવો તરફથી લગ્ન આદિ પ્રસંગોએ આવેલ આમંત્રણ પત્રોનાં હતા. યુવાને કારીગરો બેસાડી એ બધી કિંમતી વસ્તુઓ લિફાફા પરથી ઉતરાવી લીધી અને બજારમાં વેચી દીધી. આ વસ્તુઓમાંથી હજાર રૂપિયા મળ્યા. એમાંથી એણે થોડાઘણા કચેરીની સજાવટ પાછળ અને ચિત્રો વગેરે દોરાવવામાં વાપર્યા અને બાકીના રાજ્યની તિજોરીમાં જમા કરાવ્યા. પેલી કિંમતી વસ્તુઓ એણે જ્યાં વેચી ત્યાંથી એની રસીદ લીધી અને નવી વસ્તુઓ ખરીદી ત્યાંથી એનો પણ આંકડો લીધો. સજાવટ પછી કચેરી ખરેખર શાહી કચેરી બની ગઈ. પણ એને પરિણામે ઘણા લોકોને એની અદેખાઈ થવા માંડી. આવા બળિયેલ લોકોએ રાજાના કાન ભંભેર્યા કે એ ગમે તેમ પૈસા લૂંટાવી રહ્યો છે. એટલે એક દિવસ બાદશાહ ગુસ્સામાં આવી પેલી કચેરીએ જઈ પહોંચ્યા. કચેરીનું રૂપ જોઈ તેઓ તાજુબ થઈ ગયા, છતાં એમણે કરડાકીભર્યા અવાજે પૂછ્યું : "આા બધી સજાવટ કોને પૈસે કરી છે ?"

"કચેરીના પૈસે, નામદાર." એને એણે બાદશાહને પેલાં નકામાં પરબીડિયાંની વાત વિગતે કહી. વળી ખજાનચી પાસેથી પોતે જમા કારાવેલ પૈસા વિષે પણ સાક્ષી લીધી. બાદશાહ ખુશ થઈ ગયા અને એમણે યુવાનને પોતાના નાણાંપ્રધાન તરીકે નીમ્યો. પણ એ બહુ સીધો માણસ હતો. એ કયારેય અપ્રમાણિકતા ચલાવી લેતો ન હોતો. એ કર્તવ્ય પ્રત્યે સજાગ હતો અને બીજાઓની બેદરકારી ચાલવા દેતો નહોતો, આથી બીજા પ્રધાનો મુશ્કેલીમાં આવી પડ્યા. પરિણામે જે કોઈ પ્રધાન બાદશાહ પાસે જતો એ પેલા યુવકને

બાદશાહના નજરમાંથી ઉતારી પાડવાના આશયથી એની વિરૂદ્ધમાં વાતો કરતો.

એક વાર રાત્રે બે વાગ્યે બાદશાહે પોતાના સેનાપતિને બોલાવ્યો ને કહ્યું- "આપણા બધા પ્રધાનોને એમના એમના ઘરમાંથી, તેઓ જે હાલતમાં હોય તે હાલતમાં જ, અહીં લઈ આવો. અમારો હુકમ બરાબર સમજી લો કે કોઈ પલંગ પર સૂતો હોય તો એ પલંગ સહિત એ જ દશામાં લાવવામાં આવે, અને કોઈ ગાલીચા પર બેસી ચોપાટ રમતો હોય તો એને ગાલીચા સાથે લાવવામાં આવે."

એકાદ કલાકમાં તો બધા જ પ્રધાનો બાદશાહના મહેલમાં આવી ગયા. આઠમાંથી સાત પ્રધાનો દારૂના નશામાં ચુર હતા, કેટલાક જુગાર રમી રહ્યા હતા. કેટલાક વેશ્યાઓ સાથે આનંદ કરવામાં મશગુલ હતા. માત્ર નાણાપ્રધાન શરીર પર ધોતી અને બંડી પહેરી દીવાના પ્રકાશમાં કોઈ કાગળ તપાસી રહ્યા હતા. બધા શરમિંદા પડી ગયા. પછી બાદશાહે નાણાંપ્રધાનને પુછ્યું, "મહેરબાન, રાત્રે બે વાગ્યે એવા કયા કાગળ તપાસતા હતા ?" એણે જવાબ આપ્યો, 'જી' એક તાલુકાનો આ વર્ષનો જે કર આવ્યો છે, તેમાં ગઈ સાલ કરતાં એક પૈસો ઓછો છે. હું એ તપાસતો હતો કે હિસાબમાં ભૂલ છે કે ખરેખર એક પૈસો ઓછો છે.

બાદશાહે પોતાના ખિસ્સામાંથી કાઢી એક પૈસો આપતા કહ્યું- "લો, આનાથી હિસાબ બરાબર થઈ જશે. જઈને આરામ કરો." આદર સાથે પૈસો પાછો આપતાં પ્રધાને કહ્યું- "જી, પૈસો તો હું પણ મૂકી શકું છું, મૂકી શકતો હતો, પણ એક પૈસો ઓછો છે, એ માટે પૂછગાછ કરવામાં ન આવે તો કર્મચારીઓમાં બેદરકારી અને અપ્રમાણિકતા પેદા થશે."

બાદશાહ ખૂશ થયા અને એમણે એ યુવકને પોતાના મુખ્ય પ્રધાન તરીકે નીમ્યો.

બાદશાહનો દીકરો બાદશાહ થઈ શકે છે અને ધનવાનનો દીકરો

ધનવાન, પણ એમને જોઈ ઈજનેરનો દીકરો હાથ પર હાથ રાખી બેસી રહે તો ઈજનેર ન થઈ શકે. કલેકટરનો દીકરો કલેકટર અને લેખકનો દીકરો લેખક ન થઈ શકે.

તો જેઓ સામાન્ય માણસનાં સંતાન છે અથવા જીવનની શરૂઆતની પરિસ્થિતિઓને કારણે જેઓ સામાન્ય રહ્યા છે, તેઓ શું અસાધારણ ન બની શકે ? જરૂર અસામાન્ય બની શકે છે એને માટે આવશ્યક છે ધીરજ અને યોજનાપૂર્વકના નિરંતર પ્રયત્નોની, દુનિયામાં સારા અને ઉચ્ચ સ્થાનોનો અભાવ નથી, પણ સ્થાન એ કંઈ પીરસેલી થાળી જેવું નથી. એ તો કાચા અનાજ જેવું છે, એમાંથી ભોજન તૈયાર કરી પેટ ભરો. હું જો મારા અને બીજાના અનુભવ એકત્રિત કરી પોતાનું આગવું સ્થાન પોતે મેળવવાનું વ્યાકરણ બનાવું, તો એ આ પ્રમાણે હશે :

અભાવોને પ્રસન્નતાપૂર્વક સહન કરતાં કરતાં મનવાંછિત સ્થાન માટે જાતને યોગ્ય બનાવો.

તકની પ્રતીક્ષા કરો, શોધ કરો, વિશ્વાસ રાખો.

એક પછી એક પગથિયાં ચઢો.

નાનામાં નાની તકનો પુરી આવડત અને લગનથી ઉપયોગ કરો.

યોગ્યતાથી વધુની આશા ન રાખો.

- જૈન પ્રકાશ ૨૦/૦૬/૧૯૯૧

જુગાર અને લોટરીની કમાણી દાનમાં લેવાની કેનેડાની ધાર્મિક સંસ્થાઓની ચોખ્ખી ના !

-વીરેન્દ્ર અઢિયા - ટોરોન્ટો (કેનેડા)

ગુજરાતના જાણીતા ગાંધીવાદી અને મૂક સમાજસેવક પૂજ્ય રવિશંકર મહારાજ હંમેશા કહેતા હતા કે- "પૈસો સુંઘીને લો" જેમ આપણે સડેલી કેરી, જીવાતવાળા બોર, ગંધાતી શાકભાજી કે જેના પર માખીઓ બણબણતી હોય એવી મીઠાઈઓ ખરીદતા નથી તેવી જ રીતે "સડેલો પૈસો" (Trainted Money) પોતાના અંગત ઉપયોગ માટે અથવા ધર્માદા સંસ્થાઓ માટે પણ નહિ લેવા જોઈએ. "જેવું અન્ન તેવો ઓડકાર" એ આપણી જૂની અને જાણીતી કહેવત છે. કેનેડામાં તાજેતરમાં કેટલીક ધાર્મિક તથા સમાજસેવા કરતી સંસ્થાઓએ એવા સડેલા પૈસાનું દાન લેવાનો ચોખ્ખો નન્નો પરખાવી દીધો છે. તેથી એમને મુસીબત તો પડે જ છે પણ નૈતિક ધોરણ ઊંચું રહે છે અને શુદ્ધ ઉદ્દેશો માટે ખરડાયેલા નાણા નહિ લેવાનો એમનો નિર્ણય સ્વચ્છ નાણાંઓ મેળવવા ઉપયોગી થશે. ભારતના રાષ્ટ્રપિતા મહાત્મા ગાંધીજી "સાધનોની સૂચિતા" નો આગ્રહ રાખતા હતા. બ્રિટિશ સલ્તનત સામે એમને પુષ્કળ નૈતિક બળ તેથી જ મળ્યું હશે. કેનેડાની ધર્માદા અને ધાર્મિક સંસ્થાઓએ શરૂ કરેલી આ નવી ફેશન દુનિયાભરમાં પહોંચશે ?

જેનો રાજા જુગારી તેની પ્રજા ભિખારી !

આપણી હજારો વર્ષો જૂની એ પણ કહેવત છે કે જેનો રાજા જુગારી તેની પ્રજા ભિખારી ! તાજેતરમાં કેનેડાના સૌથી શ્રીમંત પ્રાંત ઓન્ટેરીઓની ન્યુ ડેમોક્રેટીક પાર્ટીની સરકારે (જે ડાબોરી પક્ષ કહેવાય છે) કરોડો ડોલરના ખર્ચે અમેરિકાના ડેટ્રોઈટ શહેરની સરહદના કેનેડાની વીન્ડસર (જેને કેટલાક ગુજરાતીઓ વીન્ડોસરા કહે છે !) શહેરમાં જબરદસ્ત મોટો કેસીનો

(જુગારખાનું) શરૂ કર્યું. તેના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે પ્રાંતના ચાર હજાર જેટલા રાજકારણીઓ હાજર હતા !! એ કેસીનો ઓન્ટેરીઓ સરકાર અને એક ખાનગી કંપની ભાગીદારીથી ચલાવશે. દર વર્ષે તેમાંથી ઓન્ટેરીઓ સરકારને એકસો મીલીયન ડોલર્સ એટલે કે દસ કરોડ ડોલર્સ, એટલે બે અબજ અને પચાસ લાખ રૂપિયાની કમાણી થશે. આવા ભરચક કેસીનો મોન્ટ્રીયલ અને વિનીપેગમાં ધમધોકાર ચાલે છે અને કવીબેક સીટી, વેનકુવર, નાયગરા ફોલસ તથા ટોરાન્ટો શહેરની મહાનગરપાલિકાઓ પણ કેસીનો શરૂ કરવા તલપાપડ થઈ રહી છે. "બધા લઈ ગયા, અમે રહી ગયા" એવી વૃત્તિ છે. એવા જુગારખાનાઓથી ખૂનામરકીના બનાવો વધશે, માફીયાગિરી અને ચોરીચપાટી વધશે અને શહેરના નાગરિકોના જીવનની શાંતિનો ભંગ થશે એવી ચેતવણીઓની સરકારે જરા પણ પરવા કરી નથી." અમારે તો પૈસાની જરૂર છે પછી તમે શરાબખાના, જુગારખાના અને વેશ્યાવાડા ચલાવી સરકારને આપો તો સહર્ષ સ્વીકારીશું." એવી હલકી દાનત છે.

લોટરીઓનો રાફડો - ભારતનું અનુકરણ ?

પ્રજાનો બરડો ભાંગી જાય એટલા કરવેરા નાખીને જ સરકારને સંતોષ નથી. ભારતની જેમ કેનેડામાં પણ લોટરીનું ગાંડપણ પૂરઝડપે ચાલે છે. કેનેડાના દસ પ્રાંતોમાંથી આઠ પ્રાંતોમાં લોટરીની બિમારી "સરકાર માન્ય" છે. અરે સરકારો જ તે ચલાવે છે. તેવા જુગાર માટે કરોડો ડોલરોની જાહેરાતો અખબારો, રેડિયો અને ટેલિવિઝન પર આપવામાં આવે છે અને નબળા મનના નાગરિકોને "એક રાતમાં કરોડપતિ" થવાના અરમાનોના "હથેલીમાં ચાંદ" બતાવાય છે. આવી લોટરીથી કરોડોની આશા-આકાંક્ષાઓ ભોઈ ભેગી થાય છે અને કેટલાક કરોડપતિને બદલે "રોડપતિ" બની જાય છે. લાખોમાં એકને જ્યારે લોટરીનું ઈનામ લાગે છે ત્યારે મોટા મથાળે એમના ફોટા સાથે લોટરી કોર્પોરેશન જ ભરપૂર પ્રસિદ્ધ કરે છે. "તમે લોટરીની ટિકિટ ખરીદશો તો જ કરોડપતિ થઈ શકશો." એવું કોણીમાં મધ લગાડી ઢંઢેરો પીટવામાં આવે

છે. ઈનામને દિવસે લાખો લોભિયાની ટિકિટ ખરીદવા માટે લાઈન લાગે છે. મધ્ય પ્રદેશના ભોપાળની જેમ અહીં "લોટરીનો રોગચાળો" ચાલે છે. જે દિવસે લોટરીના ઈનામવાળા નંબરો ટેલીવિઝન પર આવે છે ત્યારે રાત્રે સૂતા પહેલા લાખો લોકો નિરાશાના ઉન્હા ઉન્હા આંસુઓ સારે છે ! આસમાનના ચાંદાને પકડવાની છલાંગ મારનારાઓ આખરે તો જમીન પર જ જોરથી પછડાય છે પણ કેટલાકની લોટરીની જુગારની આદત જતી જ નથી. પડી ટેવ તે કેમ ટળે ?

દુર્ગંધવાળા નાણાં લેવાની ચોખ્ખી ના ?

દુનિયાભરમાં જ્યાં જ્યાં અને જ્યારે જ્યારે દુષ્કાળ, મહાપૂર, ધરતીકંપ, ખૂનખાર લડાઈઓ થાય છે, ત્યારે પોતાના સેવાભાવિ કાર્યકરોને મોકલીને, દવાઓ, ખોરાક, ધાબળાઓ અને કેશ પહોંચાડતી કેનેડાની જાણીતી ખ્રિશ્ચયન સંસ્થા વર્લ્ડ વીઝન કેનેડાએ (WORLD VISION CANADA) તાજેતરમાં અલ્બર્ટા પ્રાંતની સરકારે આપેલી વીસ હજાર ડોલર્સની ગ્રેંટ લેવાની ચોખ્ખી ના પાડી છે. કારણ કે એ રકમ અલ્બર્ટાની લોટરીઓ વેચાય છે તેનાથી ઉપજે છે. તેવી જ રીતે અલ્બર્ટાની વાઈલ્ડ રોઝ ફાઉન્ડેશન (WILB ROSE FOUN-DATION) ની ગ્રેંડનો મેનોનાઈટ સેન્ટ્રલ કમિટીએ અસ્વીકાર કર્યો છે. એવા ચોવીસ હજાર ડોલર્સ લોટરીની દુર્ગંધના અમારે દક્ષિણ અમેરિકાના ગરીબો માટેની મદદ માટે પણ નથી જોતા એવું એમણે જાહેર કર્યું છે. આ ઉપરાંત આંગલીકન ચર્ચ, યુનાઈટેડ ચર્ચ, બેટરીસ્ટર યુનિયન પેન્ટેકોસ્ટેલ અને પ્રેસબીટરીન ચર્ચોએ તથા કેનેડિયન ઓર્ગેનઈઝેશન ફોર ડેવલપમેન્ટ એન્ડ પીસ તરફથી પણ કેસીનો (જુગારખાના) તથા લોટરીની કમાણીના નાના-મોટા દાનો સ્વીકારવા સ્પષ્ટ ના છે. ઓન્ટેરિઓની કેન્સર સોસાયટીએ બીંગો (BINGO) એક જાતનો જુગાર-રમતની કમાણી લેવાની સ્પષ્ટ ના પાડી છે. સોસાયટીએ ધૂમ્રપાન રહિત રમતનો આગ્રહ રાખેલો પણ કેન્સર ધૂમ્રપાનથી જ ફળેફૂલે છે

તેથી તેની રકમ કેવી રીતે સ્વીકારે ? એવી જ રીતે કેટલીક ધર્માદા અને ધાર્મિક સંસ્થાઓએ શરાબ બનાવતી અને સીગરેટ બનાવતી કંપનીઓના દાનો ફગાવી દીધા છે. ઘણું સરસ !

શું ચોરો, શરાબીઓ અને જુગારીઓના દાનો લેવા ?

ભારતના જાણીતા અકિંચન સંત અને શ્રીમદ્ ભાગવતની અમૃતવાણી પાંત્રીસ વર્ષો સુધી ભારતના કરોડો લોકોને આપનાર પૂજ્ય ડોંગરેજી મહારાજે પોતાના એક પ્રવચનમાં પૂછ્યું છે કે શું ચોરો લૂંટફાટ કરીને ધન કમાવે તો તે ધાર્મિક કૃત્ય કહેવાય ? એવી જ રીતે પત્તાનો, સટ્ટાનો કે મટકાનો જુગાર રમી તેના પૈસાથી જેઓ મંદિર કે ગુરુદ્વારાઓ બાંધે તે શું આવકારદાયક ગણાય ? વળી પ્રાંતીય સરકારો લાખોને ગરીબ બનાવી તેમને લોટરીની લાલચમાં સંડોવી કરોડો રૂપિયા ભેગા કરે અને તેમાંથી બાળ મંદિરો, શાળાઓ કે હોસ્પિટલોને દાન આપે તો એવા જુગારના દાનો સ્વીકારાય ? શું દારૂના કે તાડીના અડ્ડાઓમાં આંધળી કમાણી કરનારાઓ પાસેથી દારૂબંધીના પ્રચાર માટે દાન લઈ શકાય ? શું તંબાકુ-સીગરેટ, ચીરૂટ કે બીડીના વેપારીઓ પાસેથી કેન્સર કે રેડક્રોસ સોસાયટીઓ દાન લઈ શકે ? અંગ્રેજીમાં કહેવત છે કે દાનમાં મળેલા ઘોડાનું લોઢું તપાસવાની જરૂરી નથી. (DO NOT LOOK IN TO THE MOUTH OF A GIFT HORSE) પણ કુટણખાનાઓની કમાણી કરનારાઓ પાસેથી મહિલાઓની ઉન્નતિ કરવાના નાણાં કેમ લેવાય ? અથવા હજારો નવજાત બાળકોની જન્મના પહેલા જ અને તે પછી પણ હત્યા કરનારા અલ્ટ્રા સાઉન્ડના ડોક્ટરો પાસેથી અનાથ બાળકોની સંસ્થાઓ ફંડફાળો કેવી રીતે લઈ શકે ?

ભારતમાં પણ પાપનો પૈસો ધર્માદા સંસ્થા લે નહિ

ભારતમાં હજારો ધાર્મિક અને ધર્માદા સંસ્થાઓ ચાલે છે. ખાટકીઓની સંસ્થાના દાન ગોહત્યા પ્રતિબંધ માટે લેવાય નહિ, ફેફસાંના અને હૃદયના રોગીઓને બચાવવા સીગરેટ, તંબાકુની કંપનીઓના દાન સ્વીકારાય

નહિ, બાળ મંદિર, શાળાઓ અને હોસ્પીટલો માટે લોટરી કે જુગારની કમાણી સ્વીકારાય નહિ. જે ધર્માદા સંસ્થાઓ કે ધાર્મિક સંસ્થાઓ "પૈસો સુંઘીને" લેતા નથી એમનો સંઘ કાશીએ ક્યાંથી પહોંચે ? જેમ મિત્રોની શુભેચ્છાઓ, માતાપિતાના આશીર્વાદો અને સાચા ગુરુઓની અમૃતવાણીઓ આપણા જીવનોને ઉજળા, પરોપકારી અને સુગંધી બનાવી શકે છે તેવી જ રીતે ગંદા કામો કરી કમાણી કરતા, શરાબ-જુગારમાં રાચતા, લોટરીની કમાણી કરતા કહેવાતા સજ્જનોના નાણાં ધાર્મિક અને ધર્માદા સંસ્થાઓને મેલા અને દુર્ગંધી બનાવે છે. જેમને સજ્જનતા અને દુર્જનતા સાથે કશું નહાવા-ધોવાનું નથી એમને આવી શિખામણ કયાંથી ગળે ઊતરે ? ફૂલો ફોરમ વેરી સુગંધ ફેલાવે છે જ્યારે કાંટાઓ એમનું જન્મસિદ્ધ કામ આ દુનિયામાં બધે જ સરખી રીતે કરે છે ! દુર્ગંધી કમાણી દાનમાં નહિ લેવાનું કારણ એ છે કે તે સુખકર્તા નહિ દુઃખકર્તા થાય છે.

-મુંબઈ સમાચાર જૂન-૧૯૯૪

અનીતિથી ઉપાર્જન કરેલ ધનથી ધર્મ થતો નથી પણ અધર્મ થાય છે. અધર્મ વિકસે છે. લોકો ને અનીતિ કરવા પ્રેરણા મળે છે. ધર્મમાર્ગે ધન ખર્ચ કરનારાઓ વિચારે !

-સંપાદક.

● જેમ સુંદર સ્વચ્છ જલ વડે સ્નાન કરીને, ચંદનનું વિલેપન કરીને, પુષ્પોથી સુશોભિત બનીને, સુંદર વસ્ત્રો પહેરીને ગંદવાડથી ભરેલી ગટરમાં સજ્જન ન આલોટે તેમ સજ્જન અન્યાયના માર્ગથી ધનવાન બનવાની ઈચ્છા ન કરે. એજ સજ્જન.

એક વિચારણા લીંબુના ફૂલ વિષે

- શ્રી નવીનચંદ્ર ભાણજી છેડા

લીંબુના ફૂલ (સાઈટ્રીક એસીડ) એ લીંબુના રસમાંથી નથી બનતા પણ એ જીવાણુંમાંથી (દ્વારા) બને છે. જેનો નજરે જોયેલો આ અહેવાલ છે. એ જીવાણું નરી આંખે જોઈ શકાતા નથી. પણ માઈક્રોસ્કોપ દ્વારા જોઈ શકાય છે. તે હલનચલન કરે છે. તે આપની આંખના પલકારા જેટલા સમયમાં સતત વધતાં જાય છે. એટલે એકમાંથી સાત થાય છે. અને સાતનાં હિસાબે વૃદ્ધિ પામે છે. આ જીવોનો ખોરાક મીઠોં (Sweet) ખાવાનો છે અને મળ દ્વારા ખોટું પ્રવાહી બહાર કાઢે છે. આ જીવને શરીર છે. મોઢું છે અને નિહાર કરવાની જગ્યા છે. પ્રજોત્પતિ કુદરતી થાય છે. મીઠો પ્રવાહી પીતો જાય છે અને ખોટો પ્રવાહી કાઢતો જાય છે અને સાતનાં હિસાબે પ્રજોત્પતિ કરતો જાય.

લીંબુના ફૂલ બનાવવાની પ્રક્રિયા-સાકર બને છે ત્યારે જે પ્રવાહી બચે છે તે મોલેશીસ જેવું હોય છે. એક ટન જેટલો આ મીઠો પ્રવાહી મોટા ધાતુના વાસણમાં નાખવામાં આવે છે. પછી વજનથી ૧૦ કિલો જેટલા એ જીવાણું તે મીઠા પ્રવાહીમાં નાખવામાં આવે છે. એ પ્રવાહી સાત દિવસ સુધી સતત ૨૪ કલાક વલોયા કરે જીવાણું સાતની સંખ્યામાં વધતા જાય છે. મીઠો પ્રવાહી આરોગતા જાય અને મળ દ્વારા ખાટું પ્રવાહી છોડતા જાય છે. સાત દિવસે ફોર્મ્યુલા પ્રમાણે મીઠો પ્રવાહી એકદમ ખાટો થઈ જાય છે. પછી એ ખાટા પ્રવાહીને સ્ટીમ (વરાળ)માંથી પસાર કરવામાં આવે છે. ત્યારે એમાં રહેલા બધા જીવાણું નાશ પામે છે. પછી એ પ્રવાહીને ઝીણી ગરણીથી ગાળવામાં આવે છે. ગરણીમાં નાશ પામેલા જીવાણુંઓનું આઠથી દસ કિલો જેટલો લોંદો (કેક) નીકળે છે. આ લોંદાને થોડા જ સમયમાં જમીનમાં દાટી દેવામાં આવે છે. ત્યારે એમાં રહેલા બધા જીવાણું નાશ પામે છે. પછી એ પ્રવાહીને ફરીથી ઉકાળવામાં આવ્યા બાદ ઘટ પ્રવાહી બને છે. તેમાંથી સ્ટીમ દ્વારા તાર બનાવાય છે અને તેમાંથી નાના નાના ક્રીસટલ (મોતી) બનાવવામાં આવે છે જેને લીંબુના ફૂલ કહે

છે.

આનો ઉપયોગ ઠંડા પીણામાં-મીઠાઈ-પીપરમેન્ટ-ચોકલેટ-દવા-શાક-દાળ-ફરસાણમાં વધુ પડતો થાય છે.

તો હવે લીંબુના ફૂલનો ઉપયોગ આપણે કરવો કે ન કરવો એ આપણાં હાથની વાત છે.

લક્ષ્મીનું વર્ચસ્વ ?

આજે ધર્મસ્થાનમાં અને ધર્મકરણી તથા તપશ્ચર્યામાં લક્ષ્મીનું સામ્રાજ્ય વ્યાપી ગયું છે. અગાઉ લક્ષ્મી વ્યક્તિગત પ્રભાવ પ્રસ્થાપિત કરવાનું મહત્ત્વનું સાધન હતું. ધીમે ધીમે લક્ષ્મીએ પોતાનું સ્થાન સમાજમાં પણ વ્યાપક સ્વરૂપે જમાવી દીધું તેને પરિણામે સમાજનાં બધાં ક્ષેત્રોમાં બીજા તત્ત્વો ગૌણ બની ગયા અને દરેક બાબતમાં મૂલ્યાંકનનો માપદંડ એક માત્ર લક્ષ્મી બની ગયેલ છે. આજે તો લક્ષ્મીએ તેથી યે આગળ વધીને પોતાનું વર્ચસ્વ ધર્મ સ્થાનક અને ધર્મકરણીમાં જમાવી દીધું છે. જે સામાયિક શ્રેણિક જેવા મહારાજ પોતાનું સારું યે સામ્રાજ્ય આપતાં પણ ખરીદી ન શક્યા તે સામાયિક આજે એક બે રૂપિયામાં ખરીદવા લાગી છે. "પરિગ્રહ પરનું મમત્વ ઘટાડવા માટેની પ્રેરણા." અને બળ મેળવવા માટેનું એક માત્ર સ્થાન ધર્મસ્થાનકો હતાં. તે પવિત્ર સ્થાનકમાંથી પણ એક જ પ્રેરણા મળી રહેલ છે કે લક્ષ્મી વડે ધર્મ ખરીદી શકાય છે. લક્ષ્મી વડે ધર્માત્માનું બીરૂદ મેળવી શકાય છે અને લક્ષ્મી વડે સ્વર્ગમાં પણ સ્થાન અનામત કરી શકાય છે ?

લક્ષ્મીનું ક્ષેત્ર આજે તો તેથી પણ આગળ વધી ગયું છે. લક્ષ્મીએ પોતાની પકડ પૂ. મૂનિરાજો પર પણ જમાવી દીધી છે. આજે કોઈ કોઈ મુનિરાજો માન્યતા ધરાવતા થઈ ગયેલ છે કે ભવિષ્યની સલામતી માટે લક્ષ્મી જરૂરી છે અને તેથી તેઓ સીધી કે આડકતરી રીતે "અપરિગ્રહધારી" માંથી "પરિગ્રહધારી" બનવા લાગ્યા છે.

આજે દીક્ષા મહોત્સવ, ચાતુર્માસ પ્રવેશ સમારંભ, તપોત્સવ સમારંભ, ચાતુર્માસ પૂર્ણાહુતિ સમારંભ, પુસ્તક પ્રકાશન સમારંભ, ભાવદિક્ષાર્થીનો બહુમાન સમારંભ, તપસ્વીઓનો બહુમાન સમારંભ, જન્મજયંતિ સમારંભ, દીક્ષા જયંતી સમારંભ, પુણ્યતિથિ સમારંભ વગેરે સમારંભો એટલા મોટા પ્રમાણમાં થઈ રહેલ છે, એટલું જ નહિ પરંતુ ધાર્મિક ક્ષેત્રે આટલા ઉત્સવો પુરતા ન હોય તેમ દિવસ ઉગ્યે ઉત્સવો અને મહોત્સવો યોજવાના નવા નવા પ્રકારો શોધાઈ રહ્યા છે ?

પૂ. સાધુ-સાધ્વીજીઓ આ બધા કાર્યક્રમોના આયોજનમાં એટલા વ્યસ્ત રહે છે અને સંસારીઓથી એટલા ઘેરાયેલા રહે છે કે આ બધામાંથી તેઓ સ્વાધ્યાય, ધ્યાન, કાર્યોત્સર્ગ દ્વારા "પરભાવો" માંથી હટીને સ્વભાવમાં લીન થવાનો સમય કાઢી શકે તેવો અવકાશ જ તેમને રહેતો નથી. ધર્મસ્થાનકમાં એક પ્રકારનો અલબત્ત જુદા સ્વરૂપે નવો સંસાર ઊભો થઈ રહ્યો હોય તેવા દશ્યો જોવા મળી રહેલ છે.

-એમ. જે. દેસાઈ, તા. ૫/૧૧/૧૯૯૨, જૈન પ્રકાશ

"આડંબર"

ચાતુર્માસની પ્રવૃત્તિ તથા પ્રોગ્રામની મોંઘીદાટ પ્રતિકા હાથમાં આવી ત્યારે આશ્ચર્ય થયું લગ્ન પ્રસંગે, દીક્ષા પ્રસંગે, તપ પ્રસંગે તથા અન્ય પ્રોગ્રામની મોંઘીદાટ કંકોત્રી જોઉં છું ત્યારે હૃદય દ્રવી ઊઠે છે.

આપણી શ્રદ્ધાનું કેન્દ્ર શ્રમણ વર્ગ હોય તેઓના પ્રત્યે હૃદયની શુભ ભાવના વ્યક્ત કરવા જન્મ જયંતિ પ્રસંગે કે અન્ય પ્રસંગે મોંઘીદાટ કંકોત્રી છપાવવી જે વાંચ્યા બાદ કચરાપેટીમાં જાય તેની કેટલી આશાતના થાય ? સમાજમાં એવો પણ વર્ગ છે કે બે ટાઈમ પૂરતું ભોજન પણ મળતું નથી. પારિવારિક, સામાજીક, ધાર્મિક કોઈપણ ક્ષેત્ર કેમ ન હોય મોંઘીદાટ પત્રિકાના પૈસા બચાવી તેઓના નામની કોઈ સંસ્થા તૈયાર કરો દલિતને કામ આપો

જ્ઞાનદાન આપો જરૂરિયાત વાળાને રાહત આપો તો "મને લાગે છે કે તે શ્રેષ્ઠ કાર્ય થયું ગણાશે.

તપશ્ચર્યા નિમિત્તે ભભકાદાર આડંબર, સાંજી ગીત જમણવારી મોંઘીદાટ કંકોત્રી વાસણની વહેંચણી તથા છાપામાં ફોટા આવી બધી વિકૃતિઓ તપની પાછળ થતી પ્રભાવનાની સાથે જ ડૂબી રહી છે. જેથી ઘણા મધ્યમ વર્ગના ભાઈ-બહેનો તપ કરવાની શક્તિવાળા હોવા છતાં તપ કરતા અટકી જાય છે. જૈનોના ઉપવાસ લોઢાના ચણા ચાવવા બરાબર છે. જુવાનીના જોરમાં તપસ્યા સુખ-સમાધિ પૂર્વક થઈ જાય છે. પરંતુ સારા આર્થિક સંજોગોના અભાવમાં તપ કરવાની શક્તિ હોવા છતાં તપ કરી શકતા નથી. તપની પાછળ દેવું કરીને પણ તપ ઉજવણી માટે જમણવાર વિગેરે લાણુ કરવાના રૂઢ વહેવારથી ઘણા ભાઈ-બહેનો તપથી વંચિત રહી જાય છે.

પૂ. શ્રમણ વર્ગે આ વિષયમાં સમજાવી તપ નિમિત્તે ખાસ કરીને વાસણ ન લેવા અને ન દેવાના પચ્ચકખાણ કરાવવા જોઈએ. તપ પોતાના કર્મ-બાળવાની દિવ્ય ઔષધિ છે. આત્માને શુદ્ધ બનાવવાની પ્રક્રિયા છે. બાહ્યાચારથી દુર રહી ફક્ત કર્મનિર્જરાના હેતુથી તપ કરવામાં જ માનવ જીવનની સાર્થકતા છે. આત્મ જ્યોતિ ને પ્રાપ્ત કરવાનું તપનું લક્ષ છે. નહીં કે સોનું-રૂપું, રૂપિયા વાસણની સાંજી ને આપી લાણી. પ્રભાવનાના આડમ્બરથી ? તપનો હેતુ કર્મ નિર્જરા છે. તે ન થતાં કોઈક પ્રસંગોમાં તપ કર્મબંધનનું અને તમાસાનું કારણ પણ બની જાય છે. તો પૂ. શ્રમણવર્ગને નમ્ર નિવેદન છે કે આ દિશામાં ઉપદેશ ધોધ વહેવડાવી લોકોને તપ પાછળના આરંભ સમારંભથી અટકાવે.

શ્રી હિંમાશુ અનિલકુમાર બોટાદરા

તા. ૫/૧/૧૯૯૨, જૈન પ્રકાશ

શ્રી પ્રવાસિઓને નમ્ર વિનંતિ

શ્રી સૂરજમલ સેસમલજી જૈન કલ્યાણ

(વર્તમાનમાં મુ. શ્રી જયાનંદ વિજયજી મ.)

ટ્રેનોમાં, બસોમાં અને છ 'રી' પાલતા જે જે સંઘો હમણાં યાત્રા કરવા નીકળે છે. પુન્યશાળીઓ પૈસાનો ખર્ચ કરી લક્ષ્મી મળ્યાનો લ્હાવો લે છે. તે સર્વે સંઘપતિઓ યોગ્ય, સંઘની વ્યવસ્થા કરનારાઓ યોગ્ય મારી થોડી વાતો છે તે જરૂર ધ્યાનમાં લઈ તે પ્રમાણે આવા સંઘોની વ્યવસ્થા કરાશે તો લક્ષ્મીનો વ્યય સાર્થક અને તેનો સદુપયોગ થયો ગણાશે અને યાત્રાનો આનંદ અનેરો આવશે.

૧. પાણી :- યાત્રા સંઘોમાં વધારે કરીને અળગણ પાણી ન વપરાય તે માટે, રસોડામાં, સ્નાન કરવામાં, કપડાં ધોવામાં, પીવામાં તો પાણી ગાળીને જ વાપરવું જોઈએ એવી તાકીદ રસોયાઓને સંઘમાં આવનાર યાત્રિકોને અને કામ કરનાર મજુરોને કરવી જોઈએ. સંઘપતિ તરફથી બે વ્યક્તિની નિમણૂક થવી જોઈએ જે આ બાબતમાં પૂરેપૂરો ખ્યાલ રાખે.

૨. ગરમ પાણી :- પીવા માટે પાણી ત્રણ ઉકાળા આવ્યા પછી ઠારવું. પાણી ઠારવાની જગ્યા ઢાંકેલી જોઈએ, પાણી પાછું ગાળીને જ વાપરે એવી વ્યવસ્થા થવી જોઈએ. તે માટે રસોયા અલગ અને દેખરેખ માટે બે વ્યક્તિની નિમણુક થવી જોઈએ.

૩. રસોઈ :- રસોઈ ઢાંકેલી જગ્યામાં જ થવી જોઈએ અને જમવા માટે ઢાંકેલી જગ્યાનો જ ઉપયોગ કરવો જોઈએ. ઉઘાડામાં રસોઈ કરવી અને જમવી એ બન્ને અનુચિત છે તો ખ્યાલ રાખવો જોઈએ.

૪. દર્શન પૂજન :- યાત્રિકો દર્શન પૂજન કરવા જાય ત્યારે પહેલાં બે ત્રણ સ્વયંસેવક દેરાસરમાં જઈ જનારા અને આવનારા માટે અલગ - અલગ લાઈન લગાડી શાંતિથી દર્શન પૂજન કરી શકે એવી વ્યવસ્થા કરે અને યાત્રિકો પણ વિવેકને ન ભૂલી જાય એ ખ્યાલ રાખવો. વિવેક પૂર્વક ક્રિયા કરાય ત્યારે

જ અનેરો આનંદ મળે છે.

૫. વ્યવસ્થા :- સુવાની રહેવાની વ્યવસ્થા માટે, જે તીર્થમાં જવું હોય એના એક દિવસ પહેલાં વ્યવસ્થાપકોમાંની બે વ્યક્તિ જઈ ત્યાંના વ્યવસ્થાપકોને મળી ટ્રેનના ડબ્બાદીઠ યા બસદીઠ ધર્મશાળાઓના કમરાઓમાં નંબર લગાડી યાત્રિકોને દોડધામ ન કરવી પડે એ પ્રમાણે વ્યવસ્થા કરવી જોઈએ.

૬. તપસ્વીઓ માટે :- તપશ્ચર્યા કરનાર યાત્રિકો માટે ખાસ રહેવાની, સુવાની ખાવા પીવાની અને તેમને ધર્મારાધના માટેની સારામાં સારી વ્યવસ્થા રાખવી જોઈએ. સંઘના સ્થંભરૂપ તપસ્વી યાત્રિકો જ હોય છે એમનું ખાસ ધ્યાન રાખવું જોઈએ ને તેમનું બહુમાન સચવાય તે રીતે તેમની ભક્તિ કરવી જોઈએ તેના બદલે ગમે તે, ગમે ત્યારે ખાનાર યાત્રાળુઓની જ વ્યવસ્થા જળવાય છે અને તપસ્વીઓને તો એમને શું એ તો તપસ્વી છે એમને તો નહી મળશે તો પણ ચાલશે એમ કહી એમની ઉપેક્ષા થાય છે ત્યારે કહેવું પડે છે કે સંઘોમાં તપસ્વીઓનું કામ નહી માટે જ તપસ્વીઓની વ્યવસ્થા સારી રીતે થાય તો યાત્રાનો લાભ સારો મળે !

૭. ભોજન :- યાત્રિકોએ ટ્રેન, બસ કે છ'રી પાળતા સંઘમાં અભક્ષ્ય વસ્તુઓ પોતાના પૈસાથી લાવીને ખાવી બાળકોને ખવડાવવી અને રાત્રિભોજન કરવું એ બિલકુલ બંધ કરવું જોઈએ. પત્રિકાઓમાં છપાવેલ હોય છે કે અભક્ષ્ય વસ્તુઓ કંદમૂળાદિ અને રાત્રિભોજન સર્વથા બંધ છે પણ હમણાં સંઘોમાં એ સામાન્ય થઈ ગયું છે. તો આ સડો બિલકુલ બંધ થવો જોઈએ. જેમને રાત્રિભોજન અને કંદમૂળ વગર ન ચાલતું હોય એવાઓને યાત્રાસંઘમાં સામેલ જ ન કરવા જોઈએ.

૮. રસીદ :- યાત્રિકોએ દરેક તીર્થમાં અલગ - અલગ રૂપીયો બે રૂપીયા આપી અલગ - અલગ રસીદ લેવી તેમાં એ સંસ્થાના રસીદ દીઠ પચ્ચીસથી ત્રીસ પૈસાનો તો ખર્ચ થઈ જાય માટે એ તીર્થને ખોટા ખર્ચાથી બચાવવા ટ્રેનના ડબા દીઠ યા બસ દીઠ યા પોતાના ગામદીઠ રૂપીયા ભેગા કરી એક સાથે

લખાવાય તો તે ઉચિત થશે.

૯. સંઘપતિ :- સંઘ કાઢનાર ભાગ્યશાળીઓએ પોતે સંઘના નિયમોનું સંપૂર્ણ પાલન કરવું જોઈએ અને યાત્રિકોને એ નિયમોનું પાલન કરવા ફરજ પાડવી જોઈએ. કોઈની શેહમાં તણાયા સિવાય નિયમોનું ઉલ્લંઘન કરનારાઓને ચેતવણી આપવી અને નહી જ માને તો ઘરભેગા કરવા સુધીની વ્યવસ્થાપકોને સત્તા આપવી. તો જ તમે ખર્ચેલ લક્ષ્મીનો સદુપયોગ થયો ગણાશે. સંઘપતિ જ રાત્રે જમતાં હોય તે બીજાને કઈ રીતે નિવારી શકે ?

૧૦. સલાહ :- દરેક ધાર્મિક કાર્ય કરતી વખતે પરમ ઉપકારી ગુરૂદેવોની સલાહ લેવી અત્યંત જરૂરી છે એમની આજ્ઞાને અનુસરીને જ દરેક કાર્ય થાય તો જ એ કાર્યમાં સાચો લાભ થાય. (પુણ્યરૂપી) ગુરૂ આજ્ઞા પ્રમાણે કાર્ય કરનાર કરાવનાર અને એ પ્રમાણે ચાલનાર ત્રણેને ત્રણ રીતે ફાયદો થાય છે. વ્યવસ્થાપકો જો આજ્ઞા પ્રમાણે કાર્ય કરે તો જ આપેલ સમયનો સદુપયોગ થયો ગણાય યાત્રિકો પણ આજ્ઞા પ્રમાણે ચાલે તો જ ઘરબાર છોડીને નીકળ્યાનો ફાયદો મેળવે અને સંઘપતિ તો ત્રણ રીતે કરણ કરાવણ અને અનુમોદન એમ ત્રણ ગુણો લાભ મેળવે જો સર્વ સંઘને ગુરૂ આજ્ઞા પ્રમાણે જ ચલાવે તો.

૧૧. :- ટ્રેન, બસમાં યાત્રા કરાવનાર વ્યક્તિએ સંઘપતિની ક્રિયા ન જ કરવી જોઈએ. સંઘપતિ તો છ'રીપાલિત યાત્રા કરાવનાર જ ગણાય છે. ટ્રેન, બસમાં યાત્રા કરાવનારે "યાત્રા પ્રવાસ" શબ્દનો પ્રયોગ કરવો જોઈએ, 'સંઘ' શબ્દનો નહિં જ. બહુમાન યાત્રિકો કરે એ બરાબર છે.

(કલ્યાણ -૧૯૭૨)

સંઘ અને સંઘપતિ : એક પ્રસંગ

આજે જૈનસંઘમાં વરસોવરસ સંઘો ઠીક - ઠીક પ્રમાણમાં નીકળે છે, સંઘપતિઓ પણ ઘણા થાય છે, પણ ભૂતકાળના સંઘ અને સંઘપતિ જેવા વિરલા સંઘ અને સંઘપતિ ધોળે દહાડે દીવો લઈને શોધવા જઈએ, તોય મળે કે કેમ તે પ્રશ્ન છે ! જો કે ન જ મળે, એવું તે ન કહી શકાય. "બહુરત્ના વસુંધરા" છે, ખૂણે ખાંચકે એવા નીકળે પણ ખરા, પરંતુ એની સંખ્યા અલ્પ મળવાની !

આજથી લગભગ ૮૦૦ વર્ષ પૂર્વેનો એક પ્રસંગ છે. ગુજરાતના મહારાજા તરીકે વીરધવલ રાજવી હતા, તો તાજ વિનાના રાજા તરીકે વસ્તુપાળ અને તેજપાળની બાંધવબેલડી મંત્રીશ્વરના મુગટને ધારણ કરી રહી હતી.

રાજ્યક્ષેત્રે જેમ બંન્ને બંધુઓ બિનહરીફ હતા, તેમ ધર્મક્ષેત્રે પણ એમની સામે હામ ભીડવાની શક્તિ ધરાવનાર લગભગ કોઈ ન હતું, એ વીરસપૂતો રાજય પણ ચલાવી જાણતા તેમ ધર્મ પણ કરી જાણતા. ધર્મના ઘણા-ઘણા કાર્યો કરનારા વસ્તુપાળ અને તેજપાળે સંઘ કાઢવામાં પણ મોખરે હતા. જીંદગીમાં સાડાબાર સંઘ વસ્તુપાળ - તેજપાળ શ્રી સિદ્ધિગિરિજીના જ કાઢ્યા હતા. એમાંના જ એક સંઘનો આ પ્રસંગ છે:-

ખંભાતથી નીકળેલો સંઘ ગામે ગામ શાસન પ્રભાવના કરવા પૂર્વક સિદ્ધગિરિ તરફ આગળ વધી રહ્યો હતો, એક દિવસ એક નગરમાં શ્રી સંઘે પ્રવેશ કર્યો, પ્રવેશ બાદ એક બારોટે વસ્તુપાળ અને તેજપાળની ગુણપ્રશંસા કરતાં કહ્યું :

"ધન્ય હો ! વીર સપૂત વસ્તુપાળને ! જેમણે શ્રેષ્ઠ સંઘો કાઢીને સ્વદેશની શાન વધારી છે, ગુજરાતની ગૌરવગાથામાં એક સોનેરી પૃષ્ઠ ઉમેર્યું છે, અને ભારતની ભવ્યતામાં ભરતી આણી છે. જય હો વિજય હો ! સંઘપતિ વસ્તુપાળનો "!

બારોટની બિરૂદાવલીની છેલ્લી શબ્દપંક્તિ મંત્રીશ્વર વસ્તુપાળના કાને અથડાઈ, વસ્તુપાળની મુખમુદ્રા ગંભીર બની ગઈ ! એમના મુખના ભાવો

એકાએક પલટો ખાઈ ગયા. આમ વિચારી રહ્યા : અરે ! સંઘનો પતિ હું ? સરસ્વતીપુત્ર બારોટ આમ મારી અછતી ગુણપ્રશંસા કરે અને હું સાંભળી લઉ તે ન ચાલે સંઘનો હું તો સેવક છું, સંઘ મારો સ્વામી છે. આ વિચાર વલોણામાંથી એમણે જાતને જાગૃત કરીને તરત જ બારોટને સાદ દેતા કહ્યું : સરસ્વતી પુત્ર બારોટ ! આમ આવો ! આમ એકાએક શું બની ગયું, એનો ખ્યાલ ન આવતાં બારોટ ધ્રુજી ઉઠયો. બારોટને થયું કે, ચૌક્કસ વસ્તુપાળની બિરૂદાવલીમાં કંઈક મોટી ભૂલ થઈ હોવી જોઈએ. ધ્રુજતે શરીરે મંત્રીશ્વર વસ્તુપાળની પાસે જઈ હાથ જોડી ઉભો રહ્યો અને બોલ્યો :

"મંત્રીશ્વર ! માફ કરજો, સેવકની કંઈ ભૂલ હોય તો...."

વસ્તુપાળ બોલ્યો : હમણાં જ તમે સંઘપતિ વસ્તુપાળની જય બોલાવીને ?

"જી હા...." બારોટે ગભરાતાં ગભરાતાં કહ્યું :

"એમાં સંઘપતિ શબ્દનો અર્થ કયા સમાસથી કર્યો ?

ષષ્ઠી તત્પુરુષથી કે બ્રહુવ્રીહિથી ? સંઘપતિ શબ્દમાં બે શબ્દ છે. એક છે. સંઘ અને બીજો શબ્દ છે પતિ ! આ બે શબ્દ ભેગા મળીને એક સામાસિક શબ્દ બન્યો છે. એને બે રીતે છૂટો પાડી શકાય : સંઘનો જે છે પતિ, એવો અર્થ પહેલી રીતમાં નીકળે, જેને સંસ્કૃતમાં ષષ્ઠી તત્પુરુષ સમાસ કહેવાય છે. એનો અર્થ સ્પષ્ટ છે કે, સંઘનો હું પતિ, સંઘ મારો સેવક અને બીજી રીત છે સંઘ છે જેનો પતિ એ બ્રહુવ્રીહિ સમાસથી અર્થ થાય છે. આ બે રીતમાં તમે કઈ રીત ને સામે રાખી ને મારી જય બોલાવી છે ? ઓ સરસ્વતી પુત્ર ! જવાબ આપો!

બારોટ મૌન રહ્યો. વસ્તુપાળ આગળ બોલ્યા : જો "સંઘ છે પતિ જેનો" એ રીત અપનાવીને વસ્તુપાળની જય બોલાવી હોય તો હજી મને માન્ય છે, પણ સંઘના પતિ એવા વસ્તુપાળની તમે જય બોલાવી હોય, તો જરૂર તમે મારા ગુનેગાર છો ! કેમ કે પવિત્ર અને પૂજનીય સંઘ ક્યાં અને દોષોથી દબાયેલો હું વસ્તુપાળ કયાં ?

વધુ સ્પષ્ટતા કરતા વસ્તુપાળે કહ્યું :

સંઘ મારો સ્વામી છે, હું તો તેમનો સેવક છું.

સંઘ મારો પ્રધાન છે, હું તો સંઘનો પટાવાળો છું.

સંઘ મારા માથાનો મુગટ છે, આવા સંઘના પતિ બનવાનો મારો અધિકાર નથી. મારી જે કંઈ શોભા છે, તે બધી જ આ સંઘને આભારી છે....આમ, આ સંઘના ચરણ સેવક બનવાની પણ મારે લાયકાત મેળવવી પડે તેમ છે, ત્યાં એ સંઘના પતિ તરીકે મારી જય બોલાવવી એ કેટલું ભૂલ ભરેલું ગણાય ? માટે હવેથી ધ્યાન રાખજો કે, જય બોલાવો. તો સંઘની જ બોલાવજો, અને કદાચ મારી પણ જય બોલાવવી પડે, તો "સંઘ છે સ્વામી જેનો" એવા મારી જય બોલાવજો !"

વસ્તુપાળ મંત્રીશ્વરની અર્થ ગંભીર વાત સાંભળી ને આખોય સંઘ છક્ક થઈ ગયો : ધન્ય હો વસ્તુપાળને ! સંઘના સેવક બની રહેવાની કેવી લઘુતા ! ધન્ય...ધન્ય !

આ પ્રસંગનો બોધ આજે જો હૈયામાં સ્થિર અસર કરી જાય, તો આજના જૈનસંઘની અંદર કેટલેક સ્થાને યોગ્યતા મેળવ્યા વિના સંઘપ્રમુખ, સંઘપતિ, સંઘનાયક જેવા મહત્ત્વના અને માનનીય પદો માટે થતી પડાપડી અને હૂંસાતૂંસી અર્થહીન જણાયા વિના ન રહે !

સંઘ પ્રમુખ કે સંઘપતિના મેળાવડાઓમાં આજે એવા કેટલા સંઘ પ્રમુખો કે સંઘપતિઓ મળી આવે કે, જે પોતાને આવી રીતે સંઘના પતિ તરીકે ઓળખાવવાને બદલે, સંઘ છે પતિ જેનો, એવી પોતાની જાતને ઓળખાવે.

જૈનશાસને સંઘને જે સ્થાને મૂકવો છે, એ સ્થાન જો વિચારવામાં આવે, તો સંઘના સદા માટે સેવક જ રહેવાનું મન થયા વિના ન રહે, એવા સંઘપતિ સંઘના પતિ નહિ પણ સંઘને પતિ બનાવીને જીવે !

"કલ્યાણ ૧૯૯૨ મે"

સમજીને સુધારી લઈએ ! બાજી હજી હાથમાં છે !

પૂ. સાધુ - સાધ્વીજીના પૂતળા શો - કેશમાં રખાય ?

સાધુ થવાની ભાવનાવાળો હોય, તેનું જ નામ શ્રાવક. શ્રાવકને સાધુ થવાની ભાવના હોય જ. સાધુ થવાની અશક્તિ કે પ્રતિકૂળતાનાં યોગે જ તે ઘરમાં પડી રહ્યો હોય, ગાઢ ચારિત્રાવરણીય પાપકર્મના ઉદયથી સાધુ થવાની ભાવના પેદા ન થઈ હોય, તો પણ એને એનું દુઃખ જરૂર હોય. સાધુ થવાની ભાવનાને રોકનારૂં પાપકર્મ વહેલી તકે નાશ પામી જાય, જલદી ચારિત્ર ઉદયમાં આવી જાય. એવી ઈચ્છા અને એને માટેનો પ્રયત્ન તો હોય જ. *જેને સાધુ થવાની ભાવના નથી અને સાધુપણું ગમતું નથી, એને તો શ્રાવક કહેવાય જ નહિ.*

સાધુ થવાની ભાવનાવાળા અથવા તો એવી ભાવનાને પેદા કરવાની ઈચ્છાવાળા શ્રાવકો પોતાને રોજ સાધુપણું યાદ આવે, તે માટે પૂજ્યભાવથી દર્શન કરવાના ઈરાદે કાચના કે લાકડાના બારણાવાળા બંધ કબાટમાં પૂજ્ય સાધુ - સાધ્વીજી મહારાજના ઉપકરણો રાખે અને કબાટ ખોલીને સવાર બપોર સાંજ એમ દિવસમાં ત્રણ વાર દર્શન કરે એમાં વાંધો નથી. પણ ઘરની શોભા વધારવાના ઈરાદે, શોભા માટેની વસ્તુઓની જેમ, અથવા બાળકોને રમવાનાં રમકડાંની જેમ, શો કેસમાં રાખે તે જરાય યોગ્ય નથી. તે લાભ ને બદલે હાનિકારક બને છે. કારણ કે જે વસ્તુ સંસાર સાગર તરવા માટેની છે, તેનો ઉપયોગ ઘરની શોભા વધારવા માટે કરવાથી પૂ. ગુરુભગવંતોની અને એમનાં સંયમ ધર્મની આશાતના થાય છે. ચારિત્રાવરણીય કર્મ શિથિલ થવાને બદલે ગાઢ બને છે. આપણો સંસાર પ્રત્યેનો રાગ પુષ્ટ થાય છે, તેથી સંસારની વૃદ્ધિ થાય છે.

વર્તમાન કાળની દુનિયા દેખાદેખીમાં ડુબી રહી છે. એક અજ્ઞાન

માણસ ધર્મને નામે અધર્મ આચરે છે, ને તરત જ બીજાઓ એનું અનુકરણ કરવા લાગી જાય છે. હિત - અહિત, લાભ - હાનિ, સાર - અસાર આદિનો વિચાર એ અનુકરણ કરનારાઓ કદી કરતાં જ નથી. એમની વિવેકબુદ્ધિ વિનાશ પામી ગયેલી હોય છે.

હમણાં - હમણાં એકબીજાની દેખાદેખીથી પ્લાસ્ટીકનાં કે માટીનાં બનાવેલાં, પૂ. સાધુ - સાધ્વીનાં પૂતળાં શો - કેસમાં રાખવાનું શરૂ થયું છે. આમાં બહારથી ભલે ધર્મભાવના વ્યક્ત થતી હોય, પણ અંદરથી તો સંસાર ભાવના જ પુષ્ટ થતી હોય છે. પૂ. સાધુ - સાધ્વીજી મહારાજનાં પૂતળા શો - કેસમાં રાખવાથી એ દર્શનની ચીજ રહેતી નથી, પણ પ્રદર્શનની ચીજ બની જાય છે. એ શો - કેસમાં હોય, એથી વારંવાર એની સામે જોવાનું થાય છે. વારંવાર એની સામે જોવાથી આપણા આત્મામાં અનાદિકાલીન જે કુસંસ્કારો પડેલા છે, તેના બળે હાસ્યાદિ કુતૂહલો પેદા થવાનો પણ સંભવ છે. તેથી ગુરુભગવંતો પ્રત્યેના પૂજ્યભાવની હાનિ થાય છે. વળી આ વિષયમાં ખાસ નોંધપાત્ર બાબત એ છે કે, શાસ્ત્રમાં શ્રાવકને માટે ઘરમાં સાધુવેશ અને પ્રમાણસરનાં સંયમના ઉપકરણો રાખવાનું વિધાન છે, પણ સાધુનાં પૂતળાં રાખવાનું વિધાન ક્યાંય જોવા મળતું નથી.

માટે જેણે પોતાના હૃદયમાં શુભ ભાવ પેદા કરવો હોય, અશુભ કર્મોનો નાશ કરવો હોય અને જેને સાધુ થવાની ભાવના હોય તેણે આંધળું અનુકરણ કરીને પૂ. સાધુ - સાધ્વીજી મહારાજનાં પૂતળાં રાખવાને બદલે સાધુવેશ અને પ્રમાણસરનાં ઓઘાપાત્રાં વગેરે ચારિત્રના ઉપકરણો રાખવા જોઈએ, જે અવસરે મુનિ ભગવંતોને વહોરાવી પણ શકાય અને પોતાને સાધુ થવાની અનુકૂળતા થઈ જાય ત્યારે તરત જ ઉપયોગમાં પણ આવી જાય.

અચાનક સાધુપણું સ્વીકારવાની અનુકૂળતા થઈ જાય ને તરત જ તે તકને વધાવી લેવી હોય, ત્યારે ઘરની શોભા વધારવા માટે શો - કેસમાં પ્રદર્શનની ચીજવસ્તુઓની જેમ રાખેલાં રમકડાં જેવાં નાનકડાં ઓઘા - પાત્રાં

શું કામ લાગે ? તે જો શાસ્ત્રોકત માપ પ્રમાણેનાં રાખ્યાં હોય, તો જ અવસરે ઉપયોગી થઈ પડે. રમકડાં જેવા નાનાં ઓઘા - પાત્રાં ખપમાં તો આવે જ નહિ અને એનાથી આત્મિક દૃષ્ટિએ પણ લાભ થવાનો સંભવ ઘણો ઓછો રહે છે. કારણ કે એ દર્શનને બદલે પ્રદર્શનની ચીજ રૂપે રાખેલાં હોય છે. માટે આત્મકલ્યાણના અભિલાષી પુણ્યાત્માઓએ પ્રદર્શનને માટે સાધુનાં પૂતળાં નહિ પણ દર્શનને માટે સાધુનો વેશ જ રાખવો જોઈએ. રમકડાં જેવાં ઓઘા-પાત્રાં નહિ. શાસ્ત્રોકત માપ પ્રમાણેનાં જ ઓઘા - પાત્રા રાખવાં જોઈએ. પૂ. સાધુ - સાધ્વીજીના ફોટા ૧૮ અભિષેક કર્યા બાદ વંદનને યોગ્ય બને છે, ઉપકરણો આવી વિધિ વિનાય વંદનીય બને છે. આ કારણેય વંદન માટે પણ પૂ. સાધુ - સાધ્વીજીના પૂતળાં ન રાખી શકાય, એમ લાગે છે.

સાધુ -સાધ્વીજીના પૂતળાં રાખવાથી એ પડી જાય, તો તૂટી જવાની સંભાવના રહે છે. એ તૂટી જતા એને ફેંકી દેવા પડે, આમાં પૂજનીય - આકારની આશાતનાનો દોષ છે. વળી આ જાતના પૂતળાં સાથે રાખવાથી કોઈ અજૈનના મનમાં એવી પણ શંકા પેદા થવાની સંભાવના રહે છે કે, શું જૈનોના ગુરુય ઘરબારી હશે ? સાધુ અને સાધ્વીજીના પૂતળા સાથે જોવાથી આવી શંકા અજ્ઞાનીઓને થવી સહજ છે. આ કારણેય આ પ્રથા સારી નથી. સામાન્ય રીતે વિચાર કરતા આમ જણાય છે, આ વિચારણામાં કોઈ બાધ જણાય, તો પૂ. ગીતાર્થ - પુરુષોને ધ્યાન દોરવા વિનંતિ.

- દોષ સાચો હોય, એક નહીં અનેક દોષો હોય, કરોડો કૂટ–કપટ હોય તો પણ વિશ્વાસુના એ દોષો કે કપટ પ્રગટ ન કરાય. એ સાચા દોષો કે કૂડ–કપટોથી તમને કર્મ બંધ નથી. પરંતુ ગુમ રાખવાથી પૂર્વ કર્મનો ક્ષય થાય છે.

  (એની સંગતથી બચવું એ અલગ છે.)

ક્રોધ

નોકરના હાથમાંથી ચાનો કપ પડી ગયો એના પગે થોડા છાંટા ઉડયા અને નોકરનો પગ બળી ગયો. પણ શેઠના દસ રૂપિયાના કપે ક્રોધ પ્રગટાવ્યો. હરામજાદા. તને હજારવખત કીધું કે કામ કરતી વખતે ધ્યાન રાખ પણ તું કોઈનું સાંભળ તો જ નથી. આવી રીતે દસ - દસ રૂપિયાની નુકશાન કઈ રીતે સહી શકાય. આ વખતે તારા પગારમાંથી તે જેટલી નુકશાન કરી છે તે કાપી લેવામાં આવશે. ફોગટનો ખાઈ - ખાઈ ને પુષ્ટ બન્યો છે. પણ કામમાં ચિત્ત રાખતો નથી.

નોકરના પગે ફોલ્લા ઉઠી ગયા એટલી ચા એના પગ પર પડી. એનો કોઈ વિચાર શેઠના મસ્તિકમાં નહોતો. એ પોતાના પગને બતાવવા કે દવા લગાડવા ડોકટરને ત્યાં જવાની રજા માંગે છે. ત્યાં તો શેઠ ફરી તડુકે છે. હવે આટલા છાંટા ઉડયા એમાં આટલો બધો બરાડા કેમ પાડે છે. હમણાં થોડીવારમાં આરામ થઈ જશે. જા કામ કર ચાનો બીજો કપ લઈ આવ.

આ ઓડરે નોકરના મગજનો કાબુ ગયો અને એણે દર્દથી પીડાતા પગે પણ અંદર જઈને ચાનો કપ લાવી ગુસ્સા - ગુસ્સામાં શેઠના પગ પર બીજો કપ ઢોળી દીધો. શેઠ પગના દાઝવાથી વધારે આક્રોશમાં આવીને એણે નોકરને પકડી મારવા લાગ્યા. નોકરે પણ શેઠને બે ચાર તમાચા ચોડી દીધા. શેઠે ફોન કરી પુલીસ બોલાવી. શેઠ નોકર બંનેની ફરીયાદ લખાણી. પૈસાનું પાણી થયું. શેઠે નોકરની માર ખાધી. નોકરે ત્યાં છુટો થઈ બીજે નોકરી કરી. જોયું ક્રોધનું પરિણામ.

(ક્રોધના કારણે માનવ નરકાતિથિ બની જાય છે. તે વિચારવું.)

જયાનંદ

શાકાહારીઓ તંદુરસ્ત અને લાંબુ આયુષ્ય ભોગવે છે.

વેનીસ ઈટાલીના સુપ્રસિદ્ધ ડોકટર ગીતાન દ. મીકેલીસના જણાવ્યા પ્રમાણે શાકાહારીઓ વધારે લાંબુ અને તંદુરસ્ત જીવન ભોગવે છે. ઈંડા અને માંસ - મચ્છી ખાનાર વધારે બળવાન અને તંદુરસ્ત હોવાની માન્યતાને ડોકટર મીકેલીસને રદીયો આપ્યો હતો. ડોકટર મીલેનના કહેવા મુજબ ગુજરાતી ભોજન સર્વોત્તમ આહાર છે. કારણ કે તેમાં ઘઉનો આટો (રોટલી) પ્રોટીન યુકત શાક અને કાર્બોહાઈડ્રાઈડ યુક્ત ચોખા હોય છે. (૧૯/૬/૯૧ ટા. ઓ. ઈ.)

છ વરસનો ડોસો.....!

ઈ. સ. ૧૮૨૯માં જન્મેલો ચાર્લ્સ વર્થ નામનો છોકરો કુદરતની અદભૂત અજાયબી જેવો હતો. આ છોકરો જન્મ્યા પછી પેલા વાર્તાના રાજકુમારની જેમ દિવસે ના વધે એટલો રાતે અને રાતે ના વધે એટલો દિવસે વધવા લાગ્યો હતો. એ ચાર વરસનો થયો ત્યાં તો પૂરેપૂરો જવાન થઈ ગયો હતો. એને દાઢી અને મૂછ પણ ઊગી ગયા હતા.

લોકો આ ચાર વરસના જવાનને ઠેરઠેરથી જોવા આવતા હતા. એક જ વરસમાં તો ચાર્લ્સની દાઢી - મૂછના વાળ સફેદ થવા માંડયા. પછી એના ચહેરા પર કરચલીઓ પડવા માંડી. બીજા છ મહિનામાં તો ઘરડા માણસની જેમ એના હાથ - પગ ધ્રુજવા માંડયા હતા અને ચાલવા માટે એણે લાકડીનો ટેકો લેવો પડયો હતો.

છ વરસની ઉમર થઈ ત્યાં તો એ કમરેથી વાંકો વળી ગયો અને સિત્તેર વરસના ડોસા જેવો દેખાવા લાગ્યો હતો. સાત વરસની ઉમરે ચાર્લ્સ વર્ગ જાણે એંસી વરસનો થયો હોય એમ સાવ ઘરડો થઈને અવસાન પામ્યો હતો.

(પૂર્વ કર્મોના પરિણામો ભોગવવા જ પડે.) -રખેવાળ

ઘર-ઘરમાં એક આંખવાળા રાક્ષસનો વાસ !

-શ્રી દેવેન્દ્ર પટેલ

ટોમી નામનો એક છોકરો, એ ધીમેથી સંતાતો - છુપાતો પગથિયાં ચડી ઉપરના રૂમ તરફ સરકી રહ્યો. એણે એના પિતાની રીવોલ્વર પાછળ સંતાડી હતી. એ પોલીસમેનની રમત રમી રહ્યો હતો. ઉપરના રૂમમાં એના પિતા રોજની જેમ જ ટેલીવિઝન નિહાળી રહ્યા હતાં.

ટોમીએ એમની સામે ઊભા રહી કહ્યું : ડેડી ! હેન્ડસ અપ....જલ્દી કરો નહી તો શુટ કરી દઈશ.

ટોમીના પિતા ગભરાઈ ગયા. કારણ કે ટોમીના હાથમાં બુલેટ ભરેલી રીવોલ્વર હતી.

ટોમી હસી રહ્યો હતો, એણે પિતાની સામે રીવોલ્વર તાકીને ટ્રાઈટર દબાવી દીધું. એક જ સેકન્ડમાં એના પિતા સોફામાં જ ઢળી પડયા.

ટોમીને કાંઈ ખ્યાલ આવ્યો નહી. એણે જાણે કાંઈ બન્યું જ નથી, એમ માની એની મમ્મીને જઈ પૂછયું : મમ્મી ! ડેડી ટેલીવિઝન - પિકચરોની જેમ જલ્દી ઉભા થઈ જતાં કેમ નથી ?

ટોમી માત્ર પાંચ વર્ષનો હતો. ટી. વી. ફિલ્મો જોઈ પોલિસ - પોલિસની રમત રમતા એણે શું કરી નાખ્યું, એની એને ખબર નહોતી. અમેરિકાના પીટરબર્ગ નામના શહેરમાં ઘટેલી આ ઘટના છે.

હવે એક બીજો કિસ્સો.

જાન્યુઆરી ૧૯૮૩માં મલેયેશીયન અખબારોએ એક સમાચાર આપ્યા : "ચાર બાળકો મૃત્યુ માટે જ ઉડ્યા"

ઘટનાનો ઘટસ્ફોટ એવો હતો કે આ અત્યંત કુમળી વયના બાળકો ટી. વી. પર ઉડતા સુપરમેનની ફિલ્મો ખૂબ જોતાં હતા અને એક ઉંચા બીલ્ડીંગ પર જઈ તેમણે સુપરમેનની નકલ કરવા પ્રયાસ કર્યો હતો અને બધા જ મૃત્યુ

પામ્યા હતાં. ચાર બાળકો પાંચ વર્ષથી નીચેની વયના હતાં અને તે તમામે સુપરમેનના ચિત્રવાળા ટી - શર્ટ પહેરેલા હતાં.

ભારતમાં ટેલીવિઝન હજી નવું છે. પરંતુ ધીમે - ધીમે એના પ્રસારણનો વ્યાપ વધતો જાય છે. ત્યારે હવે ભવિષ્યમાં એ કેવા - કેવા પ્રશ્નો સર્જી જશે, એ બાળકોના વાલીઓએ અત્યારથી જ સમજી લેવાની જરૂર છે.

ટેલીવીઝન જ્યાં જૂનું થઈ ગયું છે, એવા દેશોમાં ટી. વી. ને "વીસમી સદીનું ઈલેકટ્રોનીક બેબી સીટર" કહે છે. બાળકને જ્યાં સાચવવા મૂકીને માતા - પિતા નોકરીએ જાય, તેને બેબી સીટીંગ કહે છે. હવે ટી. વી. પણ એક પ્રકારનું બેબી સીટર જ છે, એવા દેશોમાં નવી પેઢી માટે કેટલાક ખતરનાક પ્રશ્નો ઉભા થયા છે. ટી. વી. ના વ્યસની બાળકો ખાતા - ખાતા ટી. વી. નિહાળે છે, ને મારામારીના દૃશ્યો જોવામાં ગુલતાન બાળકો ખાવાનું પણ અડધું છોડી દેતા હોય છે, હોમવર્ક પૂરૂં કરતાં નથી. રાત્રે સરખું ઉઘતાં પણ નથી. પાશ્ચાત્ય દેશોમાં બાળક બહુ પજવણી કરતું હોય, ત્યારે મા એને લીવીંગ રૂમમાં ટી. વી. સામે બેસાડી દે છે.

આઈસલેન્ડના એક વિવેચકે લખ્યું છે કે, બાળકો માટે ટેલીવીઝનનું વ્યસન કેફી દ્રવ્યો જેટલું જ ખતરનાક છે.

જેમના ઘરમાં વિડિયો છે તે ઘરના બાળકો આ એક આંખના ભયાનક રાક્ષસ (ટેલીવીઝન) સામે હંમેશા કેદ રહે છે. મા - બાપ પણ બાળકોને આ કેદમાંથી મુક્ત કરાવવાને બદલે રોજ નવી - નવી કેસેટ લાવી આપે છે. નવા નવા ચિત્રો જોવાની બાળકની ભૂખ વધતી જાય છે, પછી બાપને ના પરવડે એટલે કેસેટસ લાવવાનું બંધ થાય અને બાળક છેવટે ચોરી કરતાં શીખે.

અમેરિકામાં એક સર્વેક્ષણ મુજબ કોલેજનો એક વિદ્યાર્થી ચાર વર્ષ સુધી એના કલાસરૂમમાં જેટલો સમય પસાર કરે છે, એના કરતાં પાંચ વર્ષનું બાળક ટી. વી. સામે વધુ સમય પસાર કરે છે. અમેરિકામાં સ્કુલનો વિદ્યાર્થી રોજ સરેરાશ છ કલાકને અગિયાર મિનિટ ટી. વી. જોવા માટે બેસી રહે છે,

એટલે કે સપ્તાહના લગભગ ૪૮ કલાક ટેલીવીઝન સાથે, મતલબ એ કે કલાસરૂમ કરતાં વધુ ટેલીવીઝન સાથે.

અમેરિકાની પબ્લીક બ્રોડકાસ્ટીંગ સર્વિસના એક લેખક રોબર્ટ મેકનીલ નોધે છે કે, જો તમે અમેરિકામાં વસો છો ને ટીપીકલ અમેરિકન છો, તો ૨૦ વર્ષની તમારી ઉમર સુધીમાં ૨૦ હજાર કલાક ટી. વી. સાથે પસાર કરી લીધા હશે. આ પેઢી ભણવાનું ને જિંદગીના બીજા અગત્યના કામો કરવાનું કેટલું બધું ગુમાવતી હશે ? પરિણામે અમેરિકન બાળકો વાંચનમાંથી રસ ગુમાવે છે. વાંચવા માટે એકાગ્રતા જોઈએ અને એ માનસિક શ્રમ કરવાની શક્તિ ટીપીકલ અમેરિકન બાળકોમાં ખીલતી જ નથી. એ બાળકો સ્હેજ મોટા થાય, એટલે જરા - જરામાં હતાશ થઈ જાય છે એવા બાળકો ખુલ્લામાં વિહાર કરવાને બદલે રોજની સાંજ આછા ઉજાસવાળા રૂમમાં ટેલી સામે જ પસાર કરી દે છે.

મનોવૈજ્ઞાનિકો કહે છે કે હિંસા સ્વયં જન્મતી નથી, પરંતુ એ તો શીખવામાં આવે છે.

અમેરિકન મનોવૈજ્ઞાનિક આલ્બર્ટ બાન્દુરાએ એક સરસ પ્રયોગ કર્યો હતો, એણે સવા મીટર લાંબી એક સરસ મજાની મોટી ઢીંગલી બનાવી, ત્યારબાદ બાળકોના બે જૂથ પાડયા. એક જૂથને મારામારીથી ભરપૂર આક્રમક એવી કલર ફીલ્મ દસ મિનીટ સુધી બતાવી. જ્યારે બીજા જૂથને એવા જ વર્તનવાળી પણ કાર્ટુન ફિલ્મ બતાવી પછી પહેલા જૂથને પેલી મોટી ઢીંગલી રમવા આપી. પહેલું જૂથ કે જેણે સીધી જ હિંસાત્મક ફિલ્મ જોઈહતી, એને ઢીંગલીની સાથે પણ એવું જ તોફાની વર્તન કર્યુ ને ઢીંગલીને ફેંટો મારવા માંડી. આશ્ચર્ય તો એ વાતનું હતું કે, બીજુ જૂથ કે જેણે હિંસાના જ વર્તનવાળી કાર્ટુન ફિલ્મ જોઈ હતી, તે બાળકોએ પણ એવું જ તોફાની વર્તન ઢીંગલી સાથે કર્યુ.

વૈજ્ઞાનિકો આ પ્રયોગ પરથી એવા તારણ પર આવ્યા કે, હિંસા અસલ હોય કે કાર્ટુન દ્વારા હોય, પણ દસ મિનિટની હિંસક ફિલ્મ બાળકોને તોફાની

વર્તન માટે ઉત્તેજીત કરવા પૂરતી છે.

અમેરિકાના આંકડા ચોંકાવનારા છે. અમેરિકામાં અનેક ચેનલો પર દિવસ - રાત ચાલતાં પ્રસારણને કારણે બાળક ૧૮ વર્ષનું થાય, ત્યાં સુધીમાં તે ૧૮ હજાર હત્યાઓ ટી. વી. પર નિહાળી ચૂક્યું હોય છે. બાળકો માટેના કાર્યક્રમોમાં પણ પ્રત્યેક કલાકે આઠ ઘટનાઓ હિંસાની હોય છે.

"બ્લીસ"નામના સામયિકમાં સ્વામી સંત સેવાદાસજીએ ભારે પરિશ્રમ બાદ રજુ કરેલ આ સર્વેક્ષણ દરેક વાલીએ સમજવા જેવું છે. કારણ કે આપણે ત્યાં પણ આવતી કાલે આ બધું આવવાનું જ છે. "સુબહ" દ્વારા આપણા દૂરદર્શને બાળકોને ઘણું જોખમી જ્ઞાન આપી જ દીધું છે, ત્યારે પ્રત્યેક ઘરમાં પડેલો આ એક આંખનો રાક્ષસ તમારા બાળકોને ભરખી ના જાય, તેની સાવચેતી અત્યારથી જ રાખવાની છે

(કલ્યાણ જુલાઈ - ઓગષ્ટ ૧૯૮૭)

૮૧૨૮ લીટરના ઘડા

જયપુરના મહારાજ ૧૯૦૨ની સાલમાં સમ્રાટ એડવર્ડના બાદશાહ બનવાના પ્રસંગમાં હાજરી આપવા માટે લંડન જવાના હતા. પોતાની આ લાંબી મુસાફરી દરમ્યાન એ ફકત ગંગાજળ પીવા માંગતા હતા. એટલા માટે એમણે ચાંદીના બે મોટા ઘડા બનાવ્યા. આ ઘડા પાંચ ફૂટ ત્રણ ઈંચ ઊચા છે અને એનો ઘેરાવો આઠ ફૂટ સવા ઈંચ છે. એનું કુલ વજન ૨૪૨ કિલો જેટલું છે. બન્નેમાં મળીને આઠ હજાર એકસો અઠયાવીસ લિટર પાણી સમાય છે. ગોવિંદ નારાયણ નામના સોનીએ આ બન્ને બનાવેલા તે ઘડા જયપુરના રાજમહેલમાં આજે પણ મૂકેલા છે. દુનિયાભરમાં ચાંદીના બનેલા એ મોટામાં મોટા ઘડા માનવામાં આવે છે. (પોતાની પવિત્રતા સાચવવી એ મુખ્ય છે)

-રખેવાળ

સૌન્દર્ય – ત્રિપુટી નષ્ટ થઈ રહી છે !

-શ્રી શાસ્ત્રી પાંડુરંગ વ. આઠવલે

સમાજમાં પ્રમાણિકતાનો લોપ થઈ રહ્યો છે, એ જ બતાવી આપે છે કે આજે માનસિક સૌન્દર્ય નષ્ટ થયું છે, આવી જ સ્થિતિ બૌદ્ધિક સૌન્દર્યની પણ છે.

શિક્ષણથી બાહ્ય ને આંતરિક બંને સૌન્દર્યો વધવાં જોઈએ. આજે મુંબઈ જેવી નગરીઓ બાહ્ય સૌંદર્યનાં ઐશ્વર્યથી ખીલી છે. એમ કહી શકાય! બાહ્ય સૌંદર્યની આવશ્યકતા આપણા મગજમાં બરાબર બેસી ગઈ છે. પણ અંતઃસૌંદર્યની આપણને બહુ સ્પષ્ટ કલ્પના નથી.

અંતઃસૌંદર્યના ત્રણ વિભાગ પાડી શકાય : માનસિક સૌંદર્ય, બૌદ્ધિક સૌંદર્ય અને આત્મિક સૌંદર્ય. જીવનને સુખી કરવા માનસિક સૌંદર્યની જરૂર છે. માનસિક સૌંદર્ય માટે બુદ્ધિનું સૌંદર્ય જરૂરી છે અને આત્મિક સૌંદર્ય તો અંતઃ સૌંદર્યની ટોચ છે. આત્મિક સૌંદર્ય વગર બધી જ સુંદરતા પ્રાણહીન અને નિસ્તેજ બની જાય છે. પરંતુ ઘણા દુઃખ સાથે કહેવું પડે છે કે, ચઢતી શ્રેણીનાં આ સૌંદર્યો આજના સમાજમાં પ્રાયઃ કયાંય દેખાતાં નથી !

આજે માનસિક જીવન તદ્દન કલુષિત અને વિકૃત થઈ ગયું છે. વ્યકિતસ્વાતંત્ર્ય વધવા છતાં માનસિક સૌંદર્ય વધ્યું નથી. ઊલટું ઘટયું છે. વ્યકિતસ્વાતંત્ર્યની આજે મર્યાદા છોડી છે. વ્યક્તિસ્વાતંત્ર્યની માફક લોભને પણ આજે સીમા રહી નથી. લોભી માણસ પ્રભાવી છે એવું ન સમજશો. તે તો દુર્બળ હોય છે. લોભ વિકૃત અંતઃ કરણમાંથી નિર્માણ થાય છે. આ લોભને લીધે આજે લગભગ આખો સમાજ વૈશ્યવૃત્તિનો થયો છે. પરિણામે આજે પ્રત્યેક વાતનું મૂલ્યાંકન ધન વડે થાય છે.

તો શું વૈશ્યવૃત્તિ ખરાબ છે ? લોભને પણ મર્યાદા તો હોવી જોઈએ. આવી વૈશ્યવૃત્તિ વેશ્યાવૃત્તિ બનીને જયારે વકરે ત્યારે કોઈને કોઈ પર પ્રેમ

રહેતો નથી; ત્યારે કુટુંબમાં છોકરાંઓનો માબાપ પર પ્રેમ રહેતો નથી. સાચું શિક્ષણ એવું હોવું જોઈએ, જેથી છોકરાંઓનો માબાપ પર પ્રેમ વધે. આજના શિક્ષણશાસ્ત્રીઓ આને પોતાના ક્ષેત્રનો વિષય ગણવા તૈયાર નથી. સમાજની ને શિક્ષણની આવી પરિસ્થિતિ જ લોકોએ કરી છે, તેમણે જ આના પરિણામ ભોગવવા તૈયાર રહેવું જોઈએ. આ પરિસ્થિતિને માટે જવાબદાર છે સમાજના કહેવાતા બુદ્ધિમાનો, સમાજસુધારકો અને શિક્ષણ શાસ્ત્રીઓ !

સમાજ કે કુટુંબ વચ્ચે એકનિષ્ઠ સંબંધ નથી. શિષ્યના ગુરૂ પ્રત્યેના પ્રેમ ને આદર ચાલ્યા ગયા છે. એમ જ ઉદ્યોગમાં માલિક ને કારીગર વચ્ચેની આત્મીયતા ને નિષ્ઠા પણ આજે ખલાસ થઈ ગઈ છે. આ બધાના મૂળમાં વિકૃત શિક્ષણ જ છે.

આજે સમાજમાંથી જ્ઞાનપૂજા ખલાસ થઈ ગઈ છે. ભણવાવાળા ને ભણાવવાવાળા બંને ને જીવનમાં જ્ઞાનનું મહત્ત્વ લાગતું નથી. આજે કહેવાતાં વિદ્યામંદિરોનો તોટો નથી. એમ તો બધાં વિદ્યામંદિરો ખીચોખીચ ભરેલાં પણ છે, એમાં શાબ્દિક ચર્ચાઓનો પણ પાર નથી. પણ આમાં જ્ઞાન માટેની સાચી લગની કયાંય દેખાતી નથી.

સ્વૈરાચારે નીતિનું પ્રામાણ્ય ઉડાવી દીધું છે. આજનું તત્ત્વ કાલના તત્ત્વને ખાઈ રહ્યું છે. જુની નિષ્ઠા ખલાસ થઈ ગઈ છે પણ તેની જગ્યાએ નવી નિષ્ઠા લાવવાની કોઈની તાકાત નથી. યાંત્રિક વિકાસમાં બધા જ યંત્રવત્ થઈગયા છે. *મશીન ચલાવતાં ન આવડે તો આજે નથી ચાલતું. પણ યોગ્ય રીતે રહેતાં ન આવડતું હોય તો ચાલે છે.* આવી પરિસ્થિતિમાં બુદ્ધિનો હ્રાસ જ થયો છે. બૌદ્ધિક અરાજકતા આવી ગઈ છે. સર્વત્ર સંશયવાદે ઘર કર્યુ છે. આમ બૌદ્ધિક સૌંદર્ય પણ ખલાસ થયું છે.

પ્રાચીન ભારતીય તપોવન - પદ્ધતિમાં જોવામાં આવતું કે શિક્ષણ શિક્ષા જેવું ન લાગતાં આનંદમય લાગે. જીવન સાથે સંબંધિત પ્રાણવાન - શિક્ષણ હોય તો જ આ બની શકે. આજે શિક્ષણમાં જીવન વિકાસની કોઈ

ધ્યેયનિષ્ઠા નથી. તેમાં તો ફકત ડિગ્રી મેળવવાની વૃત્તિ છે. જે શિક્ષણ લીધા પછી વધુ પૈસા મેળવવાનો વિચાર બધાને થાય છે. પરિણામે પાત્રતા વગર વિદ્યાર્થી ગમે તે ક્ષેત્રમાં જોડાઈ જાય છે. એવા નિષ્ફળ માણસો શિક્ષક બને તો તે શું આપી શકવાના ? કે તેમના તરફ આદર પણ શી રીતે નિર્માણ થવાનો?

તપોવન પદ્ધતિમાં ગુરૂ અને શિષ્ય બંને જ્ઞાનપરાયણ હતા, અને જ્ઞાન સેવા પરાયણ હતું. આજનું શિક્ષણ સેવા પરાયણ નથી. પણ સ્વાર્થપરાયણ છે. લોકોને ચૂસવા માટે છે. શિક્ષણ માનવતાને ફેંકી દે, જે ફકત અર્થનો વિચાર કરતાં જ શિખવાડે તેને કોણ શિક્ષણ કહેશે ? ભારતીયો આટલી નીચી કક્ષાએ કદી ઉતર્યા ન હતા. જ્ઞાનથી આત્મીયતા વધારવાની છે તે કલ્પના આજે ભાગ્યે જ કોઈને છે. પરિણામે બધાંનાં જીવન મૃતપ્રાય થઈગયાં છે. આજનો વિદ્યાર્થી ભણીને તૈયાર થયો કે તે આત્માની પ્રતિષ્ઠા ગુમાવી બેસે છે. તેમાં ત્યાગ કે સેવા વૃત્તિની કલ્પના નથી, નૈતિક વાતાવરણ નથી, સ્વધર્મનો અભ્યાસ નથી. આનું પરિણામ તો આત્મનાશ ને સર્વનાશમાં જ આવવાનું ને ?

યુનિવર્સ એટલે વિશ્વ. જેમાં યુનિવર્સની સમજણ ન અપાતી હોય તેને શી રીતે યુનિવર્સિટી કહેવાય ? જે શિક્ષણ યુનિવર્સ સાથેનો સંબંધ તોડે તેને યુનિવર્સિટીનું શિક્ષણ કેમ કહી શકાય ? યુનિવર્સિટીનું શિક્ષણ એટલે સારી સૃષ્ટિ સાથે જોડનારૂ અને તેના પર પ્રેમ પેદા કરનારૂં શિક્ષણ સાચા શિક્ષણથી સૃષ્ટિ પરનો પ્રેમ વધવો જોઈએ, માનવ - માનવ વચ્ચે આત્મીયતા વધવી જોઈએ, અને નિસર્ગ પર પણ પ્રેમ થવો જોઈએ. આજની પદ્ધતિથી ભણેલા માનવીનો પ્રાણી પર કે નિસર્ગ પર પ્રેમ વધતો નથી. ભણેલા લોકોએ દેશસેવા કે આવાં બીજા કોઈ પણ સારા કામો કર્યા હોય તેવા લોકોની સંખ્યા અત્યંત થોડી છે. અને તેમનામાં આપણા પ્રાચીન શિક્ષણ - સંસ્કારોનો જીવંત વારસો હતો.

કેટલાક લોકો કહે છે કે, શિક્ષકો શાળામાં ભણાવતા જ નથી અને પરીક્ષા આવે ત્યારે વિદ્યાર્થીના પિતાને બોલાવીને પોતાનું ટયુશન રાખવા કહે

છે. તેથી બાપ ટીકા કરે છે કે, આ માસ્તર તો ધંધો કરે છે. પરંતુ બાપ ભૂલી જાય છે કે તે પોતે, પણ છોકરાને ધંધાની દૃષ્ટિથી જ ભણવા મોકલે છે. જો પોતે ધંધાની દૃષ્ટિ રાખતો હોય તો પછી શિક્ષક પણ શા માટે ધંધાની દૃષ્ટિ ન રાખે? તેને દોષ કેમ દઈ શકાય ? આમ શિક્ષણ ધંધાકીય થયું છે અને સ્થિતિ એવી સર્જાઈ છે કે, વિદ્યાર્થી જ્ઞાન લેવા આવતો નથી અને શિક્ષક જ્ઞાન આપવા આવતો નથી આવી નિર્બળ અને નિસ્તેજ શિક્ષણ વ્યવસ્થામાંથી સિંહો કયાંથી નીકળે ? તેમાંથી તો બકરાઓ જ નીકળે.

સમાજ પણ આજે જ્ઞાનપરાયણ નથી. આજે શાળા તેમજ કોલેજોનાં બિલ્ડિગો પર "જ્ઞાનમંદિર" નાં પાટિયાં તો લગાડેલાં છે, પણ તેમની લગભગ દરેક સંસ્થામાં જ્ઞાન નથી મળતું, તેમને તો ફકત અર્થ પ્રાપ્તિનો જ ખ્યાલ હોય છે. શિક્ષણે માણસને હિમતવાન બનાવવો જોઈએ. પરંતુ આજના શિક્ષિત યુવાનો પાંચ - સાત વર્ષ કોલેજમાં શિક્ષણ મેળવી બહાર નીકળે છે ત્યારે રસ વગરના શેરડીના કૂચા જેવા થઈને બહાર નીકળે છે. અલબત્ત, તેમનામાં ઉન્મત્તતા જોવા મળે છે, પણ તેજસ્વિતા હોતી નથી.

જીવંત જીવન જીવવાને બદલે જેમાં દહાડા કાઢવાની વૃત્તિ નિર્માણ થાય, આવી આત્મનાશક શિક્ષણપદ્ધતિથી ફાયદો શો ? તેનો હેતુ શો ? છોકરાઓ ભણીને કમાશે અને છોકરીઓ ભણેલી હશે તો એને સારો વર મળશે આવી ક્ષુદ્રવૃત્તિ આજે બધે જોવા મળે છે. તમે સંતાનોને દૂધ પાશો પણ નિર્બળ વિચારોથી પાશો તો તેનાથી ક્ષુદ્રતા જ આવશે. પણ શુદ્ધ ને તેજસ્વી હેતુથી પાણી પણ પાશો તો પણ તેમના વિચારો દૃઢ થશે અને તેમનામાં તેજસ્વીતા આવશે.

સ્પેન્સર જેવા શિક્ષણશાસ્ત્રી કહે છે કે શિક્ષણથી કોઈ દિવસ માણસ મહાન થતો નથી. જે મહાન થઈ ગયા તે શિક્ષણથી મહાન નથી થયા, પણ જીવનના સંસ્કારથી થયા છે. મૂળ વાત એ છે કે માણસને જીવન જીવવાનું શિક્ષણ મળવું જોઈએ. આવું શિક્ષણ તો સદ્‌જીવનથી જ મળી શકે, આવું

શિક્ષણ મળે તો જીવનમાં માનસિક, બૌદ્ધિક અને આત્મિક સૌંદર્ય અને જેમાં બાહ્યસૌંદર્યની સાથે અંતઃસૌંદર્ય પણ હોય તેવા સુંદર જીવનનું નિર્માણ થાય.

(કલ્યાણ જાન્યુઆરી ૧૯૭૭)

અનાયાસ સમૃદ્ધ થવાનું ન વિચારો

પરિશ્રમ કર્યા વગર, અનાયાસ અપાર ધન મેળવવાની ઈચ્છા ઘણા લોકોમાં એવી રીતે ઉત્પન્ન થાય છે કે તેઓ ન જાણે કેવી - કેવી કલ્પનાઓના ઘોડા દોડાવે છે અને રાતોરાત માલા - માલ થઈ જવાના સ્વપ્ન જોતા રહે છે. ધન જીવન નિર્વાહ માટે જરૂરી છે, પરંતુ ઘણા લોકોને માટે આ નિર્વાહનો આધાર નહી રહેતા સાધ્ય જ થઈ જાય છે. આ પ્રલોભનમાં લોકો નૈતિક, અનૈતિક, ઉચિત, અનુચિત, અને વ્યાવહારિક, અવ્યાવહારિક ઉપાય કરતા જોવામાં આવે છે. જ્યારે તથ્ય એ પ્રામાણિત કરે છે કે જેણે પણ અનુચિત ધન ભેગું કરવાના યા પરિશ્રમ વગર ધનવાન બનાવાના પ્રયાસ કર્યા છે, તેને પાછળથી પસ્તાવો જ હાથ લાગ્યો છે. સાચી વાત તો એ છે કે જે પરિશ્રમ અને ઈમાનદારીથી કમાવામાં આવે છે તે જ ધન ફળે છે. તેમાં સ્થિરતા અને સત્પરિણામ ઉત્પન્ન કરાવવાની ક્ષમતા હોય છે, પરંતુ લોકો રાતો - રાત માલા - માલ બનવાના ચક્કરમાં વ્યર્થ પરેશાન થાય છે અને નુકશાન ભોગવે છે. આવી જાતના દિવા સ્વપ્ન જોઈને ધન મેળવવાના પ્રયાસોમાં સટ્ટો, જુગાર, લોટરીથી માંડી દાટેલા ખજાનાનો લાભ પણ સામેલ કરી શકાય છે.

અમેરિકામાં મિસિસિપ નદીના કિનારે ફેલાયેલું હોમોચિટો જંગલને સંસારનું સૌથી વધુ સુંદર જંગલ માનવામાં આવે છે. આ જંગલના એક ભાગમાં એક નાનું એવું ગામ "નેટચેજ" વસેલું છે. આ ગામથી લગભગ ૨૦ માઈલ દૂર રીડરબોય નામના ધનવાન ખેડૂતનું કૃષિ ફાર્મ છે. ફાર્મના ઉત્તર ભાગમાં મિસિસિપ નદીનો એક કીચડનો ડેલ્ટા છે. ડેલ્ટા પર ઉભા રહેવાથી ત્યાં એક જ બહુ મોટું કાંણુ દેખાય છે. બતાવવામાં આવે છે કે આ કાણું દિવસે - દિવસે

મોટું થતું જાય છે. કહેવાય છે કે આ કાંણામાં એક સાત ફૂટ પહોળો અને ચાર ફૂટ ઊચો ઘડો કીમતી રત્નો અને સોનાથી ભરેલો દટાયેલો છે. ત્યાં વસતા લગભગ બધા લોકોને ખબર છે. આટલો કીમતી ભંડાર છે એમ જાણીને કોનું મન નહી લલચાય ? પરંતુ કહે છે કે તેને મેળવવા માટે આજ સુધી જેટલા પ્રયાસ થયા છે તેમાંથી એક પણ સફળ થઈ શકયા નથી. તેને કાઢીને કોઈ પોતાના અધિકારમાં લઈ શકેલ નથી.

ગત દોઢ સો વર્ષોથી તેને મેળવવા માટે આજ સુધી જેટલા પણ પ્રયાસ થયા છે તે બધા જ અસફળ થયા છે. તેનું કારણ એ બતાવવામાં આવે છે કે તેના પર એક પ્રેતાત્મા ધામો નાંખી ને બેઠો છે અને તે, તેને કાઢવા માટે કરેલ બધા પ્રયત્નોને નિષ્ફળ કરી દે છે. રીડર બોવના પૂર્વજ આ ખજાનાને મેળવવા માટે ન જાણે કયારથી પ્રયત્ન કરતા આવ્યા છે. તેમણે આ ડેલ્ટાની પાસે એક મકાન પણ ખેતીની વ્યવસ્થા માટે બનાવ્યું હતું. પરંતુ થોડીક એવી ઘટનાઓ બની ગઈ કે રીડર બોવના પૂર્વજોએ એ જગ્યાએ ભૂતોનો વાસ છે તેમ સમજીને છોડી દીધું. ત્યારથી એ સ્થાન ખાલી જ પડયું. તે જગ્યાએ રહેવાનું તો ઠીક, પણ કોઈને જવાની પણ હિમ્મત થતી ન હતી.

અનેક વખત પ્રયાસ કર્યા અને નિષ્ફળ થયા બાદ ખજાનો કાઢવાનો પ્રયાસ એક રીતે છોડી જ દીધો હતો. પરંતુ રીડર બોવે સાહસ કરીને ફરીથી આ ખજાનો કાઢવાના પ્રયાસ શરૂ કર્યા. આ કામમાં પૂર્વજોએ રાખેલા નકશા ઘણા સહાયક થયા. તે આધારે રીડબોવે ડેલ્ટાની તે જગ્યામાં પ્રવેશ કર્યો અને પોતાના મિત્રો સાથે કીચડ હટાવવાનું કામ શરૂ કર્યુ. જેમ - જેમ કીચડ કાઢતા જતા તેમ - તેમ પગ કીચડમાં ખૂંપી જતા હતા. પરંતુ કીચડ હટાવવાનું કામ ચાલુ રાખ્યું. તે માટે પાવડા મારવામાં આવતા હતા તેવામાં એક પાવડો કોઈ ધાતુના એક વાસણ સાથે ટકારાયો અને ઠન્‌ન્‌ન્‌ અવાજ થયો. કીચડ હટાવીને જોયું તો ત્યાં લોઢાનો એક મોટો ઘડો હતો. તે ઘડામાં રાખેલા હીરાપન્નાની ચમકથી બોવની આંખો ચમકી ગઈ. ધાતુના ઢાંકણાથી ઘડો ખૂબ સખ્ત રીતે બંધ કરેલ હતો. તેને ખોલવાનું શકય ન હતું. જેથી એમ વિચારવામાં આવ્યું કે

આજુ - બાજુમાં કીચડ હટાવીને તેને ઉપર લાવીને બહાર કાઢવામાં આવે.

ઘડાને બહાર કાઢવા માટે આજુ - બાજુનો કીચડ હટાવવો જરૂરી હતો. પરંતુ જેવો કીચડ હટાવ્યો તેવો જ ઘડો નીચે કીચડમાં જવા લાગ્યો. એટલું જ નહી બોબ પોતે પણ કીચડમાં ફસાવા લાગ્યો. ખૂંપતા - ખૂંપતા બહુ ઊડો ખૂંપી ગયો. હવે તો તેનો પોતાનો જાન મુશ્કેલીમાં મુકાઈ ગયો સતત છ કલાક પરિશ્રમ પછી તે કીચડમાંથી બહાર નીકળી શકયો અને પછી ઘડાને બહાર કાડવાનો વિચાર જ માંડી વાળ્યો.

આ દાટેલા ધન માટે કહેવામાં આવે છે કે આ ધન કયારેક ડાકુઓએ લૂંટીને એકઠું કર્યુ અને જમીનમાં દાટી દીધું હતું. જુના જમાનામાં નેટચેજ અને ન્યૂ આલિશન્સ વચ્ચે એક પાંચ સો માઈલ લાંબી સડક હતી અને તેના પર સારો વ્યાપાર થતો હતો આ વિસ્તારમાં ઘણા ડાકુઓ હતા અને ખૂબ લૂંટફાટ કરતા હતા. આ ડાકૂઓના સરદાર લેફિટ, મેસિન, હાર્પ વગેરેમાંથી કોઈએ આ ધન એકઠું કરીને આ સુરક્ષિત જગ્યાએ દાટી દીધું. ત્યારે ત્યાં આવો કીચડ ન હતો. પાછળથી નદીનું પાણી ઝરવાથી કીચડ બની ગયો. ડાકૂ પકડાયા અને મરી ગયા તથા ધન જ્યાં ને ત્યાં દટાયેલું રહી ગયું. રીડર બોવના પૂર્વજોએ ખજાનાની પ્રચલિત માન્યતાના આધારે જ આ ક્ષેત્રને ખરીદી લીધું અને તે વખતથી જ એન્જીનીયર, કોન્ટ્રાકટર તથા બીજા કુશળ કારીગરો વખતો - વખત આ ધન કાઢવાની યોજના લઈને આવતા ગયા.

આ ખજાનામાંથી અમુક ટકાના ભાગીદાર બનાવવા માટે લેખિત એકરાર નામાના આધારે આ લોકોએ વિશાળ યંત્રો, અનેક મજુરો તથા વાંસવળી, દોરડા વગેરે સાધનોની સહાયતાથી તેને કાઢવાનો તન - તોડ પ્રયત્ન કર્યો પર અંતે નિષ્ફળતા જ મળતી. ગમે તેટલો પરિશ્રમ કરવામાં આવે પરંતુ ઘડો, વધુ ઊડો ઉતરી જતો તથા ખોદકામની જગ્યા પહેલાં કરતાં વધુ પહોળી થઈ જતી. આ ગોલ્ડ હોલ અમેરિકન બુદ્ધિ, કૌશલ અને ટેકનીકલ પુરુષાર્થને હજુ પણ ચેલેન્જ આપી રહેલ છે.

સન્ ૧૯૩૯માં આ ઘડાને બહાર કાઢવા માટે સૌથી મોટો પ્રયત્ન થયો. તે માટે મોટા બુલડોઝર મશીનોથી કીચડ હટાવવા તથા બાજુમાં રસ્તો બનાવવાના ઉપાય કરવા માટે એન્જીનીયરોની એક સમીતિ બનાવવામાં આવી અને આ યોજના ખૂબ ઉત્સાહથી શરૂ કરવામાં આવી. સામે રહેલો ઘડો કાઢનારના પુરૂષાર્થ ચેલેન્જ આપતો રહ્યો અને દરેક પ્રયાસ નિષ્ફળ થતા ગયા. ક્રેન લગાડીને જ્યારે ઘડાની ગરદન પકડીને બહાર કાઢવાનો પ્રયત્ન કરવામાં આવ્યો તો અકસ્માત એટલી ભયંકર વર્ષા થવા લાગી કે બુલેક અને સ્ટિકલોન, જેના નેતૃત્વમાં આ યોજના બનાવી અને ચાલુ કરવામાં આવી હતી તે બંને રત્નો ભરેલ ઘડો કાઢવાનો વિચાર પડતો મૂકીને પાછા આવ્યા. ત્યાર બાદ પણ ઘણા પ્રયત્નો કર્યા પરંતુ ઘડો પોતાની જગ્યાએથી એક તસુ પણ હટતો નથી.

કેપ્ટન કિડની ટુકડીએ અમેરિકામાં સમુદ્રી યાતાયાતમાં ભય ઉત્પન્ન કરી દીધો હતો. તે વખતે આંતરરાષ્ટ્રીય વ્યાપારનું એક માત્ર માધ્યમ પાળીના જહાજ હતા. કિડની ટુકડી કયું જહાજ, કેટલું ધન લઈને, કયા બંદરેથી લઈ કઈ જગ્યાએ જઈ રહેલ છે તેના શિકારમાં જ રહેતી. તેની ટુકડીમાં માત્ર સારા તરવૈયા જ હતા એટલું જ નહીં પરતું હથિયાર ચલાવવામાં કુશળ અને નિશાનબાજ, ગોળીબારમાં પારંગત પ્રવીણ ડાકુ પણ હતા. લૂંટનો માલ ટુકડીના બધા સદસ્ય વહેંચી લેતા હતા. કિડે જીવનમાં જેટલી પણ ધાડ પાડી તેનાથી તેના પાસે પ્રચુર સંપત્તિ એકઠી થઈ ગઈ. સુરક્ષાની દૃષ્ટિએ તેણે લૂંટેલી ધન સંપત્તિને સમુદ્ર કિનારે ઘણી જગ્યાએ લોઢાના ઘડા અને પેટીઓમાં બંધ કરીને દાટી દીધી. પ્રચુર સંપત્તિ લૂંટયા પછી પણ તે તેનો કાંઈ ઉપયોગ ન કરી શક્યો. કિડના સાથીઓના અનુમાન પ્રમાણે તે ખજાના એક સોથી વધુ જગ્યાએ દાટેલા હોવા જોઈએ અને તેમાં પ્રત્યેકમાં કરોડોની સંપત્તિ હોવી જોઈએ. આવા કેટલાક સ્થાનો લાંગ આઈલેડ સાઉન્ડનું ફશર્સ નામનું સ્થાન બેસ્ટ પોઈન્ટની પાસે હડસન ડાઈ લેન્ડસ, મનીહીલ, સ્ટોની બુક ઓલ્ડ લાઈમ, બેદર્સ ફીલ્ડની આસપાસ ન્યૂજરસી, હુક આઈલેન્ડ, કેલીદ્વીપ, રોડ

આઈલેન્ડ, મેસાચુસેટસના વિલિમગટન ડેલ્વિન ડેન, ન્યૂ હેમ્પશાયરના એટેરીમ ક્ષેત્રમાં, વુથ તથા હાવર્ટના આડલક હેરોન આઈલેન્ડ, ડ્રસ્ટેન મિલ્સની પાસે જ મનીહોલ્સ, ઓઈલ આઉટહાટ કેમની રોવ ઓલ્ડ આલ્ચર્ડ, પેનીલ્સ કાટ ક્ષેત્ર, કાસ્કોવેમાં ડિયટ ઓલ્ડ વગેરે ક્ષેત્રોમાં અરબોનો માલ દટાયેલો બતાવવામાં આવે છે. જે આજ સુધી ન તો કોઈના હાથમાં આવ્યો છે કે ન ભવિષ્યમાં હાથમાં આવે તેવી કોઈ સંભાવના છે.

પરિશ્રમ કર્યા વગર અનાયાસ ઘણું બધું ધન એકઠું કરવા માટે ભલે ડાકુઓ જેવું અનૈતિક આપરાધિક કામ ન કરતા હોય, પરંતુ એવું વિચારનારાની ખોટ નથી કે કયાંયથી દાટેલો ખજાનો મળી જાય, લોટરી લાગી જાય, બાપ - દાદાની કમાણી પર મોજશોખ કરવાની સગવડ મળી જાય, પોતાની ક્ષમતા વધારવા અને પુરુષાર્થ કરવાની ઝંઝટમાંથી બચીને સમૃદ્ધિની કેડીઓ શોધનારાને લગભગ નિષ્ફળતા જ મળે છે. એવી વાત નથી કે આ ઈચ્છાઓ પૂરી કરવા માટે કોઈ પરિશ્રમ ન કરવો પડે છે, મૂડી પણ ખર્ચવી પડે છે અને કષ્ટ પણ ભોગવવું પડે છે. પરંતુ નિષ્ફળતા જ મળે છે કારણ કે જે હથિયારનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે તે ખોટું હોય તો કદાચ એટલો જ પ્રયત્ન સ્વસ્થ ઉત્પાદન માટે કરવામાં આવ્યો હોત તો તેના કરતાં વધુ લાભ મળી શકયો હોત. દાટેલો ખજાનો મેળવવાની જેમ જ જુગાર, સટ્ટો, લોટરી વગેરે પણ આ શ્રેણીમાં આવે છે. આ કામોમાં હજારોમાંથી કોઈને જ કાંઈક મળતું હશે, નહી તો અધિકાંશ તો ખજાનો મેળવવા માટે લાળ ટપકાવતા રહી જાય છે. ખેર ? ન્યાય અને શ્રમથી મેળવેલ આવકમાં જ સંતુષ્ટ રહેવાનું શીખી લેવામાં આવે તો થોડી કમાણીમાં પણ પ્રચુર માત્રામાં સુખ - શાંતિ દરેકને સહેલાઈથી મળી શકે છે. જયારે મહેનત કર્યા વગર કાંઈક મેળવવાના લોભમાં લોકો કમાતા કાંઈ નથી, ગુમાવે જ અધિક છે. નિરાશા અને ખીજ હાથમાં આવે છે તે અલગ -યુગશક્તિ ગાયત્રી ઓકટોબર ૧૯૮૧

વિજ્ઞાનનું વિજ્ઞાન

-શ્રી મધુરમ

આજના વિજ્ઞાનની સમસ્ત સિદ્ધિઓ એ તો જૈનશાસનના સર્વજ્ઞના જ્ઞાન આગળ બિંદુ તુલ્ય પણ નથી. ખિચડી ચૂલા ઉપર ચડાવી હોય અને તેનો એક દાણો દબાવાથી આખી ખિચડી પાકી ગયાનો ખ્યાલ આવે છે. તેવી રીતે આજના વિજ્ઞાનની સિદ્ધિથી માધ્યસ્થ નાસ્તિકને પણ જૈનશાસનની સઘળી વાતો સર્વજ્ઞ પ્રણિત છે; તેવું કહ્યા વિના છૂટકો નથી. સર્વજ્ઞ શાસનની અશક્ય વાતો લાગતી હતી તે પણ બુદ્ધિ ચોકઠામાં હવે આવવા માંડી છે.

આજનું વિજ્ઞાન એ શોધકદશામાં કંઈ - કંઈ આગળ વધ્યું છે અરે ! કંઈક - કંઈક વનસ્પતિનું સંશોધન તેને કરી નાખ્યું છે; દેખીતી દુનિયાની દૃષ્ટિએ તે સંશોધનનું મેદાન મારી ગયો છે; પરંતુ તેના સંશોધન પાછળ અફસોસ ! દુનિયા ભોગવિલાસમાં આગળ વધી છે તેમાં લાખ્ખો કરોડો અબજો રૂપિયાનો વિનાશ કર્યો છે તે મારફત તેને વિલાસનો વિકાસ કર્યો છે.

જૈનશાસનના દશ કલ્પવૃક્ષોની વાત સાંભળતા ઠેકડી ઉડાવતાં હતાં. કંઈક - કંઈક બકવાદ કરતા હતા, કંઈક - કંઈક ભાંડણ નીતિ અપનાવતા હતા, પરંતુ આજની તેમની ભાંડણ નીતિ સામે ન છૂટકે કરફયું ઓર્ડર થાય તેવા સંશોધનો થઈ ચૂકયા છે. જૈનશાસનના સનાતન સત્ય સામે એક હરફ પણ ઉઠાવવાની તાકાત હવે રહી શકે તેમ નથી; સર્વજ્ઞ શાસનની સામે ગાળો ચિંધનાર પણ પરમાર્થ માર્ગને પામો....

જૈનશાસનમાં છ આરાની વ્યવસ્થા છે; એમાં શરૂઆતના ત્રણ આરામાં કલ્પવૃક્ષ હોય છે. યુગલિકોની દરેક પ્રકારની ઈચ્છા અને જરૂરિયાત પૂર્ણ કરનાર આ કલ્પવૃક્ષો છે. આ કલ્પવૃક્ષો જાતિય તરીકે વનસ્પતિ હોય છે; તે દેવાધિષ્ઠિત હોતા નથી, પણ સ્વભાવિક તેઓના પરિણામ તેવા હોય છે. વળી તેમાં યે અનેક પ્રતિભેદો હોય છે. અને તે પ્રતિભેદોવાળા પણ અનેક વૃક્ષો હોય

છે.

દશ કલ્પવૃક્ષો પૈકીના પહેલા કલ્પવૃક્ષનું નામ મત્તાંગ મધ્યાંગ કલ્પવૃક્ષ છે તે કલ્પવૃક્ષોના ફળો સ્વભાવથી ચંદ્રપ્રભા આદિ મદિરાના પીણાઓ સરખી તેમજ મધુર સ્નિગ્ધ આહ્લાદક ટેસપૂર્ણ રસવાળા હોય છે; એ ફળ ખાવાથી અહીંના શ્રેષ્ઠ ગણાતા પીણાઓ જેવા કે ગુલાબ, દાડમ, કેરી, અનાનસ, કોકોકોલના પીણા સરબત સરખા અનેક ઘણા રસવાળા, તબીયત ખુશ કરી નાખે તેવા પીણા એ ફળ વાપરવાથી મળી જાય છે. દશે પ્રકારના કલ્પવૃક્ષોથી યુગલિકો પોતાની ઈચ્છા મુજબની તૃપ્તિ પામી શકે છે.

આજના માનવને તેવા કલ્પવૃક્ષો મળે ક્યાંથી ? અસદ્ કલ્પનાથી તે કલ્પવૃક્ષો આવી જાય તો આ માનવ લોકની ઈચ્છાઓ ઉધઈના કીડાની જેમ શું સેંકડો ઈડાઓ ન મૂકે ? ચોમાસામાં અળશિયાની જેમ લોભની જ્વાળાઓ શું ફુટી ન નીકળે ? કહોને આ માનવ લોક ગાંડાની હોસ્પિટલ બની ન ચૂકે તો સારું ? કલ્પવૃક્ષ વિના વિશ્વયુદ્ધના ભણકારા વાગે છે, તો પછી તે કલ્પવૃક્ષ હોય તો આખું ભૂલોક લોહી હાડકાંથી મઢી જાય ને ?

યુગલિકોની ઈચ્છાઓ ખૂબ ઓછી હોય છે, તેમ તેની સુખની સામગ્રી વધારે હોય છે. પુણ્ય પાપ, અને ભકિત, છુપાવ્યા વધે છે તેમ ઈચ્છાઓને દાબવાથી કે તેની પ્રતિપક્ષી વસ્તુના મિલનથી સુખ વધે છે, અને ઈદ્રિયજન્ય ઈચ્છાઓની પૂર્તિ કરવાથી દુઃખ વધે છે.

આજે અમેરિકામાં એક એવું વૃક્ષ છે કે જે ગાયના દૂધને મલતું દૂધ આપે છે. જ્યારે તડકો ન પડતો હોય ત્યારે થડમાં ચોક્કસ જગ્યાએ છેદ પાડવાથી દૂધ નીકળવા માંડે છે. આ વાતને વૈજ્ઞાનિક સંશોધન કરીને બહાર પાડી છે.

યુગલિકના કલ્પવૃક્ષોની વાતને ફેંકોલોજી સમજનાર ઉપરોકત હકીકતથી વિજ્ઞાન વેરીગુડ વેરીગુડ કહે છે, અને જૈનશાસનની પ્રણિત વાતો પ્રત્યે અહો ઈતિ આશ્ચર્યમ્ પોકારતા, પરંતુ આજ સંશોધનના વિસ્તાર થયા

પછી સહુ કોઈને જૈનશાસનની ઈન્કલાબ છડી પોકારે જ છૂટકો....

બીજું ભૂતાગ કલ્પવૃક્ષ. ભૂ એટલે.....ભરવું ઈત્યાદિ ક્રિયામાં વપરાતા વૃક્ષો તે ભૂતાંગ કલ્પવૃક્ષ કહેવાય છે. આ કલ્પવૃક્ષોના ફળો યુગલિકોને ઘટ, કળશ, પાત્રી, ઝારી, તપેલા બંબો, ડોલ, ઈત્યાદિક અનેક પ્રકારની વાસણની સામગ્રીઓ અર્પે છે. પાછા તે વાસણ પણ સુવર્ણ આદિ ઉચ્ચ ધાતુના બનેલા હોય છે. તેમાં પણ આબુના દેલવાડા કરતા અત્યંત બારીક નકસી કામ હોય છે.

યુગલિકોને લોભ ન હોવાથી અહીંનાં મનુષ્ય લોકની માફક અનાજ ભેગું કરવાનું હોતું નથી. આજની માફક બીજાના લોહી ચૂસવા માટે સંગ્રહાખોરી કરવાની કોઈને ભાવના પણ થતી નહી, પરંતુ કોઈવાર કોઈક નાના પ્રયોજન માટે તેઓ તેનો ઉપયોગ કરતા હતા.

આ વૃક્ષના ફળો સ્વાભાવિક તે વાસણના આકારે પરિણામ પામેલા હોય છે. આજે માડાગાસ્કરમાં એક બીજુ પણ વિચિત્ર વૃક્ષ છે, આ વૃક્ષની ખાસિયત એ છે કે પોતાના પાંદડામાં તે પાણી ભરી રાખે છે, જ્યારે પાણીની તંગી હોય છે, ત્યારે ત્યાંના લોકો આ પાણીનો ઉપયોગ કરે છે. આ વૃક્ષ લગભગ ત્રીસ ફૂટનું હોય છે; અને તેના પાંદડા ચારથી છ ફૂટ લાંબા હોય છે. પાંદડાં નીચે ડીંચા આગળ કાણું પાડતાં ફુવારાની જેમ પાણી બહાર નીકળે છે. જૈનશાસનની વાસણ આપનાર કલ્પવૃક્ષોની વાત ન માનનારને આજના સામાન્ય વૃક્ષો પાણી તો આપે છે ! જૈનશાસનમાં તો કહ્યું છે કે ઘણા વૃક્ષો ઘણા પ્રકારના હોઈશકે છે; તેને તો પ્રત્યેક વનસ્પતિકાયની દશ લાખ, અને ચૌદ લાખ સાધારણ વનસ્પતિકાયની યોનિઓ કહી છે.

કનારી નામના ટાપુમાં હમેશાં પાણીની ખેંચ રહ્યા કરે છે; ત્યાં હાલ સરોવર કે નદી નથી. પરંતુ અમુક ઝાડ એવાં ઉગેલાં છે; તે ઝાડોમાંથી રાત્રે પાણી વરસ્યા કરે છે, અને તે લોકો આ પાણીનો ઉપયોગ કરે છે, શાસ્ત્રમાં જે કલ્પ વૃક્ષોની વાતો સર્વજ્ઞ પ્રણિત છે સર્વજ્ઞ વિહિત છે તેની સામે કોણ બાથ ભીડી

શકે તેમ છે !

આજના વિજ્ઞાનનો વિલાસ કાલે વણસી જાય છે, પરંતુ વીતરાગ પરમાત્માનું સર્વજ્ઞ સત્યાર્થ કદાપિ અસત્ય બની શકતું નથી. આજનું વિજ્ઞાન એ કાલે એકમ વિજ્ઞાની પાકતા ખોરૂં બની જશે. આજનું ચકચકાયમાન લાગતું વિજ્ઞાન એ કાલે માથે પછાડે તેવો વૈજ્ઞાનિક પાકતાં ભંગાર બની જશે; પરંતુ સર્વજ્ઞ શાસન એ તો સુવર્ણ છે ! સુવર્ણ કદાપિ ભંગાર બની શકતું નથી. કોઈ માણસ સુવર્ણને ભંગાર કહી વેચી મારે તો તેમાં તેને નુકસાન છે, ભૌતિકવાદી સર્વજ્ઞ શાસનને ભંગાર માને તો તેને ભંગાવાનું છે.

ત્રીજા ત્રુટિતાંગ કલ્પવૃક્ષના ફળો સ્વભાવથી જ વાજિંત્રોની ગરજ સારે છે, અર્થાત્ તેના ફળો સ્વભાવથી વાંસળી, હારમોનિયમ, પીયાનો, મૃદંગ ઈત્યાદિ અનેક પ્રકારના વાજિંત્રોની ગરજ સારે છે. આ ફળો સ્વભાવથી તે તે વાજિંત્રોના આકારના હોય છે.

વિજ્ઞાન કહે છે કે વર્તમાન પેરિસમાં એક એવું ઝાડ છે કે આ વૃક્ષના પાંદડામાં નાના અનેક કાણા હોય છે, અને એ કાણામાંથી હવા પસાર થવાથી તેમાંથી બંસી જેવો આહ્લાદક મીઠો મધુરો સ્વર નીકળે છે. આ પાંદડામાં કાણા પાડવાનું કામ ત્યાંના વૃક્ષમાં રહેલા કીડાઓ કરે છે. દેવલોકમાં હીરા માણેક અને રત્નોના તોરણ અથડાવાથી દેવલોકમાં ઓટોમેટીક સંગીત સંભળાય છે; તે વાત પણ આનાથી ફલિત થાય છે કે દેવલોકમાં મહાન પુન્યોદયના પ્રતાપે ઓટોમેટિક સંગીત હોઈ શકે છે. તેર કાઠીયા અને નવગ્રહ નડનારા માણસને જો આવા વૃક્ષો મળે તો પછી પુન્યશાલી દેવ અને યુગલિકોને શું કામ તેવા પ્રકારની સંગીત બક્ષનારી સામગ્રી ન હોય ? આપણે અનેક વાતો વિજ્ઞાનની માનીએ છીએ તો પછી વિશ્વપ્રેમ, વિશ્વમૈત્રી, વિશ્વ માધ્યસ્થના પરમાર્થને આપનાર જૈન શાસનના પરમાર્થ વિજ્ઞાનની વાતોને કોણ અપલાપ કરે ?

ચોથું જ્યોતિરંગ કલ્પવૃક્ષના ફળોનો પ્રકાશ સૂર્ય સરખો હોય છે. તે

પણ સૂર્ય સરખો ઉગ્ર નહીં; અનેક જ્યોતિકલ્પ વૃક્ષો હોવાથી એક બીજાનો પ્રકાશ એક બીજાના કલ્પવૃક્ષોમાં સંક્રાન્ત થયેલો હોય છે; જો કે દિવસના સૂર્ય હોવાથી તેમને જરૂર રહેતી નથી પણ રાત્રિ પણ આ કલ્પવૃક્ષોથી દિવસ જેવી લાગે છે.

પાંચમું દીપાંગ વૃક્ષ આ કલ્પવૃક્ષના ફળો સર્વોત્તમ દીવા સરખા તેજવાળા હોય છે. ઘરમાં દીવો પ્રકાશ કરે છે, તેમ દીપાંગવૃક્ષનાં ફળો પણ પ્રકાશ આપે છે; અગ્નિ તો તે ટાઈમે હોતો નથી તેથી આ વૃક્ષના ફળો પ્રકાશની ગરજ સારે છે.

હિમાલય પર્વત પર એક જગ્યાએ આજે એવા વૃક્ષો છે; તે રાતના રોશની પેદા કરે છે. તે રોશનીનો પ્રકાશ દૂર - દૂર સુધી સ્થાપેલો હોય છે, કર્મગ્રંથ ભણેલા તો માને છે કે આ ઉદ્યોત નામકર્મનો પ્રભાવ હોઈ શકે છે.....બાકી તો દેવોની કાંતિ અહીંના નોબલ પ્રાઈઝ મેળવનાર વિશ્વ સુંદરી કરતાં લાખ્ખો કરોડો ઘણી હોય છે; કદાચિત અહીંની વિશ્વસુંદરી દેવની ઇંદ્રાણી આગળ તો અમાવાસ્યાની અંધારી રાત જેવી લાગે.

વૈજ્ઞાનિકે સંશોધન કરીને કહ્યું છે કે; મેકસીકોમાં એક વૃક્ષ એવું છે કે, આ વૃક્ષ ત્યાંના વતની માટે સોય અને દોરો તૈયાર રાખે છે. આ વૃક્ષના એક પાંદડા પર એક સોય જેવો કાંટો હોય છે, તેને તોડવાની સાથે બે ફુટ લાંબો દોરો ખેંચાઈને આવે છે. ગમે તે હોય પરંતુ અલ્પ પુણ્યવાળા મનુષ્યો માટે આવી સામગ્રી હોઈ શકે તો; મહાન પુણ્યશાળી અને અલ્પ ઈચ્છાવાળા અને અલ્પ કષાયવાળા યુગલિકો માટે દશ પ્રકારના કલ્પવૃક્ષો ન હોઈ શકે શું ?

કલ્યાણ ફેબ્રુઆરી ૧૯૬૮

સમયનો પડકાર

-શ્રી મફતલાલ સંઘવી ડિસા

સાંસ્કૃતિક મૂલ્યોના હ્રાસની પ્રક્રિયા, છેલ્લો જીવલેણ ઘા ઝીકે તે પહેલાં સાવધાન બની જવાની જરૂર છે.

જૈનનું ઘર કે જે સંસ્કૃતિના મુખ્ય કેન્દ્રો પૈકીનું એક ગણાય, તેની હાલત તો જુઓ ?

આજે નથી ત્યાં મર્યાદા સચવાતી નથી ખાદ્યાખાદ્ય વિવેક જળવાતો. સ્ત્રી એના કેન્દ્રને છોડી દઈને, બહાર નિજ પ્રતિભા ફેલાવવાની આદતમાં અટવાતી જાય છે.

પાટલો માંડીને જમવાની પ્રથા મોટા શહેરોના કહેવાતા મોટા ઘરોમાંથી ઉજડી ગઈ છે. તેનું સ્થાન મેજ - ખુરસીએ લીધું છે. પછી બુટ યા ચંપલ પહેરીને જમવામાં હરકત પણ શી ?

ભોજન કયા આસને કેવા સ્થાનમાં બેસીને કેવા વાતાવરણ વચ્ચે કોના હાથનું જ થાય તે તત્સંબંધી માર્મિકવાતો, વખતના નકામા વાયરામાં તણાતી જાય છે.

પરદેશથી પાછા ફરેલા કેટલાક ભાઈ - બહેનો તો ઘરનું હોટલમાં રૂપાંતર કરવામાં ગૌરવ અનુભવે છે. પતનને આ રીતે બિરદાવનારાને આપણે "શિક્ષિત" કહીશું ?

રૂપનું ઢાંકણું લજ્જા તેમજ મર્યાદા.

ઉઘાડો અગ્નિ ઘરને પ્રજાળે, તેમ લજ્જા તેમજ મર્યાદા વગરનું રૂપ, અચૂક વિનાશક નીવડે.

રૂપનું પ્રદર્શન એ તો દેહભાવનો નર્યો વિકૃત ઓડકાર છે. જેની ભીતરમાં દુર્ગંધ સિવાય બીજું કાંઈ જ ન હોય.

પર પુરુષને પોતાનું રૂપ બતાવવાની મનોદશા કેવી ગણાય ?

પુરુષને પામરતા તેમજ પાશવતાથી બચાવી લેવા માટે પણ સ્ત્રીએ જાહેરમાં મર્યાદા ઓઢવી જ જોઈએ.

ઘરની દિવાલો ઉપરનાં ફોટા યા ચિત્રો એવાં તો ન જ જોઈએ કે જે કામપ્રેરક હોય, જેમાંથી વિલાસિતા ટપકતી હોય, જેમાં શૃંગારની મુખ્યતા હોય.

જમાનાના ઝેરી પવનના ઉન્માદક સુસવાટા જેવા પાને - પાને "સૂ - સ...." કરતા હોય છે તેવા અઠવાડિક, પાક્ષિક, માસિક યા દૈનિક પત્રોને પોતાના ઘરમાં વસાવવાં તે તો વિનાશને સપ્રેમ નોતરવાની ભયંકર બાળરમત છે.

હું તો ત્યાં સુધી કહીશ કે બાળકના હાથમાં ધગધગતો અંગારો મૂકવો સારો, પણ આજકાલ જે બિભત્સ, કામોત્તેજક, અશ્લીલ, વિકૃત, ભયાનક, પાપ પ્રેરક ઢગલાબંધ કુસાહિત્ય બહાર પડી રહ્યું છે, તેની એક નકલ તો શું પણ એનું એક પાનું પણ તેના હાથમાં ન મૂકશો.

ઈન્દ્રિયો તો ખપ્પર ધારિણી જોગણીઓ જેવી છે તેના ખપ્પરમાં તમે જેટલું હોમશો તેટલું બધું જ તે સ્વાહા કરી જશે અને જ્યારે તમારી પાસે તેમને સંતોષવા માટે કંઈ જ નહિ હોય ત્યારે તે તમને પણ "સ્વાહા" કરી જશે.

અનુભવ સિદ્ધ આ હકીકતથી કોઈ અજાણ નથી, પણ વકરતા જતા દેહભાવની પ્રબળ અસર તળે આપણા ભાઈ - બહેનો જીવનની અસલિયતને ભૂલતાં જાય છે.

વિકાર વધે તેમાં જીવનની પ્રગતિ જોવી એ લક્ષણ પશુનું ગણાય.

માનવીની પ્રગતિનો આધાર સંસ્કાર ઉપર છે. એ કેવા સંસ્કારો વડે જીવનને અલંકૃત કરે છે તેના ઉપર છે.

એક વખત મેં એક તારક ભગવંતને પૂછેલું કે, "સાહેબજી ! કાળ

આટલો બધો બદલાઈ ગયો તેનું કારણ શું ?''

જવાબમાં તેઓશ્રીએ મને જણાવ્યું કે, ''ભાઈ ! એક કાળે આ દેશમાં કોઈ પરધન અને પરસ્ત્રી સામે નજર સુદ્ધાં નહોતું કરતું, જ્યારે આજના કાળમાં આ બે જેટલાં જોખમમાં મૂકાયા છે તેટલું જોખમ કોઈ ત્રીજા પદાર્થ ઉપર જણાતું નથી. આ બદલાયેલી સ્થિતિની તમારે જે સંદર્ભમાં મૂલવણી યા ખતવણી કરવી હોય તે સંદર્ભમાં કરી શકો છો.''

પૂજ્યશ્રીના શાસ્ત્ર - સત્યશા આ શબ્દો મારા દિલમાં વસી ગયા, અને તેના ઉપર ચિતન કરતાં જમાનાના રંગરાગના નામે આપણા ઘરોમાં ઘૂસી ગયેલા રોગોનું કારણ પણ સમજાઈ ગયું.

ખૂબ ઊંડેથી વિચારતાં સ્પષ્ટપણે પ્રતીત થાય છે. કે ચાલુ પેઢીના ભાઈ - બહેનોને કપડાં - કેશ - કંગન - વિવિધ રંગના કંકુ તેમજ કાયાની લટપટનું જેટલું ''ઘેલું'' લાગ્યુ છે તેટલું જ ''ઘેલું'' તેમને આત્મ - સૌન્દર્યનું લગાડી શકાય તેવું વાતાવરણ વડીલોએ સ્વ આચાર દ્વારા જન્માવવું જોઈએ તેમજ સહિષ્ણુતા દ્વારા પોતાના સંતાનોને અંતર્મુખતા કેળવવી એ કેવી મઝાની કળા છે તે પણ સમજાવવું જોઈએ.

બગાડમાં કાંઈ બાકી નથી.

પણ નિરાશ થવાથી બાજી નહિ સુધરે.

આશા તેમજ શ્રદ્ધા સાથે આચારના દિવ્યબળને અજમાવતા રહીશું તો નવો બગાડ જરૂર અટકશે.

તેમજ આચાર પણ અનુકૂળ અસર કરતો ન જણાય ત્યાં સ્વચ્છતા સાચવીને શુભ ભાવનાના આંદોલનને કામે લગાડવા જોઈએ.

જે બગડે તે સુધરે પણ ખરો.

બગડેલાઓને બાદ કરીશું તો વધુ બરબાદ થઈશું.

ખરી ખૂબી બગડેલાને સુધારવામાં છે, એમાં જ આપણી સહિષ્ણુતાની

કસોટી છે. આપણને ધર્મ કેવો પચ્યો છે તે પણ તે પ્રસંગે આપણને પ્રતીત થશે.

સાગનો એક ટુકડો બહારથી નકામા જેવો થઈ ગએલો લાગતો હોય છતાં જો તે હોશિયાર સુથારને હાથ ચઢે તો તે ટુકડામાંથી પણ તે સુંદર નકશીદાર વસ્તુ નિર્માણ કરી દે

જરૂર છે બગડેલામાંથી "બગાડ" ને બાદ કરવાની, બગડેલા બધાને બાદ કરીશું તો આપણે "સારા" માં ખપીશું કે કેમ તે પણ ગંભીર સવાલ છે.

કરૂણાના વિષયભૂત જીવો તરફ કરૂણા દાખવવાને બદલે ક્રૂરતા દાખવનારા વીતરાગને ભજનારા ગણાય ખરા ?

સાંસ્કૃતિક મૂલ્યોનો હ્રાસ વકરતો સહિષ્ણુતા, અનુકંપા, કરૂણા, મૈત્રી, ઔદાર્ય, આદિ ગુણોના હ્રાસ સુધી ન વિસ્તરે તેની ખાસ તકેદારી રાખીશું તો હારની બાજીને જીતમાં પલટાવી દઈશું.

માંદાની માવજત થઈ શકતી હોય તો બગડેલાની સારવાર કેમ ન લઈ શકાય ?

વિશ્વકલ્યાણકર જૈનશાસનમાં તો જીવ માત્રના હિતની મહામૂલી સામગ્રી ઠાંસી - ઠાંસીને ભરેલી છે જ.

તે સામગ્રીનો વિવેકપૂર્ણ સદુપયોગ દ્વારા આપણે વિકારવશ ભાઈ - બહેનોને નિર્વિકારી જીવનના મંગલમય સ્વરૂપ તરફ આકર્ષવા જોઈએ

"આભ ફાટયું છે ત્યાં થીગડું કયાં દેવું ?" એમ બોલવું તે નર્યો નિરાશાવાદ છે.

આર્ત્તધ્યાન અતિ ભયાનક છે. એમ બોલનારા આપણા સહુની એ ફરજ છે કે, ધર્મધ્યાનમાં ઓતપ્રોત બનીને આપણા ભાઈ - બહેનોને ધર્મમય જીવનની પ્રેરણા પૂરી પાડીએ.

વંઠ્યાને વાડમાં નાખી શકાય પણ આ કહેવત જીવતા માણસને લાગુ ન પાડી શકાય

હૃદયને ગગન સમ વિશાળ બનાવાય.

ધૈર્ય ધરાનું ધારણ કરાય.

તો આજના ભયાનક વાતાવરણમાં ભયજનક હાલતમાં મૂકાએલા ભાઈ - બહેનો માટે આપણે જરૂર જીવનપ્રદ સાત્ત્વિક હવામાન પેદા કરી શકીએ.

બગાડનાં માત્ર રોદણાથી સુધારો નહિ થાય.

શ્રી વીતરાગ પરમાત્માની વાણીના અમૃતનું પાન કરનારા પ્રત્યેક પુણ્યાત્મા માટે જમાનાનું ઝેરી બનેલું વાતાવરણ પ્રબળ એક પડકાર રૂપ છે.

આ પડકારને જડબાતોડ જવાબ આપવાની ફરજ અદા કરીને આપણે આપણા વિશ્વ - સંબંધને યથાર્થ ઠેરવી શકીશું.

"પડતા કાળમાં બધુ આમ જ ચાલે" એવા મિથ્યા આશ્વાસનથી દિ" નહિ વળે.

પુરૂષ તેનું નામ જે પ્રતિકૂળતા સામે શતગુણા વેગથી ઝૂઝે
પ્રતિકૂળતાનાં રોદણાં કાયરને હોય.

કર્મસત્તાને પરાસ્ત કરનારી ધર્મ મહાસત્તાનો શરણાગત કેવો હોય, તેનો જવલંત દાખલો આ જગતમાં બેસાડવાની જે સોનેરી તક સાંપડી છે તેને વધાવી લઈને આપણે શ્રી જૈનશાસનની ત્રિભુવન ક્ષેમંકર ક્ષમતાને દીપાવીએ

સુઘોષા. એપ્રિલ ૧૯૭૮

● સળગતા સંસાર માંથી ધીરે-ધીરે બહાર નીકળવાનું ન હોય, કુદકો જ મારવાનો હોય.

-ધર્મદૂત મે-જૂન-૨૦૪૮.

નિંદારસથી સાવધ રહો !

-શ્રી મોહનલાલ મહેતા

પોતાના જીવનમાં શું કે જાહેર જીવનમાં શું કુટુંબમાં શું કે સમાજમાં શું અનેક વિખવાદો અને રાગદ્વેષોને જન્મ આપનાર પ્રબળ તત્ત્વ હોય તો તે નિંદા છે. માણસની સ્વાર્થલાલસા પણ નિંદાના પ્રમાણમાં રાગદ્વેષની ભરતી નથી ચડાવી શકતી. નિંદાનું જોર નજરે દેખાતું નથી. પરંતુ જે ઉખેડવાને પ્રચંડ વાવાઝોડાં જેવી અથડામણ નિષ્ફળ નીવડે છે તે ઉખેડવાનું કાર્ય નિંદાના ગુપ્ત પ્રવાહથી આબાદ રીતે પાર પાડી શકે છે. નિંદા છાનું અને ધીમું ઝેર છે.

બીજી બાજુ જોઈએ તો મગતરા જેવા માનવીઓથી માંડીને ઉન્નત સ્થાન ઉપર બેઠેલાને "મહાપુરુષ" તરીકે ઓળખાતા માણસોને પણ આકર્ષે એવો રસ પણ આ નિંદા છે. સાતેયસૃષ્ટિમાં કે સ્વાદની સૃષ્ટિમાં જેટલા રસોનું વર્ણન છે તે બધા રસો નિંદારસ પાસે તુચ્છ છે. તમે વીર, શૃંગાર, કરૂણ, કોઈ પણ રસથી અમુક માણસને ન આકર્ષી શકો; પરંતુ તેની પાસે સહજ ભાવે કોઈની છાની વાતો જાહેર કરો કે સાંભળનાર અભિમુખ બન્યો જ છે ! બીજાની વાત સાંભળવાનો રસ છોડી શકે એવી તો કોઈ વિરલ વ્યક્તિ જ આપણને મળશે.

સામાન્ય વાત અને નિંદા બંને એક જ વસ્તુ નથી. પરંતુ એ બંનેની ભેદરેખા અતિ પાતળી છે અને તે આપણા અંતરમાં જ દોરાયેલી હોય છે. આપણે જાગ્રત અને મંથનશીલ ન હોઈએ તો ઘોર નિંદા પણ આપણને "સામાન્ય" વાત લાગે તેવો સંભવ છે. આપણી પ્રકૃતિ બીજાઓની વાતમાં નિરર્થક પણ રસ લેવાની હોય અને એ દ્વારા આપણે માની લીધેલું હિત સંધાતું હોય તો આપણાથી સહજ ભાવે બીજાની નિંદા થયા કરે છે. એવી નિંદા કરતાં આપણને કોઈ રોકે અથવા એવું ભાન કરાવે કે આપણે નિંદા કરીએ છીએ તો એ સાંભળીને રોષ પણ ઉપજે.

સામાન્ય તથા ખાનગી વાતચીતમાં બીજાની પ્રશંસા સાંભળવાના ને

નિંદા સાંભળવાના પ્રસંગો આપણને કેટકેટલા પ્રમાણમાં પ્રાપ્ત થાય છે એનો જો અંદાજ કાઢીશું તો સ્પષ્ટ રીતે સમજાશે કે નિંદા પાસે બિચારી પ્રશંસા તો હિમાલય પાસે રજકણના પ્રમાણમાં જ હસ્તી ધરાવે છે. આ સ્થિતિમાં દેખાતી "સામાન્ય" વાતમાં નિંદા હોવાનો સંભવ કેટલો વિશેષ છે ?

છતાંયે આપણે પરીક્ષા કરીએ. કોઈની જાણેલી કે સાંભળેલી વાત બીજાને કહેવાનું આપણને મન થાય છે ખરું ? જો થતું હોય તો મનને પૂછીએ કે આટલી ઉત્સુકતા શા માટે ? એ વાત કહીને કોનું ને કેવા પ્રકારનું હિત સાધવું છે ? મનનું પૃથક્કરણ કરતા જણાશે કે, એ વાત આપણા મનમાં જ પડી રહે તેથી કોઈને નુકશાન થવાનુ નથી અને કોઈનું ભલું થતું અટકી જવાનું નથી.

આમ છતાં આપણે એ વાત કોઈને કોઈ પાસે પ્રગટ કર્યા સિવાય રહી શકતા જ નથી. મનમાં પડેલી એ વાત જ્યાં સુધી બહાર ન નીકળે ત્યાં સુધી આપણને જાણે શાંતિ જ નથી ! આપણે જ્યારે એ વાત સાંભળી હોય, ત્યારે તેની સચ્ચાઈ વિશે આપણા મનની પ્રતીતિ ન થઈ હોય તોયે બીજાની પાસે તો તેને સંપૂર્ણ સત્યના રૂપમાં જ રજુ કરીએ છીએ અને જાણતાં - અજાણતાં એ રજુઆતમાં ખૂટતી કડીઓ આપણી પોતાની કલ્પનાથી આપણે જોડી દઈએ છીએ. કોઈપણ છાની વાત એક થી બીજે કાને જતાં ઘેરો રંગ પકડે છે. તે જ્યારે અનેક મુખેથી એ સમાજમાં પ્રસરે છે ત્યારે તેનો મૂળ રંગ લગભગ નાશ પામી ગયો હોય છે, ને સમાજના માનસના પ્રતિબિંબરૂપ અતિ કાળો રંગ એ છાની વાતે ધારણ કરી લીધો હોય છે.

શા માટે આમ બને છે ? શા માટે માણસ નિંદા કરવા ને સાંભળવા લલચાય છે ? શા માટે નિંદાને અટકાવનારું કોઈ બળ ઊભું થતું નથી ?

નિંદા કરનાર ને સાંભળનાર એક જ પ્રકારની વૃત્તિના ગુલામ હોય છે. કોઈ હોશિયાર માણસ નિંદા કરવા કરતા સાંભળે છે વિશેષ અને પોતે કહે છે ત્યારે બહુ સંભાળપૂર્વક બોલે છે. માણસમાં નિંદાની વૃત્તિ ન હોય અને તેમાં જે પાપ મનાતો હોય તે તો નિંદા કરે નહિ, તેમ સાંભળે પણ નહિ. જો સૂક્ષ્મ

રીતે જોઈએ તો આ બાબતમાં કરનાર ને સાંભળનાર સરખા જ ગુનેગાર છે. અમુક દાખલામાં ઈચ્છા ન હોય છતાં કોઈની નિંદા સાંભળી લેવાની સ્થિતિમાં માણસ મુકાઈ જાય છે. પરંતુ મોટે ભાગે તો નિંદા સાંભળનારો બોલનારને પોતાના મુખભાવથી કે અમુક શબ્દોથી ટેકો આપી ઉત્તેજે છે. આવા દાખલામાં કહેનાર કરતાયે સાંભળનાર વધુ દુષ્ટ અને વધુ નિંદા પ્રિય હોવાનો સંભવ છે.

કોઈવાર નિંદા આપણા પાપ આડેનો પડદો બને છે, જે ખામી આપણામાં હોય તે સતત બીજામાં બતાવ્યા જ કરીએ ને તેની સાબિતીઓ પણ આપીએ તો લોકોનું ધ્યાન બીજી બાજુ દોરવાય છે અને આપણે સલામત બની જઈએ છીએ. આ સલામતી કેટલો કાળ ટકે છે એ પ્રશ્ન જુદો છે, પણ બીજાની નિંદા કરવાનું જોર તો એમાંથી જ પેદા થાય છે.

નિંદારસમાંથી મુક્ત થવાના સ્થુળ નિયમોમાં સૌથી અગત્યનું સ્થાન ઓછું બોલવાને મળી શકે. જો આપણે બહુ ઓછુ બોલવાની ટેવ પાડીએ તો આપણાથી આપો આપ બીજાની નિંદા થતી અટકી જશે. બીજા પાસેથી કોઈની નિંદા સાંભળવા મળે, ત્યારે જો ઉત્તેજન આપવાનું આપણે બંધ કરીશું તો તેનો ઉત્સાહ ઓછો થઈ જશે. જો હિંમત હોય તો નિંદકને બોલતા રોકીએ. એવી હિંમત ન હોય અથવા એમ કરવું યોગ્ય ન લાગતું હોય તો એ વિષે નિર્લેપ રહીએ ને આપણા દોષો સંભારીએ તો નિંદાનો રસ માર્યો જશે. વ્યક્તિ ને સમાજનું મૂળ કોરી ખાતા નિંદાના પાપમાંથી આપણે ઊભરવું જોઈએ.

નિંદા ને પ્રશંસા કરનારાઓ કરતા શત્રુઓને મિત્રોનું પ્રમાણ હમેશ ઘણું ઓછું હોય છે તે ધ્યાનમાં રાખવું. નિંદા - પ્રશંસાથી અલિપ્ત રહી જે પોતાના કર્તવ્યકર્મોમાં પ્રવૃત્ત રહી શકે તે તો અસાધારણ શકિત ને મનની સ્વસ્થતા ધરાવે છે. એમ માનવું. પરંતુ જેમના મન ઉપર નિંદા પ્રશંસાની અસર પડતી હોય તેમણે એ ધ્યાનમાં રાખવું કે જ્યાં નિંદા થાય ત્યાં વિરોધ કે અંતરાય હોય જ અને પ્રશંસા સંભળાય ત્યાં આપણે માટે જણાય કે સહાનુભૂતિ પડી જ હોય એમ બનતું નથી.

સામાન્ય માનવીનું જીવન નિંદા - પ્રશંસાના પ્રવાહોમાં વધુ પ્રમાણમાં ખેચાતું દેખાય છે. ઘણા માણસો નિંદા સાંભળતા જ હિંમત હારી જાય છે. એમ પણ વિચારતા નથી કે કરનારની સામાજિક દૃષ્ટિએ યોગ્યતા કેટલી છે ? કેટલા લોકો તેનું કહ્યું માનવાના છે ? નિંદા કરવા જેવો તેનો અધિકાર છે કે નહિ ? નિંદાથી ડરવું એ નબળા મનની અને પોતાના કાર્ય પ્રત્યે અવિશ્વાસની પણ એક નિશાની છે. છતાં ચિત્તપ્રવૃત્તિઓનું પૃથક્કરણ કરતાં એમ લાગે છે કે નિંદા સાંભળતી વખતે માણસના મનમાં અપ્રગટ રીતે એમ થઈ આવે છે કે નિંદા કરનાર માણસ તેનો વિરોધી છે ને કામ બગાડયા વિના તે રહેશે જ નહિ. ઘણીવાર તો એક નિંદકમાં અનેકના દર્શન કરવા જેવી નબળાઈ પણ માણસમાં આવી જાય છે. જેમ ભયભીત માણસ દોરીમાં સાપને, ઝાડમાં ભૂતપ્રેતને અને માંદગીમાં મૃત્યુને જુએ છે. તેમ, નિર્બળ મનના માનવી એક કે બે ચાર માણસમાં આખા સમાજની કલ્પના કરી નાખે છે.

કપડા - ભોજન જેવી સામાન્ય બાબતથી માંડીને જીવનને ગંભીર રીતે સ્પર્શતી બાબતોમાં માણસ બીજાઓના અભિપ્રાયને વધુ પડતું વજન આપે છે. સાચી રીતે જોઈએ તો આ બધાની પાછળ ડર હોય છે. વિરોધનો, અંતરાયનો, દુશ્મનાવટનો, માણસ નિંદા સાંભળીને એમ માની લે છે કે નિંદા કરનાર સાંભળનારને એમાં રસ લેનાર હવે ડગલે ને પગલે તેના માર્ગમાં મુશ્કેલીઓ ઉભી કરશે. આવા ભયથી તે ઘણીવાર પોતાનું કામ છોડી દે છે, બદલાવી નાંખે છે અથવા ઘીમું પાડી દે છે. વિરોધીઓ અને દુશ્મનો નિંદા કરે જ નહિ એમ કહેવાનો આશય નથી, પરંતુ નિંદકોનો એક સમૂહ લઈએ તો તેમાં આપણા માર્ગમાં મુસીબતો ઊભી કરે અથવા તો આપણને ઉખેડી નાખવા ઈચ્છે એવા લોકોનું પ્રમાણ અતિ અલ્પ જ હશે. મોટા ભાગના લોકો હલકા પ્રકારનો આનંદ માણવા કે પોતાને સારા દેખાડવા જ એ પ્રવૃત્તિ કરતા હોય છે. બહુ થોડા લોકોનો ઈરાદો બીજાની નજરમાં આપણને ઉતારી પાડવાનો હોય છે ને અતિ જુજ માણસો જ સાચોસાચ વિરોધી હોય છે.

એવું જ પ્રશંસાનું છે. આપણી પ્રશંસા કરનારાઓમાંથી કેટલાક લોકો તદ્દન સહજ રીતે કોઈનું સારું કામ પ્રશંસાને પાત્ર ગણાય એવું લાગણીપૂર્વક માનનારા હશે. કેટલાકને એમાં પોતાના આચાર કે વિચારનું પ્રતિબિંબ દેખાતું હશે. કેટલાક આપણા પ્રીતિપાત્ર બનવા અથવા તો સારું લગાડવા માટે પ્રશંસા કરતા હશે. જેમ દુશ્મનો પણ નિંદા કરે તેમ દોસ્તો પણ પ્રશંસા કરે. પરંતુ તેમની સંખ્યા નિંદકોને પ્રસંશકોની કુલ સંખ્યાની સરખામણીમાં તો હમેશાં અતિશય ઓછી જ રહેવાની.

સામાન્ય રીતે પ્રશંસા સાંભળતા માણસમાં અભિમાન પ્રગટે છે અને તેમાંથી બેદરકારી જન્મે છે. આ ભયસ્થાનની જોડે, પ્રશંસાની સાથે મિત્રતાનો જે ભ્રમ પેદા થાય છે તેને પણ ધ્યાનમાં લેવાની જરૂર છે. આપણે એમ સ્વીકારી લઈએ છીએ કે જેઓ આપણું કામ પસંદ કરે છે, તેઓ તેમાં સીધી - આડકતરી રીતે સહાયરૂપ પણ થશે. આપણને એ ધ્યાનમાં રહેતું નથી કે પ્રશંસા કરવામાં થોડા મધુર શબ્દો ઉચ્ચારવાના હોય છે. એ શબ્દો અંતરના હોય તો તેની કિંમત છે ખરી પરંતુ સહાયમાં તો ત્યાગ ને પરિશ્રમની જરૂર પડે છે. હૃદયમાં તો આપણા કે આપણા કામ પ્રત્યે મમતા પેદા ન થાય તો ત્યાગ-પરિશ્રમની લાગણી પેદા થઈ શકે નહિ. સામાન્ય પ્રશંસા કરતાં આ સ્થિતિ ઘણી દૂરની છે ને તેમાં ઠીક - ઠીક પંથ કાપવો પડે છે. પ્રશંસાથી આપણું મન પ્રફુલ બને ત્યાં સુધી તો વાંધો નહિ. પરંતુ જાણ્યે - અજાણ્યે અપેક્ષાઓ પણ પ્રગટવા લાગે તો અંતે નિરાશ થવાનો સમય આવે છે.

નિંદાને ધીમું ઝેર કહ્યું છે તે સાચું છે. એ રીતે પ્રશંસાને અફીણની ઉપમા આપી શકાય. એક ધીમે - ધીમે મારી નાખે, બીજુ બેભાન બનાવી. નિર્બળ બનાવી અંતે નાશ કરે. આ બંનેમાંથી છુટવાનો આપણો પુરુષાર્થ હોવો જોઈએ. પરંતુ નિંદા - પ્રશંસામાંથી છુટવાનું તો મોટા યોગીઓ માટે પણ મુશ્કેલ હોય છે. નિંદાથી જેના મનનું કુલ સહેજ પણ કરમાયું ન હોય અને પ્રશંસાથી વિકસ્યું ન હોય એવા આ જગતમાં કેટલા હશે ? આ સ્થિતિમાં નિંદા-પ્રશંસાથી અસર અનુભવતી વખતે આપણે તેની સાચી શક્તિ કેટલી તે સમજી

જઈએ તો તેના ઘણાં દુષ્પરિણામોમાંથી બચી શકાય અને ધીમે - ધીમે તેમાંથી મુક્તિ મેળવવાની દિશામાં પણ ગતિ થાય.

જીવનના રોજના અનુભવમાં નિંદા - પ્રશંસા સાંભળવાનું બને જ છે. આવા દરેક પ્રસંગે આપણે વિચારવું કે આ નિંદા વધુમાં વધુ શું નુકશાન કરી શકે એમ છે અને આ પ્રશંસા કેટલા પ્રમાણમાં લાભદાયી થવાનું બળ ધરાવે છે. આવા અવલોકનથી ખાતરી થશે કે આપણા ચિત્તને ક્ષુબ્ધ બનાવી જતી નિંદાની લહરીઓની ખાસ કશી કિંમત નથી અને જરી વાર અભિમાનની લાગણી જગાડી જતી પ્રશંસા પણ આપણા કામમાં કે જીવનમાં ખાસ કોઈ શકિત ઉમેરી શકતી નથી. ભૂતકાળમાં નિંદા - પ્રશંસાના અનેક બનાવો બન્યા હશે, એ બધાનું પરિણામ તપાસીશું તો ખાતરી થશે કે, નિંદાથી ડરવા જેવું નહોતું ને પ્રશંસાથી હરખાઈ જવામાં પણ ભૂલ થઈ હતી. નિંદા - પ્રશંસાના પરિણામોને તેના પ્રમાણમાં જ પારખી લેવાની શકિત આપણે કેળવવી જોઈએ. ને અવસરે આપણે આપણા અંતરજીવનને મધ્યસ્થ ભાવે સમદૃષ્ટિથી વિવેકપૂર્વક જોવું એ જ નિંદા તથા પ્રશંસાથી થતા અનર્થોથી બચવાનો સરલ માર્ગ છે.

(કલ્યાણ માર્ચ ૧૯૮૦) ("જનકલ્યાણ" માંથી સાભાર)

● બાર વર્ષે પતિ ઘેર આવે છે. પત્ની અનિચ્છાએ સામે જાય છે. પતિનો વૈભવ જોઈને આશ્ચર્ય થયું. શેઠાણી મંગળ ગીત લલકારે છે. – "આવો પધારો પ્રિયતરાય, લળી લળી લાગું તમારા પાય." ત્યારે પત્ની સાંભળે તેમ શેઠ બોલ્યા– **"मेरे करमने कीया अतिजोर, खा गया लड्डू मर गया चोर."** શેઠાણી સમજી ગયા કે મારા આપેલા ઝેરી લાડવા તો ચોરો ખાઈને મરી ગયા. શેઠ બચી ગયા. શેઠ પણ આ વાત ગંભીરતાથી પચાવી ગયા. (નિંદા ન કરી) -ધર્મદૂત મે-જૂન-૨૦૪૮.

લેબલ અને ઢાંકણ

-શ્રી પ્રભાકર રાચ્છ

શ્રી કનૈયાલાલ મિશ્રના લેખનો અનુવાદ

"મીના, જા, બાબાની આંખમાં ટીપાં નાંખીને એને સુવડાવી દે."

"શીશી કયાં રાખી છે બા ?"

કબાટ ઉપર બધી શીશીઓ પડી રહે છે ત્યાં.....બીજે વળી કયાં રાખશે ?"

મારી પાડોશમાં એક ગૃહસ્થ રહેતા હતા. તેઓ સોનીનું કામ કરતા હતા. સારા એવા કારીગર હતા. બિચારાએ પીરો પર ચાદરો ચડાવી. પંડિતો પાસે જાપ કરાવ્યા અને દેવદેવીઓની ન જાણે કેટલીયે માનતા માની, ત્યારે ખરી રીતે તો પુણ્યાઈના પ્રભાવે એમના ઘરમાં છ કન્યાઓ પછી પુત્ર રત્નની પધરામણી થઈ હતી. સોનીઓમાં સૌન્દર્ય હોય જ છે પરંતુ આ દીકરો તો સુંદરોમાં પણ સુંદર હતો. મા એ એનું નામ રાખ્યું સુંદરશ્યામ પરંતુ લાડમાં સૌ એને બાબો જ કહેતા.

એ દસેક માસનો થતાં એની આંખો ઉઠી આવી. માએ અનેક ઉપાયો કર્યા. દૂધની મલાઈ રાખી જોઈ. મરચું, મીઠું અને અજમો ચૂલામાં નાખીને નજર ઉતારી. પરંતુ બાબાની આંખ મટી નહિ ત્યારે એણે ડોક્ટર પાસેથી દવા મંગાવી. એ જ દવા તેણે બાબાની આંખમાં નાખવા માટે પોતાની મોટી દિકરી મીનાને કહ્યું.

મીનાએ કબાટ પર રાખેલી શીશી ઉપાડી, બાબાને ખોળામાં સુવડાવ્યો અને એની આંખમાં ડ્રોપરથી દવાના ત્રણ - ચાર ટીપા નાંખ્યા. ટીપાં પડતાં જ બાબો ચીસ પાડી ઉઠયો, પરંતુ દુખતી આંખમાં દવા પડવાથી બાળક તો રડે જ. એટલે મીનાએ એને ગોઠણેથી દબાવીને બીજી આંખમાં પણ ડ્રોપર ટપકાવી દીધું.

બાબો તરફડી ઉઠયો. શીશી તેણે ત્યાં જ રહેવા દીધી અને બાબાને

તેડીને તેને પંપાળીને છાનો રાખવાનો પ્રયાસ કરવા લાગી પરંતુ બાબો ચૂપ ન થયો, રડતો જ રહ્યો. મીનાને ગાળો સંભળાવતી મીનાની મા રસોડામાંથી બહાર નીકળી તોયે બાબાએ ન દૂધ પીધું કે ન શાંત પડયો. મા એ ઘૂઘરો વગાડયો. ચાંદામામાના ગીત ગાયા પરંતુ બાબો ચૂપ ન થયો, એ ખરેખર તરફડી રહ્યો હતો.

બાબાના પિતાજી હજુ દુકાનેથી નહોતા આવ્યા. મીનાએ મને બોલાવ્યો. બાળકોને પટાવવામાં હું પણ સારો એવો માસ્તર હતો પરંતુ મને નિષ્ફળતા મળી. એટલામાં તો તેઓ પણ આવી ગયા પરંતુ અમે ચારે મળીને ય બાબાને છાનો ન રાખી શકયા.

મેં કહ્યું આંખમાં વધારે દુખતું લાગે છે. એક વાર વધુ ટીપાં નાંખી જુઓ. કદાચ દુખાવો મટી ઘટી જશે. મીનાએ શીશી લાવીને પોતાના પિતાજીના હાથમાં આપી. શીશી હાથમાં લેતાં જ તેઓ ચોંકીને બોલી ઉઠયા, "અરે, આની આંખમાં શું આ નાખ્યુ હતું ?"

"હા, બા એ એ જ નાખવા માટે કહ્યું હતું." મીનાનો આ જવાબ સાંભળતા જ તેઓ રડી પડયા - "બસ ભાઈ, હું તો બરબાદ થઈ ગયો. આમાં તો ઘરેણા ધોવા માટેનો તેજાબ હતો ?"

અમે બંને તરફડિયા મારતાં બાળકને લઈને ડોકટરની પાસે ગયા, પરંતુ ડોકટર હવે શું કરે ? આંખ અંદરસુધી બળી ગઈ હતી. ગુસ્સો આંધળો હોય છે. મીનાને ખૂબ માર પડયો, પરંતુ એ બિચારીનો શું વાંક હતો ? મા એ જયાંથી કહ્યું ત્યાંથી તેણે શીશી ઉપાડી હતી. એને શું ખબર કે ત્યાં બીજી કોઈ શીશી પડી હશે અને કઈ શીશીમાં શું હશે ?

નાની શી ભૂલનું કેટલું ભયંકર ફળ ?

ગામડાના એક વૈદ્ય મારા મિત્ર છે. તેઓ કોઈ દરદી ને જોવા માટે બાજુના ગામમાં જઈ રહ્યા હતા. એ વખતે એમના નાના ભાઈએ કહ્યું, "મારું

મોં આવી ગયું છે. પાણી પણ નથી પીવાતું'' વૈદ્યરાજે કહ્યું, વચ્ચેના ખાનામાં શીશીમાં સફેદ ગોળીઓ રાખી છે. મોંમા નાખીને ચૂસતો રહેજે, ઠીક થઈ જશે.''

નાના ભાઈએ સફેદ ગોળીઓ ખૂબ ચૂસી પરંતુ મો તો શું ઠીક થશે, થોડા કલાકમાં તો હાથ - પગમાં પીડા ઉપડી. આખા શરીરમાં જાણે વીંછીં ડંખ ભરવા લાગ્યા અને આંખો લાલ અંગારા જેવી થઈ ગઈ. વૈદ્યરાજ પાછા ફરતાં નાના ભાઈની હાલત જોઈને ગભરાયા - નાના ભાઈએ વિષ ખાઈ લીધું હતું. વચ્ચેના ખાનામાં વિષની ગોળીની શીશી પણ પડેલી હતી અને એ ગોળી પણ સફેદ રંગની જ હતી. બંને શીશી પર લેબલ ન હતું - એથી અમૃત લેવા જતા વિષ લઈ લીધું.

ભારે મુસીબત ઉભી થઈ. ખૂબ ઉપચારો પછી છોકરાનો જીવ બચ્યો, પરંતુ બિચારાની હાલત અધમરા જેવી થઈ ગઈ. મહિનાઓ સુધી તે પથારીવશ રહ્યો અને જયારે તે હરતો - ફરતો થયો ત્યારે તેની પરીક્ષા લેવાઈ ચૂકી હતી. બિચારાનું આખું વરસ ખરાબ ગયું. આ પણ એક નાની જેવી ભૂલ હતી. પરંતુ પરિણામ કેવું ભયંકર આવ્યું હતું ?

હું એક પૈસાદાર કુટુંબનો મહેમાન બન્યો હતો. સાંજે વૈદ્યની દવા ખાવા માટે મને ચારીણીના મધની જરૂરત પડી તો શ્રીમતીજીએ નોકરને કહ્યું, ''બાબુજી માટે સારામાં સારૂં મધ આવ્યું હતું એ આલમારીમાં રાખ્યું છે. જા લઈ આવ ! નોકરે ખૂબ શોધ્યું અને શ્રીમતીજીએ વચ્ચે - વચ્ચે એને શીશીના રૂપરંગ માટે ઘણી સૂચના આપી, પરંતુ એને મધ ન મળ્યું. એ પોતે ઉઠી અને નોકરને આંધળો હોવાનું પ્રમાણપત્ર દેતી એક શીશી લઈ આવી પરંતુ મારી પડિકીમાં તેમણે જે કાંઈ મેળવ્યું એ મધ નહિ. પરંતુ કોઈ ડોકટરે આપેલો મલમ હતો. એને ચાટયા પછી મારી જે દુર્ગતિ થઈ, ઉબકાઓએ મને જે રીતે હેરાન - પરેશાન કરી નાખ્યો તે હું કયારેય નહિ ભુલી શકું, કેવી ભૂલ, કેવું

રૂપ?

આપણાં ઘરોમાં, ખાસ કરીને શહેરોમાં, કાંઈ નહિ તોયે બે - ચાર શીશીઓ જરૂર હોય છે. આંખની દવા આવી, આંખ સારી થઈ ગઈ, પરંતુ જે દવા બચી તે કોઈ બારી કે કબાટ પર રાખી મૂકી છે. એની બાજુમાં જ મૂકેલી શીશીમાં મિકસ્ચર છે, અન્યમાં કોઈ ગોળીઓ, અથવા બીજું કાંઈને કાંઈ હોય છે. મોટા ઘરોમાં તો આવા કામ માટે એક અલગ આલમારી હોય છે. જેમાં દસ - વીસ નહિ, પરંતુ સો - બસ્સો શીશીઓ રહે છે. કઈ શીશીમાં શું છે, કયા કામ માટે છે એનો કોઈને પત્તો જ નથી. જ્યારે કોઈ દવાની જરૂર પડે છે ત્યારે દરેક શીશીને ઉપાડીને દુરબીનની જેમ આંખ માંડવામાં આવે છે, જોવા - પરખવામાં આવે છે ને પછી કાંઈ ખબર ન પડતાં એની એ જગ્યાએ રાખી મૂકવામાં આવે છે.

આ બધું એટલા માટે કે આપણે શીશીઓ પર લેબલ લગાડવાની આદત નથી પાડી. લેબલનું મહત્ત્વ નથી સમજ્યા. કાંઈ વાંધો નહિ. પરંતુ હવે સમજી લ્યો અને પેલા માસુમ બાળક સુંદરશ્યામની ફૂટેલી આંખો અને વૈદ્યરાજના નાનાભાઈની મુશીબતો પર ધ્યાન દઈને ગાંઠ વાળો કે ઘરની દરેક શીશી પર એક લેબલ હોય જેના પર દવાનું નામ, દરદનું નામ અને દવા આપ્યાની તારીખ લખેલ હોય. ઘરમાં ગુંદ કે લાઈ ન હોય તો લેબલને દોરાથી બાંધી દેશો અને યાદ રાખો કે લેબલ વિનાની શીશી એ સાપનું બચ્ચું છે.

સાપનું બચ્ચું ! કયાં સાપ, કયાં કીટલી ? રાતે હરતો - ફરતો એક સાપ રસોડામાં આવ્યો અને ચ્હા બનાવવાની કીટલીમાં કુંડલીવાળીને બેસી ગયો. કીટલી ઉઘાડી હતી વહેલી સવારે અંધારામાં ગૃહિણી ઉઠી અને કીટલીમાં થોડું પાણી નાખી, ઢાંકણું ઢાંકી, ચૂલા પર રાખીને નિત્યકર્મમાં પરોવાઈ ગઈ. થોડીવારમાં તેણે ત્રણ કપ ચ્હા બનાવી અને પોતાના પતિ -

પુત્રની સાથે બેસીને પીધી. લગભગ એકાદ કલાકમાં ત્રણેય મરી ગયા. બાદમાં જ્યારે કીટલીમાં મરેલો - ઉકળેલો સાપ નીકળ્યો ત્યારે પાડોસીઓએ ત્રણેયના અચાનક મૃત્યુનું રહસ્ય જાણ્યું.

ગામના મુખીનો જમાઈ-લગ્ન પછી પહેલીવાર આવ્યો, ત્યારે ઘરમાં અને પાસપડોસમાં એની સારી પેઠે આગતા સ્વાગતા થઈ. રાતે સાળી મલાઈદાર દૂધનો પ્યાલો લઈને આવી, પરંતુ જમાઈરાજે તો પહેલેથી જ ખૂબ દબાવ્યું હતું. બહુ જ આગ્રહ થયો એટલે નક્કી થયું કે દૂધ ભલે રાખી જાય, થોડીવાર પછી તેઓ જાતે પી લેશે.

દૂધનો પ્યાલો બારી પર રાખીને સાળી તો ચાલી ગઈ અને જમાઈરાજ સૂઈ ગયા. રાતે આંખ ઉઘડતાં દૂધનો ખ્યાલ આવ્યો. અધમીંચી આંખે ગ્લાસ હાથમાં લીધો અને ઘૂંટડો ભર્યો તો મોંમા બીજી કોઈ ચીજ આવી. સમજ્યો કે મલાઈની મોટી તર હશે એટલે તેણે એને ગળે ઉતારવાની કોશિશ કરી પરંતુ આ તે કેવી મલાઈ કે ગળામાં જાણે ઉપરાઉપરી સોંઈભોંકી રહી છે અને સોઈ પણ ઝેરીલી.... જાણે આગ !

ગભરાઈને દૂધ થુંકી નાંખ્યું અને લાલટેનથી જોયું તો મોટો લાલ કરોળિયો હાય રે મરી ગયો, મોંમાથી ચીસ નીકળી પડી તો ઘરના બધા લોકો દોડી આવ્યા. સૌએ જે જે ઉપાયો બતાવ્યા તે કરી જોયા. પરંતુ ગળુ સુઝવાથી શ્વાસ લેવામાં તકલીફ પડવા માંડી ને સવાર થતાં પહેલાં જ જીવન સમાપ્ત થઈ ગયું.

દુકાનદારે હજુ દુકાન બરાબર ઉઘાડી જ ન હતી ત્યાં ઘરાક આવી ગયા - "દહીંની લસ્સી બનાવો....." દુકાનદારે નવું કુંડુ બહાર કાઢયું અને પોતાના છોકરાને લસ્સી બનાવવાનું કહીને કામમાં લાગી ગયો. ઘરાક બે હતા પણ લસ્સી એક જણે પીધી ને બીજાએ બાજુની હોટલામાંથી ચા મંગાવી બંને

એક રીકસામાં બેસીને ગયા, પરંતુ ઘરે પહોંચતા - પહોંચતા જ લસ્સી પીવાવાળાની હાલત ખરાબ થઈ ગઈ !

એનો સાથી એને તુરત હોસ્પીટલમાં લઈ ગયો પરંતુ ડોકટરે કહ્યું, "એને ઝેર આપવામાં આવ્યું છે" પોલીસને ફોન થયો, પુછપરછને અંતે પોલીસ લસ્સીવાળાની દુકાને પહોંચી. દુકાનદારે કુંડુ બતાવ્યું અને એમાંથી દહીં લઈને એક ગ્લાસ બનાવી પોતાના છોકરાને પીવડાવી, "જોઈ લ્યો, ઈન્સ્પેકટર સાહેબ, અમારી લસ્સીમાં શું ખરાબી છે ? એના આવ્યા પછી જ તો મેં કુંડુ બહાર કાઢયું હતું ?"

લસ્સી પીતાની સાથે જ દુકાનદારનો છોકરો ચકળવકળ થતાં બોલવા લાગ્યો, "મરી ગયો રે.... મરી ગયો...." પોલીસ એને હોસ્પીટલમાં લઈ ગઈ. દહીંનું કુંડુ પણ સાથે લીધું.

ઈલાજ કરવામાં આવ્યો પરંતુ પેલો ઘરાક અને દુકાનદારનો છોકરો બંને મરી ગયા. પાછળથી જણાયું કે કુંડમાં ઢેઢગરોળી હતી અને બંનેનું મૃત્યુ એના વિષથી થયું હતું.

આ મૃત્યુના કારણ ભલે ભિન્ન - ભિન્ન હોય, મૂળ કારણ તો એક જ છે - "ઢાંકણ"

આપણે બધી ચીજોને ઢાંકીને રાખવાની આદત નથી પાડી. ઢાંકણનું મહત્વ નથી સમજ્યા. નથી સમજ્યા તો કાંઈ વાંધો નહિ, પરંતુ હવે સમજી લ્યો અને પેલું સુખી કુટુંબ, મોંઘેરો જમાઈરાજ અને નિર્દોષ યુવાનોની દુ:ખ ભરી વિતક કથા પર ધ્યાન આપીને નિશ્ચય કરો કે ઘરની દરેક ચીજ ઢાંકણથી ઢાંકીને રાખીશું.

લેબલ અને ઢાંકણ....

આપણાં બે દોસ્ત....

આપણે એની ઉપેક્ષા ન કરીએ.

લેબલ વિનાની શીશી અને ઉઘાડું વાસણ આપણાં દુશ્મન છે.

આપણે એનાથી હંમેશા સાવચેત રહીએ. ને દરેક વસ્તુઓને ઉપયોગપૂર્વક રાખીએ.

કલ્યાણ સપ્ટેમ્બર ૧૯૬૩ (ચિત્રલેખા)

પ્રાણો આપી પ્રાણ બચાવ્યા

સારાયે ભારતની સંગીતકલાના ઈતિહાસમાં એક વારને માટે પણ અદ્‌ભુત તેજથી ચમકી જનાર સંગીતકલાની તવારીખની શુકતારા સમી કલાધરિત્રી તાના રીરી એ વડનગરની નાગર કોમમાં જન્મેલી નારી હતી.

વાત આવી બની :

શહેનશાહ અકબરના દરબારમાં તાનસેનજી એક અદ્‌ભુત ગવૈયા હતા. આજે સંગીતકલામાં જાતભાતનાં સાજોમાંથી તમે ગમે તે એક, બે કે ચાર સાજ વાપરો, તો પણ તબલાં તો એમાં જોઈએ ને જોઈએ જ. એ તબલાંના તાલોની સૌથી પહેલી શોધ તાનસેનજીએ કરેલી મનાય છે.

તાનસેન સંગીતને વર્યા હતા. સંગીતની કલા તાનસેનજીને વરી હતી. એમણે અનેક ભુલાઈ ગયેલાં, નામશેષ રહેલાં રાગરાગિણીઓને ફરીને જીવતાં કર્યા હતાં. એટલે જ સંગીતશાસ્ત્રમાં તાનસેનજીને રાગના પિતા તરીકે ઓળખવામાં આવે છે.

આવો એક નામશેષ બનેલો રાગ દીપક. સંગીતપરંપરામાં દીપક રાગ માટે તો એવું કહેવાતું કે એ રાગ કોઈ ગાય તો દીવાઓ આપમેળે જલવા માંડે, લાકડામાંથી અગ્નિ આપમેળે જલવા માંડે.

આવું દીપક રાગ માટે કહેવાતું. પણ અકબરશાહના જમાનામાં તો એ કેવળ પરંપરાની વાત ગણાતી, કવિની કલ્પના માત્ર દેખાતી. એવો રાગ કોઈ ગાઈ શકયું ન હતું. ને કોઈ ગાઈ શકે એમ કોઈ માનતું ન હતું.

તાનસેનજીની પ્રતિભા જેમ - જેમ વધતી ગઈ, તેમ - તેમ વિરોધીઓ પણ વધતા ગયા. જેમ - જેમ અકબરશાહ એને સંગીતસમ્રાટ તરીકે બિરદાવતા ગયા, તેમ - તેમ એમના સામ્રાજય સામે બંડખોરો પણ વધતા ગયા.

એમાં એક વાર દીવાને આમમાં વાતવાતમાં વિવાદ થઈ પડયો. તાનસેનજી સંગીતસમ્રાટ તો ત્યારે કે જ્યારે એ ભુલાઈ ગયેલો, દીપક રાગ ગાઈ બતાવે.

ને એ રાગ એમણે ગાયો છે એ સાચો છે કે નહિ તેની પરીક્ષા તો સ્વયંસિદ્ધ છે. સાચો રાગ સાચી રીતે ગવાશે તો દીવા આપોઆપ સળગી ઊઠશે જ ને !

ચડસાચડસી થઈ ગઈ ને અકબરશાહ પણ એ ગાડીમાં બેસી ગયા. "બસ, શાહી ફરમાન છે. માબદૌલત દીપક રાગ સાંભળવા માંગે છે ?"

અને તાનસેનજીએ દીપક રાગ ગાયો. અને દીપકો જલ્યા. બાદશાહ ખુશ થયા. મોંમાથી નવાજિશ આપવાને તૈયાર થયાં.

પણ નવાજિશ આપે કોને ?

તાનસેન તો પાગલ થઈ ગયા હતા. એમના રોમેરોમમાં આગ પ્રકટી નીકળી હતી. એમના અવાજની ગરમી એ દીપકો તો સળગાવ્યા, પણ એ ગરમીએ એમનો તો જાણે જીવતા ને જીવતા સળગાવી દીધા.

પાછલી બુદ્ધિના શાહનો પસ્તાવો તમામ એળે ગયો : "અરે, આ ગરમીનો કોઈ વૈદ ?"

કોઈનીયે દવા, કોઈનીયે હકીમી કામ ન આવી.

અરે, આનો કોઈ ઉપાય ?

અગર કોઈ સંગીતકાર શુદ્ધ મેઘમલાર ગાય - ગાઈ શકે તો એ ગાતાંની સાથે વરસાદ પડે. એ વરસાદથી જો તાનસેનજીને સ્નાન કરાવવામાં

આવે તો એમને લાગી ગયેલી દીપક રાગની ગરમી દૂર થાય.

હવે બીજા ગવૈયાઓને માથે પૂરી પનોતી બેઠી. ગયા હતા તાનસેનજીની મશ્કરી કરવા, હવે એમની થવા માંડી, કોઈ મેઘમલાર ગાઈ શકયું નહિ. જેમણે ગાયો તેમાંથી કોઈનાથીયે વરસાદનો એક છાંટો પણ ના પડયો.

તાનસેન તો પાગલ બન્યા છે. રોમરોમે ઘારાં પડયાં છે. રોમરોમે પરુ વહે છે. સંગીત શાસ્ત્રસમસ્તને જીવતા આહ્વાન સમા એ આંહીથી ત્યાં ને ત્યાંથી આંહી રખડે છે. હવે એ જ અકબરશાહ એમનાથી ત્રાસ્યો છે. એમની દેખભાળ રાખનારા થાકી ગયા છે.

ને એક દિવસે તાનસેન દિલ્હીમાં ભટકતાં - ભટકતાં કયાંના કયાં નીકળી ગયાં. થોડો અજંપો કરીને શાહ શાહના કામમાં પડયા. થોડી દોડધામ કરીને નોકરો બીજી નોકરીએ ચડ્યા.

વડનગર નાગર બ્રાહ્મણોનું ગામ. એ ગામમાં એક નર અને એક નારી - બેય નાગરબ્રાહ્મણ રહે. એમનાં નામ તો મળતાં નથી.

પણ એમને એક પુત્રી. નામ તનુમતી. ને એનું ટૂંકાવેલું તાના. બાળપણથી ગાવાના ચાળા કરે. એટલે હુલામણું નામ રીરી. બધા એને તાનારીરી કહીને બોલાવે.

બાળપણમાં પરણાવી. ને પરણીને તરત વિધવા થઈ ને વિધવા પણ સોળમી સદીમાં, મુગલાઈના કાળમાં

બાપના દિલમાં બે વાત : સમાજના વિધિનિષેધ બધા જ પાળવાનો ચુસ્ત આગ્રહ. વિધવાથી બહાર નીકળાય નહિ. ગાનતાન ના થાય. કેવળ ઘરકામ, દેવપૂજા ને વિલાસથી રહિત જીવન : ભોંયપથારી, એક ટંક ખાવાનું, એક વસ્ત્ર પહેરવાનું. પુરુષમાત્રની આડે ન ઉતરાય. આવો સમાજનો વિધિનિષેધ ને બાપનો મક્કમ આગ્રહ. તાના રીરીએ એ મક્કમ પાળવાનો.

બીજી વાત, બાપની પુત્રી પ્રત્યે માયા. એકની એક પુત્રી. વળી સંસ્કારી કુટુંબની જે જન્મથી સંગીતની શોખીન.

બાપે માર્ગ કાઢયો. સંગીત પ્રભુને સમર્પી દે. પછી તારાથી ગાઈ શકાય. પણ વિધવાને ગાતું બહાર કોઈ સાંભળે તો અનાચાર થાય. માટે બહાર કોઈ સાંભળે નહિ એમ ગાવાનું સ્થાન રાખવું.

એનું સ્થાન કયાં ?

બાપના ઘર પાસે વાવ હતી. બાપે પોતાના ઘરમાંથી વાવ નીચે ભોંયરુ ખોદ્યું. સેલાર વાવ ઉપર સમથળ પાણી. એની નીચેથી કોઈ ગાય તો અવાજ બહાર શેનો આવે ?

આમ તાના રીરીના દિવસો જતા હતા.

એક દિવસ આ વાવને કાંઠે એક પાગલ આવીને પછડાઈને પડયો. ભૂખ્યો છે. રોમરોમ લોહી - પરુ વહી રહ્યાં છે. પાણી.... પાણી માગે છે, પણ એના દેદાર ભય અને ત્રાસ પમાડે એવા છે.

કામપ્રસંગે બહાર ગયેલો તાનાનો બાપ પોતાને ઘેર પાછો આવતો હતો. ત્યાં એણે વાવની પાસે નરનારીઓનો કોલાહલ સાંભળ્યો.

"અરે, એ તો પાગલ છે."

"અરે, એ તો કોઢિયો છે."

"અરે, એ રગતપીતિયો છે."

બ્રાહ્મણ ઊભો રહ્યો. એણે જોયું. પાણી માટેનાં એના તરફડિયાં જોયાં. એની વ્યાધિ જોઈ. એને દયા આવી. પાસે જઈને એણે પાગલને ઉપાડયો.

"અરે....અરે....મહારાજ ! એ કોઢિયો છે. જુઓ તો ખરા !"

"ભાઈ, જે હોય તે, પણ ભૂખ્યો છે તરસ્યો છે. એમને એમ એ જાય તો ગામને કોડ નીકળશે. એના કરતાં મને એકને ભલે નીકળતો."

એ ઘરમાં આવ્યા. ફળિયામાં એક ઝાડ હતું. ઝાડની નીચે એમની પાટ પડી રહેતી. એના ઉપર એને સુવાડયો.

"પાણી....પાણી...."

"અરે બેટા તાના અરે રીરી ! એક પાણીનો લોટો લાવ જલદી. આ કોઈ પરપુરુષ નથી. આ તો વ્યાધિગ્રસ્ત ને અંતકાળે આવેલો કોઈક પાગલ છે બેટા ! પાણી લાવ"

તાના પાણી લાવી. ને એની નજર દરદી ઉપર પડી. જળપાત્ર હાથમાં રહી ગયું.

"કાં બેટા ! પાણી લાવને.....કેમ.....કેમ..... શું જોઈ રહી છે ?"

"બાપુ ! આ કોઈ પાગલ નથી. એની તરસ પાણીથી ટળશે નહિ"

"એ શું ?"

"હા, બાપુ ! ભગવાનને મારો ધર્મ પૂછી રહી છું."

"તારો ધર્મ.... શું.....?"

"બાપુ, શાસ્ત્રોએ વર્ણવેલા દીપક રાગનો આ પરચો છે. બાપુ. આ માનવી જે હો તે હોય, પણ અદ્‌ભુત સંગીતસાધક છે. એણે દીપકની સાધના કરી છે. ને દીપક એને રોમ રોમ ફૂટી નીકળ્યો છે. સેંકડો વરસોમાં જે કોઈથી નથી થયું તે એણે કર્યું છે."

"પણ એમાં તારા ધરમની શી વાત ?"

"મલાર રાગ કોઈ ગાય, તો એનાથી વરસાદ થાય, એ વરસાદનું સ્નાન આને થાય તો આ માનવી નિરોગી થાય"

"એમ ?"

"હું ગાઉ - ગાઈ શકું છું - ગાઉ - એ નીરોગી થાય - ને મારો વિધવાધર્મ ચલિત થાય. એટલે જ બાપુ, પૂછું છું ભગવાનને મારો ધર્મ શો ?"

"એ વાત બેટા તારી ને તારા ભગવાન વચ્ચેની છે. તું જે કરીશ એ સાચું કરીશ."

તાના ત્યાં ઉભી રહી. વેદનાથી આમતેમ ચાલતો પાગલનો ચહેરો પવનમાં પાંદડું ડોલે એમ ડોલતો હતો.

"પા....ણી....પા...ણી...પાણી...."

અને પાણી ધીમે ધીમે....ધીમે ધીમે....તાનાના કંઠમાંથી મલારના સૂર ઊઠવા માંડયા. ગુંજવા લાગ્યા. ઘુંટાવા લાગ્યા. ઘેરાવા લાગ્યા.

શેરીમાંથી માણસ આવી ચડયાં.

પાટ ઉપર સૂતેલો પાગલ....ધીમે ધીમે....ધીમે....બેઠો થવા માંડયો.

ધીમે ધીમે ધીમે સાપ ઉપરથી કાંચળી ઊતરે એમ પાગલના ચહેરા ઉપરથી વ્યાધિ - વેદના ઊતરવા માંડયા.

ને પ્રેક્ષકો એ ગાનારીને ને એ પાગલને વારાફરતી તાકી રહ્યાં.

આભમાં વાદળ ઘેરાયાં. મેઘ વરસવા માંડયો. પાગલના અંગ ઉપર પડયો અને જાણે અશ્વિનનીના વરદાન પામેલા વૃદ્ધ ચ્યવન મુનિ સરિતામાંથી સ્નાન કરીને નવયુવા બહાર આવ્યા તેમ પાટ ઉપર સૂતેલો પાગલ મેઘમલારમાં સ્નાન કરેલો, વેદના માત્રથી નિર્મળ ઉભો થયો.

"ખમ્મા મારી મા ! ખમ્મા મારી મા ! ખમ્મા સરસ્વતી !" એણે દોડીને તાનાના પગમાં માથું ઝુકાવીને કહ્યું : "ખમ્મા ! મારો દીપકતાપ ચાલ્યો ગયો છે ! મા હવે બંધ કરો. નહિ તો હિમાળો વરસશે."

અને છતાં એ રાગ ચાલુ રહ્યો.

"અરે....કોઈ.....કોઈ.... માનું ગાન બંધ કરાવો. કોઈ બંધ કરાવો....નહિ તો.... નહિ તો....દીપકની આગમાં હું જલ્યો.....હેમાળાની ઠંડીમાં એ.... કોઈ બંધ કરાવો...."

પણ ગાન ચાલતું જ રહ્યું, સૂર ઘૂંટાતા રહ્યા....આખરે બંધ પડયા.

ત્યારે હિમાળાના બરફથીયે વધારે ઠંડી તાનાની પ્રાણહીન પ્રતિમા જ ત્યાં રહી.

ને ભારતસમસ્તના સંગીતની તવારીખમાં પોતાની પાછળ શુક્રતારા જેવું નામ મૂકતી ગઈ. તાનસેનજીએ તબલાના બંધો ત્યારથી એના નામના અક્ષરોથી બાંધ્યા. ભારતના સંગીતના સૂરોમાં એ ચમક રહી ગઈ.

અખંડ - આનંદ એપ્રિલ ૬૦

અંતે એ અંગ્રેજ અફસરે મહાજન સમક્ષ હેટ ઉતારી

-શ્રી રસિક મહેતા

અમદાવાદથી ઉત્તર દિશામાં છત્રીસ કિલોમીટર દૂર સાદરા નામનું ગામ આવેલું છે. અંગ્રેજી રાજ્યના જમાનાંમાં આ ગામમાં એજન્સીની કોઠી હતી. દર પાંચ વર્ષે નવો પોવિટિકલ એજન્ટ આવતો એના હાથ નીચે રેસિડેન્ટો અને અન્ય અધિકારીઓ રહેતા.

પોલિટિકલ એજન્ટ એટલે નાનકડો વાઈસરોય. રજવાડાઓમાં એની ફેં ફાટે. કાયદો અને વ્યવસ્થા જાળવવા એના તાબામાં મોટું, પોલીસદળ અને લશ્કરીદળ રહેતું.

સાદરામાં વિલિયમ બ્રાર નામનો એક યુવાન અને તુમાખીથી ભરેલો એ. જી. જી. આવ્યો. સ્વભાવનો નિર્દય અને શિકારનો શોખીન. પણ સાદરાની આસપાસના જગંલના પ્રદેશમાં શિકારની જોઈએ તેવી અનુકૂળતા નહિ આવી હોય. આથી તે પોતાના બંગલાના કમ્પાઉન્ડમાં જ ઉભો ઉભો પક્ષીઓના શિકાર ખેલતો એના માણસો ખુલ્લા મેદાનમાં હાકોટાદેકારા કરીને પક્ષીઓને ગભરાવે અને કૂંજડી - ટીટોડી તેતર - બટેર જેવા નિર્દોષ પક્ષીઓ બહાવરાં બનીને આમ - તેમ ઉડાઉડ કરે ત્યારે સાહેબ બહાદુર ગોળી છોડીને વિહંગોને

વીંધી નાખે. કેટલીક વખતે અમુક મોસમમાં અન્ય પક્ષીઓ નજરે પડે ત્યારે એ. જી. જી. ના માણસો કબૂતરોના ટોળાં ઉડાડે અને પો. એજન્ટ સાહેબ નિર્દોષ પારેવડાંઓને ગોળીએથી વીંધીને શિકારનો આનંદ માણે.

પણ આખરે સાદરાના મહાજન માટે આ પરિસ્થિતિ અસહ્ય થઈ પડી. એ જમાનામાં મહાજનનું ખાસું જોર અને રાજકર્તાઓ એ પણ આ વિદેશી અધિકારીને હિંદની મહાજન નામની સંસ્થા અને તેની શકિત વિષે કશો ખ્યાલ આપ્યો ન હતો. આમ છતાં મહાજનના પ્રતિનિધિઓ એક વખત તેને મળવા ગયા અને સાદરા જેવા અહિંસક વસ્તીવાળા ગામમાં આવી રીતે પ્રાણી હત્યા નહિ કરવા વિનંતી કરી.

સત્તાના નશામાં ચકચૂર અને રાજકર્તા તરીકેનું અભિમાન ધરાવતા એ. જી. એ આ વિનંતી ઠુકરાવી કાઢી અને ગામના ચોકમાં જ ઉભા રહીને પક્ષીઓનો વધુ બેફામ ઢંગે શિકાર ખેલવા માંડયો. મહાજન માટે હવે ખરેખરો કસોટીનો કાળ આવી પહોંચ્યો એણે તરત જ સભા ભરી અને સમસ્ત ગામને હડતાલનું એલાન આપ્યું.

અને આ તો મહાજનનું એલાન એ કોઈ રાજકીય પક્ષ કે વાડાની હોંસાતુસીમાંથી ઉદ્‌ભવેલો સ્વાર્થી સંઘર્ષ ન હતો. નાના મોટા તમામ વેપારીઓએ દુકાનો બંધ કરી. કામ કરનારા માણસોએ કામ બંધ કર્યા, ત્યાં સુધી કે ઝાડુવાળાઓ અને ભંગીઓએ સફાઈ કામ નેવે મૂકી દીધું. પોલિટિકલ એજન્ટના બંગલાના માળી અને ભંગીથી કરીને રસોયા સુધીના તમામ નોકરો હડતાલ પર ઉતરી ગયા.

એ. જી. જી. એ ગર્જના કરી. "હું બહારથી માણસો બોલાવીશ. સિપાઈઓને કામે લગાડીશ."

ગામ લોકોએ પડકાર દીધો...."આવવા દો. તમારા સિપાહીઓને અમારી લાશ પરથી જવું પડશે."

દરમ્યાનમાં એ. જી. જી. ની મેડમ બિમાર પડી. ઉત્તર ગુજરાતની

ગરમ હવામાં એને લૂ લાગી ગઈ. એને આખે શરીરે કાળી બળતરા જાગી. પોલિટિકલ એજન્ટે ડોકટરને બોલાવ્યો. એ વખતે સાદરામાં રહેતા એક માત્ર ડોકટરે એ. જી. જી. ની પત્નીને તપાસવા જવાની સાફ ના પાડી. અને જે સજા થાય, તે બરદાસ્ત કરી લેવાની તૈયારી દાખવી. આખરે અમદાવાદથી કોઈ ગોરા ડોકટરને બોલાવવામાં આવ્યો મેડમને તપાસીને તેણે સૂચના આપી. વહેલામાં વહેલી તકે મેમસા'બ ને નાળિયેરનાં પાણી પાવાનું શરૂ કરો. ઉપરાંત લીંબુ નું પાણી, ફળોનો રસ અને અમુક - તમુક પ્રકારની ઔષધિઓ આપવા માંડો.

પણ ગામમાં તો સખત હડતાલ હતી. નાળિયેરી કે લીંબુ તો શું કોઈપણ ચીજ કયાંય મળે તેમ ન હતી. માંદગીમાં પિડાતી મેડમની ચીસો વધુ ને વધુ કરુણ બનતી જતી હતી. એનો જીવ જોખમમાં મુકાઈ ગયો હતો.

આખરે એ.જી. જી. નો મિજાજ ઠેકાણે આવ્યો. સેક્રેટરીને મોકલીને એણે મહાજનના મોવડીઓને બોલાવ્યા, તેમની સમક્ષ હેટ ઉતારી....પોતાની પત્નીને બચાવવા માટે દુકાન ખોલીને નાળિયેર આપવા વિનંતી કરી.

મહાજનના વડા એ એકજ સવાલ કર્યો. સાહેબ ! તમારી પત્નીના મૃત્યુ સમયનો આ તરફડાટ તમારાથી જોઈ શકતો નથી, ખરૂં ને ! એનો પ્રાણ જોખમમાં છે એ જોઈને તમે આટલા બધા વ્યાકુળ બની જાઓ છો, પણ ત્યારે તમને એ વિચાર નથી આવતો કે સાદરાના ગગનમાં વિહરતાં નિર્દોષ પક્ષીઓને તેમનો પ્રાણ પણ આટલો જ વહાલો છે. ગોળી થી વિંધાઈને તરફડતા એ મૂંગા જીવોને પણ મરતી વખતે આટલી જ વેદના વેઠવી પડે છે.

સાહેબની સાન ઠેકાણે આવી ગઈ. એની મેડમે એને પાણી લેવરાવ્યું અને હિન્દની ભૂમિ પર ફરીને શિકાર નહિ ખેલવાની એણે પ્રતિજ્ઞા જાહેર કરી. તે પછી મહાજને તાત્કાલિક માતાજીના મંદિરથી તેને નાળિયેર મંગાવી દીધાં. વાડીઓમાંથી લીંબુ મંગાવીને મહાજને જાતે જ મેમસાબ' ને તેનાં શરબત પીવડાવ્યાં. એને ડોકટરે દવા આપીને તથા સુખડનો લેપ કરીને તેનો પ્રાણ બચાવ્યો.

મુસ્લિમો અને અંગ્રેજોના રાજ્ય અમલમાં મહાજનની આટલી આણ

હતી. આ જનતાની તાકાત હતી. આજે દેશમાં કહેવાતી ગાંધીવાદી સરકારનું રાજ છે અને વડાપ્રધાન પદે એવી વ્યકિત બિરાજે છે. જે વાછરડાને શીતળાની રસી મુકાતી જોઈને પણ વ્યથા અનુભવે છે, અને ત્યારે ગીરના જંગલમાં કેવળ મનોરંજનના હેતુસર કરાવવામાં આવતાં સિંહના દર્શન માટે, કે સિંહની વસતી ગણતરી માટે સેંકડો નિર્દોષ અબોલ પશુઓનાં મારણ તરીકે ભોગ અપાય છે. સિંહ કોઈ પ્રાણીનો સીધો શિકાર ખેલે તેમાં અને મારણના શિકારમાં ઘણો ફરક છે. મારણને તો બિચારાને કલાકો પર્યત માનસિક ત્રાસ વેઠવો પડે છે. સિંહ પોતાનો શિકાર ખેલવા આવે ત્યાં સુધી બીકમાં થરથરવું પડે, અને સાવજની ગર્જના સાંભળતા - સાંભળતા ઝાડ સાથે બંધાયેલા મારણને મોતની પ્રતિક્ષા કરતાં રહેવું પડે. એ તો અધમમાં અધમ પ્રકારની નિર્દયતા છે

(ગુજરાત સમાચાર ના સૌજન્યથી) કલ્યાણ - પેજ ૩૨૩

પરિચારિકા

બે એક વર્ષ પરની વાત છે. મારી બહેનને ટાઈફોઈડ થયો હતો અને સારવાર માટે તેને એક ઈસ્પિતાલમાં રાખવામાં આવી હતી. તેની સ્થિતિ ઘણી ગંભીર હતી. એક દિવસ હું તેના ખાટલા નજીક બેઠી હતી ત્યારે બહેનની સારવાર માટે રહેલી એક ગોવાનિઝ પરિચારિકાએ આવીને તેને દવા પાઈ. દવા પીતાંની સાથે જ બહેનને એકદમ ઊલટી થઈ ગઈ અને પરિચારિકાનું મોં, હાથ આંખ તથા કપડાં ઊલટીથી ખરડાઈ ગયાં. મને બીક લાગી કે હમણાં જ એ ગુસ્સે થઈને ગમે તેમ બોલશે, પરંતુ મારા આશ્ચર્ય વચ્ચે મેં જોયું તો પરિચારિકાના મુખ પર ન હતો ગુસ્સો કે ન હતો તિરસ્કાર. તેના મુખ પર તો એ જ ચિરંજીવ દયાભાવ અને શાંતિ વેરતું હાસ્ય હતું. થોડીવારમાં તે સ્નાન કરી પોતાનાં સ્વચ્છ કપડાં પહેરી હસતે મુખે ફરજ ઉપર પાછી હાજર થઈ ગઈ. આવી કેટલી પરિચારિકાઓ હિંદમાં હશે ?

અખંડ આનંદ જાન્યુઆરી ૧૯૫૬ -આશા નિ. પંડયા

સર્યું આવા સૌન્દર્યથી !

અત્તર જેવા સુગંધી પદાર્થોની સુવાસ જલદીથી ઊડી જાય છે. આ સુવાસને વધુ સમય ટકાવી રાખવા માટે ચોક્કસ પદાર્થોને અત્યંત ઓછા પ્રમાણમાં તેની સાથે ભેળવવામાં આવે છે. આવા પદાર્થો "ફિકસેટીવ" કહેવાય છે જે અત્તર વગેરે ની સુવાસને "ફિકસ" કહે છે એટલે કે તેને ઝડપથી ઊડી જતી અટકાવે છે એને સુવાસ લાંબા સમય સુધી ટકી રહે છે.

કસ્તૂરી પોતે સરસ સુગંધ ધરાવતો પદાર્થ છે. તે સાથે તેની સુગંધ સેંકડો વર્ષ સુધી ટકી રહે એવી ટકાઉ હોય છે. પરંતુ આધુનિક સૌંદર્યના સાધનો બનાવનારાઓ તેનો ઉપયોગ મુખ્યત્વે "ફિકસેટિવ" તરીકે જ કરે છે, અને અત્તર જેવા બીજા સુગંધી પદાર્થોની સુવાસ તેમાં સહેજ કસ્તૂરીનું "ટિન્કચર" ભેળવવાથી ઘણી ટકાઉ બને છે. આવાં સૌંદર્યનાં સાધનો વાપરવાની વસ્તુઓ હોવાથી, તે વપરાયી રહે ત્યાં સુધી તેની અંદરના સુગંધી પદાર્થની સુવાસ ટકી રહે તો તે પૂરતું થઈ પડે છે.

કસ્તૂરીની જેમ "ફિકસેટિવ" તરીકે વપરાતા બીજા પદાર્થોમાં "અંબરગ્રિસ" તરીકે ઓળખાતા પદાર્થનો સમાવેશ થાય છે. અંબરગ્રિસ વ્હેલ માછલીના આંતરડામાં થાય છે. અને તે વ્હેલ કોઈક વાર ઓકી નાંખે છે. એ પદાર્થ મીણ જેવો દેખાય છે. અને તે વ્હેલ ઓકી નાખે છે ત્યારે પાણીની ઉપર તરતો રહે છે.

અંબરગ્રિસના "ફિકસેટિવ" તરીકેના ઉપયોગ માટે તેની માંગ વધતાં વ્હેલના આંતરડામાંથી તે મેળવવા માટે પણ વ્હેલનો શિકાર કરવાને ઉત્તેજન મળ્યું હતું.

વ્હેલ ૯૦ ફૂટ કરતાં પણ વધુ લાંબુ દરિયાઈ પ્રાણી છે અને તેનું વજન ૧૦૦ ટન કરતાં પણ વધુ હોય છે. આ પ્રાણી દરિયામાં રહેતું હોવા છતાં તે બચ્ચાને ધવડાવનારૂ પ્રાણી છે અને તેને શ્વાસ લેવા માટે પાણીની ઉપર આવવું

પડે છે. તેનું લોહી પણ ગરમ હોય છે.

વ્હેલ માછલી મોટા ભાગે પૃથ્વીના ઉત્તરના અને દક્ષિણના શીત કટિબંધોના સમુદ્રોમાં થાય છે તેના શિકાર માટે ખાસ સાધનો ધરાવતાં જહાજોમાં શિકારીઓ જાય છે.

વ્હેલ જહાજની નજીક જોવામાં આવતાં તેના પર દારૂગોળો ધરાવતું ભાલોડિયું ફેંકવામાં આવે છે આ ભાલોડિયાથી ઘાયલ થયેથી વ્હેલ પાણીમાં ઝડપથી નાસે છે. પરંતુ ભાલોડિયું તેના પેટમાં ભયંકર પીડા પેદા કરતું હોય છે. દારૂગોળો એટલાજ પ્રમાણમાં વાપરવામાં આવેલો હોય છે કે જેનાથી વ્હેલનું મરણ નીપજે પરંતુ તેના શરીરમાંથી કીંમતી અવયવો અને પદાર્થોનો નાશ ન થાય.

આમ વ્હેલ સામાન્ય રીતે એક કલાક થી વધુ સમય સુધી પીડાયા પછી મરણ પામે છે. અનેક વાર વ્હેલ મોતની સામે કલાકો સુધી ઝજૂમે છે. આવી રીતે શિકાર બનતી વ્હેલમાંથી ગર્ભવતી વ્હેલનો પણ સમાવેશ થાય છે. તેને પેટમાં દારૂગોળો ફુટવાથી અત્યંત વેદના થાય છે.

આવી પીડાકારક રીતે વ્હેલનું મરણ નીપજાવ્યા પછી તેના શરીરમાંથી જે પદાર્થો મળે છે. તેમાં "અંબરગ્રિસ" નો સમાવેશ થાય છે. તેનાં શરીરમાંથી મળતાં ચરબી અને તેલનો સાબુ જેવાં સૌંદર્યના સાધનો બનાવવા માટે ઉપયોગ થાય છે. દુનિયાભરમાં દર વર્ષે ૫૦ હજાર વ્હેલનો સંહાર થાય છે.

મોતી ખારા સમુદ્રમાંની કાલુ માછલીની છીપમાં પેદા થાય છે. કાલુ માછલીનું શરીર તેની ઉપરની છીપ અને નીચેની છીપ એમ બે છીપોની વચ્ચે સંપૂર્ણ રીતે રસાયેલું હોય છે. બલ્કે કાલુ માછલી આ બન્ને છીપોની કિનારીઓને ભિડાવીને - બંધ કરીને જાણે તેની અંદર બેસી રહેલી હોય છે. આ માછલીઓ સમુદ્રના તળિયે પેદા થાય છે અને ત્યાં જ પડી રહે છે.

આ માછલીના શરીરનો જે ભાગ છીપની સાથે જોડાયેલો છે તેની અને

છીપની વચ્ચે કોઈ બહારની રેતીના કણના જેવી કઠણ વસ્તુ ભરાઈ જાય છે તો માછલીને તે ખૂંચે છે અને પીડા થાય છે. આ પીડાનું નિવારણ કરવા માટે માછલી આવા કઠણ કણની આસપાસ લગભગ તેની છીપના જેવો જ પદાર્થ પોતાના શરીરમાંથી ઝરપાવે છે જે સુંવાળા પદાર્થ કણની આસપાસ સંપૂર્ણ રીતે જામી જાય છે અને એ રીતે એક હાથ પર માછલીની પીડા દૂર થાય છે અને બીજા હાથ પર એક સુંદર મોતી સર્જાય છે. કારણ કે પીડા કરતા કઠણ વસ્તુ આસપાસ ઝરપીને ગોળાકારમાં જામતો પદાર્થ એજ મોતી છે. કાલુ માછલીની પીડા જેટલી તીવ્ર હોય અને જેટલા લાંબા સમય સુધી ચાલે તેટલા પ્રમાણમાં તેના શરીરમાંથી વધુ પદાર્થ ઝરે છે અને વધુ મોટું મોતી બંધાય છે.

કાલુ માછલીની છીપ અને છીપની સાથે જોડાયેલા શરીરના ભાગની વચ્ચે ઉપર જણાવ્યા મુજબ કોઈ બહારનો રેતી જેવો કઠણ કણ ઘૂમવાનો બનાવ કવચિત જ કોઈક જ કાલુ માછલીના સંબંધમાં બને છે અને તેથી એવા કઠણ ખૂંચતા અને અત્યંત પીડાકારક કણની સામેની કાલુ માછલીના શરીરની પ્રતિક્રિયાના પરિણામે છીપમાં મોતી બંધાવાનો બનાવ પણ કોઈક જ કાલુ માછલીના સંબંધમાં બને છે. આમ કુદરતી સંજોગોમાં લાખો કાલુ માછલીઓમાંથી એકાદ જ કાલુ માછલીની છીપમાં મોતી હોય છે. આથી સમુદ્રના તળિયે જે સ્થળે કાલુ માછલીઓનું મોટું "ક્ષેત્ર" હોય છે. ત્યાં ડૂબકી મારનારા મરજીવાઓ ટોપલાઓ ભરીને કાલુ માછલીઓ એકઠી કરતા હોય છે. તો પણ જ્યારે તે માછલીઓની છીપો ઉઘાડીને જોવામાં આવે છે, ત્યારે કોઈક જ છીપમાંથી મોતી મળે છે અને બાકીની બધી કાલુ માછલીઓનો, તેઓની છીપો ઉઘાડી નાખવાથી, નિરર્થક નાશ થાય છે.

આમ કુદરતી સંજોગો પર આધાર રાખવામાં આવે તો મોતી એ અત્યંત વિરલ વસ્તુ બની રહે છે.

આવી સ્થિતિ હજારો વર્ષ સુધી રહ્યા પછી, જ્યારે કાલુ માછલી કયા કારણસર અને કેવી રીતે મોતી પેદા કરે છે. તે જ્યારે માનવીને આધુનિક

સમયમાં સમજાયું ત્યારે તેનો લાભ લઈને તેણે "કલ્ચર્ડ" મોતી પેદા કરવાની પદ્ધતિ વિકસાવી. જાપાનીઓ આ પદ્ધતિ વિકસાવવામાં આગેવાન હતા.

આમ કલ્ચર્ડ મોતી એ માનવીએ વિકસાવેલી પદ્ધતિથી બને છે. પરંતુ તે બનાવટી અથવા ખોટું નથી કારણ કે માનવી તે કાલુ માછલી પાસે જ સર્જાવે છે. અલબત્ત, તેનાથી મોતીની વિરલતા ઓછી થઈ જાય છે.

કાલુ માછલીઓ પાસે મોતી પેદા કરાવવા માટે એવી માછલીઓને એકઠી કરવામાં આવે છે અને તેઓને જીવંત રાખવા માટે ખારા પાણી વગેરેની વ્યવસ્થા કરવામાં આવે છે. તે પછી કાલુ માછલીની છીપ અને તેની સાથે જોડાયેલા તેના શરીરના ભાગની વચ્ચે કઠણ કણ કૃત્રિમ રીતે દાખલ કરવામાં આવે છે. અમેરિકાના પિગટો કલેમની છીપનો કણ આ કાર્ય માટે ઉત્તમ ગણાય છે. કાલુ માછલીના શરીરમાં ઊંડું છિદ્ર પાડીને તેમાં આવા કઠણ કણને ઘુસાડવો એ મુખ્ય કાર્ય છે. પરંતુ કણને એકલો ઘુસાડવામાં આવતો નથી. એક કાલુ માછલીને જુદી રાખીને તેના શરીરના માંસમાંથી એક પડનો નાનકડો ભાગ લઈને તેને પણ કઠણ કણની સાથે, જે કાલુ માછલીની પાસે મોતી પેદા કરાવવું હોય તે માછલીના શરીરમાં પાડવામાં આવેલા છિદ્રમાં બેસાડવામાં આવે છે. આમ કાલુ માછલીઓની છીપમાં (છીપની સાથે માછલીના શરીરને જોડતા ભાગમાં) કઠણ કણ દાખલ કરવાની સાથે માંસ કોષોનું પડ પણ દાખલ કરવા માટે એવું પડ મેળવવા ૧૨ થી ૧૫ કાલુ માછલી દીઠ એક કાલુ માછલીનો ઉપયોગ કરવામાં આવે છે.

કઠણ કણ દાખલ કરવાની શસ્ત્રક્રિયા જે કાલુ માછલીઓ પર કરવામાં આવી હોય, એવી ૫૦ થી ૬૦ માછલીઓને એક "પીંજરા" માં રાખવામાં આવે છે અને આવા પીંજરાઓને દરિયામાં ૪ થી ૬ અઠવાડિયા સુધી ડૂબેલાં રાખવામાં આવે છે. આ દરમિયાન કેટલીક કાલુ માછલીઓ જીવંત રહે છે અને બીજી શસ્ત્રક્રિયાના આઘાતથી મરી જાય છે નાના કણમાંથી નાનું મોતી એક મોસમમાં તૈયાર થાય છે જ્યારે મોટાં મોતી તૈયાર થતાં ૩ થી

૭ વર્ષ લાગે છે.

કાલુ માછલીઓ અત્યંત સંવેદનશીલ હોવાથી તેને કઠણ કણથી ઘણી પીડા થાય છે. અલંકાર, શોભા, શોખ અને ફેશનની વસ્તુ તરીકે આ માછલીઓ પાસે મોતી એટલે કે કલ્ચર્ડ મોતી પેદા કરાવવા માટે તેઓને લાંબા સમય સુધી તીવ્ર પીડા આપવામાં આવે છે. તે માનવતાની દૃષ્ટિએ પણ યોગ્ય નથી.

કલ્યાણ સપ્ટેમ્બર ૧૯૭૮ (મુંબઈ સમાચારના સૌજન્યથી)

અવસાન અંગેના વિચિત્ર રિવાજ

સ્પેન દેશમાં સપ્ટેમ્બર મહિનાના ત્રીજા અઠવાડિયામાં અવસાન પામેલા પૂર્વજોનાં ફોટા મૂકીને એની ચારે બાજુ ફૂલો ગોઠવવામાં આવે છે. પછી ખૂબ નાચ - ગાન કરવામાં આવે છે. ચોવીસ કલાક પછી મરનારની અર્થી સજાવીને કાઢવામાં આવે છે. નદીકિનારે જઈને અર્થીમાંથી પૂર્વજોના ફોટા કાઢીને નદીમાં વહેતા મૂકી દેવામાં આવે છે. ત્યાંના લોકો માને છે કે આમ કરવાથી પૂર્વજોનો આત્મા ભટકતો નથી.

જાપાનમાં અવસાન પામેલા પૂર્વજોના આત્માની શાંતિ માટે મરનારની કબર ઉપર ફાનસ સળગાવીને મૂકવામાં આવે છે.

થાઈલેન્ડના આદિવાસીઓમાં પૂર્વજોના આત્માની શાંતિ માટે એમના વારસદાર પૂનમની રાત્રે ચાંદનીના અજવાળામાં હાથી ઉપર બેસીને સરઘસ કાઢે છે. સરઘસમાં આવનારા લોકોને મરનાર પૂર્વજોની મનપસંદ ચીજો લૂંટાવવામાં આવે છે.

રોમમાં મરનાર પૂર્વજનો ફોટો સજાવીને એની ચારેબાજુ અત્તર છાંટવામાં આવે છે અને દારૂ ઢોળવામાં આવે છે. અહીંના લોકો માને છે કે મરનારનો આત્મા અત્તરની સુગંધથી ખેંચાઈ આવે છે અને દારૂ પીને

ખુશખુશાલ થઈ જાય છે.

યુગાન્ડા દેશના લોકો માને છે કે મરનાર દરેક માણસ એક વખત જરૂર ભૂત બને છે અને જુદા - જુદા રૂપમાં એના ઘરવાળાઓને દેખાય છે. અહીંના લોકો મરનારના આત્માની શાંતિ માટે એક કાળું ખોખું બનાવડાવે છે. પછી મંત્ર ભણીને એ ખોખું બંધ કરીને, મરનારનું નામ લેતાં નદી કિનારે જાય છે અને ખોખાને પાણીમાં મૂકી દે છે.

ચીનમાં મરનાર પૂર્વજોને યાદ કરીને લોકો પોતાના માથાના વાળ કપાવીને બાળે છે જેથી મરનારના આત્માને શાંતિ મળે. -"રખેવાળ"

શિશુઓ જ્યાં વેચાય છે અને શિશુશિરો જ્યાં કપાય છે

હિન્દીમાંથી અનુવાદ : શ્રી પૂર્ણેન્દુ

વધનો વેપાર ! હાડકા અને હાડપિંજરોના હાટ ! શિશુઓના શિરના સોદા !

અસંભવ સાવ અસંભવ લાગે એવી આ વાતો છે. પણ ભારતે એ વાતનું વરવું પ્રદર્શન કર્યું છે કે, જો લક્ષ્મી મળતી હોય, તો હરકોઈ જાતના વેપાર કરવામાં વાંધો શો છે ? જાણીને આંસુઓને આમંત્રણ મળે એવું એક આશ્ચર્ય થશે કે, વિશ્વમાં ભારત જ માત્ર એક એવો દેશ છે કે, જે વિશ્વના ૨૩ દેશોને શિશુના શિર અને માનવોના હાડપિંજર પૂરા પાડતો હોય ! એવા ૩૦ નિર્યાતકારોને લાયસન્સ આપ્યા છે કે, જેઓ હાડપિંજરોના હાટ માંડીને એને વેચી શકે ! કયાં ગઈ કાલના ભારતની ધર્મમૂલક ભવ્યતા ! ને કયાં અત્યારની આવી લોહીથી લચપચ લક્ષ્મીની લાલસા !

લક્ષ્મીની આ લાલસાઓ હવે એક નવું વિકરાળ સ્વરૂપ છતું કર્યું છે અને શિશુઓના શિર વેચાવા માંડયા છે. વાંચતા પણ અરેરાટી છૂટી જાય,

એવી દર્દીલી આ દાસ્તાન છે. પણ પ્રજાનો જે વિરાટ આજે કુંભ કર્ણની નિદ્રામાં પોઢી ગયો છે, એને જગાડવા આવા દર્દને પણ મર્દ બનીને ઘણીવાર કલમ દ્વારા સશબ્દ બનાવવા પડતા હોય છે. બિહાર પટનાથી પ્રકાશિત એક દૈનિકમાં એકાદ વર્ષ પૂર્વે એવા સમાચાર પ્રકાશિત થયા હતા કે, બિહારની ધરતી પરથી એક વર્ષમાં ૫ થી ૭ બાળકોને ગાયબ કરવામાં આવ્યા છે મહિનાઓ સુધી આ સમાચારની આસપાસ અનેકવિધ પ્રશ્નાર્થોની સૃષ્ટિ ઘેરાતી રહી. પણ હમણાં એકાએક જ આ "બાળ - ચોરી" નું પગેરું પકડાઈ ગયું. થોડા મહિનાઓ પૂર્વેના હિન્દી દૈનિકોમાં એવા સમાચાર પ્રસિદ્ધ થયા હતા કે, બાળકોના ચોરો રાજ્યના વિવિધ ભાગોમાં ફેલાયેલા છે, એ બધા ચોરો માસૂમ, ખીલેલા ફૂલ જેવા નાના - નમણા બાળકોને ચોરી - ચોરીને પટના પહોંચાડે છે, આ પૂર્વે એમને ઝેર પીવડાવીને કમોતે મારવામાં આવે છે. ઝેર પીધા બાદ મૃતપાય: અને બેહોશ બનેલા એ બાળકોના ગળા ઉપર છરી ફરી વળે છે.

બલિની વેદી પર વધેરાતા બકરાની જેમ છરાના એક જ ઝાટકે શિશુઓના શરીર પરથી ઝૂટવી લેવામાં આવેલા એ શિરમાંથી પછી માંસ આદિ કાઢી લઈને એને પાણીમાં ઉકાળીને સૂકવવામાં આવે છે.

આજે સંપૂર્ણ બિહાર ધ્રુજતા ચહેરે અનેક પ્રશ્નો એકી સાથે પૂછી રહ્યું છે : બાળકોની ગરદન કાપનારા આ નર - રાક્ષસો કોના ઈશારે આવી બાળહત્યાનું ષડ્યંત્ર ચલાવી રહ્યા હશે ? આવા ક્રૂર કસાઈઓ સુધી બાળકો કઈ રીતે પહોંચતા હશે ? ત્યાં સુધી બાળકોને પહોંચાડનારા દાનવો કોણ હશે ? જે બાળકોના ધડથી ગંગાની ગોદ અપવિત્ર બનાવાઈ રહી છે, એ બાળકોનો કોઈ અપરાધ ખરો ? આ અને આવા રૂંવાટાં કંપાવનારા સવાલોને ઉકેલવા જતા જે કરૂણ - કહાણીના અંશો બહાર આવ્યા છે, એ તો વળી આંખમાંથી આંશુ નહિ. લોહી ખેંચી લાવે, એટલાં બધા દર્દીલાં છે.

પૈસાના ભૂખ્યા એવા કેટલાક ચોરો છે. અને એ ચોરોને સહાય

કરનારી હુંડિયામણની ભૂખ એવી સરકાર છે, જેથી આજે બિહાર - ઓરિસ્સા વિદેશી બે રાજ્યોના નામ બદનામ બન્યા છે ભારત સરકારે હૂંડિયામણના લોભમાં લપેટાઈને માણસના હાડપિંજર વેચવાના પરવાના કેટલાકને અમુક શરતે આપ્યા છે. પણ એ શરતોના ભૂક્કે - ભૂક્કાં બોલાવીને એવા કૃકૃત્યો કરી રહ્યા છે કે જેથી ભારતને ભારે બદનામી વહોરવી પડે !

જેનું કોઈ વારસ ન હોય, એવી લાશને ૭૨ કલાક સુધી બાળી શકાતી નથી, ત્યાં સુધી આનું જતન વાર્તાનુકૂલિન રૂમમાં કરવાનું હોય છે, આ અરસામાં એનો ફોટો છાપામાં પ્રસિદ્ધ કરીને એ લાશના વારસદારને શોધવાનો પ્રયાસ કરવાનો હોય છે. આટલા સમય સુધીમાં જો એ લાશના વારસદારનો કોઈ વારસ ન મળે, તો જ પછી એની અંત્યેષ્ટિ કરવાની હોય છે. આવો કાયદો પોથીમાં છે. છતાં હાડપિંજરો શોધવા આજની જેમ ભટકતા નર - રાક્ષસો હોસ્પિટલો, સ્મશાનો અને દુર્ઘટના - ગ્રસ્ત ક્ષેત્રોમાં પહોંચી જાય છે અને શબોને ચોક્કસ ઠેકાણે પહોંચાડવામાં સફળ બને છે. એવું નથી કે, આની જાણ એ એ સ્થાનના ડોકટરો, રક્ષકો આદિને ન થતી હોય ! એમની આંખમાં ધૂળ નાખીને નર - રાક્ષસો આવું કૃત્ય કરતા હોય, એવું ય નથી. પણ આવા બધા રક્ષકોનેય એઓ પોતાની આ પ્રવૃત્તિના સાથીદાર બનાવી દઈને વાડ પાસે જ ચીભડા ગળાવે છે. આ રીતે શબો મેળવી આપનારને રૂપિયા દોઢસોથી છસ્સો જેટલી કમાણી થતી હોય છે, અને એ નરશબોને વેચીને પેલા નર - રાક્ષસો તો વળી આથીય વધુ કમાતા હોય છે. આમ, હાડપિંજરોના વેપાર પાછળ એક વ્યવસ્થિત જાળ ગોઠવાયેલી છે. આ અમાનવીય કૃત્યનો હવે એક નવો જ ફણગો બિહારમાં ફૂટયો છે અને એથી જીવતા બાળકોની ચોરી શરૂ થઈ છે.

ચોરાયેલા બાળકોના દેહ પરથી માથું કાપનારા હત્યારાઓ એ તરફ "છિલ પટિયા" તરીકે ઓળખાય છે. આ લોકો બાંસઘાટ દીપાઘર આદિ ગંગાના વેરાન - નિર્જન વિભાગમાં ઘૂમતા હોય છે અને ત્યાંના નાવિકોને પણ પૈસાનો લોભ બતાવીને હિંસાના દલાલ બનાવી દેતા હોય છે. નાવિકો ગમે ત્યાંથી બાળકોને પકડીને આ લોકોને સોંપે છે. પછી આ લોકો મદિરા ઢીંચીને

આ જીવતા - બાળકોના ગળા પર છરી ચલાવીને ધડ પરથી માથું અલગ કરે છે. એ માથામાંથી માંસ આદિ ખેંચી - ખેંચીને બહાર કાઢે છે. પછી એ બાળ ખોપરીને ગરમ પાણીમાં ઉકાળીને સૂકવી નાખે છે. હાડપિંજરોને ઉકાળીને સાફ કરવાનું વ્યવસ્થિત કાર્ય પટના મેડિકલ કોલેજમાં થાય છે. કોલેજમાં સેંકડે ૨૫ ટકા જીવતા બાળકોની ખોપરીઓ સૂકાવાતી હોવાની ચોંકાવનારી વિગત મળતા આની નજીકમાં ચાલતી બાળકોની એક સ્કૂલ બંધ થઈ ગઈ છે.

આવો બિનકાયદેસર વેપાર કરનારા લગભગ દરમહિને શિશુશિરોની ૨૦૦ પેટીઓ પટના જંકશનથી કલકત્તા તરફ રવાના કરતા હોય છે. એક પેટીમાં ૮ થી ૧૦ શિશુશિરો સમાવાતા હોય છે. આ બુંકિગ વૈશાખ - જેઠ મહિનામાં "કેરીઓની પેટી" ના નામે થતું હોય છે કહે છે કે, અમેરિકા, કેનેડા, ફ્રાન્સ, ઓસ્ટ્રેલિયા આદિ દેશોમાં બાળખોપરીની માંગ ઘણી છે, અને દિવસે - દિવસે આ માંગ વધતી જ જાય છે. ચિકિત્સા અને વિજ્ઞાનના ક્ષેત્રમાં હાડપિંજરો ને બાળખોપરીઓની જંગી આવશ્યકતા પડતી હોવાથી એ દેશો મોં માંગ્યા ભાવ ચૂકવીને આ બધું ખરીદે છે. એ લોકો સમજે છે કે, બાળ - ખોપરીઓ ભારતમાં જલદી સુલભ બને એમ છે. આથી લક્ષ્મીની લાલચ આપીને એ દેશોએ આવા માસૂમ - બાળકોની હત્યાની જાળ ભારતમાં બિહારમાં પાથરી છે. હાલ હરમહિને લગભગ ૧૫૦૦ શિશુશિરો બિહારમાંથી આ રીતે કલકત્તા પહોંચાડાય છે.

આમ, એક તરફ બિહારમાં શિશુઓ કપાય છે, તો ઓરિસ્સામાં શિશુઓ વેચાય છે. ઓરિસ્સામાં "કાલાહાંડી" જિલ્લામાં ગરીબી એટલા બધા મોટા પ્રમાણમાં ફેલાયેલી છે કે, લગભગ તો ઘણી ખરી માતાઓ મૃત - બાળકોને જ જન્મ આપે છે, જો કોઈને જીવતો બાળક જન્મે છે, તો તેનું ભરણ પોષણ કરવા અસમર્થ એ માતા પોતાના બાળકને ઈસાઈ આદિના મિશનોમાં મૂકવા જતા વચમાં થોડી સાડીઓ કે થોડા રૂપિયાનું પ્રલોભન મળતા વેચી મારે છે. એક ભૂતપૂર્વ પ્રધાનના શબ્દોમાં એ વિભાગમાં, ચણા અને મમરા કરતાં પણ સસ્તા ભાવમાં બાળકો વેચાય છે.

આ વખતે મેની સખત ગરમીમાં કાલાહાંડી જિલ્લાનું એક સર્વેક્ષણ કરવામાં આવ્યું, તો ચોંકાવનારી વિગતો મળી. આ દિવસોમાં ગામડાના ગામડા બાજુની પહાડીઓમાં પહોંચી જાય છે. કારણ કે ત્યાં ખાવા માટે ઝાડીઓના પાંદડા તો સહેલાઈથી મળે ! એમાં ઘણી ઝેરી વનસ્પતિઓ પણ હોય છે, પણ એનીય પરવા કર્યા વિના ગામના ગામ ખાલી કરીને લોકો આવી પહાડીમાં જઈને દિવસોના દિવસો ખેંચી કાઢે છે. આ જિલ્લો કુદરતના કોપનો તો ભોગ બન્યો જ છે. તદુપરાંત બીજી બાજુ શાસકીય તુમાખીઓ, અન્યાયભરી અવ્યવસ્થાઓ અને સો મણ તેલે અંધારા જેવી અવદશાઓનોય પૂરેપૂરો ભોગ બન્યો છે. જેથી આવી પ્રજાના ઉદ્ધાર (?) માટે કરોડોની યોજનાઓ પ્રસ્તાવિત થવા છતાં એ રૂપિયાને કયાંથી પગ આવી જાય છે અને એ કયાં અદૃશ્ય બની જાય છે, એ પ્રજા જાણી શકતી નથી !

અહિંસાના સંદેશની ઉદ્‌ગમ - ભૂમિ ગણાતી બિહારની ધરતી આજે પૈસાના લોભે "બાળ - ખોપરી" જેવા નિષ્ઠુર - વેપારની હાટ માંડીને બેઠી છે અને ઓરિસ્સાના અનેક ગામડાઓની પ્રજાને પેટ ભરવા માટે થોડાક દમડાની લાલચ, સગા - સંતાનોય વેચવાની ફરજ પાડતી હોય છે. દેશમાં હિંસા જે રીતે હરણફાળ ભરી રહી છે, એનું એક કરૂણાતિકરૂણ ચિત્ર શિશુઓના શિરની આ દર્દીલી - દાસ્તાનમાંથી નથી ઉપસી આવતું શું ? હિન્દી દૈનિક "ભાસ્કર" ના ૨૫ જુલાઈ ૧૯૮૫ના અંકમાં આનો સચિત્ર અને સવિસ્તર અહેવાલ જાણે લોહીમાં લેખિની બોળીને આલેખાયો છે. અહીં તો એનું આંશિક પ્રતિબિંબ જ ઝીલવાનો પ્રયાસ થયો છે. આવી હિંસાને કોણ નાથશે ? આવી હિંસાની હુતાશનીમાં જાણ્યે - અજાણ્યે પેટ્રોલ બની જતી એ દયનીય - ગરીબીના ભડકાને ઓલવવા દયાની કોઈ મેઘમાળા બાથ ભીડશે ખરી ?

વર્તમાનમાં તો આનાથીય વધારે કરુણ ઘટનાઓ બની રહી છે.

કલ્યાણ ૧૯૮૫

દુનિયાના સૌથી અજબ કંજુસ – શ્રીમંતો અને તેમનાં જીવનના વિચિત્ર પ્રસંગો

જૈનશાસ્ત્રોમાં મમ્મણ શેઠ જેવા કંજૂસોની વાતો આવે છે. જે પુણ્યોદયે મેળવેલી સંપત્તિનો ન સદ્‌વ્યય કરી શકે, ન સ્વયં ભોગવી શકે, પણ તેને એમ ને એમ સાચવી તેની ગુલામી કરી છેવટે ખાલી હાથે પાછા જાય. ખરેખર મેળવવાનું પુણ્ય જુદું છે, ભોગવવાનું પુણ્ય જુદું છે, અને ત્યાગના પુણ્યની તો બલિહારી છે. દુનિયામાં મમ્મણ શેઠને પણ ટપી જાય તેવા લક્ષ્મીના ગુલામ કંજુસ શ્રીમંતો થયા છે, તેની માહિતી આપતો આ રસપ્રદ લેખ વાચકો માટે અહિ રજૂ કરેલ છે. આના પરથી એટલો સાર નીકળે છે કે, *જે કાંઈ મલ્યું છે, તેનો સદુપયોગ કરવામાં વિવેકી માનવોએ અવશ્ય શકય કરવું.*

જગતમાં સાચી રીતે મોટા પ્રમાણમાં પૈસા મેળવવા મુશ્કેલ છે, પણ તેથી વધુ મુશ્કેલ, મેળવેલા પૈસાને સાચવવાનું કાર્ય છે. પોતાના બાપ - દાદાની લાખ્ખોની મિલ્કત શેર - સટ્ટા કે રેસ જુગારમાં ઉડાવી દઈને ગણતરીના વર્ષોમાં જ પાયમાલ થઈ ગયેલા કમનસીબ લોકોને આપણે જાણીએ છીએ ત્યારે આ વિધાનની ખાતરી થાય છે. હાથમાંના પૈસા સાચવીને કરકસરથી વાપરવાની આવડતને અભાવે જેમ આવા લોકો હદ ઉપરાંતની કરકસર - કંજુસાઈથી દુઃખી થાય છે. તેવા લોકો બિનજરૂરી તો શું પણ જરૂરી ખર્ચ પણ કરી શકતા નથી. આવા લોકો છતે પૈસે ખાવા - પીવા, પહેરવા - ઓઢવા વગેરે બાબતોમાં જાણે પોતે નિર્ધન હોય તેવું જ જીવન ગાળતા હોય છે અને એકલે હાથે કરીને દુઃખો અનુભવતા હોય છે અને મુશ્કેલીઓ વેઠતા હોય છે. તેમનું અઢળક ધન તેમના કામમાં આવતું નથી પણ તેમનાં મરણ બાદ બીજાઓના હાથમાં જઈ પડે છે. આપણે ત્યાં મેલાઘેલા દરિદ્રી જણાતા, પણ લાખ્ખોની મિલ્કત ધરાવતા કેટલાક કંજુસોના ઉદાહરણો જાણીતાં છે. તેમને જોઈએ તો કલ્પના પણ આવે નહિ કે તેમની પાસે લાખ્ખો રૂપીઆની મિલ્કતો હશે. આ પ્રકારના કંજુસો બધા જ દેશોમાં જોવા મળે છે અને તેમાંથી અનેક કંજુસો તો એક કે બીજા કારણસર યાદગાર પણ બન્યા છે.

ભંડારિયામાં ભરાઈ રહેતો કંજુસ :

વીલીયમ ડેન્યન નામનો એક કંજુસ તેની કંજુસાઈ માટે ખૂબ જાણીતો થયો છે. તેની પાસે કેટલો પૈસો છે તેની તેના પાડોશીઓ સુદ્ધાંને ખબર પડતી નહિ. એટલું જ નહિ પણ પાડોશીઓ તો તેને બિચારો ભૂખે મરતો કોઈ માનવી છે એમ જાણીને અવાર - નવાર પોતાનું વધ્યું - ઘટયું જમણ તેને આપી આવતાં. ડેન્યનની કંજુસાઈ એટલી તો ઉગ્ર હતી કે તેને આખરે આ રીતે પ્રાપ્ત થતા બીજાઓના ખોરાક ઉપર પોતાનો નિભાવ કરવાની એક આદત પડી ગએલી. અને એક પણ દમડી વાપરવી એ તેને મોટી કષ્ટદાયક ઘટના લાગતી. રહેવા માટે તેને એક મોટો ફલેટ હતો, પણ તે સમગ્ર ફલેટનો ઉપયોગ કરવાને બદલે તેમાંના એક અંધારિયા ભંડારિયામાં ભરાઈને રહેતો. તેનો પહેરવેશ ચિંથરેહાલ જેવો હતો. તેને જોતાં કોઈને પણ થાય કે તે ભૂખે મરતો ભિખારી હોવો જોઈએ. જો કે તે ભિક્ષા માગતો નહી, પણ બીજાએ આપેલો વધ્યો ઘટયો ખોરાક ખાવામાં એને કશું અજુગતું લાગતું નહિ. આવી વિચિત્રતા ધરાવતો કંજુસ જ્યારે મરણ પામ્યો ત્યારે તેની પાસેથી ૫૦,૦૦,૦૦૦ પાઉન્ડની નગદ રકમ પ્રાપ્ત થઈ ! બિચારા ડેન્યનનો કોઈ વારસદાર પણ ન હતો એટલે જીવની જેમ જાળવેલી એ પચ્ચાસ લાખ પાઉન્ડની બધી રકમ સરકારી તીજોરીમાં ચાલી ગઈ !

જો કે આપણને એ હકીકત આશ્ચર્યજનક લાગે છે, છતાં ઘણા માનવીઓનો સ્વભાવ જ એવો હોય કે જેમ વધારે પૈસા તેમની પાસે આવે તેમ તેઓ વધુ કંજુસ બને છે. અને પછી તો એકાદ દમડીનો વ્યય પણ તેમને કષ્ટદાયક લાગે છે.

કંજુસ સ્ત્રી

હેટી ગ્રીન નામની એક બ્રિટીશ સ્ત્રી પણ તેની ભયંકર કંજુસાઈ માટે નામચીન થઈ છે. એમ કહેવાય છે કે તેને આશરે ૧૦,૦૦,૦૦૦ પાઉન્ડની

મિલકત વારસામાંથી મળેલી, અને તે મિલ્કતમાંથી થતી આવકમાંથી એક પાઈનો પણ ખર્ચ કર્યા વિના એ આવકને વારસાગત મિલ્કતમાં તે ઉમેરતી જતી અને એ રીતે તેણે વારસાની મિલ્કત કરતાં ૨૦ ગણી મિલ્કત જમા કરી હતી. અને આ કંજુસ બાઈની વિચિત્રતાઓ પણ જાણવા જેવી છે. શિયાળામાં લાગતી ઠંડીથી બચવા ગરમ કપડાં ખરીદવાને બદલે તે પોતાના જરીપુરાણા કપડાંની અંદરના ભાગમાં છાપાં રાખીને ટાઢને નિવારતી, કપડાં ધોવામાં સાબુ પણ ન બગડે એ માટે પોતાના સ્કર્ટના માત્ર તે છેડાઓજ ધોતી અને અન્નપૂર્ણા જેવી એક સંસ્થામાંથી સસ્તા ભાવે ખોરાક મળતો હોવાથી, પોતાનો ખોરાક ત્યાંજ ખરીદી લેતી. આ સ્ત્રીને એક રેલ્વેમાં થોડો હિસ્સો હતો એટલે એક પાદરીએ જઈને તેની પાસે રેલ્વેના ફ્રી પાસની માંગણી કરી. તેણે આ કંજુસ સ્ત્રીને સમજાવ્યું કે જો હું રેલ્વે દ્વારા જુદે - જુદે સ્થળે જઈને ઉપદેશ આપી શકીશ તો તેનું પુણ્ય હેટી ગ્રીનને મળશે, છતાં હેટી ગ્રીનને ગળે આ વાત ઉતરી નહિ, અને આ પ્રકારે મફત વસ્તુ લેવાની વિરૂદ્ધ બાઈબલમાંથી એક ફકરો વાંચી પાદરીને ભગાડી મૂકયો. પોતાની સમગ્ર જિંદગી દરમિયાન હેટી ગ્રીને આ પ્રકારનું જ કંજુસાઈ ભરેલું જીવન વીતાવ્યું હતું.

લક્ષાધિપતિ મખ્ખીચૂસ

રસેલ સેજ નામનો લક્ષાધિપતિ પણ આવો જ એક કંજુસ હતો. નગદ ૨,૦૦,૦૦,૦૦૦ પાઉન્ડ જેટલી તેની મિલ્કત હતી છતાં એક દમડી વાપરતાં તેનો જીવ કપાઈ જતો. વર્ષો અગાઉ પોતે યુવાન હતો ત્યારે તેણે જે એક સૂટ ખરીદેલો, તે પોષાકનો રંગ તદ્દન ઉખડી ગયો હોવા છતાં એ સૂટ એ જ તેનો પોષાક હતો. તૈમુર લંગના સમયનો કોઈ ઐતિહાસિક અવશેષ હોય એવી કાળજીથી એ પોતાના સૂટને જાળવી રાખતો. આમ પોષાક પાછળ તો તેને ભાગ્યે જ કંઈ ખર્ચ કરવાનો રહેતો પણ ખોરાક પાછળ પણ ખર્ચ ન વધી જાય તે માટે તેણે અમુક યુકિતઓ શોધી કાઢી હતી. સવારના નાસ્તા માટે તે ચોકલેટ

ખરીદતો, પણ તે માટે દરેક દુકાને ઘુમી વળતો અને જ્યાં માલ સૂર્ય પ્રકાશથી સહેજ પીગળતો હોય ત્યાં લમણાંઝીક કરીને થોડી ઘણી પણ કિંમત ઓછી કરાવતો અને જ્યાં કિંમત ઓછી કરાવી શકાય તેમ હોય ત્યાંથી જ તે પોતાની ખરીદીઓ કરતો. બપોરે ભોજન માટે તે ત્રણ આનાની કિંમતનું સેન્ડવીચ અને કેટલાક ફળો ખરીદતો, પણ તેણે જોઈ લીધું હતું કે વધુ પડતાં પાકી ગયેલાં ફળો સસ્તાં મળે છે. એટલે ખાસ એવા - એવા ફળો જ તે શોધવા જતો. એક બુઢ્ઢી ડોશી આવાં ફળો વેચતી એટલે મોટે ભાગે ત્યાંથી સસ્તે ભાવે તેને ફળો મળી રહેતાં.

એક દિવસ એવું બન્યું કે તેણે પોતાના નોકરને બપોરે સેન્ડવીચ લેવા મોકલ્યો અને નોકર સારૂં સેન્ડવીચ ૩ આનાને બદલે ૬ આનાની કિંમતનું લઈ આવ્યો. આવો પૈસાનો દુર્વ્યય જોઈને રસેલ સેજના હ્રદયમાં શું શું થયું હશે તેની કલ્પના જ કરવી રહી. તેણે તરત જ નોકરને કરકસર વિષે એક મોટું વ્યાખ્યાન કહી સંભળાવ્યું. તેથી પણ સંતોષ ન થતાં છેવટે નોકરના પગારમાંથી ૩ આના કાપી લીધા.

તેના જીવનની વિચિત્રતાઓ

રસેલ સેજની ઓફિસમાં પણ એવી જ કંજુસાઈનાં દર્શન થતાં. ઓફીસની દિવાલો ઉપર કદી રંગ ચૂનો કરવામાં આવતો નહીં. ઓફીસની ભોંય ઉપર કારપેટ કે બિછાનું પણ પાથરવામાં આવતું નહિ. ઓફીસમાં ખુરસીઓ ઉધઈ લાગીને જરી પુરાણી થઈ ગઈ હતી.

રસેલ સેજની કેટલીક મુડી શેરોમાં રોકવામાં આવી હતી. જો કે તે શેરોનો સટ્ટો તો નહોતો કરતો, પણ શેર બજારમાં આવેલી વ્યાપક મંદીને કારણે તેને આશરે ૧૫,૦૦,૦૦૦ પાઉન્ડની એકસામટી ખોટ ગઈ. જો કે એ વેળા તેની કુલ મિલ્કત આશરે ૩,૦૦,૦૦,૦૦૦ પાઉન્ડની હતી, છતાં આ આર્થિક આફતથી તેનું મગજ એવું તો હચમચી ગયું કે તેણે પોતાની કંજુસાઈને

વધુ ઉગ્ર બનાવીને આર્થિક આફતનો બદલો વાળી લેવાનો વિચાર કર્યો. હવે ચોકલેટ અને ફળોને રોજ - રોજ ખરીદવાને બદલે માત્ર એકાંતરે જ ખરીદતો. પોષાકનો કે બીજો કોઈ ખર્ચ તો તેને હતો જ નહિ, છતાં જે કાંઈ ઘટી શકે તે બધો જ ખર્ચ તેણે ઘટાડી નાંખ્યો. જ્યારે તે અવસાન પામ્યો ત્યારે તેણે પોતાનો જુનો સુટ પહેર્યો હતો. એ જ સૂટ તે ૫૦ વરસથી વાપરતો આવ્યો હતો. પોતાની મિલકત જિંદગી દરમિયાન તો તેને બિલકુલ ખપમાં આવી ન હતી. જિંદગી બાદ એ મિલકતમાંથી એક ધર્માદાનું ટ્રસ્ટ ઉભું કરવામાં આવ્યું. એ રીતે એની જંગી મિલકતનો નિકાલ આવ્યો.

કરોડોનો વારસો મૂકી ગયો

આવી ભયંકર કંજુસાઈ જન્મવાનું કારણ શું ? કારણ કોઈ કહી શકે તેમ નથી. કેમકે તે સ્વભાવગત બાબત હોય છે. પણ કયારેક એવું પણ જોવામાં આવ્યું છે કે જીવનમાં એકાદો અસાધારણ આંચકો લાગતાં માનવીની દૃષ્ટિ અને તેનું ચારિત્ર્ય બધું જ ફરી જાય છે. રોબર્ટ આર્થિંગ્ટન નામના વિશ્વના એક બીજા નામચીન કંજુસની બાબતમાં આવું જ કંઈક બન્યું હોવાનું કહેવાય છે. તે એક મહાન માનસિક આંચકાને કારણે ઉગ્ર કંજુસ બની ગયો હતો. તે પ્રેમમાં નિષ્ફળ ગયો ત્યારથી તેના જીવનમાં એકદમ પરિવર્તન થઈ ગયું. તેણે પોતાના બધા નોકરોને નિવૃત્તિ આપી દીધી અને જાણે જીવનમાં કોઈ રસ રહ્યો ન હોય તેમ એક જ નાના ઓરડામાં તે રહેવા લાગ્યો. તે ઘરની બહાર પણ ભાગ્યેજ નીકળતો. એટલે તેને નવાં કે સારાં કપડાં ખરીદવાનું કે શીવડાવવાનું તેણે બંધ કર્યું અને પોતાનાં જૂનાં - જૂનાં કપડાં પહેરવા લાગ્યો. પોતાનાં બધાં કપડાં ખૂટી ગયા ત્યારે તે પોતાના પિતાનાં જૂના કપડાં ચડાવવા લાગ્યો. બહાર ફરવા જવાનું તો હવે તેને રહ્યું જ ન હતું. એટલે તે માટે કંઈ ખરચ કરવા જેવું ન હતું. મોજશોખ કોઈ રહ્યો નહોતો એટલે એ રીતે પણ ખર્ચ થતો નહિ. ખાવાનું પણ તેણે સાદું કરી નાખ્યું હતું અને તેનો ખર્ચ પણ ખૂબ જ ઘટાડી નાખ્યો હતો.

જ્યારે તે મરણ પામ્યો ત્યારે રૂા. ૧,૩૫,૦૦,૦૦૦ તેના કબજામાંથી નીકળેલા. આ બધા પૈસા કેટલીક પાદરી સંસ્થાઓના ઉપયોગમાં આવ્યાં. આટલી અઢળક સંપત્તિનો જિંદગીભર તે ઉપયોગ જ ન કરી શકયો એ પણ કુદરતી એક અજબ લીલા જ કહેવાય ને ?

યાચક ખાલી પાછો ફર્યો

પોતાની મિલકતનો લેશ પણ ઉપયોગ ન કરવો અને નજીવી બાબતમાં પણ બીજાની વસ્તુઓનો ઉપયોગ કરવો એ કંજૂસોના જીવનની એક વિશિષ્ટતા બની જાય છે. આ અંગે અર્લ ઓફ કલેનરી કાર્ડ નામના એક મશહૂર બ્રિટિશ કંજૂસના જીવનની કેટલીક વિગતો રસપ્રદ છે. બપોરે રેસ્ટોરાંમાં જમવાનું બહુ ખર્ચાળ છે એવી તે ફરિયાદ કરતો અને આ મુશ્કેલીનો ઉપાય તેણે એવો શોધી કાઢયો હતો કે ઘેરથી કાગળની થેલીમાં થોડી સેન્ડવીચ પોતાની સાથે લઈ જતો. એ તો ઠીક પણ તેની બીજી એક વિચિત્રતા ખાસ નોંધવા જેવી છે. એક વખત રેસ્ટોરાંમાં કોઈએ તેને આમંત્રણ આપેલું ત્યારે તે ત્યાંથી તે વધારાની એક "આમલેટ" રૂમાલમાં વીટાળીને ઘરે ઉપાડી ગયો હતો. જો કોઈ તેને ચા પીવાનું આમંત્રણ આપે અને સાથે સાથે સેન્ડવીચ પણ મૂકે તો તે અચૂક બે સેન્ડવીચ ઉપાડતો, તેમાંથી એક ત્યાં ને ત્યાં ખાઈ જતો અને બીજી એક પાછળથી ઘરે જઈને ખાવા માટે, હળવેથી રૂમાલમાં સરકાવી દેતો. આયરલેન્ડમાં તેને થોડી - થોડી જાગીર હતી. પણ એ જાગીર ઉપર પગ મૂકવાની તે હિંમત કરતો નહી, કેમકે ત્યાં જાય તો તેની કંજૂસાઈથી ત્રાસેલા ભાડુતો તેના ટુકડે - ટુકડા કરી નાખે. બ્રિટનમાં સૌથી કંજૂસમાં કંજૂસ માનવી તરીકે તે નામચીન બન્યો હતો. મદદ માટે તેની પાસે જઈ ચડેલો દરેક યાચક ખાલી હાથે જ પાછો ફરતો. તે કહેતો કે બીજાને મદદ કરવાથી તેમને મહેનત નહિ કરવાની આદત પડી જાય છે. આ રીતે પોતાની કંજૂસાઈનો બચાવ કરતો. તેની કંજૂસાઈ આટલેથી જ અટકતી ન હતી. તે પોતે લક્ષાધિપતિ હોવા

છતાં જ્યારે પોતાના પિતાનું અવસાન થયું ત્યારે તેની મરણવિધિનો ખર્ચ પોતે ભોગવવાને બદલે પોતાના સગાંવહાલાંએ એકઠો કરેલો ફાળો તેણે સ્વીકાર્યો હતો. તે કહેતો કે સગાં કામ નહિ આવે તો કોણ કામ આવશે ? જ્યારે તે મરણ પામ્યો ત્યારે તે ૨૬,૦૦,૦૦૦ પાઉન્ડની જંગી મિલ્કત પોતાની પાછળ મૂકી ગયો હતો.

કંજુસ ધારાશાસ્ત્રી

કંજૂસોની અનેક વિચિત્રતાઓમાં બીજી એક એવી પણ વિચિત્રતા જાણવા મળે છે કે પિતા એકદમ ઉદાર સખાવતી વ્યકિત હોય, પણ પુત્ર કંજૂસમાં કંજૂસ હોય. વિચિત્ર વિસ્મયજનક અપવાદો પણ ઘણીવાર દૃષ્ટિગોચર થાય છે. જહોન કેમડન નીલ્ડ નામનો કંજૂસ આવું જ એક ઉદાહરણ પૂરૂં પાડે છે. તેનો પિતા બહુ ઉદાર અને પરોપકારી માણસ હતો. પણ નીલ્ડ અત્યંત કંજુસમાં કંજુસ હતો. વધુ આશ્ચર્યની વાત તો એ છે કે નીલ્ડ કોઈ સાધારણ માનવી ન હતો. વિદ્યાપીઠમાં તેણે અભ્યાસ કર્યો હતો અને એક ધારાશાસ્ત્રી હતો પણ પિતાના મરણ પછી તેણે પોતાનાં ઘરની સૂરત જ ફેરવી નાંખી. ઘરમાં પાથરવાના બિછાનાં, બારીઓનાં પડદાં વગેરે તેમજ મોટા ભાગનાં ફર્નિચરને તેણે દૂર કર્યું. અને પોતે પણ એક સુટ ચડાવીને કંજૂસાઈભર્યા જીવનમાં દહાડા ગાળવા લાગ્યો. પાઈએ પાઈના ખર્ચની તેને એટલી બધી ચિંતા રહેતી કે છાપરામાંથી પાણી પડતું હોય અને તે છાપરૂં દુરસ્ત કરનાર કારીગર પોતાનું કામ કરી રહ્યો હોય ત્યારે પણ નીલ્ડ ત્યાં સીડી મૂકીને તેના ઉપર બરાબર દેખરેખ રાખે કે જેથી કારીગર એક પણ ક્ષણનો બીનજરૂરી વ્યય ન કરે, ને કોઈ પણ પદાર્થનો દુરુપયોગ ન કરી શકે. જ્યારે નીલ્ડ મરી ગયો ત્યારે તે મહારાણી વિકટોરીઆ માટે ૫,૦૦,૦૦૦ પાઉન્ડ પોતાની પાછળ મૂકતો ગયો હતો. વિકટોરીઆએ એમાંથી ઘણી રકમ ધર્માદામાં આપી દીધી, અને કેટલીક રકમ નીલ્ડનાં કપડાં ધોનાર એક ધોબીને

આપી. આ ઉપરાંત નીલ્ડનાં જીવનમાં ભાગ ભજવનાર કેટલીક વ્યકિતઓ વચ્ચે પણ થોડી - થોડી રકમ વહેંચી આપવામાં આવી.

વારસામાં ઉતરેલી કંજુસાઈ

કંજુસાઈ વારસામાં ઉતરે એવો કોઈ નિયમ નથી, છતાં કયારેક કયારેક કંજુસાઈ વારસામાં ઉતરતી હોવાનું પણ જોવામાં આવ્યું છે. પોતાની પાછળ આશરે ૨,૫૦,૦૦૦ પાઉન્ડ મૂકી જનાર સર હાર્વે એલ્વીન્ડ આનું એક સારૂં ઉદાહરણ પૂરૂં પાડે છે. સર હાર્વેએ નિયમ રાખ્યો હતો કે વર્ષ દરમિયાન ૧૦૦ પાઉન્ડથી વધુ ખરચ કરવો જ નહી. જ્યારે તે મરી ગયો ત્યારે તેનો વારસો તેની સાળીને મળ્યો. સાળી વળી સર હાર્વે કરતાં પણ કંજૂસ નીવડી. વારસાની મિલકત બમણી કરી નાખવાની ઈચ્છામાં ને ઈચ્છામાં તેણે પોતાની જાતને લગભગ ભૂખે જ મારી નાંખી. તેનો છોકરો વળી તે બાઈ કરતાં પણ કંજુસ નિવડયો, બીજા કશા પાછળ નહિ તો છેવટે ખાવા - પીવા પાછળ તો થોડો ખર્ચ કરવો જોઈએ, એ વાત પણ તેને ગળે ઉતરતી નહિ. એટલે જ્યાં ત્યાં મફતની પાર્ટીઓમાં કાંઈ ખાવાનું મળી જાય તેના ઉપર જ તે પોતાનો નિર્વાહ ચલાવતો. આમ એકંદરે તો અપૂરતા ખોરાકને લઈને તે ભૂખે મરવા લાગ્યો અને તેને મિત્રોએ મહામહેનતે તેની આ ખરાબ આદત છોડાવી. છતાં કંજૂસાઈ ભરી તેની બીજી આદતો તો ચાલુ જ રહી. ગમે તેવો વરસાદ પડતો હોય તો પણ ટાંગો કે ટેક્ષી ભાડે કરવાને બદલે, અથવા છત્રી કે રેઈનકોટનો ઉપયોગ કરવાને બદલે તે ભીંજાતો - ભીંજાતો વરસાદમાં પણ પગે ચાલીને જ માઈલોના માઈલ સુધી જાય અને પાછો ઘરે આવીને પણ રખે કોલસાનો ખર્ચ થઈ જાય એમ સમજીને ઠંડીમાં ધ્રુજતો બેસી રહે. એમ કહેવાય છે કે તે મર્યો ત્યારે પોતાની પાછળ ૧૦,૦૦,૦૦૦ પાઉન્ડ મૂકી ગયો હતો. સસ્તો મળતો હોય તો સડેલો ખોરાક પણ ખાવાનું તે પસંદ કરતો.

આજુબાજુના જગતમાં સહેજ પણ દૃષ્ટિ કરીએ તો આવા અનેક

કંજુસો સમાજમાં નજરે પડે છે. અને તેમના જીવનની વિચિત્રતા આપણને આશ્ચર્ય ઉપજાવે છે. લાખોની મિલકતો તેઓ ધરાવતા હોય છે, પણ તેમાંથી પોતે ઉપયોગ કરી શકતા નથી. તે શાપિત મિલ્કત પર નાગ જેવું તેઓ જીવન વીતાવે છે અને પોતાની મીલકતોના વારસા આખરે બીજાઓને આપીને આ જગતમાંથી દુઃખી હાલતમાં વિદાય લે છે. અજબ છે, ને આવા કંજુસો !

(કલ્યાણ ઓગષ્ટ ૧૯૫૯) (મુંબઈ સમાચાર)

પ્રમાણિકતા

જબલપુર જિલ્લાનો એક વેપારી જબલપુરથી છ માઈલ દૂર ગ્વારીઘાટ રેલ્વે સ્ટેશને પાણીના નળ આગળ રૂા. ૧૭, ૦૦૦ ની ચલણી નોટોવાળી એક થેલી ભૂલી ગયો, અને ત્યાંથી ટ્રેનમાં નાગપુર ગયો. એક ગામડિયાને આ થેલી મળી. તેણે તે વેપારીને જોયેલો પણ ખરો, એટલે તે પાછો આવે કે તરત જ તેની થેલી તેને સુપરત કરી દેવા માટે તેણે ત્રણ દિવસ સુધી તે વેપારીની રાહ જોઈ.

આંસુ સારતો વેપારી થેલીની તપાસ માટે આવ્યો, ત્યારે ગામડિયાએ તરત જ એ થેલી તેને આપી દીધી. વેપારીએ તેને રૂા. ૧૦૦૦ ઈનામ તરીકે આપવા તૈયારી બતાવી, પણ કોઈ પણ જાતનો બદલો સ્વીકારવાની તેણે ઘસીને ના પાડી દીધી, એટલું જ નહિ, પણ પોતાનું સરનામું સુદ્ધાં તેને જણાવ્યા સિવાય તે ત્યાંથી ચાલતો થયો.

અખંડ આનંદ, ઓકટોમ્બર ૧૯૫૫

-કા. મો. ધ્રુવ એમ. એ. એમ. ઈ. ડી.

નોકરી કરતી સ્ત્રી સમાજ અને કુટુંબને શું ઉપકારક છે ?

-સં. કુ. પ્રજ્ઞાબહેન શેઠ.

એક વિચારણા :

એક દિવસ હું મારી બહેનપણીને મળવા માટે એક મોટી ઓફિસમાં ગઈ. મેં ત્યાં જઈને જોયું તો કેટલીક સ્ત્રી કર્મચારીઓ એક જગ્યાએ ભેગી મળીને ગપ્પાં મારી રહી હતી.

હું ત્યાંથી જરા આગળ ગઈ ત્યારે ત્યાંના "સેક્સન" નો એક અધિકારી એક પુરુષ કર્મચારીને લડતો હતો. તે ફકત એટલા માટે જ કે તે કર્મચારી ફકત દસ મિનિટ માટે ચા પીવા બહાર ગયો હતો.

સ્ત્રી-પુરુષના સમાન અધિકારોના લીધે સ્ત્રીઓને પણ સરકારી ઓફિસોમાં કામ કરવાનો અધિકાર મળી ગયો.

આ અધિકાર આપવાનું લક્ષ્ય એ હતું કે સ્ત્રીઓ પણ રાષ્ટ્રનિર્માણના કામમાં સાથ આપે. તે લોકો એવા કાર્યમાં સાથ આપે કે જેમાં સમાજનું હિત હોય, તેમના વ્યકિતત્વનો વિકાસ થાય, *ભાવિ સંતાનોનું જીવન સંસ્કારિક બને,* આવું માનીને અનેક મહિલા સંગઠનોનું નિર્માણ થયું.

સ્ત્રીઓનાં માટે ફી વિનાનું ભણતર, ખાનગી શિક્ષણ, સ્કોલરશીપની વ્યવસ્થા વગેરે કરવામાં આવ્યું. આના લીધે સ્ત્રીઓમાં ચેતન આવ્યું અને જિંદગી શું છે તે સમજતી થઈ ગઈ.

આનાથી એવું ન સમજતા કે સ્ત્રીઓના શિક્ષણની વ્યવસ્થા અત્યારના જમાનામાં જ થઈ છે.

પ્રાચીન સમયમાં પણ ભારતની સ્ત્રીઓ ઉચ્ચ પ્રકારનું શિક્ષણ લઈને પોતાના જ્ઞાનને ઘણું જ વધાર્યું હતું.

આપણા વેદો, પુરાણો, ઉપનિષદો અને મહાભારત વગેરે અને શાસ્ત્રોમાં સંસ્કારિક શિક્ષિત સ્ત્રીઓનાં ઘણાં દાખલાઓ મળી આવશે.

વિદ્વાન સ્ત્રીઓ :

ચંદનબાળા, બ્રાહ્મી, સુંદરી આદિ અનેક સાધ્વિયોંએ અગ્યાર અંગનું અધ્યયન કરી કેવળજ્ઞાન મેળવી મોક્ષે ગઈ છે.

ઋગ્વેદમાં ઋષિ ગોધા, ઘોષા, વિશ્વપરા, અપાલા, ઉપનિષન, નિષ્પત અને રોમશા, લોપામુદ્રા, સરસ્વતી, સૂર્યા, સાવિત્રી વગેરે ઘણી વિદ્વાન સ્ત્રીઓનો ઉલ્લેખ જોવા મળશે.

બૃહદારણ્યક ઉપનિષદમાં રાજા જનકના દરબારમાં ગાર્ગીએ મહર્ષિ યાજ્ઞવલક્યને બ્રહ્મવિદ્યા વિષે એવા પ્રશ્નો પૂછયા કે મહર્ષિ જવાબ આપી શકયા નહિ. એના જ્ઞાન આગળ નમી પડયા.

જ્યારે શંકરાચાર્યે મંડનમિશ્રને હરાવી દીધા ત્યારે તેમની પત્ની ભારતીએ શંકરાચાર્ય સાથે શાસ્ત્રાર્થ કર્યો અને તેમાં શંકરાચાર્ય હારી ગયા. જ્ઞાનની કોઈ સીમા નથી કે જે ફકત પુરુષો જ પ્રાપ્ત કરી શકે સ્ત્રીઓએ પણ તેમાં ઘણો ભાગ ભજવ્યો છે.

ગઈ કાલના યુગની નારી ને જોઈ !

હવે આજના આધુનિક યુગની નારીને જોઈએ.

આજની આધુનિક નારીએ શિક્ષણ અને અધિકારોનો જેવો જોઈએ તેવો લાભ ઉઠાવ્યો નથી.

આજની સ્ત્રીઓએ પોતાના શિક્ષણને જુદી જ દૃષ્ટિએ જોયું છે.

આજની ભણેલી સ્ત્રીઓની પાસે કોઈ પણ સભ્ય દેશ એવી જ આશા રાખે કે તે *એક ઉચ્ચ આદર્શવાળી સંસ્કારિક ગૃહિણી બનશે, પોતાના બાળકોને સાચા આદર્શવાદી નાગરિક બનાવવાનો પ્રયત્ન કરશે, અને પતિની સહયોગિની બનીને તેના સંસારને સ્વર્ગમય બનાવશે.*

આજે તો સ્ત્રી બધું ભૂલી જઈને પુરુષોની સાથે હરિફાઈ કરવાનાં સ્વપ્ના સેવવા લાગી છે. પરિણામે યુરોપ જેવા દેશોમાં વધારે સ્વતંત્રતા મળતાં જ તે સ્વચ્છંદી બની ગઈ છે.

આખરે એ પરિણામ આવી ગયું છે કે પરિવારનું સુખી સ્વપ્ન નષ્ટ થઈ ગયું છે. એક જરાક ઝઘડો થતાં જ તે પુરુષને છુટાછેડાની બીક બતાવે છે.

આ સ્વતંત્રતાએ તેને સમજાવી દીધું કે પોતાના પતિથી જુદા રહીને નોકરી કરીને પોતાનું ગુજરાન કરવું ઘણું જ સરળ થઈ જશે અને પોતાના ભવિષ્યના વિચારો તો આવ્યા જ નહિ. ફરી વર્તમાનનું દિવાસ્વપ્ન તે જોવા લાગી.

અત્યારે તેના મનમાં ફકત એવા વિચાર ઘુસી ગયા છે કે પોતે ઘણી જ હોંશિયાર છે. તેણે પુરુષોની વાત શા માટે સાંભળવી જોઈએ. પરણ્યા એટલે શું થઈ ગયું ? શું પોતે પતિની ગુલામ છે ? હવે તે પુરુષની દાસીના રૂપમાં તેનું કંઈ પણ કામ નહિ કરે !

પણ આ બધો તેનો ભ્રમ છે. પ્રાચીન શાસ્ત્રોમાં આનો ઘણો જ ઉલ્લેખ છે. આજના યુગ કરતાં તો તે જમાનામાં સ્ત્રીઓનો ઘણો જ અધિકાર હતો. પુરુષની તે સમોવડી રહેતી હતી, પુરુષ જેટલા જ તે અધિકાર ભોગવતી હતી. સ્ત્રીઓ પણ ઉચ્ચ શિક્ષણ પ્રાપ્ત કરતી હતી.

તે જમાનામાં તેને "અર્ધાંગિની" કહેવામાં આવતી હતી. પુરુષ તેને દેવી, દેવાનુપ્રિયા કહીને બોલાવતો હતો. મહાભારતમાં "અર્ધભાર્યા મનુષ્યસ્ય" એટલે કે પુરુષનું અડધુ અંગ કહેવાતું હતું. વેદોમાં "દંપતિ" કહેતા હતા જેનો અર્થ ઘરનો માલિક કહેવાય છે. પતિ - પત્ની સંબંધને તેઓ ફકત શરીરના સંબંધ નહિ પણ આત્માના સંબંધને ગણતા હતાં.

આજે જમાનો બદલાઈ ગયો છે. આજે પતિ - પત્નીનો સંબંધ એક સામાજિક સંબંધ થઈ ગયો છે જેને ગમે ત્યારે તોડી શકાય છે. આજ સ્ત્રીઓને ઓફિસમાં કામ કરવાનો અધિકાર ખૂબ જ વિકૃત રીતે અપાઈ રહ્યો છે. પણ

આ તો જુદું જ થઈ ગયું છે. સ્ત્રી જેવું શિક્ષણ પૂરું કરે છે કે તરત જ નોકરી શોધીને ફાઈલોને આમથી તેમ ઉથલાવવા માંડે છે. તેણે પુરુષોની હરિફાઈ કરવા માંડી છે. તે પોતાના પારિવારિક કર્તવ્યોને સંપૂર્ણ પણે ભૂલી ગઈ છે.

મારી એક બહેનપણી જે સરકારી ઓફિસમાં કલાર્ક છે તેને મેં પૂછયું કે, "પરિવાર માટે સ્ત્રીનું કર્તવ્ય શું ? જો બધી સ્ત્રીઓ આવી જ રીતે ભણીને નોકરી કરશે તો ઘરની સંભાળ કોણ રાખશે ? બાળકોની દેખરેખ અને જમવાની વ્યવસ્થાનું શું ?"

તેણે મને તરત જવાબ આપ્યો.

"મેં તો એવું કર્યું છે કે રસોઈ માટે એક નોકર રાખી લીધો છે. તેમનું ટીફીન રોજ તેમની ઓફિસે બીજો એક માણસ આપી આવે છે. ત્યાર પછી તે નોકર બાઈ ઘરના માણસની માફક જ ઘરનો ખ્યાલ રાખે છે. બાળકોની પૂરેપૂરી સંભાળ રાખે છે."

મેં એને આગળ કંઈ પૂછ્યું જ નહિ. પણ હવે જો એને કોઈ પૂછે કેઃ

આખો દિવસ તમે અને તમારો પતિ ઓફિસમાં કામ કરીને જ્યારે ઘેર આવો છો ત્યારે થાકેલા નથી હોતા ? ત્યારે શું તમારો નોકર તમારી પ્રેમથી સેવા કરે છે ? જ્યારે તમે ઘરમાં જાવ છો ત્યારે તમારા બાળકો કેટલા પ્રેમથી દોડીને તમારી પાસે આવે છે ? તે વખતે તમે કંટાળેલા તેમને પ્રેમ કરો છો ? ત્યારે તો તમે તેને દૂર ખસેડી મુકો છો. જરા વિચારકરો કે તમારા નાના - નાના બાળકો આખો દિવસ માની યાદમાં તડપતા હોય છે, તમારા ખોળામાં રમવા માટે અધીરા બની જાય છે. જયારે બીજાની માના ખોળામાં તેમના બાળકોને રમતા જોઈને તેમના મનમાં શું થતું હશે ? તેની કલ્પના તમે કરી છે ? તમને તો ફકત તમારી ઓફિસની ફાઈલોમાં વધારે પ્રેમ છે. જે તમને દર મહિને પૈસા આપે છે. જે તમને હોટલોમાં રોમાન્સ કરવા માટે છૂટ આપે છે. તમારા બાળકોનાં માટે તમારા હ્રદયમાં જરા પણ લાગણી નથી ? જે તમારા જીવનની પૂંજી છે. જેમાં તમારું લોહી સિચાયું છે. જે તમારા હ્રદયનો ટુકડો છે. તમારા પતિની પણ

એ જ દશા છે. ઓફિસેથી આવતાં જ તે એકલા પડી જાય છે. તમારા દર્શન થતા નથી અને મોડેથી જયારે ભેગા થાવ છો ત્યારે માનસિક અસ્વસ્થતાના લીધે તું....તું.....મેં.... મેં..... શરૂ થઈ જાય છે.

એ તો સાચુ જ કે ઓફિસોમાં કામ કરનારી સ્ત્રીઓને કુટુંબ પ્રત્યેનો મોહ ઘણો જ ઓછો થઈ જાય છે. નાના બાળકો માટેનો પ્રેમ ઓછો થઈ જાય છે. આનું પરિણામ એ આવે છે કે બાળકોમાં અપરાધી મનોવૃત્તિનું પ્રોત્સાહન મળે છે. તેમનો માનસિક વિકાસ બરાબર નથી થતો, આદર્શ નાગરિક બનવાની ભાવના ખલાસ થઈ જાય છે. પરિણામ એ આવે છે કે દેશમાં સારા સંસ્કારિક નેતાઓનો અભાવ થઈ જાય છે અને નવનિર્માણની આશાઓ ધૂળમાં મળી જાય છે.

નારીની આ ભાવનાએ સમાજની સમસ્યાને મુંઝવણમાં નાંખી દીધી છે. તેનું પરિણામ એ આવ્યું છે કે, જ્યારથી સ્ત્રીઓએ આ ક્ષેત્રમાં પગ મૂકયો છે ત્યારથી પુરુષોને નોકરી મળતી નથી. તેઓ બેકાર થતાં જાય છે.

આ ઉપરાંત સ્ત્રીઓએ જ્યારથી ઓફિસમાં કામ કરવા માંડયું છે ત્યારથી સરકારી ઓફિસોમાં તો એકદમ શિથિલતા આવી ગઈ છે. જે કામ ઘણી ઝડપથી થતું હતું તે કામ ઘણું જ ધીમું થઈ જાય છે. પુરુષોની માફક સ્ત્રીઓ કોઈ દિવસ ઝડપથી કામ કરી શકતી નથી. એક મનોવૈજ્ઞાનિક સત્ય છે. કામ ઝડપથી કરવા કરતાં ગપ્પા મારવાનું તેમને વધુ ગમે છે. અધિકારીઓ પણ તેમને કંઈ બોલી શકતા નથી. (જ્યાં સ્ત્રીઓ કામ કરે છે ત્યાંના પુરુષોમાં શિથિળ, કામકાજનું બીજું કારણ પુરુષના મનની ચંચળતા સતત રહ્યા કરે એ છે. સ્ત્રીઓની સતત હાજરીના કારણે)

સ્ત્રીઓએ જો ખરેખર સુખી થવું હોય તો, દામ્પત્ય જીવન સુખી કરવું હોય તો, તેમજ દેશમાંથી બેરોજગારીની સમસ્યાનો અંત લાવવો હોય તો તેમણે પોતે જ ઓફિસોમાં નોકરી કરવાનું છોડી દેવું જોઈએ.

સ્ત્રીએ એ ભૂલવું ન જોઈએ કે પહેલાં તો પોતે એક સારી ભાવનાશીલ

ગૃહિણી બનવું જોઈએ નહિ કે *"સોસાયટી ગર્લ !"*

ભ્રષ્ટાચારી ઓફિસરોની વાસનાની તૃપ્તિનું સાધન બનીને તમારા પવિત્ર દેહને શા માટે અભડાવો છો ? તમારે તો એક એવી આદર્શ મા બનવું જોઈએ કે જેનાથી સંતો અને શૂરવીરો પાકે.

મહિલા વર્ષમાં નારી –જાગૃતિના નામે નારીની અવહેલના ન થાય તે માટે જાગતા રહો

લે. શ્રી ચીમનલાલ સંઘવી

હિંદમાં આજે સર્વત્ર સમાજ સુધારો, નારી જાગૃતિ અને સ્ત્રી સ્વાતંત્ર્યની વાતો ચર્ચાઈ રહી છે. "હિંદુ સમાજે સ્ત્રી પ્રત્યે બહુધા સભ્યતા જ દાખવી છે. હિંદી સમાજ બંધારણ ઘડનાર પુરુષો હોઈ તેમણે સ્ત્રીઓને અન્યાય કર્યો છે. હિંદુનો નારી વર્ગ કચરાઈ ગયો છે." એવો અભિપ્રાય આપવાની હિંદના કેળવાયેલા વર્ગમાં આજે ફેશન થઈ પડી છે. આ વિચાર પ્રવાહ જૈન સંઘમાં પણ કયાંક - કયાંક પ્રવેશી રહ્યો છે. એટલે સમાજ બંધારણનો પ્રશ્ન આજે ખૂબ જ વિચારણીય થઈ પડયો છે.

આજના સુધારકો સ્ત્રી - જાગૃતિની વાત - વાતમાં મુખ્યત્વે યુરોપનું ઉદાહરણ જે આગળ લાવે છે. "યુરોપમાં સ્ત્રીઓ કેટલું સુંદર સ્વાતંત્ર્ય ભોગવે છે. ત્યાંનો નારીવર્ગ જાગૃત છે, ત્યાંના લેખકો, વિદ્વાનો ને કાયદા ઘડનારાઓ સ્ત્રી હક્કને આગળ ધરે છે. ત્યાંની નારીઓ કેળવણીમાં ખૂબ જ આગળ વધેલી છે," વગેરે વાકયો તેમણે ગોખી જ રાખ્યા છે. પણ આ વાકયો સત્યથી વેગળા છે. તેનો પ્રચાર કરીને સુધારકો હિંદી સમાજ જીવનમાં ને નારી વર્ગમાં જે પરિવર્તન કરાવવા માંગે છે, તે જ સુધારાની છાયા નીચે તો યુરોપીય નારીવર્ગે ભયંકર અવદશા ભોગવી છે. એ સુધારાએ યુરોપ - અમેરિકાના નારી વર્ગને એવો ભ્રષ્ટ બનાવેલ છે કે હવે તો નારી જાતિને જ મોહજાળમાં ફસાવવા

માંગતા વિલાસી લેખકો જ ત્યાંની નારીની પ્રશંસા કરે છે. બાકી વિચારક વર્ગ તો ત્યાંની નારીની અવદશા નિહાળી સૈકાઓ થયાં સમસ્ત નારી જાતિને જ ધિક્કારતો બની ગયો છે. હવે યુરોપના નામાંકિત વિચારકો પોતાના રાષ્ટ્રના વિકાસની ખાતર ત્યાંની નારીને પવિત્ર, પ્રેમાળ, ઘરગથ્થુ, ગુણવાન ને ધર્મિષ્ઠ બનાવવાને તનતોડ પ્રયત્ન કરી રહ્યા છે. જયારે હિન્દના પતનને ખાતર તેઓએ ભારતીય નારી વર્ગમાં જે ગુણો પરંપરાગત જળવાઈ રહ્યા છે. તેને તોડવાને વ્યવસ્થિત યોજનાઓ રચી છે. યુરોપ - અમેરિકાના નારી વર્ગમાં તેઓ જે અવગુણોને દૂર કરવા મથી રહ્યા છે, તે જ અવગુણોને સુધારાના નામે હિંદના નારી વર્ગમાં તેઓ દાખલ કરી દેવા માગે છે. પરિણામે શાળા - કોલેજના પાઠય પુસ્તકો એવી રીતે રચાય છે કે જાણે યુરોપની સ્વચ્છંદી સ્ત્રીઓ સાતમા સ્વર્ગમાં વસી રહી હોય ! હિંદની ઉગતી પ્રજાના મન પર આ છાપ એવી સજ્જડ હોય છે કે, નિશાળોમાંથી જ તે સમાજ સુધારાની વાતો કરવા માંડે છે ને પરિણામે હિંદી સમાજ જીવનના બંધારણને ભયંકર નુકસાન પહોંચાડી ભારતીય નારી વર્ગને પતનની ખાઈમાં હડસેલી દે છે. આ વિગતો તાત્વિક અને સમાજશાસ્ત્ર વિષયક દલીલો કરતાં દૃષ્ટાંતોથી વધારે સમજાઈ શકે તેમ છે એટલે આપણે (૧) હિંદમાં આજે જે સુધારો થઈ રહ્યો છે, તે જ સુધારાના યુગમાં યુરોપ - અમેરિકાની નારી કેટલી હીન, ભ્રષ્ટ સમાજ શોષક અને આરોગ્યભક્ષક બની ગઈ હતી, તેમજ આજે પણ તેના કેટલા અવશેષો જળવાઈ રહ્યા છે. (૨) પરિણામે વિચારકો નારી વર્ગ પ્રત્યે કેટલી ઘૃણા ધરાવતા બન્યા અને (૩) યુરોપના આજના વિશિષ્ટ વિચારકો પોતાના નારી વર્ગને સુધારવાને કેવાં પગલાં લઈ રહ્યા છે તે વિચારી જોઈએ.

નીતિ અને સદાચાર પ્રત્યેની ઉપેક્ષા તથા લગ્નની યોગ્ય વ્યવસ્થાના અભાવે ઈંગ્લાંડ અને સ્કોટલેન્ડમાં ૧૯૨૦ - ૨૫ ના અરસામાં પ્રતિ વર્ષે છ લાખ ઉપરાંત ગર્ભ હત્યાઓ થતી હતી. આ હત્યાઓ અટકાવવાને ૧૯૨૬માં અનાચારના પરિણામે ગુપ્ત રીતે જન્મેલા સંતાનોને સંરક્ષણ નીચે લાવવાનો કાયદો પસાર કરવામાં આવેલો એ રીતે વાર્ષિક ૨૦,૦૦૦ લગભગ

ગેરકાયદેસર સંતાનોને સંરક્ષણ આપવા છતાં હજી ગર્ભહત્યાઓ અટકી નથી. આવા *ગેરકાયદેસર સંતાનોના સાચા માતા - પિતાના નામ બહાર ન આવતાં હોઈ અણજાણમાં એક જ પિતાના પુત્ર - પુત્રીઓ પણ લગ્નથી જોડાઈ જાય છે* અને પ્રજાને અધઃપતનના માર્ગે દોરે છે. આ પ્રકારના અનૈતિક સંયોગોમાં ઈંગ્લાંડ સ્કોટલેન્ડમાં દર વર્ષે આઠ લાખ વ્યકિતઓ ગુપ્ત રોગોમાં સપડાય છે અને તેમાં કેટલાક પ્રદેશો તો એવા પણ છે કે જ્યાં ૬૦ થી ૭૫ ટકા જેટલી પ્રજા ગુપ્ત રોગોમાં સપડાયેલી હોય !

અમેરિકામાં દર વર્ષે વીસ લાખ ગર્ભ હત્યાઓ થાય છે આ તો દસ - બાર વર્ષ પહેલાંના આંકડા છે આજે તો લાખોને વટાવી ગયેલ આંકડાઓ હશે. અને ગર્ભપાત કરાવનારી સિન્ડીકેટો વાર્ષિક દસ લાખ ડોલરની આવક કરે છે. તે દેશના કેટલાય ભાગોમાં ૭૫ થી ૮૦ ટકા પ્રજા ગુપ્ત રોગોમાં ફસાયેલી છે.

જગતમાં પ્રથમ નંબરનું પ્રબળ સૈન્ય ધરાવતું ફ્રાંસ એક જ મહિનામાં હિટલરના હાથે હારી ગયું તેનું કારણ અનૈતિક અને સાંસારિક અધઃપતન છે. તે તો ફ્રાંસના સરમુખત્યાર માર્શલક પેતાએ પણ કબુલ્યું હતું.

આ ઉપરાંત સાત્ત્વિક મર્યાદાના અભાવે ત્યાં લગ્નજીવન પણ ભાગ્યે જ સુખી નીવડે છે. દર મહિને છુટાછેડા લેનાર નર - નારીઓનો યુરોપ - અમેરિકામાં તોટો નથી. છૂટાછેડા ઘણી વખત હાસ્યાસ્પદ કારણોમાંથી જ પરિણમે છે. મોટે ભાગે તો સ્ત્રી હલકટ શોખને ખાતર જ પુરુષને પજવે છે.

આ માટે અમેરિકામાં "હાઉ ટુ ટોર્ચર હસ્બન્ડ કલબ" પણ ચાલે છે અને પુરુષ પણ ઘણી વખત ક્ષણિક મોજને ખાતર સ્ત્રીને પજવે છે તથા પછી બંને છુટાછેડા લેવાને ન્યાયમંદિરમાં દોડે છે. સ્વભાવમાં સહેજ મતભેદ પડે કે છુટાછેડાની હોળી, એ યુરોપ - અમેરિકાનું સમાજ જીવન છે. યુરોપ - અમેરિકાના તત્ત્વજ્ઞાનીઓને આ દશાનું મુખ્ય કારણ નારીમાં જે પ્રેમ, ભક્તિ, લજ્જા આદિ ગુણો ખીલવા જોઈએ તેનો અભાવ જણાયો. વૈજ્ઞાનિક પૃથક્કરણે પણ એ જ અભિપ્રાય દર્શાવ્યો તે અભિપ્રાયમાં અપાયેલા અનેક

દૃષ્ટાંતોમાંનું એક દૃષ્ટાંત નીચે પ્રમાણે છે :

વર્ષો પહેલાં કાલીકાકા નામના એક અમેરિકને બે લગ્ન કરેલાં. પહેલું એક સ્વચ્છંદી સુંદરી સાથે ને બીજું એક પવિત્ર કન્યા સાથે. પ્રથમ સ્ત્રીથી તેનો વંશવેલો ફાલીને ૪૮૦ની સંખ્યાએ પહોંચ્યો છે. જ્યારે બીજી સ્ત્રીનો વંશવેલો ૪૯૬ની સંખ્યાએ પહોંચ્યો છે. પ્રથમ સ્ત્રીના ૪૮૦ વંશજોમાંથી ૧૪૩ દુરાચારી, ૮૭ અલ્પાયુષી, ૩૬ અનૌરસ, ૩૩ વૈશ્યાઓ, ૨૪ દારૂડિયા, ૩ અસાધ્ય રોગીઓ, ૮ વેશ્યાગૃહો ચલાવનારા અને ૩ ભયંકર ગુનેગારો નીવેડેલા છે, જ્યારે નીતિમાન સ્ત્રીના ૪૯૬ વંશજોમાંથી ૨ દુરાચારી ને એક જ દારૂડિયો નિવડયો. બાકીના ૪૯૩ વંશજો આરોગ્ય, પ્રતિષ્ઠા ને નીતિમાન સજ્જનો છે.

સ્ત્રી - જાગૃતિ કે સ્ત્રી - સ્વતંત્રતાની સુધારક પ્રવૃત્તિના પરિણામે નિપજેલી સ્ત્રી - સ્વચ્છંદતા અને તેના કારણે થતી પ્રજાની અધોગતિ નિહાળી યુરોપ - અમેરિકાના વિચારકો બે વિભાગમાં વહેંચાઈ જાય છે. એક વર્ગ સ્ત્રી નામને જ ધિક્કારવા લાગ્યો છે. જ્યારે બીજો વર્ગ ભારતની પ્રાચીન અને પરંપરાગત પ્રથાનુસાર સ્ત્રીને પ્રેમાળ, પતિ ભકિતથી ઓતપ્રોત, ઘરગથ્થુ, લજ્જાળુ અને સંતાનશીલ બનાવવા માગે છે. એ બંને વર્ગના અભિપ્રાયો પર દૃષ્ટિપાત કરીએ.

વીક્ટર હ્યુગો કહે છે - "સ્ત્રી શયતાની રમકડું છે." સેન્ટ બર્નાર્ડ કહે છે કે - "સ્ત્રી શયતાનનું મંદિર છે," રૂસો કહે છે કે - "પુરુષ જે જાણે છે તે બોલે છે. સ્ત્રી તેને ફાવે તેમ બોલે છે" ફ્યુલેટ કહે છે કે - "મંદિરમાં ખૂબ જતી સ્ત્રીઓને શંકાની નજરે જોવાય છે. પણ સમુળગી ન જતી તો એથી પણ વિશેષ શંકાની નજરને પાત્ર હોય છે." કેમ્ફોર્ટ કહે છે કે - "પુરુષ સ્ત્રી વિશે ગમે તેવું અનુચિત ચિંતવે, પણ એવી એક પણ સ્ત્રી અસંભવિત છે કે જે પુરુષ વિષે એ કરતાં પણ વધારે અનુચિત ન ચિંતવતી હોય." મીરાબો કહે છે કે - "પ્રેમ કરનારી વધારેમાં વધારે પવિત્ર સ્ત્રી વધુમાં વધુ વ્યભિચારિણી સંભવે." સેંટ

જોન કહે છે કે - *"સ્ત્રીઓનો નિર્માતા બ્રહ્મદેવ નહિ પણ બ્રહ્મરાક્ષસ છે."* શોપનહેર કહે છે કે *"સ્ત્રી એ પુરુષની સાત - સાત જન્મની દુશ્મન છે."* પ્લેટોએ પણ કહેલું છે કે - *"સ્ત્રી એ જગતની આપત્તિ છે અને મનુષ્યોના બધા અપયશો ભેગા કરી પ્રભુએ સ્ત્રીનું નિર્માણ કર્યું છે."*

આરીતે પ્લેટોથી માંડીને શોપનહેર લગીના સંખ્યાબંધ મશહુર પાશ્ચાત્ય વિદ્વાનોએ નારીની સતત નિંદા કરી છે અને તેવો અભિપ્રાય ધરાવનારને માટે ત્યાંની સુધરેલી નારી જાતિએ તેમને પુરતા કારણો પણ આપેલાં છે. રોમની રાજવંશી રમણીઓ સ્વતંત્રતાનો લાભ લઈ એવી સ્વચ્છંદી બની ગયેલી કે અનાચારમાં તેઓ ગણિકાને અને ખુનરેજીમાં લુંટારૂઓને પણ ટપી જવા લાગી. પતિનું ખૂન કરી પ્રેમિને સિંહાસને ચડાવવાની ત્યાં પ્રથા થઈ પડી. એ વારસાના કેટલાક અંશો ફ્રાંસ અને ઈંગ્લાંડની રાજરમણીઓમાં પણ ઉતરી આવ્યા.

ઓગણીસમી સદીના ઉત્તરાર્ધમાં અને વીસમી સદીના પહેલા ચરણમાં યુરોપ - અમેરિકાની નારીએ સ્વચ્છંદતામાં માઝા મૂકી દીધેલી અઠવાડિયે - અઠવાડિયે પતિ બદલવા, સંતાનોને રાજ્યાશ્રયે છોડી દેવાં, જુદા જુદા નામ નીચે એક સાથે અનેક પતિ કરવા, લક્ષ્મીવંતોને ફસાવવાને રૂપનો દરેક પ્રકારે દુરૂપયોગ કરવાની ત્યાં ફેશન થઈ પડેલી. તેમાંના કેટલાક દૃષ્ટાંતો તો હાસ્ય પ્રેરે તેવા છે.

(૧) એક પત્નીને પતિના વસ્ત્રોમાં માંકડ - ચાંચડ ભરવાની, તેના બુટમાં અને બેગમાં ઉદરડા ને દેડકા ગોઠવવાની ટેવ પડી ગયેલી. પરિણામે તેને છૂટાછેડા આપ્યા.

(૨) એક પત્નીએ મરતી વખતે પોતાના ખાનગી મિલકતનું વીલ કરતાં તેમાં બે રૂપિયા પોતાના પતિને આપવાનું લખ્યું ને નીચે નોંધ કરી કે - "આ રૂપિયાથી દોરડું ખરીદી તેની મદદથી ફાંસો ખાઈ રામશરણ થવાને માટે"

પતિ માંદા મા - બાપની સેવામાં ધ્યાન આપે, તો પત્નીએ છૂટાછેડા લીધાના પ્રસંગો તો ત્યાં અનેક બન્યા છે.

કેટલીક સ્ત્રીઓ રૂપવાન પતિ સાથે પરણી, તેને રૂપવતી, વિલાસી ને ધનિક સ્ત્રીઓને ત્યાં ભાડે મૂકે છે. થોડાક મહિના અગાઉ લોસ એન્જંલ્સના એક પતિએ પોતાની પત્ની સામે દોઢ લાખનો દાવો નોંધાવતા જણાવેલું કે, "મારી પત્નીએ મારી સાથે લગ્ન કર્યા પછી મને બીજી એક ધનિક સ્ત્રીને ત્યાં ત્રણ લાખ રૂપિયામાં ભાડે મૂકેલો, તો તેમાં મને પણ અડધો હિસ્સો મળવો જોઈએ.

ચાલુ યુદ્ધ દરમિયાન લ્યુસી નામની એક ફ્રેન્ચ યુવતીએ એક પછી એક ૭૫ સૈનિકો સાથે લગ્ન કરેલા અને થોડાક મહિના અગાઉ જ ફ્રેન્ચ કોર્ટમાં પુરવાર થયું છે કે તે ૭૪ સૈનિકોની વિધવા તરીકે ૭૪ પેન્શન ખાઈ જતી હતી.

આ સામાજિક દશા સુધારવાને યુરોપ - અમેરિકાના કહેવાતા તત્ત્વજ્ઞાનીઓ વર્ષો થયાં યુરોપનું સમાજ - બંધારણ ભારતીય પ્રથાનુસાર ઘડવાનો ઉપદેશ આપી રહ્યા છે.

યુરોપની સામાજિક ભ્રષ્ટતાના એક મુખ્ય કારણ તરીકે નીટ્સ પ્રેમ - લગ્નને ઓળખાવતો તે કહે છે કે "પ્રેમ કરતી વેળા નર - નારી અંધ બની જાય છે. એના પરિણામે લગ્ન યોજવા એ સમાજને અંધ બનાવવા જેવું છે. *લગ્નમાં આરોગ્ય, જાતિ, વય ને ગુણ એ જ મહત્ત્વના અંગો છે. એને ગણતરીમાં રાખીને માતા - પિતાએ યોજેલા લગ્ન વધારે સફળ નીવડી શકે છે.*

મિલ્ટન નારીના આભૂષણ તરીકે શીલ, લજ્જા અને રૂપને ઓળખાવે છે, શોપનહેરે યુરોપીય સમાજની અને નારીની ઉન્નતિ માટે સમાજ બંધારણમાં નારીને હિંદી સમાજ બંધારણમાં નારીને જે સ્થાન છે, તે જ સ્થાનને અનુરૂપ સ્થાન આપવાની ભલામણ કરી છે.

હિટલરે ઘડેલાં જર્મનીમાં સંતાન (KINGER), મંદિર (kiche) અને ચૂલો (kuche) એ ત્રણ નારીના આદર્શ ગણાય છે.

૧૯૩૦માં ન્યુરેમ્બર્ગની કોંગ્રેસમાં સમસ્ત જર્મનીમાંથી પ્રતિનિધિ તરીકે આવેલી વીશમી સદીના યુરોપની લાખો યુવાન મહિલાઓ આગળ બોલતાં હિટલરે કહેલું કે - *"હું તમને વિદ્યાપીઠોમાં વ્યાસપીઠ પર જોવા નથી ઈચ્છતો, મારે તમને નિપુણ રસોયણો, કાળજીભરી માતાઓ ને પતિને સંતોષતી સુંદરીઓ તરીકે જોવી છે."*

આ રીતે યુરોપ જ્યારે સુધારાના પરિણામે નારીની અને સમાજની થયેલી અવદશા નિહાળીને નારીને તેના કુદરતી સ્થાન પ્રત્યે લઈ જવા માંગે છે, ત્યારે આપણે કચરામાં કઢાયેલા યુરોપીય સુધારાને અનુસરીને સ્ત્રીને સ્વચ્છંદી બનાવવાના માર્ગો અપનાવી રહ્યા છીએ. તે ખરેખર ખેદજનક છે.

કેટલાક સુધારકો પ્રજાને એમ સમજાવી રહ્યા છે કે - "અમે સ્ત્રીને સ્વચ્છંદી બનાવવા નથી માગતા, પણ જરૂરી કેળવણી આપીને જાગૃત બનાવવા માગીએ છીએ." પણ આ બધી મૂર્ખ વર્ગને ફોસલાવવાની વાતો છે. પહેલાં તેઓ વિધવાઓના હિતૈષી તરીકે તેમને ભણાવવાની વાતો કરતા હતા, પછી તેમને પરણાવવાની વાતો કરી અને આજે છુટાછેડાની વાતો ચર્ચાઈ રહી છે ને તેને લગતા કાયદા થાય છે પહેલાં તેઓ નાની - નાની પેટા સમિતિઓનાં બંધનો ઢીલા કરવા માગતા હતા અને કોઈ હિંદુ સ્ત્રી ખ્રસ્તી, પારસી, મુસ્લિમ કે યુરોપીય પુરુષ સાથે આંતરજ્ઞાતિય લગ્ન કરે તો તેને અભિનંદન અપાય છે.

પહેલાં તેઓ કન્યાને પ્રાથમિક કેળવણી આપવાની વાતો કરતા હતા, હવે કન્યાઓ કોલેજોમાં છોકરાઓ જોડે રહે તેમાં ગર્વ લે છે. ગાંધીજીના મિત્ર મિ. દીનબંધુ એન્ડુઝે મરતા અગાઉ થોડા જ મહિના પહેલાં કહેલું કે, *"હિંદની કન્યાઓને કોલેજમાં ભણાવો, તેથી તેઓ મોટી વય લગી લગ્ન કરવાની ના પાડશે. પછી તેઓ વંધ્ય બની જશે ને તમારી વસતી ઘટશે." આ બધા શું હિંદના નારી સમાજમાં વિકાસના પગલાં છે ?"*

"કોલેજોમાં, કન્યાશાળાઓમાં ને સ્ત્રી જેમ જાહેર જીવનમાં પ્રવેશતી જાય છે, તેમ - તેમ સમાજમાં ને રાષ્ટ્રના દરેક ક્ષેત્રોમાં અનાચાર કેટલો વધી રહ્યો છે તે આપણે સારી રીતે જાણીએ છીએ. સત્યાગ્રહ દરમિયાન સ્ત્રી - પુરુષના શંભુમેળાથી એવા અનેક પ્રસંગો બનેલા ને ગાંધીજીએ જાતે જ કબુલ રાખેલું.

સ્ત્રી – સ્વાતંત્ર્ય : એક ચિંતન

-શ્રી પ્રિયદર્શન

વર્તમાન કાળમાં સ્ત્રી સ્વાતંત્ર્યના નામે ઘણું લખાય છે ને ઘણું - ઘણું યથેચ્છપણે બોલાય છે. વાસ્તવિક રીતે સ્વચ્છંદતા, અનાચાર ને માનસિક, વાચિક તથા કાયિક અનાચારોને પંપાળવા કે પોષવા માટે સ્ત્રી સ્વાતંત્ર્યની માયાવી હવા ફેલાવાય છે. ને તે બહાને સ્ત્રી વર્ગ તથા પુરુષ વર્ગની પવિત્રતા જાળવવા માટે મહાપુરુષોએ નૈતિક નિયમો મર્યાદા પાલન ફરમાવેલ છે, તેની સામે યથેચ્છ પ્રલાપો થાય છે આ પરિસ્થિતિમાં એક જિજ્ઞાસુભાઈને ઉદેશીને લખાયેલો ને સ્ત્રી સ્વાતંત્ર્યની વાસ્તવિક વિચારણા રજૂ કરતો પત્ર અમે અહી પ્રસિદ્ધ કરીએ છીએ.

શ્રી પરમેષ્ઠીઓની કૃપાથી આનંદપૂર્વક અહીં આવી ગયા છીએ. વિશેષતા, આ પત્ર દ્વારા તમને પુરુષની ભૂમિકાએથી સ્ત્રીત્વની વિચારણા અને સ્ત્રીની ભૂમિકાએથી પુરુષત્વની વિચારણાની કેટલીક હકીકતો જે Cosmic order નીચેની છે, તે જણાવું છું.

મનુષ્ય પુરુષ જ્યારે સ્ત્રીને ભોગના (વાસનાના) પાત્ર તરીકે જ જોતો થઈ ગયો છે, અને એ દ્વારા એના શુદ્ધ બ્રહ્મના વ્યક્તિત્વને વિસરી ગયો છે, એ તબક્કે પુરુષે સ્ત્રીમાં કયું દર્શન કરવું એ ગંભીર વિચારણા માંગી લે છે.

ધર્મગ્રંથોમાં સ્ત્રીને દુઃખનું કારણ, પાપનું અધઃપતનનું નિમિત્ત

કહેવામાં આવ્યું છે, તે સ્ત્રીમાં પુરુષે દ્રઢ કરેલી વાસના તૃપ્તિના જ કેવળ સાધન તરીકેના વ્યક્તિત્વની કલ્પનાને નિર્મૂળ કરી દેવા માટે છે. તેમાં સ્ત્રીના ઉચ્ચ આત્મત્વને અવગણવાની જરાય દૃષ્ટિ ન હોઈ શકે.

છરી આત્મરક્ષા માટે જીવનોપયોગી સાધન તરીકે પોતાનું ઉચ્ચ વ્યકિતત્વ ધરાવે છે પરંતુ છરીનો ઉપયોગ મનુષ્ય જ્યારે ખૂન, ત્રાસ વગેરેમાં કરતો થઈ જાય ત્યારે, મનુષ્યને છરીમાં અધ:પતનનું દર્શન કરાવવું શું યોગ્ય નથી ? અને એ દર્શન કરાવવામાં શું છરીના ઉચ્ચ વ્યકિતત્વની રક્ષા નથી સમાયેલી ?

સ્ત્રીમાં પુરુષે કરેલી વાસનાની પૂતળી માટેની કલ્પના જ્યારે ટળશે ત્યારે જ તે સ્ત્રીના ઉચ્ચત્તમ પવિત્ર વ્યક્તિત્વને સમજી શકશે, અને તે સમજાવવા જ સ્ત્રીમાં દોષારોપણ કરાય છે.

ત્યારે શું પુરુષ સ્ત્રીના સાથેના વાસનાના સંબંધમાંથી મુકૃત થાય તે શુદ્ધ સ્વરૂપની પ્રાપ્તિ માટે અનિવાર્ય નથી ? અને વાસનાનો સંબંધ તોડવા તથા તૂટેલા એ સંબંધોને જારી રાખવા માટે સ્ત્રી ત્યાગ આવશ્યક નથી ? જેના દર્શનથી વાસના જાગૃત થાય છે, તેવા નિમિત્તોથી દૂર રહેવું એ મુમુક્ષુ માટે જરૂરી નથી ?

સંસારથી ડરીને ભાગી છુટવું એ સાધક આત્માની નબળાઈ નથી. પરંતુ સાધકની એ સાવચેતી છે. સાધકનું તે દીર્ઘ દૃષ્ટિબિંદુ છે. ગમે તેટલો સારો સંસાર જો આપણા આત્મામાં મલિન વાસનાઓનો જનક બને છે. તો તે સંસાર આપણા માટે અહિતકારી જ છે, અને તેથી તે ત્યાજય છે.

જો રોગીને આરોગ્યની પ્રાપ્તિ કરવી છે, તો તેના માટે રોગવર્ધક હવા, પાણી, અને ખોરાકથી દુર રહેવું જ શ્રેયસ્કર હોય છે. તેમ અનેકવિધ વાસનાઓના રોગથી મુક્ત બનવા અને નિર્વિકારિતાના પરમ આરોગ્યને હાંસલ કરવા, વિકાર વર્ધક (પુરુષ માટે), સ્ત્રી, ધન વગેરેથી અલિપ્ત રહેવું અતિ આવશ્યક છે.

વિષય તૃપ્તિનું સાધન બનેલી સ્ત્રી દગાખોર પતનકારી બને છે, એ વાતને પ્રત્યેક વિચારક સ્વીકાર્યા વિના નહિ રહે.

સ્ત્રીની ભૂમિકાથી પુરુષ અંગેની વિચારણા પણ પૂર્વોકત દૃષ્ટિબિંદુઓથી કરી લેવી જોઈએ.

સ્ત્રીએ પણ પોતાના ઉચ્ચ વ્યકિતત્વની અભિવ્યકિત ક્ષુદ્ર વાસનાઓમાં ન કરવી જોઈએ. પરંતુ શુદ્ધ, સતીત્વ અને નિર્દંભ સદાચારિતામાં કરવી જોઈએ, પરંતુ શુદ્ધ સતીત્વની રક્ષા પાછળ તેણે સતત અને સખત જાગૃતિ રાખવી જોઈએ. એ વ્યકિતત્વ જરાય ન ઝંખવાય, દિનપ્રતિદિન ઉજજ્વળ બને તેની ખેવના તેના હૃદયમાં સ્થપાયેલી હોય.

પરંતુ આ શુદ્ધ સતીત્વ અને નિર્દંભ સદાચારિતાની અભિવ્યકિત કરવા પાછળ જરૂરી મનોબળ અને આત્મબળ હ્રાસ પામતા ચાલ્યા. તેથી સ્ત્રીનું વ્યકિતત્વ ઝંખવાયું. તેનાથી તેમનામાં રહેલી માનવ સહજ માનવી લાગણી દુભાણી. અને એ લાગણીએ સ્ત્રીને પોતાનું વ્યકિતત્વ અન્યાન્ય માર્ગે વ્યકત કરવા પ્રેરી. અને તેમાં તેને પુરુષોની જરૂરી સહાય પણ મળી કે જે પુરુષોની મલીન વાસનાઓ તે સહાય કરવા દ્વારા પોષાવા લાગી !

અને સ્ત્રી સ્વાતંત્ર્યના નામનો એક ખૂણેથી પોકાર ઊઠ્યો. સ્ત્રીઓ દ્વારા કેવળ પોતાની ક્ષુદ્ર કામનાઓને સંતોષવા મથતા પુરુષોને પ્રિય લાગ્યો, તેમણે એ પોકારને દેશવ્યાપી બનાવવા પ્રયત્નો આદર્યા.

સ્ત્રીઓમાં સુતેલી ભૌતિક સુખેચ્છાઓને પૂર્ણ કરવા માટે તેમણે આ સ્ત્રી સ્વાતંત્ર્યનું ક્ષેત્ર બતાવી સ્ત્રીઓને કૌટુંબિક મર્યાદાઓ ફગાવી દેવા ટટ્ટાર કરી.

તેમણે એક વાત એવી વ્યાપક બનાવી કે,"સ્ત્રીઓને ખૂબ મર્યાદાઓના બંધનોમાં જકડી રાખવાથી, અંદરમાં વાસનાનો અગ્નિ ઘુંઘવાય છે. અને માર્ગ મળતાં તે પવિત્રતાને ભરખી લે છે. એના બદલે સ્ત્રીઓને મર્યાદાઓની શૃંખલામાંથી મુકત રાખો."

આગળ વધીને તેમણે મર્યાદા પાલનમાં શારીરિક અનિષ્ટોને પણ બતાવવા માંડ્યા !

"બળજબરીથી દાબી રાખેલી વાસના શરીરમાં અનેક પ્રકારની વ્યાધિઓ જન્માવે છે."

છતાંય સ્ત્રીઓ સાથે સ્વેચ્છિત વિહારની અનુકૂળતા ન મળતાં સ્ત્રીઓને સમજાવવા માંડ્યું.

"દેશનું અને સમાજનું હિત - સેવા કરવા સ્ત્રીઓએ ઘરનો ખૂણો છોડવો જોઈએ. સ્ત્રીઓનું પણ રાજકીય અને સામાજિક ક્ષેત્રે અસાધારણ સ્થાન છે."

આ પ્રબળ પ્રચારની માયાવી જાળમાં અનેક સ્ત્રીઓએ ઝંપલાવ્યું. દેશસેવા અને સમાજસેવાના બુરખા નીચે તેમના દુરાચારની એબ ઢંકાવા લાગી. અને દેશસેવિકા તથા સમાજસેવિકા તરીકે તેમનું વ્યક્તિત્વ વિકાસ પામવા લાગ્યું ! નૈતિક અને અધ્યાત્મિક ઉન્નતિમાં પોતાનું ભવ્ય વ્યક્તિત્વ અભિવ્યક્ત કરવાની ભાવના લુપ્ત પામી, પરિણામે પ્રચ્છન્ન અને પ્રકટ દુરાચારો દેશવ્યાપી, વિશ્વવ્યાપી બન્યા.

બીજી બાજુ સ્ત્રીઓને કૌટુમ્બિક બંધનો, કુટુંબ સેવા કડવી લાગવા માંડી, પતિની પ્રસન્નતા પ્રાપ્ત કરવા માટે, પતિની સેવા કરવા માટે તેને સમય ન મળવા માંડ્યો એના સ્થાને પરપુરુષો સાથે વધુ ને વધુ બોલવાનું, હસવાનું, બેસવાનું, કામ કરવાનું તેને પસંદ પડ્વા લાગ્યું.

કુટુંબમાં તે પ્રેમનું સામ્રાજ્ય ન સ્થાપી શકી. કુટુંબમાં કલેશના મંડાણ થયા, કલેશના ભડકા થવા લાગ્યા.

બીજી બાજુ, જાતીય આકર્ષણનો સ્ત્રીઓ ભોગ બનવા લાગી અને અનાચાર, દુરાચાર અને વ્યભિચાર ખૂબ વધી ગયા. એમાં પણ માનવ સમાજ સમક્ષ જ્યારે તેમના પાપ પ્રગટ થવા લાગ્યા. વ્યક્તિત્વ હણાવા લાગ્યું ત્યારે

બર્થકંટ્રોલ, સંતતિ નિયમનના સાધનો અજમાવવા શરૂ થયા એના દ્વારા પાપના પ્રગટીકરણનો ભય ટળી ગયો ! ભોગેચ્છાએ માઝા મૂકીને રમણે ચઢી. પુરુષત્વ - વીર્યનો ખૂબ ખૂબ વ્યય થવા લાગ્યો. શારીરિક રોગોને હુમલા કરવાનું ક્ષેત્ર મળી ગયું, અને દેશ તથા સમાજ ઘેરી માંદગીમાં પછડાઈ ગયો.

વિચારો, ગંભીરતાપૂર્વક પક્ષપાતરહિત વિચારો

સ્ત્રી સ્વાતંત્ર્ય પાછળ કરવામાં આવેલા તર્ક કેટલા બધા અસંગત છે, તે પણ વિચારણા માંગે છે.

"કોટુંબિક મર્યાદાઓના પાલનમાં વાસનાનો અગ્નિ દબાયેલો રહે છે અને માર્ગ મળતાં તે પવિત્રતાને ભરખી લે છે." આમ માની મર્યાદાઓના પાલન તોડવામાં આવે અને અગ્નિને ભડકે બળવા દેવામાં આવે તો શું પવિત્રતા સહી સલામત રહેશે ?

વાસના એ જો અગ્નિ જ છે, તો અગ્નિ પર નિયંત્રણ અનિવાર્ય જ છે. કયો મનુષ્ય પોતાના ઘરમાં અગ્નિને છૂટો મૂકે છે ? રસોઈની જરૂર હોય ત્યારે પરિમિત તાપ દ્વારા તે અગ્નિનો ઉપયોગ કરાય અને જ્યારે કાર્ય સમાપ્ત થાય ત્યારે રાખના ભાઠામાં તે અગ્નિ દાટી દેવામાં આવે છે. તે જ રીતે ભોગની ઈચ્છા થતાં સ્વસ્ત્રી સાથે પરિમિતકાળ માટે વાસનાનો અગ્નિ પેટાવી, ત્યારબાદ સંયમની મર્યાદાની રાખમાં તે અગ્નિને દાબી રાખવો તે જ ગૃહસ્થ માટેની આર્ય સંસ્કૃતિ છે. વાસનાના અગ્નિને સંપૂર્ણ બુઝાવી નાંખવા સંયમની રાખમાં કાયમ માટે તે અગ્નિને દાટી રાખો ! તેનું જ નામ બ્રહ્મચર્ય પાલન છે. વળી વાસનાઓને દાબવામાં શારીરિક નુકસાનો ન હોવા છતાં જેમ રજૂ કરાય છે, તેમ વાસનાઓને પૂર્ણ કર્યે જવામાં તો કેટલા શારીરિક નુકસાનો છે, તે આજે સમજાવું પડે તેમ છે ? આજે વધુમાં વધુ રોગોનું જન્મસ્થાન હોય તો તે અધિક ભોગ પ્રવૃત્તિ છે. જ્યારે વાસનાઓને રોકવાથી વીર્યનો સંચય થઈ રોગ પ્રતિકાર શકિત વધે છે.

એટલું જ નહિ પણ વીર્યની હાનિથી માનસિક નિર્બળતા પણ વધી જાય છે અને નબળું પડેલું માનસ જીવન વ્યવહારમાં જોઈતી સફળ કાર્યક્ષમતા ધરાવતું નથી. ક્રોધાદિ આવેશોને તે તુરત પરવશ બની જાય છે. તેનાથી શરીર પર ઘણી માઠી અસરો થાય છે તેની વાણી કટુતાભરી બને છે.

આમ, વાસનાઓને ન દાબતાં છુટી મૂકવામાં આવી તો આજે માનસિક, વાચિક અને કાયિક રોગો, અનિષ્ટો દેશને ઘેરી વળ્યા છે.

વળી, સ્ત્રીઓને રાજકીય અને સામાજિક ક્ષેત્રે વાળી પુરુષોએ શું સ્ત્રીઓનું આત્મહિત કર્યું છે ? એક તો એ સ્ત્રી જ્યારે રાજકીય કે સામાજિક ક્ષેત્રે રસ લે છે, તે તેના પતિને પ્રિય નથી હોતું અને તેથી હૈયું ઘણો જ અસંતોષ અનુભવે છે, પતિ - પત્નિ વચ્ચે એક મહાન અંતર પડી જાય છે.

બીજું કુટુંબની સેવામાંથી કંટાળીને સ્વીકારેલી રાજસેવા કે સમાજસેવા કદી પણ સત્યની ભૂમિકા પર ટકી શકતા નથી અને તે અભિનંદનીય ન બની શકે.

આમ ભિન્ન - ભિન્ન દૃષ્ટિબિંદુઓથી વિચારતા સ્ત્રી - સ્વાતંત્ર્યે, દેશની, સમાજની અને આત્માની નૈતિક, આધ્યાત્મિક ઉત્ક્રાન્તિ ઉપર કેવો જબ્બર કુઠરાઘાત કર્યો છે, તે સમજી શકાશે.

જે સ્વાતંત્ર્યમાં વાસનાઓ સાકાર બની અધઃપતનના માર્ગે જીવાત્માને દોરી જતી હોય, તે સ્વાતંત્ર્ય કોઈ કાળે, કોઈ સ્થળે, આપી શકાય નહિ. તે સ્વાતંત્ર્યનો આગ્રહ રાખી શકાય નહિ. પરંતુ તે સ્વાતંત્ર્ય પર વહેલામાં વહેલી તકે અંકુશ મુકવો જોઈએ.

જે સ્વાતંત્ર્યમાં વાસનાઓ નામશેષ બની આત્મા ઉત્ક્રાન્તિના પંથે વળે તે જ સ્વાતંત્ર્ય પ્રત્યેક સ્થળે અભિનંદનીય બની શકે.

નારીનું સ્વમાન

મનીઓર્ડરની રકમ પાછી લઈને બીજે દિવસે ય ટપાલી જ્યારે સુરજની ખડકી બહાર નીકળ્યો, ત્યારે આખી શેરીમાં હો હા મચી ગઈ. "સો રૂપિયા એ કાંઈ નાની - સૂની રકમ ન કહેવાય !" સો રૂપિયાનું મની ઓર્ડર પાછું વાળવું એ મુર્ખાઈ નહિ તો બીજું શું ?" "કોઈ એને સલાહ દેનારું ય ન નીકળ્યું ?" "અરે, એ તો ભારે તેજ છે, એને કહેવા કોણ જાય ?" એમ જાતજાતની ટીકા સગા સંબંધીઓને પાડોશીઓમાં થવા લાગી એટલે મને સુરજ કોણ અને સો રૂપિયા શાના, એ જાણવાની ઈચ્છા થઈ. હું તો આઠ દિવસથી જ મામાને ઘેર હવાફેર માટે રહેવા આવી હતી.

આતુરતાથી મેં મામીને પૂછયું : "શી વાત થાય છે ?"

"એ આપણા ગામની દિકરી છે. મા - બાપ નથી, ભાઈ - ભોજાઈ પરદેશ રહે છે. છેલ્લા ત્રણ મહિનાથી એકલી જ અહી છે. એના વર તરફથી સો રૂપિયાનો મની ઓર્ડર આવ્યો'તો તે એણે પાછો વાળ્યો. આમ તો ઘરમાં ખાવાના ય વખા છે, પણ એ પૈસા એણે ન લીધા. શી ખબર બે માણસ વચ્ચે શો ય અણબનાવ હશે !"

મામી આટલું કહી વાત પૂરી કરવા માંગતા હતા, પરંતુ મારી જિજ્ઞાસાનો પાર નહોતો. મેં પ્રશ્નો પૂછવા માંડયા ને મામીએ કંઈક કંટાળા સાથે તૂટકછૂટક જવાબ આપ્યા તેનો સાર આ હતો : "સૂરજ એના પતિને છોડીને અહી આવી છે. એનો ભાઈ આવીને થોડો સરસામાન ને અનાજ આપી ગયો છે. પતિને ત્યાં વાડી, બંગલા, મોટર બધુ છે સૂરજ શા માટે આવતી રહી છે, તે કોઈ જાણતું નથી. પણ પતિ તરફથી આવતી કોઈ જાતની મદદ એ સ્વીકારતી નથી તેની આખા ગામને ખબર છે. હમણાં એણે સીવવાનો સંચો ભાડે લીધો છે ને એમાંથી ગુજરાન જેટલું કમાઈ લેવાની ઉમેદ રાખે છે."

આટલું જાણતા સૂરજને જોવાની મને તીવ્ર ઈચ્છા થઈ આવી. આંખની ઓળખાણ થઈ ગઈ હતી. પણ ઘેર જવાનું કદી બન્યું નહોતું. એટલે

મને સંકોચ તો થયો, પરંતુ ઈચ્છા દબાવી શકી નહી એટલે મેં તો જઈને એમનું બારણું ખખડાવ્યું. આવીને એમણે દરવાજો ઉઘાડયો કાંઈક આશ્ચર્ય અનુભવતાં મને આવકાર આપી અંદર લઈ ગયા. સંચો બંધ રાખીને આવ્યાં હતાં તે પાછો શરૂ કર્યો ને વિવેકથી મારા ને મામીના ખબર અંતર પૂછવા લાગ્યાં. મેં પણ એવું સામે પૂછ્યું. પછી રહેવાયું નહિ એટલે મેં કહ્યું : "માઠું ન લગાડો તો એક વાત પૂછુ."

"પૂછોને," સહજ રીતે એમણે કહ્યું.

મેં પૂછી નાંખ્યું, "મનીઓર્ડર કેમ પાછો મોકલ્યો ?"

સૂરજબહેન કંઈ જવાબ આપે તે પહેલાં તો મેં કહી દીધું કે, "બધાના મનમાં આ વાતનું આશ્ચર્ય થાય છે ને કોઈ કશું જાણતું નથી."

"તે રાખીને ય શું કરું ?" નિઃસાસો નાંખીને એમણે કહ્યું.

હું જરા મુંઝાઈ ગઈ, મે કહ્યું :

"એમ કેમ બોલો છો ? તમારા પતિએ પૈસા મોકલ્યા હતા અને તમારા ખર્ચ માટે મોકલ્યા હતા. તો પછી રાખવામાં શો વાંધો હતો ?

જવાબની આશા રાખતી હું એમની સામે તાકી રહી. પણ તેઓ તો નિરુત્તર રહી, નીચું જોઈ સંચો ચલાવવા લાગ્યા, સંચાની ઝડપ પર એમના મનની ક્રિયાઓ કંઈક સમજાતી હતી. અંતરમાં જાણે કે સંસ્મરણોનો ઉભરો ચડયો હતો ને એ ઉભરાને બેસાડી દેવા એ પ્રયાસ કરતાં હોય એવું દેખાતું હતું.

આ સ્થિતિમાં ફરીવાર સવાલ કરવાનું મને રૂચ્યું નહિ. હું મુંગી જ બેસી રહી.

પરંતુ થોડીવાર પછી પોતાના પ્રયત્નમાં જાણે એ સફળ થયા હોય એમ સંચાની ગતિ મંદ પડી ને સ્વસ્થ સ્વરે બોલ્યા :

"વાત બહુ લાંબી છે બહેન, એમ થાય છે કે એવી વાત કરી બીજા કોઈને દુઃખી શા સારું કરવા ?"

"એવો ખ્યાલ તમે ના કરશો સૂરજબહેન, મારાથી સહેવાયું નહિ તેથી જ જાણવા આવી છું."

અને પછી એમનું અંતર ઉઘડ્યું. ધીમે ધીમે એમણે કહ્યું.

"મારું લગ્ન થયું ત્યારે મારા ને મારા મા - બાપના હરખનો પાર નહોતો. ગામડા ગામની ગરીબ મા - બાપની દીકરીના નસીબે શ્રીમંતનું ઘર ક્યાંથી હોય, પણ મારા મામાની લાગવગ અને મારા નસીબના જોરે સારું ઠેકાણું મળી ગયું. પતિ હોશિયાર ને કુટુંબમાં કર્તા હર્તા. સારું થયું. મારા મા - બાપ મારું સુખ જોઈને ગયાં. આ દુઃખના દિવસ એમના ગયા પછી આવ્યા એટલી ફિકર મને ઓછી છે.

"લગ્ન પછીના ચાર વરસ તો મારા બહુ સુખમાં ગયા. પાણી માંગુ તો દૂધ મળે એવા મારા માન - પાન ને મારી પ્રત્યે હેતપ્રીત, પણ ચાર વરસ પછી ય મારી કુખ ન ફળી એટલે ઘરમાં સૌને ને પતિને સુદ્ધાં હું અણગમતી બની ગઈ. દાકતર, વૈદ્ય ને જોશી સુદ્ધાં પાસે મારું નસીબ ઉકેલાવી જોયું. પણ ક્યાંય કારી ન ફાવી. મારા સાસુ - સસરાનું દિલ મારા પરથી ઊઠી ગયું. બે ચાર મહિના તો મારા પતિ એમના વડીલોની વાતથી ન પીગળ્યા પરંતુ પછી તો આ કમનસીબીમાં એમને પણ મારો વાંક વસવા લાગ્યો. તેઓ મારાથી અળગા ને અળગા રહેવા લાગ્યા. વગર વાંકે મારો વાંક જોવા લાગ્યા."

આમ છતાં, હું શાંતિથી રહેતી હતી. એ લોકોની અવગણનામાં મારા નસીબને દોષ દઈ બેસી રહેતી હતી, પરંતુ એ શાંતિનો અંત એક દિવસ આવી ગયો.

"તે દિવસે રાત્રે પતિ રોજ કરતાં જરા વહેલા આવ્યા - મનમાં હું હરખાઈ. મને રાજી કરવા મારી સાથે હસીખુશીથી રહેવાનો એમના મનમાં વિચાર આવ્યો હશે. મારા પ્રત્યે દયાભાવ જાગ્યો હશે ને તેથી જ આજ વહેલા આવ્યા હશે, એમ માની હસતી, હસતી હું એમની સામે ઊભી રહી, પરંતુ તેઓ ગંભીર હતાં. એમની ગંભીરતા જોઈ હું સ્તબ્ધ બની ગઈ. એમણે મને સામેની

ખુરશી પર બેસવા કહ્યું. એક ગુનેગારના ભાવ અનુભવતી હું કાંઈક સજાના ફરમાનની રાહ જોતી ફાટી આંખે એમની સામે તાકી રહી.

એમણે કહેવા માંડયું :

"જો સૂરજ, તારો ખોળો ભરાયો નહિ. દાકતરોએ પણ ચોખ્ખી ના પાડી દીધી છે." હું મુંગી રહી : એમણે આગળ ચલાવ્યું :

"તો હવે મારે મારી આવડી મોટી મિલકતને વારસ વિનાની રાખી શકાય નહિ. બા - બાપુજીને પણ લાગે છે કે હવે મારે બીજું લગ્ન કરી લેવું જોઈએ." હિંમતથી તેઓ આ બોલી ગયા, હું ઉશ્કેરાઈ ગઈ; મેં કહ્યું :

"બા - બાપુજીનું નામ શા માટે વચ્ચે લાવો છો ? તમારા પોતાના મનની જ વાત કરોને !"

તેઓ સ્વસ્થ જ રહ્યા અને શાંતિથી બોલ્યા :

"મારા મનની વાત પણ એ જ છે, આટલા વરસોથી ને આટલી મહેનત પછી એકઠી કરેલી મિલકતને સાવ રઝળતી તો ન જ છોડાય."

મારું મન તો એમના આ જવાબ સામે હજારો સવાલ ઉઠાવી ગયું : "તો પછી શું મારા કરતાં તમારે મન તમારી મિલકતની કિંમત વધારે છે ? તમને તમારી મિલકત પર જેટલો અધિકાર છે એટલો મને નથી શું ?" મને કહેવાનું મન થયું, "જેવા તમે એ મિલકતના માલિક છો એવી હું પણ માલિક છું." પરંતુ આવા બધા વિચારો તો મારા અંતરમાં જ ઘૂમ્યા કર્યા. ને છેવટે શાંત પડી ગયા. બહાર તો મહાપરાણે રોકી રાખવા છતાં આંસુના બે ટીપાં પડી ગયા. એ જોઈને મારા પતિ ગુસ્સે થઈ ગયા ને બોલ્યા :

"એમાં રડવાનું શું છે ? તારે મારા કુટુંબના મૂળને ઉખાડી નાખવું છે? કુટુંબનું ભલું ઈચ્છવું તો દૂર રહ્યું આ રીતે અપશુકન કરવા છે ? તને કોઈ કાઢી મૂકતું હોય ને તું આમ આંસુ પાડતી હોય તો ઠીક છે, તારાં સુખ - સાહેબીમાં જરાય ખોટ આવવાની નથી."

"અને ચાર દિવસ પછી મારા મોસાળ સાસરાના ગામથી નાળિયેર આવ્યું. એટલે બધી પરિસ્થિતિ હું કળી ગઈ. એ ઘરમાં ઊભા રહેવું મારે માટે હવે ઝેર સમાન થઈ પડયું. તે આખી રાત મેં જાગતા વિતાવી. મનમાં વળી વળીને વિચારો ઊમટવા લાગ્યા : "આ ઓરડા પર હવે મારો શો અધિકાર ? આ અટારીમાં હવે મારાથી ઊભા રહેવાય નહિ. એમની સામે અધિકાર દાવે હું એક શબ્દ બોલી શકું નહિ.....તો પછી આવું હિણપતભર્યું જીવન મારે શા માટે સ્વીકારવું ? મારા હાથપગ ભાંગી ગયા છે ? રોટલાના બે ટુકડા માટે આવું સ્વમાનહીન જીવન મારે પસંદ કરવું ?"

મારું અંતર બળવો પોકારી ઉઠયું : "ના, ના, મારાથી એ કદિ નહિ બની શકે. મારી જાતને હું એવું હીણ સ્થાન કદી નહિ આપી શકું. હું મારે પિયર ચાલી જઈશ. પિયરમાં માતા - પિતા નથી, પણ ઘરનું ખાલી ખોખું છે. એ ખોખામાં રહીને ભૂખ્યે - તરસે જીવવું પડશે તો એ રીતે પણ હું સ્વમાનભેર જીવીશ."

"એ રાત્રે જ મેં નિર્ણય કરી દીધો ને સવારે ઘરમાં સૌને જણાવી દીધો. કોઈએ એ સામે વાંધો ન લીધો. પતિદેવે કોઈ માણસ મૂકવા આવે એટલી ગોઠવણ કરવા પૂરતી સહાનુભૂતિ દર્શાવી. હું એ સૂચન સામે અબોલ જ રહી. મારું અંતર ઝંઝાવાત અનુભવી રહ્યું હતું. મને કાંઈ બોલવું, કાંઈ વિચારવું સૂઝતું નહોતું, યંત્રવત જે થયું તે મેં જોયા કર્યું ને હું અહી ચાલી આવી.

"ત્યાર પછી એમને મને પૈસા મોકલવાનો વિચાર આવ્યો હશે અગર તો કોઈએ સૂચવ્યો હશે. પણ એ પૈસાને મારે શું કરવા છે ? જે પૈસાની કિંમત મારા પતિને મન મારા શરીર, મન, પ્રાણ ને પ્રેમ કરતાં વધુ હોય એ પૈસાનો હું કઈ રીતે સ્વીકાર કરી શકું ? એ કરતાં તો મારે ભૂખે મરવું પડે, ભીખ માંગવી પડે કે પારકાં કામ કરવા પડે એ હું બહેતર ગણીશ."

એટલું બોલી સૂરજબહેન નીચું જોઈ સંચો ચલાવવા લાગી ગયાં. શૌર્યને સ્વમાનથી એમનો ચહેરો તપીને લાલ થઈ ગયો હતો. મારાથી મનોમન એમને

વંદન કરાઈ ગયું. નારીનું આવું સ્વમાન મને જવલ્લે જ જોવા મળ્યું છે. સામાન્ય રીતે આંસુ, નિશ્વાસ, લાચારી, ભરણ - પોષણની માગણી એવું બધું જ આ દુનિયામાં મેં જોયું છે. પણ નારીત્વનું આવું તેજ ભાગ્યે જ નજરે ચડે છે.

શું આ નારી છૂટાછેડા લઈ શકતી નહોતી ? શું આ નારી પુર્નલગ્ન કરી શકતી નહોતી ? નારી સ્વમાનને અને શીલને સાચવે ત્યારે જ તે મહાન ગણાય છે.

આ તે દવાખાના કે કતલખાનાં ? :

ભારતના આરોગ્ય મંત્રીશ્રીએ થોડા મહિના પહેલા લોકસભામાં સગર્વ જાહેરાત કરી હતી કે વર્ષ ૧૯૭૮ - ૭૯ દરમિયાન સરકારના ચોપડે બે લાખ તેર હજાર ગર્ભપાતના કેસ નોંધાયા હતા. (લગભગ વીસ વર્ષ પહેલાના ગાળાની વાત આજે કયાં પહોંચી હશે વાચકો કલ્પી લે.) તેમણે એ વાતે ખુશી વ્યકત કરી કે હવે ભારતમાં ગર્ભપાત લોકપ્રિય બનતો જાય છે. ધીમે ધીમે *આ સામાજિક કલંક પ્રત્યે* લોકોની સુગ ઓછી થતી જાય છે. આ ભ્રૂણ હત્યામાં તામલિનાડુ અને મહારાષ્ટ્ર આખા દેશમાં મોખરે છે. તે બદલ મંત્રીશ્રીએ તેમને અભિનંદન આપ્યા હતાં. અને બીજા રાજયોને આ બે પ્રગતિશીલ ચરણ ચિન્હો પર ચાલવા સલાહ આપી હતી. સંભવ છે. તામિલનાડુ અને મહારાષ્ટ્રના આરોગ્ય મંત્રીઓની છાતીઓ ગજગજ ફુલી હશે અને તેમણે પોતાના ખુની વિભાગના કસાઈઓને માન - ચાંદ કે ઈનામ અકરામોથી નવાજ્યા પણ હશે. લોકસભાના તમામ માનનીય સભ્યોએ પણ આ આંકડા ઠંડા કલેજે સાંભળી લીધા હશે અને પછી પ્રજાના ખર્ચે કેન્ટીનમાં જઈ ચા - નાસ્તા કર્યા હશે. પરંતુ તમે જો આ લેખ જમ્યા પહેલાં વાંચશો તો ભોજન નહિ ભાવે અને રાત્રે વાંચવા બેઠા હશો તો જલ્દી ઉંઘ નહિ આવે. ગર્ભપાતની કેટલીક વૈજ્ઞાનિક ડોકટરી પદ્ધતિઓ જે આજે ભારતમાં પ્રચલિત છે તે જોઈ લઈએ :

ડી. એન્ડ સી. ઓપરેશન :

દાકતરી સાધનો વડે સગર્ભા સ્ત્રીના ગર્ભાશયનું મુખ પહોળું કરવામાં આવે છે. પછી એ સાધન વચ્ચેથી એક ચપ્પુ અથવા કાતર જેવું હથિયાર અંદર નાંખીને જીવતા બાળકને તે વીંધી નાંખવામાં આવે છે. ગર્ભમાં તરફડતું બાળક લોહીલુહાણ થઈ અસહ્ય વેદના ભોગવી મૃત્યુને શરણ થાય છે. પછી એક ચમચી જેવા સાધનની મદદથી બાળકના ટુકડે ટુકડા બહાર કાઢવામાં આવે છે. ખીમો થઈ ગયેલું મગજ, લોહીથી દદડતા આંતરડા, બહાર નીકળી પડેલી આંખો, દુનિયામાં જેણે પહેલો શ્વાસ નથી લીધો તેવા ફેફસા, ધબકતું નાનકડું હૃદય, હાથ પગ, બધું જલદી - જલદી બહાર કાઢીને નીચેની બાલદીમાં ડોક્ટરે ફેંકી દેવું પડે છે. બહાર ગર્ભપાત માટેના ઉમેદવાર બહેનોની લાંબી લાઈન હોય છે. *(જાણે નરકની ટીકીટ લેવા લાગેલી લાઈન, જ્યાં કપાવું કપાવું ને કપાવું જ પડે છે.)* એટલે ડોક્ટરે આ બધું જલ્દી - જલ્દી પતાવવું પડે છે. તેથી ઘણી વખત બાળકને અંદર તરફડીને મરી જવા માટે પૂરતો સમય પણ અપાતો નથી. અંધારામાં તીર મારવા જેવું આ ઓપરેશન છે. હથિયાર ગર્ભમાં બાળકના માથામાં, છાતીમાં, પેટમાં કે હૃદયમાં ન વાગતા હાથ, પગ કે સાથળમાં ઘોંચાય તો બાળક જલ્દી મરતું નથી. ૭૦, ૮૦ કે ૯૦ વર્ષ જીવવા માટે કુદરતે જે છોડ તૈયાર કર્યા હોય છે, તેની જિજિવિષા ખૂબ પ્રબળ હોય છે. તેથી બાલદીમાં ધબકતા હૃદય જોઈને ડોક્ટરો, નર્સો અને સ્વીપરો સુદ્ધાં બીજી બાજુ આંખો ફેરવી લે છે. આ હથિયાર કયારેક ઉતાવળમાં અને કયારેક અનભ્યસ્ત હાથે ગર્ભાશયને પણ નુકસાન કરી દે છે. તેવા કિસ્સામાં લાંબા સમય સુધી લોહી વહે છે, અંદર ચાંદુ પડે છે, કાયમનો પ્રદર થાય છે, જાતીય આવેગો ઠંડા પડી જાય છે, પરિણામે દાંપત્ય જીવન ખોટું બને છે અને *કયારેક તો એવી સ્ત્રી ફરી કદી માતા બની શકતી નથી.*

ચુસણ પદ્ધતિ :

ગર્ભાશયમાં એક પોલી નળીનો છેડો દાખલ કરવામાં આવે છે. નળી સાથે એક પંપ બેસાડેલો હોય છે અને નળીને બીજે છેડે મોટી બોટલ જોડેલી હોય છે. નળીનો એક છેડો ગર્ભાશયમાં બરાબર ગોઠવ્યા પછી પંપને ઉઘાડવાસ કરવાથી ગર્ભમાંનું જીવતું બાળક ગર્ભમાંથી પછડાય છે. કસાઈઓ બકરાને એક ઝાટકે હલાલ કરે છે. જ્યારે આ પદ્ધતિમાં કયારેક બાળકના જુદા - જુદા અંગોને નળીમાં ખેંચાઈ આવે છે. ડોળા ફાટીને બહાર આવી જાય છે. સકશનને લીધે પેડુ, છાતી, પેટ અને મગજના પોલાણોમાં આવેલા અવયવો ફાટીને વેરવિખેર થઈને બહાર આવે છે, ત્યારે છેવટે બંધ બોટલમાં જોરથી પછડાઈને તેના ભુક્કા બોલાઈ જાય છે. કેટલીયે વાર સુધી બાળક એ બોટલમાં તરફડતું રહે છે અને પછી શ્વાસ રૂધાતા તે ઠંડુ પડી જાય છે. આ પદ્ધતિમાં કયારેક આખું ગર્ભાશય બહાર ખેંચાઈ આવે છે. તેવી સ્ત્રીઓને જિંદગીભર અનેક તકલીફો થાય છે. કમરનો દુઃખાવો તો કાયમી બની જાય છે. પછીનું ગર્ભધાન ઉથલો મારે અને રક્તસ્રાવને કારણે સ્ત્રી નંખાઈ જાય છે.

હિસ્ટેરોટોમી (નાનું સિઝેરિયન) :

પેડુને ચીરી, સગર્ભા સ્ત્રીના આંતરડા બહાર કાઢી, ગર્ભાશયને ખોલી, જીવતું બાળક કાઢવામાં આવે છે. પછી એને બાલદીમાં ફેંકી દેવું પડે છે હાથપગ હલાવતું, હવાતિયા મારતું, રડતું, અસહાય બાળક બાલદીમાં જ મરી જાય છે. તેમાં પણ કેટલાક જબરા જીવો કલાકો સુધી મરવાની ના પાડે છે અને ઓપરેશન થિયેટરમાં બીજો કેસ તુરત દાખલ કરવાનો હોય છે. તેથી બાલદીમાં જીવતા બાળકને તીક્ષ્ણ હથિયાર વડે વીંધી નાંખવામાં આવે છે અથવા મોટા ફટકાથી તેનો કચ્ચરઘાણ કાઢી નાંખવામાં આવે છે. જો કાતિલ ખુનીઓ, ડાકુઓ, મારાઓ અને આદતના નર - હત્યારાઓ આવાં બે - ચાર ઓપરેશનો જોઈ લેશે તો કદાચ તેઓ પોતાનો ધંધો છોડીને સાધુ બની જાય,

અથવા આવું કાળું કામ કરનારાઓનું જ ખૂન કરી બેસે.

ઝેરી ક્ષારવાળી પદ્ધતિ :

એક લાંબો સોયો ગર્ભાશયમાં ભોંકવામાં આવે છે. તેમાં પીચકારી વડે ભારે ક્ષારનું દ્રાવણ છોડવામાં આવે છે. ચારે તરફના દ્રાવણથી ઘેરાયેલું બાળક થોડો ક્ષાર ગળી જાય છે. જોતજોતામાં બાળકને ગર્ભાશયમાં હેડકી ઉપડે છે. ઝેર ખાધું હોય એવા માણસની જેમ તે ગર્ભાશયમાં આળવા - ખેંચવા લાગે છે. ક્ષારની દાહક અસરથી તેની ચામડી કાળી પડી જાય છે. અંતે ગુંગળાઈને બાળક ગર્ભમાં મરી જાય છે. પછી તેને બહાર કાઢી લેવામાં આવે છે. ઘણીવાર ઉતાવળમાં કાઢવામાં આવે તો બાળક થોડું જીવતું હોય છે. એ વખતે તેની ચામડી વાદળી હોય છે. બહાર તે થોડી જ વારમાં મૃત્યુ પામે છે. આવા ગર્ભપાતમાં જો બાળક જોડિયું હોય તો એક મરેલું અવતરે ને બીજું જીવતું આવે, પરંતુ તેને પણ ટુંક સમયમાં જ અન્ય ઘાતકી રીતો વડે મરણને શરણ કરવામાં આવે છે.

નિકાલની આગવી રીતો :

એક ઓપરેશનમાં ૭ માસનું બાળક જીવતું નીકળ્યું પોતાને આ દુનિયામાં જીવવાનો અધિકાર છે, એમ વ્યકત કરવા માટે તે જોરશોરથી રડવા લાગ્યું. ડોક્ટરે તેને મહેતરને આપી દેવા માટે આયાને આપ્યું. જીવતા બાળકને દાટી દેવા માટે મહેતરે અસ્વીકાર કર્યો. આયા અને મહેતર વચ્ચે ઝગડો થયો. અંતે આયાએ બાળકને ભોંયતળિયે પછાડ્યું, થોડીવાર તરફડીને તે મૃત્યુ પામ્યું. તે પછી જ મહેતરે તેના માસુમ શબનો સ્વીકાર કર્યો. આયા (મોટીવેટર) ને દસ રૂપિયા મળ્યા. ડોકટર તથા તેના મદદનીશને પાંચ રૂપિયા મળ્યા, નર્સને એક રૂપિયો મળ્યો અને પોતાના જ બાળકની હત્યારી માતાને પૂરા એક સો રૂપિયા મળ્યા. ૧૯૭૨થી ભારત સરકાર એક ગર્ભપાત પાછળ

આટલી રકમ પ્રોત્સાહનરૂપે આપે છે. ગર્ભપાતના કિસ્સામાં કેટલીક કન્યાઓ અને માતાઓ અજ્ઞાનવશ જાણી જોઈને ખોટી માહિતી આપે છે અને તે કહે છે કે તે કરતાં બાળક વધુ પરિપકવ નીકળે છે. કેટલાક કેસોમાં બાળક મરવાની ના જ પાડે છે. અને કોઈ દયાળુ આત્મા તેને દત્તક પણ લઈ લે છે. એક વખત એક પરિપકવ ગર્ભનું મસ્તક જ ચુસણ પદ્ધતિમાં અલગ થઈ ગયું, અને બાકીનું ધડ શ્વાસ લેવા અડધા કલાક સુધી હવાતિયા મારતું રહ્યું. દિવસને અંતે ઓપરેશન થિયેટરનો તમામ માનવ એંઠવાડ ઊભરાતી બાલદીઓ, મૃત્યુ પામેલા અને કળવળતાં મનુ સંતાનોને દાટી દેવામાં આવે છે, અથવા ભઠ્ઠીમાં નાંખીને બાળી દેવામાં આવે છે. જેથી સામાન્ય નાગરિકોને આ લીલા કદી નજરે ચઢતી નથી.

પ્રચાર જાળ:

"બોલે તેના બોર વેચાય" એવા જાહેરાતના આ જમાનામાં સરકાર લોકોને ફસાવવા માટે લોભામણા સૂત્રો ચિતરે છે. "પ્રસુતિ નિવારણ એ સ્ત્રીનો અધિકાર છે." આ સૂત્ર વાંચીને કોઈ બિનઅનુભવી મહિલા કુટુંબ કલ્યાણ કેન્દ્રની મુલાકાતે જાય તો તેમને ગર્ભપાતની સલાહ આપવામાં આવે છે. સલાહ આપનાર પોતે અથવા તેની સાંકળમાંનો દેહસૃષ્ટિ કોઈ બીજો જણ મોટીવેટર હોય છે જે મોટી સંખ્યામાં મહિલાને ગર્ભપાત માટે તૈયાર કરવામાં પાવરધા હોય છે. તેઓ સગર્ભા સ્ત્રીને અનેક રીતે સમજાવે છે કે તમને બાળકની હમણાં જરૂર નથી, તમારું યૌવન, તમારું સૌંદર્ય, તમારી સૃષ્ટિ તમારે અકબંધ રાખવી હોય તો ગર્ભપાત કરાવી નાંખો. તમારે નોકરી કરવી છે, તમારે પતિને કંપની આપવી છે, તમારે વિદેશ જવું છે, તમારે મોજમજા કરવી છે બાળક તેમાં બાધક બનશે. પાંચ - દસ વર્ષ થોભી જાવ હમણાં ગર્ભપાત કરાવી નાંખો. એબોર્શન હવે કાયદાની દૃષ્ટિએ માન્ય છે. તેમાં કંઈ વાંધો આવતો નથી. તકલીફ થતી નથી ઉપરથી રૂપિયા મળે છે. નોકરી કરતા હો તો ચાલુ પગારે

રજા મળે છે. એ....ય ને ઘેર સુઈ આરામ કરી, સરકારી પૈસે શીરો ખાઈ, તાજામાજા થઈને ફરી શકો છો, એકવાર ભૂલ કરી, તેવી બીજીવાર ન થવા દેજો. સંતતિ નિયમનના સાધનો વાપરજો. પરંતુ આ વખતે તો નિકાલ કરાવી જ નાખો''

તેમ છતાં ધર્મભીરૂ ભારતીય સ્ત્રી હજારો વર્ષના સંસ્કારના બળે ગર્ભપાતનું પાપ કરતાં ખચકાય છે. ત્યારે તેને સમજાવવામાં આવે છે કે - હજુ તો શરૂઆત જ છે. તેમાં જીવ નથી એ તો માંસનો લોચો જ હોય છે. તેને કાઢી નાંખવામાં કશુ પાપ જેવું નથી. ખાસ દર્દ થતું નથી. અઠવાડિયામાં ઊભા થઈ જશો. કોઈને ખબર પણ નહિ પડે.

અને ભોળી સ્ત્રીઓ આ પ્રચાર જાળમાં ભરમાઈ જાય છે. તેમને ખબર નથી કે ત્રીજે મહિને તો બાળક પેટમાં ફરકવા માંડે છે. અને જીવ તો ગર્ભાધાન વખતે જ તેમાં પડી જાય છે. સંભોગ વખતે જ પુરુષ - વીર્યના શુકાણુ અને સ્ત્રી બીજના મિલન વખતે એ ધબકતા હોય છે. જીવ જ જીવને જન્મ આપી શકે. મૃત પદાર્થમાંથી કદી જીવન ન સંભવે. વસ્તી ઘટાડવા માટેની આ એક નીચ અને ખૂની ચાલ છે, જેમાં જીવનના ઈન્કાર માટે જુઠાણું ફેલાવવામાં આવે છે. એ જુઠાણાની જનક સ્વયં સરકાર છે. વધુ હાથોને કામ, રોજી, રોટી આપવાને અશકત એવી *સરકાર જુઠ્ઠા પ્રચાર દ્વારા માનવીનાં કતલખાના ચલાવે, એ દેશમાં દુષ્કાળ પડે, ધરતીકંપો થાય, આગ લાગે, મોંઘવારી વધે, મનુષ્યો ચારિત્ર્યભ્રષ્ટ થાય અને છેવટે યાદવાસ્થળીથી એ દેશનું સત્યાનાશ નીકળી જાય,* તો તેમાં આશ્ચર્ય પામવા જેવું શું છે ?

કાયદો અને કુદરતી વ્યાય :

સરકારી અને ખાનગી દવાખાનાઓના લફરાક બારણાંઓ પાછળ આવા માનવ કતલખાનાં કાયદાને આધારે ચાલી રહ્યા છે. ડોક્ટરો, મદદનીશો, નર્સો, સ્વીપરો, મોટીવેટરો અને સંતતિ નિયમન વિભાગના કર્મચારીઓ પોતાના વળતર માટે, પગાર ઉપરાંતની મોટી કમાણી માટે, ભૌતિક સમૃદ્ધિની ભૂખ ભાંગવા માટે વધુ ને વધુ મહિલાઓ ગર્ભપાત કરાવવા કતલખાનાઓમાં હારબંધ લાવી રહ્યા છે. આરોગ્યમંત્રી જે આંકડાઓ બોલ્યા છે તે તો દવાખાનાઓના છે. *અંધારી ગલીઓમાં સુયાણીઓ અને ઉંટવૈદ્યોના હાથે જે ભ્રૂણ હત્યા અને સાથે - સાથે સગર્ભા માતાઓના છાને ખૂણે મોત થતા* હશે તેના આંકડા તો કોઈને કદી મળે તેમ નથી.

કુંવારી માતાઓ લોકલાજે ગર્ભપાત કરાવે છે, તેના કરતાં ઘણી મોટી સંખ્યામાં પરિણિત માતાઓ કાયદાને આધારે છડેચોક પોતાના બાળકોની હત્યા કરે છે. બાળકો નહોતા જોઈતા લગ્ન શા માટે કર્યા ? ભૂલ જ થઈ ગઈ હોય તો ભોગવતા કેમ નથી ? ગર્ભાશયમાંથી અકાળે કાઢીને દાટી દેવાતા બાળકો જો મા - બાપ સામે કોર્ટમાં જઈ શકતા હોત તો ? તેઓને સરકારી વકીલની સહાય મળતી હોત તો ? આપણાં જ મા - બાપે એ રીતે આપણો નિકાલ કરી નાખ્યો હોત તો ?

વણજોઈતા બાળકોના સમયસર નિકાલને રાષ્ટ્રીય સેવા માનનારાઓ એવી દલીલ કરે છે કે અનિચ્છનીય બાળકને જીવવાની ફરજ પાડવા કરતાં મારી નાંખવું સારું. આ દલીલને આગળ ચલાવીએ તો અનિચ્છનીય પત્નીને જે લોક બાળી નાંખે છે એ પણ એક દિવસ રાષ્ટ્રસેવા લેખાશે. પછી આંધળા, લુલા, લંગડા, બોબડા, મંદબુદ્ધિવાળા બાળકો અને બોજારૂપ બનેલા વૃદ્ધોને પણ વધતી જતી જનસંખ્યા રોકવાને બહાને ઝેરનું ઈન્જેકશન દઈને મારી નાંખવા માટે કાયદો કરી શકીશું. લોકશાહીમાં બહુમતીને ફાવતું આવે, તેનો કાયદો બનતાં કોણ રોકી શકે છે ? સત્તા સ્થાને બેસનારાઓએ પણ બહુમતીના

મત મેળવવા પડે છે ને ? બહુમતી સમાજ બીડી, સિગારેટ, દારૂ - ભાંગ પીએ તો નિયમાનુસાર કલ્યાણ રાજ્યમાં એ શિષ્ટાચાર ગણાય.

ગર્ભપાત કરીને આપણે કેટલી મહાન વિભુતિઓને ધરતી પર આવતાં પહેલાં જ મારી નાંખીએ છીએ ? આ દયામય કાયદો સરેઆમ બાળહત્યા જ છે. દુનિયાના અનેક દેશોમાં ફાંસીની સજા રદ થઈ છે. ખુનીઓને પણ ફાંસીની સજા આપવામાં આવતી નથી. કારણ કે જીવ લેવાનો મનુષ્યને હક જ નથી. ગર્ભપાત એ ફાંસીની સજા કરતાં વધારે ક્રુર આચરણ છે. ફાંસી જેને આપવામાં આવે છે તેનું તત્કાળ મૃત્યુ થાય છે. જયારે ગર્ભપાતમાં બાળક કલાકો સુધી તરફડીને મરે છે. ફાંસી પીડાહીન છે. ગર્ભપાતમાં બાળકનો કશો ગુનો હોતો નથી. અન્યની સલામતી માટે ગુનેગારને સમાજ ફાંસી આપે છે, જયારે પોતાના મોજશોખ, શરીર સુખ અને તરંગ ખાતર આ લોકશાહી સમાજ પોતાના સંતાનોની ગર્ભમાં હત્યા કરે છે. ફાંસીની સજા પામનારાઓ તો થોડાં વર્ષ પૃથ્વી પર વિતાવ્યા હોય છે. જયારે ગર્ભમાનાં બાળકે તો હજુ ધરતી પર શ્વાસ પણ લીધો હોતો નથી. ગેસ ચેમ્બરમાં હજારો યહુદીઓને મારી નાંખનાર હીટલરને દુનિયા અપરાધી ગણતી હોય, તો પોતાના સંતાનોને મોતને ઘાટ ઉતારનારા દંપતિ નિર્દોષ કેવી રીતે લેખાય ? એ દંપતિઓ હિટલરના ય દાદા - દાદીઓ છે.

ગયે વર્ષે જ આપણે બાળવર્ષ ઉજવ્યું. એ વર્ષમાં આપણે કેટલા બાળકોની હત્યા કરી એ આંકડા આરોગ્ય મંત્રી જણાવે તો આપણે બાળપ્રેમ અને જીવદયાનો સાચો આંક જાણવા મળે.

આ દુનિયામાં માત્ર ત્રણ વ્યકિતઓએ જ ગર્ભપાત સામે પોતાનો અવાજ બુલંદ કર્યો છે. સ્વામી વિવેકાનંદ, મહાત્મા ગાંધી અને ખ્રિસ્તી ધર્મના વડા નામદાર પોપ. અન્ય જૈન ધર્મના આચાર્યાદિમુનિ ભગવંતો, ભારતના સંતો, કેટલાક વિચારકો, ચિંતકો, અને સમાજ સેવકોએ મારી જેમ પોતાના વિચારો પ્રગટ કરવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે. પરંતુ ભૌતિકવાદી

નગારખાનામાં અમારી તુતી કોણ સાંભળે ? ઈશ્વરીય ન્યાય જેવી કોઈ વસ્તુ હશે તો ત્યાં અમારો વિરોધ જરૂર નોધાશે.

યાદ રાખો, ગર્ભાધાન વખતે જ વ્યકિતની ઉંચાઈ, બુદ્ધિનો આંક (આઈ.ક્યુ.) ચાલવાની ઢબ, આંગળાના નિશાન, લોહીનું ગ્રુપ અને મોટા ભાગની વિશેષતાઓ નક્કી થઈ જ જાય છે. જૈનાગમ તો કહે છે કે આ બધુ પૂર્વભવથી એ લઈને જ આવે છે તે અનુસાર એને અહિ એ બધું મળે છે. બાળક સંપૂર્ણ વ્યકિતત્વ ધરાવે છે, પછીની ઉંમરમાં તો માત્ર તેનો ઉઘાડ જ થાય છે. જો ગર્ભપાત કાયદેસર ગણાય, તો દુનિયામાં ચોરી, ખૂન, બળાત્કાર પણ આગળ જતાં કાયદેસર થાય થશે અને તરવાર જંગલનો કાયદો છે. સભ્ય સમાજ તેને સ્વીકારે તો જંગલિયાત જીવનના હર ક્ષેત્રે ઝડપભેર પ્રવેશી જશે. દાકતરોના પિતા હિપોક્રેટિસની સોગંદવિધિમાં સ્પષ્ટ જણાવવામાં આવ્યું છે કે - *"હું ડોક્ટર બન્યો છું, જીવન બચાવવા માટે, જીવનનો નાશ કરવા માટે નહિ"* અને આજના ડોક્ટરો નાશવંત જીવનના સુખચેન માટે પોતાની પ્રતિજ્ઞા તોડીને હજારો જીવોનો નાશ કરે છે. સરકારી સમર્થન સાથે કળિયુગના અંતિમ ચરણની આ બલિહારી છે. થઈ શકે માત્ર એટલું જ કે જેમનો આત્મા ન સ્વીકારે તેવા સજ્જનો આ ઘેટાં દોડમાં ન જોડાય અને યથાશક્તિ વિરોધ કરતાં જ રહે.

હમણાં જ એ સમાચાર છાપાઓમાં ચમકયા છે કે, "વલસાડ જિલ્લાના બિલીમોરા શહેરમાં તા.૩-૪-૭૩ ના બજારમાં રેસ્ટોરામાં દુધ સાથે કોલ્ડ ડ્રીન્ક સીરપ લીધા પછી એક સ્ત્રી અને તેના પાંચ બાળકોના મરણ નિપજયા હતાં. આ પાંચ બાળકોમાં ત્રણ છોકરા અને બે છોકરીઓ હતી." બજારના પીણાઓ તથા બજારના ખાણાઓ ખાનારાઓ હજુ પણ ચેતે !

માનસિક નીરોગિતા

શ્રી કેદારનાથજી

શારીરિક સૌંદર્યની દૃષ્ટિથી આરોગ્ય એ જેમ - જેમ મુખ્ય બાબત છે તેમ માનવતાની દૃષ્ટિથી માનસિક નિરોગીતા એ મહત્ત્વની બાબત હોવાથી તેને જ પ્રાધાન્ય આપવું યોગ્ય છે. કેવળ શારીરિક વજન કે હૃષ્ટપુષ્ટતા પર જેમ શારિરીક આરોગ્યનો આધાર નથી તેમ ધન, સત્તા, વિદ્યા કળા કે પ્રતિષ્ઠા પર માનસિક આરોગ્યનો આધાર નથી. બાળક બીજાઓના પ્રમાણમાં નાનું હોય, તેની શક્તિ બીજાઓના પ્રમાણમાં ઓછી હોય તો ય તે નિરોગી હોય છે. અને બીજાઓમાં શક્તિ હોય છતાં તેઓ નિરોગી ન હોય એવો સંભવ છે. તે પ્રમાણે જેઓ માનસિક નિરોગી હોય તેમની પાસે ધન, વિદ્વતા, બળ, પ્રતિષ્ઠા જેવી કોઈ વિશેષતા ન હોય તો ય તેમનું મન નિર્મળ હશે. નિર્મળ મનમાં વાસ કરનારી દયા, ક્ષમા અને શાંતિ તેમની પાસે હશે એટલે એકંદરે તેમનામાં માનવતા હશે અને ધન વગેરે હોય તેમની પાસે માનસિક નિરોગીતા નહિ હોય. કર્મે પરમાત્માએ આપણને સંકલ્પ શક્તિ આપી છે એ તેની આપણા પર મહાન કૃપા છે. તેને લીધે આપણે પોતે કેટલાયે મહાન સંકલ્પ કરીને તે પાર પાડી શકીએ છીએ. ઈચ્છા હોય તો આપણે ધનવાન સામર્થ્યવાન, વિદ્વાન કળાવંત અને વિજ્ઞાન સંપન્ન થઈ શકીએ અને ઈચ્છીએ તો આપણે સજ્જન થઈને માનવતા સિદ્ધ કરી શકીએ. આ પ્રકારની શકિત પરમાત્માએ આપણને આપેલી છે. તે આપણા દરેકમાં સુપ્તપણે વાસ કરે છે. દ્રઢ સંકલ્પથી અને તે પ્રકારના દ્રઢ પ્રયત્નથી માણસ પોતાને જોઈએ તે સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરી શકે છે. વિદ્યાની પાછળ લાગેલા વિદ્વાન થાય છે. બળના ઉપાસક બળવાન થઈ શકે છે. ને તે પ્રમાણે માનવતા પ્રાપ્ત કરવાની ઈચ્છા કરનારાઓ પણ પોતાના પ્રયત્નોમાં સફળ થયા છે. સંકલ્પ પ્રમાણે સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરવા માટે પુરુષાર્થની જરૂર છે. કોઈ પણ સિદ્ધિ પુરુષાર્થ વગર પ્રાપ્ત થઈ શકતી નથી. ગીતાના સોળમા અધ્યાયમાં દૈવી અને આસુરી સંપત્તિના લક્ષણો કહ્યા છે. તેવી આસુરી

સંપત્તિ પ્રાપ્ત કરવા માટે પણ પુરુષાર્થની જરૂર છે. માનવતા કેવળ પુરુષાર્થ પર અવલંબેલી નથી. તેની પ્રાપ્તિ માટે પુરુષાર્થની સાથે જ માનસિક નિરોગીતા એટલે પવિત્રતાની જરૂર છે, તેથી માનવતાની દૃષ્ટિએ માનસિક નિરોગીતા એ મહત્ત્વની બાબત છે. તેની પ્રાપ્તિ માટે જીવન વિશેના આપણા સંકલ્પમાં પવિત્રતા હોવી અત્યંત જરૂરી છે.

મનુષ્ય સ્વભાવ કુદરતથી કહો કે પરંપરાને લીધે કહો, સહેજે ભોગાસકત હોવાથી તેનો ચિત્તવૃત્તિનો પ્રવાહ તે પ્રમાણે ચાલતો હોય છે. મનના સંકલ્પ તે દિશામાં ચાલતા હોય છે. તેથી ધન, વિદ્યા અને કળા તરફ સ્વાભાવિક રીતે તેનું ચિત્ત આકર્ષાય છે. તેમની પ્રાપ્તિથી સુખી થવાનો તેનો હંમેશ પ્રયત્ન હોય છે. તે બાજુના પ્રયત્નમાં સિદ્ધિની દૃષ્ટિથી તેને કદી અશક્યતા જણાતી નથી. હાલ વિજ્ઞાનની વૃદ્ધિ પણ આ જ કારણને લઈને થઈ છે. મનુષ્યની તે દિશા તરફ સહજ પ્રવૃત્તિ છે એ તેનું મૂળ કારણ છે. તે પ્રયત્નમાં આજે તે અસાધારણ પુરુષાર્થ કરે છે. માનસિક ઉન્નતિના હેતુથી મનુષ્ય હજુ એટલો પ્રયત્નશીલ થયો નથી. તે બાજુથી તેનો પુરુષાર્થ વધ્યો નથી. એટલે માનસિક ઉન્નતિની વાત તેને અશક્ય લાગે છે. પરંતુ મનુષ્ય પોતાની સંકલ્પશકિતનો ઉપયોગ તે દિશાએ કરતો રહે અને યોગ્ય માર્ગે પ્રયત્નશીલ રહે તો પોતાનું માનસિક આરોગ્ય સાધીને માનવ જાતમાં ઉન્નત થઈ શકે. પોતાની સુપ્ત શક્તિને તેણે તે હેતુથી જાગ્રત કરવી જોઈએ. પોતાની ભોગાસકૃત વૃત્તિને ઓળખીને તેણે પહેલેથી સાવધપણે પવિત્ર અને ઉચ્ચ સંકલ્પ ધારણ કરવો જોઈએ. દૃઢ નિશ્ચય, સંયમ અને પવિત્રતા પર શ્રદ્ધા, સત્ય અને સદગુણો પર નિષ્ઠા, પરમાત્મા અને માનવતા પર વિશ્વાસ - એ બધાંને લીધે પોતાના સંકલ્પમાં બળ લાવવું જોઈએ. આવા સતત પ્રયત્નથી તેની સંકલ્પશક્તિ વધતી જઈને તેનું સત્કર્મરૂપે પ્રગટીકરણ તેના પોતાના અને બીજાઓના જીવનમાં સુખ અને શાંતિ પેદા કરશે. માનવી જીવન આ સિદ્ધિ માટે છે. આના કરતાં બીજી કોઈ પણ સિદ્ધિ ઓછાં મહત્ત્વની છે. આ માટે જ માનસિક નિરોગીતાની જરૂર છે.

શરીરની બાજુથી શારીરિક આરોગ્ય જરૂરનું છે. તે પ્રમાણે માનવતાની દૃષ્ટિથી માનસિક નિરોગીતા જરૂર છે. તે નિરોગીતા ન હોય તો ધન વિદ્યા અને સામર્થ્ય જેવી બીજી કોઈ પણ વિશિષ્ટતા મનુષ્યનું કે માનવ જાતિનું કલ્યાણ કરી શકતી નથી. આવી નિરોગીતા સિવાય બીજી કોઈ પણ વિશિષ્ટતાનો સદુપયોગ થઈ શકતો નથી. જે વિશિષ્ટતા માનવ હૃદયનો હ્રાસ કરે છે તેનાથી માનવ જાતિનું કલ્યાણ થવું શક્ય નથી. તેથી માનવતાનો વિકાસ કરનાર વિશિષ્ટતાને આપણે મહત્ત્વ આપવું જોઈએ. તે માટે આપણે સતત પ્રયત્નશીલ રહી પુરુષાર્થી બનવું જોઈએ. આ બધી બાબતો સિદ્ધ કરવા માટે આપણે પહેલેથી જ જીવન વિષયક ઉચ્ચ આદર્શધારણ કરવો જોઈએ. આસુરી સંપત્તિને માર્ગે ન જતાં સજ્જનતાના માનવતાના માર્ગે જવાનો આપણે નિશ્ચય હોવો જોઈએ. પોતાની આદર્શ કલ્પનાનો વ્યવસ્થિત નકશો આપણા ચિત્તમાં હંમેશ રહેવો જોઈએ. ઘર બાંધવાનું નક્કી થયા પછી તેનુ કલ્પના ચિત્ર આપણા ચિત્તમાં પ્રથમ તૈયાર થાય છે અને ત્યાર પછી તે જાતનો નકશો કાગળ પર તૈયાર કરવામાં આવે છે. ઘર પૂરું થાય ત્યાં સુધીના તે વિષયના વધતા જતા જ્ઞાનથી મૂળ કલ્પનામાં ઈષ્ટ એવો ફેરફાર થતો જાય છે. પહેલાના નકશામાં ફરક પણ પડે છે, અને છેવટે ઉત્તમ પ્રકારનું સગવડવાળું ઘર તૈયાર થાય છે. ચિત્ર કાઢનાર અને મૂર્તિ ઘડનાર શિલ્પકારને પણ પોતાના ચિત્તમાં પોતપોતાના સાધ્યનું કલ્પનાચિત્ર બનાવવું પડે છે; એટલું જ નહિ પણ ધનની પાછળ લાગી ધનપતિ થવાની ઈચ્છા રાખનાર, બળની ઉપાસના કરી બળવાન થવાનો પ્રયત્ન કરનાર અથવા કોઈ પણ વિશિષ્ટતા પ્રાપ્ત કરવાની ઈચ્છા રાખનાર એ પૈકી દરેકને પોતપોતાના ઈષ્ટ અને વિશિષ્ટતાનું ચિંતન કરવું પડે છે. તે ચિંતનમાં જ તે ઈષ્ટ અને વિશિષ્ટતાનો નકશો તેના ચિત્તમાં તૈયાર થાય છે. પોતપોતાના આદર્શ પ્રમાણે દરેક જણ પ્રયત્નશીલ રહી તેમાં યશસ્વી થાય છે. માનવતાનો આદર્શ જેણે દૃઢ કર્યો હોય છે તેને પણ તે પ્રમાણે હંમેશા ચિંતનશીલ અને પ્રયત્નશીલ રહેવું પડે છે. અને તે પ્રમાણે રહીને તે તેમાં છેવટે યશસ્વી થાય છે.

આ રીતે આ માર્ગમાં યશસ્વી થવા માટે આપણને માનસિક નિરોગીતાની ઘણી જરૂર છે. મનની નિર્મળતા અને સદ્‌ગુણયુક્ત પુરુષાર્થ નીરોગિતાના લક્ષણ છે. આ નિરોગી અવસ્થામાં જ માનસિક પાવિત્ર્ય વધતું જાય છે. જીવનના બધા વ્યવહારોમાં શુદ્ધિ આવે છે. આ અવસ્થામાં જ માણસમાં પ્રાણીમાત્ર વિશે પ્રેમ, નિઃસ્વાર્થતા, ક્ષમા અને શાંતિ રહી શકે છે. કરુણા તેનો સહજ સ્વભાવ થાય છે. નિર્વેરતા આ અવસ્થામાં જ સધાય છે. પોતાનું અને માનવજાતિના કલ્યાણ કરવાથી પોતાની ઈચ્છા પ્રમાણે, સંકલ્પ પ્રમાણે સિદ્ધિ પ્રાપ્ત કરવાની જે શકિત પરમાત્માએ આપણને આપી છે, તેનો ઉપયોગ માણસે આ અવસ્થા માટે કરવો યોગ્ય છે. પરમાત્માએ આપેલી ભેટનો ઉપયોગ માનસિક નીરોગીતા સાધીને માનવતાની સિદ્ધિ માટે જ કરવો જોઈએ.

સ્વીડન જેવો સમૃદ્ધ દેશ પણ કેટકેટલો કંગાળ ને દુઃખી છે તે દેશમાં સ્ત્રીઓની થતી આત્મહત્યા પુરવાર કરે છે. ત્યાંના નિઃશસ્ત્રીકરણ ખાતાના પ્રધાન શ્રીમતી આલ્યા માયકલના જણાવ્યા મુજબ, "ભારત કરતાં સ્વીડનમાં વધુ સ્ત્રીઓ આત્મહત્યા કરે છે." ને તેનું મુખ્ય કારણ વૃદ્ધાવસ્થાનો કંટાળો ને ભારભૂત જીવન છે." તેમ તેમણે જણાવેલ છે. ભારત દુઃખી ને ગરીબ દેશ છે, માટે ત્યાં આત્મહત્યા ઘણી થાય છે તેમજ સ્ત્રીઓ પરાધીન ને કચડાયેલી છે, માટે આપઘાત કરે છે - તેવી બૂમો મારનારા આમાંથી બોધપાઠ લેશે ? સહનશીલતા સંયમ ને સમજણ એ ગુણત્રિવેણી હોય ને સંતોષપૂર્વક જીવતાં જો આવડી જાય તો માનવ ભવ જેવા કીંમતી ભવને કોણ મુર્ખ અકળાઈને કે ઉકળીને એળે ગુમાવે ? પણ આજના વિજ્ઞાને માનવને અસહિષ્ણુ તથા અસંયમી તેમજ અસંતોષી બનાવેલ છે. માટે આવા અમેરિકા, સ્વીડન જેવા દેશોમાં માનવો શાંતિ ને સમજણપૂર્વક જીવી પણ શકતા નથી.

ક્ષમા

એક કજિયાળી સ્ત્રી હતી.

માધવસ્વામી સાધુએ એ ક્રોધી સ્ત્રીનો ક્રોધ નિવારવાનો નિશ્ચય કર્યો. ને આવીને ઊભા ભિક્ષા માગવા એને આંગણે કજિયાળી સ્ત્રી ઊકળી પડી.

"એ ભિખારા – એઠના ખાનારા, હરામનું જમનારા"

"પણ સાધુ તો શાંત ચિત્તે જ ઊભા હતાં. સ્ત્રીએ ઘાંટો પાડીને કહ્યું "અરે, નીકળ મારા આંગણામાંથી, કેમ ઊભો છે અહીં ?"

સાધુએ જણાવ્યું : "મૈયા, યાચક ભિક્ષા અર્થે ખડો છે, તેને દયા કરી કંઈ આપશો ?"

"હજી ભિક્ષા બાકી છે ? આટઆટલી આપી તો ય ધરાતો નથી ? લે લેતો જા !" એમ કહી પોતે ઓરડી લીપતી હતી તે છાણમાટીની ગાર એના તરફ છુટ્ટી નાખી.

સાધુ તો આખા રંગાઈ ગયા. પણ પછી ધીમે રહીને કહ્યું : "મૈયા તમે આપ્યું તો ખરૂં, પણ મારું આ ભિક્ષાપાત્ર તો હજીયે ખાલી જ છે !"

સ્ત્રીએ સેંકડો ગાળોનો વરસાદ વરસાવ્યો ને પછી અબોટ કરવાના છાણનું પોતું જ ભિક્ષાપાત્રમાં નાખતા કહ્યું, "લે હવે ટળ !" માધવ સ્વામી તો ભિક્ષા લઈ ચાલતા થયા ને નદી પર જઈ સ્નાન કરી એ વસ્ત્ર ધોયું ને તેની દિવેટો બનાવી.

સાંજે પ્રાર્થના વખતે આરતી સમયે પ્રભુ સમક્ષ એ મૂકી કહ્યું : "અસત્યો માંહીથી પ્રભુ પરમ સત્યે તું લઈ જા !"

કહે છે કે દીવાની બળતી જ્યોતે પેલી કજિયાળી સ્ત્રીના હૃદયમાં પણ દીવો કર્યો બીજે દિવસે સાધુ ભિક્ષા અર્થે ગયા ત્યારે પશ્ચાતાપથી એ આક્રંદ કરી રહી હતી.

"સ્ત્રીઓનું સ્થાન ઘરમાં જ છે"

ભારતના વડાપ્રધાન શ્રી શાસ્ત્રીએ તાજેતરમાં તેમના ધર્મપત્નીને જાહેર પ્રવૃત્તિઓમાં ભાગ લેવા માટે આગ્રહ કરવા આવેલા મહિલા મંડળને નમ્રતાપૂર્વક ના કહી દીધી હતી. વડાપ્રધાને સ્પષ્ટ શબ્દોમાં કહ્યું હતું કે, "મારા શ્રીમતીજી રસોઈ પકાવવામાં અને ધર્મધ્યાન કરવામાં પ્રવૃત્તિમય રહે છે. જો તેઓ પ્રવચનો કરવા ને સમારંભોમાં હાજરી આપવા બહાર જાય તો એ મારા માટે અનુકૂળ નહિ રહે." વડાપ્રધાનના ધર્મપત્ની શ્રીમતી લલિતાદેવીએ પણ તે પ્રતિનિધિ મંડળને સ્પષ્ટપણે જણાવેલ હતું કે, "મને લાગે છે કે કુટુંબની સંભાળ રાખવા માટે મારું સ્થાન ઘરમાં જ છે અને ઘરમાં પણ મારા માટે કામકાજ ઓછું રહેતું નથી." આજે વાતવાતમાં ઘર છોડાવીને સ્ત્રીઓને બહારની પ્રવૃત્તિઓમાં જોડનારા ને તે દ્વારા બાવાના બે ય બગડે જેવી પરિસ્થિતિમાં સંસારને મુકનારા સમાજ સેવકો ને સમાજ નાયકો આ પરથી બોધપાઠ જરૂર લેશે. સંસારને સુધારવો હોય તો તેની શરૂઆત ઘરથી થવી જોઈએ, ને તે માટે સુશિક્ષિત, સંસ્કારી, શાણી તથા સ્ત્રીઓ તૈયાર કરવી જરૂરી છે. અને તે સ્ત્રીઓએ કુટુંબના માણસોને સુધારવા ભોગ આપવો જરૂરી છે. ઘર મૂકી બહારની પ્રવૃત્તિઓમાં સ્ત્રીઓને પાડવાની હિમાયત કરનારાઓએ આ પ્રશ્ન પરત્વે ખૂબ ગંભીરતાપૂર્વક વિચાર કરવો ઘટે છે.

- બંધારણ સભામાં છૂટાછેડા અંગેની એક ચર્ચામાં બોલતા ડૉ. રાજેન્દ્ર પ્રસાદે કહેલુ કે– અહીં બેઠેલી તમામ વિદ્વાન સન્નારીઓ ભલે સર્વાનુમતીથી પોતાનો અભિપ્રાય છૂટાછેડાની તરફેણમાં વ્યક્ત કરતી હોય, પરંતુ તેઓ આ દેશની સ્ત્રીઓના હજારમાં ભાગની સ્ત્રીઓનું પણ પ્રતિનિધિત્વ ધરાવતી નથી. જો મારી પત્નીને મારાથી છૂટાછેડા લેવાનું કહેવામાં આવે તો તે છૂટાછેડા લેવા કરતાં મરી જવાનું વધારે પસંદ કરશે. અહીં બેઠેલી તમામ વિદ્વાન સન્નારીઓ તેનો વિરોધ કરશે તો પણ દેશની કરોડો સ્ત્રીઓનો ટેકો રહશે.

"વિડંબના દાયક વિધવા વિવાહ?"

-મુનિ જયાનંદવિજય

लोकाचारानुवृत्तिश्च सर्वत्रौचित्यपालनम् ।
प्रवृत्तिर्गर्हितेनेति प्राणैःकण्ठगतैरपि ।।

અભિધાન રાજેન્દ્ર કોષના સાતમા ભાગમાં પૃષ્ઠ ૩૩૭ ઉપર "સદાચાર" શબ્દની વ્યાખ્યાની અંતર્ગત કહ્યું છે કે--

"સદાચાર મય જીવન જીવવાવાળા આત્માઓનો જે વ્યવહાર તે લોકાચાર. તેના અનુસાર પ્રવૃત્તિ કરનારા જીવો પ્રત્યેક પ્રસંગ પર ઔચિત્યનું પાલન કરે છે. પ્રાણ જવા સુધીની પરિસ્થિતિમાં પણ ગર્હિત-નિંદિત પ્રવૃત્તિ ન કરે અર્થાત્ પ્રાણથી પણ વધારે સદાચારનું પાલન મહત્ત્વવાળુ છે એમ તેઓ માને છે.

વર્તમાનકાળમાં અમુક માણસો માનવતાથી દાનવતા તરફ પગલું ભરતાં અયોગ્ય રીતિથી પરિવાર નિયોજન, ગર્ભપાત વિગેર મહાહિંસક, ધર્મનાશક સંસ્કૃતિ નાશક અને વિકારવર્ધક પ્રવૃત્તિને અપનાવીને વિધવા વિવાહની અનુમતી આપવા લાગ્યા છે.

વિધવા વિવાહ આ સદાચારી પુરુષો દ્વારા ક્યારેય માન્ય થયું નથી. વિધવા વિવાહમાં ઔચિત્યનું પાલન પણ નથી અને આ ગર્હિતનિંદિત પ્રવૃત્તિ છે અને કોઈના પ્રાણ જવાના પ્રસંગ પર પણ આચરવાનો નિષેધ છે.

વિધવા વિવાહ ઉચ્ચકુળમાં જન્મનારા માટે તો કલંક રૂપ છે. પૂર્વકાળથી આજ સુધી કોઈ પણ ઉચ્ચકુળમાં આ પ્રથા (વિધવા વિવાહ)ને સ્થાન મળ્યુ નથી, કેમકે કુલધર્મના અનુપાલનની વ્યાખ્યામાં સ્પષ્ટ લખ્યું છે કે, "अविरुद्ध स्वकुलाचारानुवर्तनम्" પોતાના કુળના અનુકૂળ આચારથી વિપરીત વર્તન ન કરવું તે જ કુલાચાર છે.

વિધવા વિવાહના સહમતીઓને પૂછવામાં આવે કે આપની કઈ

પેઢીમાં આપના દાદા પરદાદાએ વિધવા વિવાહ કર્યો હતો તે સમયે પણ બહેનો વિધવા તો થતી જ હતી એમાં બે મતજ નથી આપના કયા દાદા-પરદાદા એ વિધવા વિવાહમાં સહમતી આપી હતી, તો તેનો જવાબ 'ના'માં જ આવશે કારણકે તેઓ આને દુઃશીલતા (કલંક)રૂપ માનતા હતા.

દુઃશીલની વ્યાખ્યા કરતા થકાં રાજેન્દ્ર કોષમાં લખ્યું છે કે દુઃશીલ આત્મા વિષ્ટા (ગંદકી) ખાવાવાળો ગધેડા જેવો છે.

દુઃશીલ આત્મા પોતાની દુઃશીલતાની પૂર્તિ માટે શું-શું કરે છે. તેની વ્યાખ્યા કરતા રાજેન્દ્ર કોષમાં કહ્યું છે કે, દુઃશીલા સ્ત્રી હોય તો દુષ્ટ આચાર અને નિર્લજ્જતાના કારણથી આમ તેમ ગ્રામ, નગર, જંગલ, માર્ગ, ખેતર, ઘર, ઉપાશ્રય, ચૌટાઘર, વાટિકા વગેરે જગ્યાએ પુરુષોની ઈચ્છા રાખતી ફરતી હોય છે અને પુરુષ હોય તો તે પણ તેવા સ્થાનો પર વેશ્યા, દુષ્ટ દાસી, વિધવા વગેરે શોધતો ફરતો હોય છે.

दुःशीला दुष्टाचारनिर्लज्जत्वेन यत्र तत्र ग्रामनगरमार्गक्षेत्रगृहोपाश्रय चैत्यगृहगर्तावाटिकाऽऽदौ पुरुषाणां वाञ्च्छा कारित्वात् तथाविध वैश्यादुष्टदासीरण्डिकामुण्डिकाऽऽदीनाम्। अ.रा.को. ४/२६०१

દુઃશીલ આત્માઓની જ વિધવા વિવાહમાં સહમતી હોય છે. તેઓ જ ધર્મથી વિમુખ હોય છે. ધર્મની વિમુખતા પાપની સન્મુખતાને આમંત્રણ આપે છે. ધર્મની વિમુખતા ધર્મગ્રંથોની અવહેલના કરાવે છે. ધર્મગ્રંથોમાં વિધવા વિવાહનો નિષેધ છે.

सकृज्जल्पन्ति राजानः सकृज्जल्पन्ति साधवः ।
सकृत्कन्याः प्रदीयन्ते त्रीण्येतानि सकृत्-सकृत् ।।

રાજા એક જ વાર બોલે છે. સાધુ મહાત્મા એક જ વખત બોલે છે અને દિકરીને પણ એક જ વખત અપાય છે. એ ત્રણ કાર્ય એક જ વાર થાય છે.

રાજાના વચનોમાં કયારેય પરિવર્તન ન થાય. ક્ષત્રિય વ્યક્તિ પોતાના

પ્રાણ જવા સુધી પણ પોતાના વચનને પાળે છે. સંત, મહાત્મા પણ જે વચન એક વાર બોલે છે, તેનું પરિપૂર્ણ પાલન પ્રાણોની પરવા કર્યા વિના કરે છે. આ બે દૃષ્ટાંત આપ્યા પછી દિકરીને એક જ વાર આપવાની વાત"પરિશિષ્ટ પર્વ"માં શ્રી હેમચંદ્રાચાર્ય માહારાજે કહી ને પુનઃ વિવાહનો સ્પષ્ટ રૂપથી નિષેધ કર્યો છે.

સ્ત્રીનો વિવાહ એક જ વાર થાય એવું સ્પષ્ટ કથન "શ્રી ચંદ કેવલિ ચારિત્ર" માં શ્રી સિદ્ધર્ષિ ગણિ મહારાજે ચોથા અધ્યયનની ૪૬૨મી ગાથામાં પણ કર્યુ છે.

काष्टस्थाली सकृत् वह्नौ, कणिकायां जलं सकृत् ।
सज्जनानां सकृत् वाक्यं, स्त्रीणामुपयमः सकृत् ।।

કાષ્ટની થાલી અગ્નિમાં એક વખત નંખાય છે. આટામાં જલ એક વખત નંખાય છે. સજ્જનોં એક વચની હોય છે. તેમજ સ્ત્રીઓનો વિવાહ પણ એક જ વખત થાય છે.

તે જ ગ્રંથમાં ૪૫૫ મી ગાથામાં તેમણે ફરી કહ્યુ છે કે,

ભ્રમણામાં પણ જે સ્ત્રીનો જે પુરુષ સાથે હસ્તમેળાપ થઈ ગયો હોય તો તેનો પતિ તે જ પુરુષ છે બીજા પુરુષો માટે તે પરસ્ત્રી જ છે.

૪૬૨મી ગાથામાં અગ્નિમાં લાકડાની થાળીનું દૃષ્ટાંત આપી સિદ્ધ કર્યુ છે કે

અગ્નિમાં લાકડાની થાળી જેમ રાખમાં પરિવર્તન થઈ જાય છે તેવી રીતે સ્ત્રીનો એકવાર વિવાહ થઈ ગયા પછી તેનું કોમાર્યપન રાખમાં પરિવર્તિત થઈ જાય છે.

એ સ્ત્રીએ પોતાના પતિ સુખનો અનુભવ કર્યો હોય કે ન કર્યો હોય પરંતુ તેનુ કોમાર્યપન સ્ત્રી પણાંમાં પરિવર્તિત થઈ જાય છે. હવે તે કુમારી નથી. મનથી પણ જેને પતિરૂપમાં સ્વીકાર્યો હોય તે તેનો પતિ થઈ જાય છે. બીજાઓ

માટે તે પરસ્ત્રી છે. પરદારાની વ્યાખ્યામાં અ. રા. કો. ભાગ. ૫. પૃ. ૫૧૬ માં અપરિગૃહિતાદેવી અને તિર્યંચ સ્ત્રીને પણ ગ્રહણ કરી છે. અર્થાત્ તે પણ પરદારા છે. અપરિગૃહિતાની વ્યાખ્યામાં 'विधवायाम्' શબ્દ લઈને વિધવાને પણ પરદારા કહી છે. તો એની સાથે ઘર કેમ મંડાય? એ સુજ્ઞજનોએ વિચારવું.

આ પ્રમાણે આગમોક્ત વચનાં દ્વારા વિધવા વિવાહનો સ્પષ્ટ રૂપે નિષેધ છે.

નરકગતિના ચાર દ્વારોમાં પરદારા સેવનને પણ દ્વાર કહ્યું છે, ત્યારે તો સજ્ઝાય કારે લખ્યું છે કે-

પરદારા સેવી પ્રાણીનરકમાં જાય દુર્લભ બોધિ હોય પ્રાયઃ રે

અર્થાત્ પરદારા સેવનથી નરક ગતિ અને દુર્લભ બોધીની પ્રાપ્તિ થાય છે.

આત્માને દુર્ગતિમાં જતો રોકવા માટે તો પૂર્વે કેટલી એ સ્ત્રીઓએ પોતાનું શીલ (ઈજ્જત) બચાવવા પોતાના પ્રાણો આપી દીધા છે.

ચન્દન બાલાની માતા ધારિણીએ શીલખંડનની વાત સાંભળીને દાંત વચ્ચે જીભ કચડીને પોતાના પ્રાણ આપી દીધા હતા.

કેટલીએ ક્ષત્રિયાણી સ્ત્રીઓએ પર પુરુષના હાથોમાં આવી જવાની સંભાવના જોઈને કટારી છૂરી વિગેરેથી પ્રાણોને ત્યાગી દીધા અને અગ્નિમાં પ્રવેશ કરી મરણને શરણ થઈ ગઈ. પણ શીલને (ઈજ્જત)ને "આંચ" ન આવવા દીધી. અર્થાત્ શીલ ખંડન ન થવા દીધું તેનો ઈતિહાસ સાક્ષી છે.

જયારે રાવણે સતી સાવિત્રી દેવી સીતાને કહ્યું કે, રામ લક્ષ્મણને મારીને અને મારી પ્રતિજ્ઞાને એક બાજુ મૂકીને તારા પર બલાત્કાર કરીશ ત્યારે સતી સાવિત્રી દેવી સીતાએ કહ્યું હતું કે, મારા સજીવ દેહ પરતો ક્યારે નહીં પણ મારા શબ ઉપર બલાત્કાર કરી શકીશ એટલે કે હું મારા પ્રાણોની આહૂતિ આપી દઈશ ત્યારે રાજા રાવણને સાચું લાગ્યું કે, મેં સીતાનું અપહરણ

કરીને મારું અહિત જ કર્યું છે સીતાને રામ પ્રત્યે નૈસર્ગિક પ્રેમ છે એથી સિદ્ધ થાય છે કે શીલ ખંડનથી તો પ્રાણોની આહૂતિ આપવી જ બહેતર છે.

સ્ત્રીના શીલની સુરક્ષા માટે તો અનેક યુદ્ધો થયા છે અને અનેક વ્યક્તિઓની જીવનલીલા સમાપ્ત થઈ ગઈ છે. તેનો પણ ઈતિહાસ સાક્ષી છે.

જેણે મનથી શ્રી નેમિનાથજીને પોતાના પતિ રૂપમાં સ્વીકાર્યા હતા એવી સ્ત્રી રાજીમતીને જ્યારે નેમજી છોડીને ચાલ્યા ગયા ત્યારે રાજીમતીના માતાપિતાએ બીજા પુરુષ સાથે લગ્નની વાત કરી ત્યારે રાજીમતીએ સ્પષ્ટ કહ્યું હતું કે હું બીજા પુરુષનું નામ લેવામાં પણ પાપ સમજુ છું. મેં જે પુરુષને મનથી પતિરૂપે સ્વીકાર કર્યો છે તેનો જ આ શરીર પર અધિકાર છે બીજાનો નહીં જ.

જમ્બુકુમારની દીક્ષાની વાત સાંભળીને આઠેય કન્યાઓના પિતાએ બીજા લગ્નની વાત કરી ત્યારે તે આઠેય કન્યાઓ એ સ્પષ્ટ પણે કહ્યું કે, આ જન્મમાં તો એ જ અમારા પતિ છે બાકી બધા ભાઈ છે. તે દીક્ષા લેશે તો અમે પણ દીક્ષા લઈશું પણ બીજા સાથે લગ્ન તો નહીં જ કરીએ.

લક્ષ્મણા નામની રાજપુત્રીએ પોતાના પતિનું અવસાન હસ્તમેળાપ સમયે થઈ ગયું. તેથી તેણે સાધ્વી બનવાનુ પસંદ કર્યુ એવી રીતે આજે પણ કેટલીએ બહેનોએ પૂર્વકૃત અશુભ કર્મોદયના કારણે વિવાહ મંડપમાં અથવા એક-બે દિવસમાં અથવા એક-બે મહિનામાં પતિનો વિરહ થઈ જવાના કારણે તેઓએ દીક્ષા અંગીકાર કરી આત્મ કલ્યાણના માર્ગને સ્વીકાર કર્યો છે.

પુનર્વિવાહના સહમતીઓ કઈક કથાઓના ભાગને ખોળી-ખોળીને જન સમુદાય સામે મૂકે છે, ત્યારે તેમની બાલ રમત પર હસવું આવે છે કે બિચારાને ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા દ્વારા કેવી વિડમ્બના (દુ:ખ) સહન કરવી પડશે. કોઈ વિધવા તેમના વચનોથી પ્રેરાઈને ફરીથી વિવાહ કરે કે ન કરે છતાં પણ ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા કરવાવાળાનો દુર્ગતિમાં જવા રૂપ પુનર્વિવાહ થઈ જાય છે.

તેઓ કહે છે કે ઋષભદેવ ભગવંતે પુનર્વિવાહ કર્યો હતો. વસ્તુપાળ

તેજપાળની માતાએ પણ પુનર્વિવાહ કર્યો હતો. ગણધર મૌર્ય અને મંડિત પુત્રની માતાએ પણ પુનર્વિવાહ કર્યો હતો. આ વાતો આગમોને ન જાણવાવાળાઓના ઘરની છે.

યુગલિયા પુરુષ અને સ્ત્રી યૌવનાવસ્થામાં આવવા પહેલાં જ એ બાળક પુરુષની અકાળ મૃત્યુ અને તેના માતા પિતાની મૃત્યુ થઈ જવાથી તે બાલિકા (છોકરી)ને એકલી સમજીને તે સમયના બીજા યુગલિયાઓએ નાભી રાજાને સોંપી દીધી. ત્યારે નાભિરાજાને કહ્યુ કે, મોટી થયા પછી આ બાલિકાને ઋષભની પત્ની બનાવીશુ. આ વાક્યમાં પુનર્વિવાહની વાત જ ક્યાં છે. વાતનો અર્થ અને વાક્ય સમજ્યા વગર વાતને વહેતી મૂકવી એ આત્માને માટે દુઃખ દાયક છે.

વસ્તુપાળ તેજપાળની માતાના વિષયમાં મતાંતર છે. એક આચાર્યશ્રી તો તેને કુંવારી જ માને છે, તેનો વિવાહ એક જ વાર થયો છે.

બીજા આચાર્યશ્રીઓના મતથી વસ્તુપાળના પિતાએ તે બાળ વિધવાનું અપહરણ કરી તેને પત્નીના રૂપમાં જ રાખી. તેઓએ વિવાહનો કોઈ રીવાજ જ અદા ન કર્યો. તે પણ પુત્ર રત્નની ઉન્નતિ માટે સદ્‌ગુરુ ભગવંતના મુખારવિંદથી સાંભળીને આ કાર્ય કર્યું હતું નહિ કે વિધવા વિવાહની ઈચ્છાપૂર્વક કર્યું હતું.

મૌર્ય અને મંડિત પુત્રની માતાનું દૃષ્ટાંત આપવું એ નક્કર મૂર્ખતા છે. તેમનો જન્મ બ્રાહ્મણ કુળમાં થયો હતો. અને એ સમયે એ કુળમાં પુનર્વિવાહની પ્રથા કદાચ હશે. જૈન ધર્મ પાળવા વાળો બ્રાહ્મણકુળની પ્રથા પાળવા માટે કહે તે મૂર્ખતા નથી તો બીજું શું છે ?

વિધવાઓની શીલ પાળવાની ઈચ્છા નહી હોય તો તે ફરજિયાત શીલ પાલન કરાવવાથી એ ઉન્માર્ગનો સહારો લેશે તો એ પાપનો ભાગીદાર વિધવા વિવાહને રોકવાવાળો થશે તેવો તર્ક વિધવા વિવાહના સહમતીઓ આપી રહ્યા છે.

વગર વિચાર્યુ મનમાં આવે તે બોલી લેવું તે તો મેન્ટલ હોસ્પિટલના દર્દીઓનું કામ છે તેઓ જે ઇચ્છે છે તે બોલી લે છે છતાં પણ તેમના બોલવાથી કોઈને ખરાબ નથી લાગતું.

એક બાળકને તાવ આવ્યો છે. તેને કડવી દવા પીવડાવવાની છે. તેની ઇચ્છા નથી, પણ તેની મા કડવી દવા હાથ પગ દબાવી(બાંધ)ને મોં ખોલીને આપી દે છે. તેવી જ રીતે ફરજિયાત શીલ ગુણકારી છે.

શું કોઈક સ્થાને સધવાઓ વિપરીત આચરણ નથી કરતી. તેનુ પાપ શું જેઓએ લગ્ન કરાવ્યા છે તેમને લાગશે. ના, બસ, તેવી જ રીતે વિધવા વિપરીત આચરણ કરશે તો તે પાપ તેને જ લાગશે ફરજિયાત શીલ પાલન કરાવવાવાળાઓને નહીં જ.

અમુક લોકો એમ પણ કહે છે કે વિધવાને લગ્ન કરવાની ઇચ્છા હોય તો વિધવા વિવાહ કરવાની છૂટ આપવી જોઈએ તો તે લોકોની ભ્રમણા જ છે.

કોઈનો એકનો એક પુત્ર સંગ્રહણીના રોગથી ગ્રસિત થયો છે તો શું તેના માતા-પિતા તેને ઇચ્છા પૂર્વકનું અખાદ્ય ખાન-પાન કરવા દેશે ? નહી. કેમકે તેની જિંદગીનો સવાલ છે. તેને એવું જ ખાન-પાન આપશે કે જે તેને યોગ્ય હિતકારી હોય. અથવા વૈદ્યરાજે જે આપવાનું કહ્યું હશે તે જ આપશે. તેવી જ રીતે વિધવા અશુભ કર્મોના કારણે કર્મજન્ય રોગથી ગ્રસિત થઈ છે તો શું હવે તેને ઇચ્છા પૂર્વક વર્તન કરવા દેવું? તે તો તેની જિંદગી સાથે ખિલવાડ કરવા જેવું છે. તીર્થંકર રૂપ વૈદ્યરાજજી એ જે-જે કાર્ય કરવાની છૂટ આપી હોય તે કાર્ય કરવાની છૂટ તેના પરિવારવાળાઓએ તેને આપવી જોઈએ. અહીયાં એક બીજી વાત પણ વિચારણીય છે કે જેટલા લગ્ન થાય છે તે બધી વિધવા ન થતાં અમુક બહેનો જ વિધવા કેમ થાય છે?

તેનું કારણ તેનું વર્તમાન જીવન જોતાં તો મળતું નથી તો તેના પૂર્વભવના અશુભકર્મ કારણ રૂપ હોવા જોઈએ. એટલે કે પૂર્વભવના અશુભ કર્મોદયના કારણથી તેને પતિ વિયોગ થયો છે.

સિંહ તથા કૂતરો બન્નેય પશુ છે પણ બન્નેના વ્યવહારમાં રાત-દિવસનો ફેરફાર છે. સિંહને કોઈ બાણ મારે, ત્યારે તે બાણની બાજુ ન જોતાં બાણ મારનારાની સામે દોડે છે અને કૂતરાને કોઈ પત્થર મારે તો પત્થર પર ગુસ્સો કરે છે.

પૂર્વભવના અશુભ કર્મોદયના લીધે દુઃખ આવે છે ત્યારે કોઈને કોઈ નિમિત કારણ ઉપસ્થિત હશે જ. તે નિમિત્ત કારણથી લડવાની અપેક્ષા પૂર્વભવના અશુભ કર્મોને દૂર કરવા પ્રયત્ન કરવો. તે પરાક્રમી પુરુષાર્થી અને બુદ્ધિશાળી માનવીનું કાર્ય છે. સિંહ જેવા બનવું હોય તો પૂર્વભવના અશુભ કર્મોને દૂર ભગાડવા પ્રયત્ન કરવો જોઈએ.

પૂર્વભવના અશુભ કર્મોને દૂર કરવા માટે વિધવા વિવાહ નહી પણ તેને આવતા જન્મમાં વિધવા ન થવું પડે એવા શુભ કાર્યોની આવશ્યકતા છે તે શુભ કાર્યોમાં સર્વશ્રેષ્ઠ શુભ કાર્ય શીલ પાલન છે.

અમુક વિધવાઓ વ્યભિચારનું સેવન કરે છે તેની પાછળના કારણો વિચારી તે કારણોને દૂર કરવા જોઈએ તે કારણો છે--પરિવાર કુટુંબની અસાવધાની, ફેશનેબલ પોશાક, રેડિયો, ટી.વી., અર્ધ નગ્ન ચિત્રોનાં કેલેન્ડર, ઘરમાં અશ્લીલ ચોપડીઓ હોવી, પર પુરુષોની અતિ સંગત, વિકાર વર્ધક આહાર વગેરે કારણોથી અમુક વિધવાઓનાં મનમાં વિકારની વૃદ્ધિ થાય છે.

તે સમયે તેમની જ્ઞાનની શક્તિ ન હોય તો તે એક કદમ આગળ વધી જાય છે. માટે ઉપર દર્શાવેલ કારણોને દૂર કરવાની આવશ્યકતા છે.

પહેલાના જમાનામાં રીવાજ હતો કે વિધવા ૫-૭ વર્ષ સુધી તેના રૂમથી બહાર ન આવી શકતી. તે બરાબર હતું. વિધવાઓને એક જિનમંદિર, (દહેરાસર) સિવાય ઘરની બહાર ૫-૭ વર્ષ સુધી ન જવું તે જ અતિ ઉત્તમ છે. તેમાં પણ નાની ઉંમરની (યુવતી) વિધવાઓને તો બંધનમાં રહેવું જ હિતકારી છે. વર્તમાનકાળમાં નાની ઉંમરની વિધવા બહેનોને વધારે પ્રમાણમાં છૂટ આપવામાં આવી રહી છે. જેનું પરિણામ અહિતકારી જ આવે છે.

વિધવા વિવાહના સહમતીઓ પશ્ચિમી વાતાવરણને મહત્ત્વ આપી રહ્યા છે. તેમને ત્યાંની ખબર નથી કે ત્યાં શું બની રહ્યું છે. તે વાંચવાથી વિધવા વિવાહ, છૂટાછેડા અને સ્વૈચ્છિક વિવાહના કટુ પરિણામોનો તેમને ખ્યાલ આવી જશે.

"હિન્દુસ્તાન" ૧૬ જુન ૧૯૬૨ના પેપરમાં ખબર હતી કે બનારસની અંદર એકસો (૧૦૦) વર્ષની ઉંમરના "મહતો" મુસલમાને બ્યાસી (૮૨) વર્ષની 'ખાતૂન' ડોસીથી વિધવા વિવાહ કર્યો બેઉને પુત્ર અને પુત્રીઓ વિદ્યમાન છે.

'જાગૃતિ' નામના ગુજરાતી પેપરમાં સમાચાર હતા કે, અમેરિકામાં એક લગ્ન થયું. જેમાં પતિ ૮૨ વર્ષનો અને પત્ની ૭૧ વર્ષની હતી. આ લગ્ન પુરુષનું (પતિ) ૮મું અને (પત્ની) સ્ત્રીનું ૧૨મું લગ્ન હતું.

ન્યુયોર્કના સમાચાર પત્રમાં એક લાખોપતિ એ ખબર આપી કે મારી નવમી (૯) પત્ની મને છોડીને ભાગી ગઈ.

સ્પેનમાં એક સ્ત્રીએ ત્રણ વર્ષમાં (૧૩) તેર વખત લગ્ન કર્યા.

અમેરિકામાં એક ઘરડો પુરુષ જેની ઉંમર (૭૨) બહોંતેર વર્ષની હતી તે મરણ પામ્યો. તેણે (૧૭) સત્તર વખત લગ્ન કર્યા અને તોડ્યા તેની ઈચ્છા (૨૦) વખત લગ્ન કરવાની હતી.

વિધવા વિવાહના સહમતીઓ આ સમાચારોમાંથી કાંઈક શિખામણ લઈ તેમના વિચારોમાં પરિવર્તન કરે.

વર્તમાનકાળનો એક સાંભળેલો કિસ્સો છે કે, એક લગ્ન કરેલ સ્ત્રીનો પતિ પરલોક પ્રયાણ કરી ગયો. તે નાની ઉંમરમાં જ વિધવા થઈ ગઈ તેનો પિતા આધુનિક વિચારનો હતો. તેને પોતાની છોકરીનો ફરીથી વિવાહ કરવાનું નક્કી કર્યું ત્યારે તે પુત્રીએ ના પાડી અને કહ્યું પિતાજી મારા નસીબમાં પતિ સુખ હોત તો તેમનું મૃત્યુ ન થાત માટે આપ આ વિચાર ન કરો છતાં પણ પિતાએ ન માન્યું અને તેના લગ્ન કરાવી લીધા. ત્યાર પછી પહેલાના પતિ કરતા પણ ઓછા

સમયમાં જ બીજો પતિ પણ મૃત્યુ પામ્યો ત્યારે તે પુત્રી (વિધવા) એ કહ્યું પિતાજી મેં આપને કહ્યું હતું તે જ થયું અને *પતિ સુખ પણ કર્મના હાથમાં છે માણસના હાથમાં નથી.*

સ્વામિ વિવેકાનંદ જ્યારે અમેરિકામાં હતા ત્યારે એકવાર તે કબ્રસ્તાન (સ્મશાન) પાસે થઈને જઈ રહ્યા હતા. ત્યારે તેમની નજર કબ્રસ્તાન પર ગઈ ત્યાં એક દૃશ્ય જોઈ આશ્ચર્યચકિત થઈ વિચારવા લાગ્યા કે આ દેશમાં પણ આવી પતિ ભક્ત સ્ત્રીઓ છે! તેઓએ કબર ઉપર પંખાથી હવા નાખતી તે સ્ત્રીની પાસે જઈ પૂછ્યું તમે કબરને કેમ હવા નાંખી રહ્યા છો?

ત્યારે તેણીએ જવાબ આપ્યો તે સાંભળીને સ્વામિજીને કંઈ જ આશ્ચર્ય ન થયું અને વિચાર્યું આ તો આ દેશનો સ્વભાવ જ છે.

તે સ્ત્રીએ કહ્યું હતું કે મારા પતિને મેં વચન આપ્યું હતું કે જ્યાં સુધી આપની કબર નહી સુકાય ત્યાં સુધી હું બીજા લગ્ન નહી કરૂં તેથી કબરને જલ્દી સુકાવવા હું પંખાથી હવા નાખું છું. ત્યારે સ્વામિ વિવેકાનંદજીએ વિચાર્યું કે ધન્ય છે હિન્દુસ્તાનની સ્ત્રીઓને જે આવા સમયે શીલ પાલનને મહત્ત્વ આપે છે.

શું વિધવા વિવાહના સહમતીઓ આવા પ્રસંગો હિન્દુસ્તાનમાં બને તેવું ઇચ્છે છે?

પશ્ચિમી દેશોમાં છૂટા-છેડા અને વિધવા વિવાહના કારણથી રોગી પતિઓને મૃત્યુના મુખમાં તેમની પત્નીઓ ધકેલી દે છે.

ઉપરોક્ત બતાવેલ અતિ ટૂંક સારને વાંચી સુજ્ઞ-વિજ્ઞજનો વિચાર કરે કે વિધવા વિવાહ કેવા ભયંકર પરિણામ લાવે છે. માટે પ્રત્યેક હિન્દુએ તેનો કડક વિરોધ કરવો જોઈએ. વિદ્વાનો દ્વારા કથિત સ્ત્રીઓના પ્રસંગો વાંચવા જેવા છે. તેની અહીં નોંધ લીધી છે.

સ્ત્રીને ઈજ્જત જેવી કોઈ મોટી દોલત હોતી નથી. જે દિવસે ઈજ્જત

લૂંટાઈ જાય છે ત્યારે તેની જિંદગીને લાગેલ દાગને લઈને કોઈ જીવવાનું પસંદ નહીં કરે. કથાલોક ૧૯૮૪ ઓગસ્ટ.

બ્રહ્મચર્ય દિગ્દર્શન નામના પુસ્તકમાં 'વિધવા વિવાહથી ખરાબી' શિર્ષક આપીને જે કાંઈ લખ્યું છે તે અહીં અક્ષરસઃ છે.

સૌ પહેલા તો વિધવા વિવાહના પ્રચારથી વ્યભિચાર અને દુરાચાર વધે છે. સ્ત્રી પોતાના પતિ મરી ગયા પછી પોતાના નાના નાના છોકરાઓને છોડી ચાલી જાય છે. પતિ ન મર્યો અને જીવતો હોય તોપણ તેનામાં કોઈ દોષ હોય તો તે (સ્ત્રી) તેને કોઈને કોઈ રીતે મારી નાંખવા અથવા તેને છોડી બીજો પતિ કરી લેવામાં આગળ-પાછળ જોતી નથી પછી બીજા સાથે પણ ન બને તો તેને પણ તે જ રીતે મરાવી નાખી ત્રીજો પતિ કરી લે છે. કારણ કે જેવો પતિ પ્રત્યે પ્રેમ અને ભક્તિ હોવી જોઈએ તેવી તેના દિલમાં હોતી નથી તેનું પરિણામ એ આવે છે કે પોતે સ્વચ્છંદ વર્તન કરવા લાગે છે. વિધવા વિવાહની છૂટ મળી જવાથી અને વિષય વાસનાની લોલુપતા વધી જવાથી આ બધું થાય છે.

પરિણામ એ આવશે કે ચાલીશ-ચાલીશ અથવા પચાસ-પચાસ વર્ષના છોકરાઓ થઈ જવા છતાં પોતાના છોકરાઓ ઉંચી સ્થિતિમાં પહોંચી જવા છતાં પણ વિધવાઓ પતિ કરીને રહેવાનું ચાલુ કરશે.

યુરોપમાં પણ રાજવંશીય લોકોમાં વિધવા વિવાહનો પ્રચાર નથી તેથી પણ આપણે સિદ્ધ કરી શકીએ છીએ કે આ પદ્ધતિ પ્રશંસનીય નહી પણ નિંદનીય છે.

'મનુસ્મૃતિ'માં સ્ત્રીને બ્રહ્મચર્ય પાલન વિષયમાં જે હિત શિક્ષા આપી છે તેનો અમુક સાર અહીં લખ્યો છે.

વિવાહિત પતિ જો મરી ગયો હોય અથવા જીવતો હોય પરંતુ સ્વર્ગલોકની ઈચ્છા રાખવાવાળી કુલવાન સ્ત્રી તે કાર્ય નથી કરતી જે પોતાના પતિને અપ્રિય હોય.

એક પતિવાળી સ્ત્રી ઉત્તમ ધર્મની ઈચ્છા રાખવાવાળી સ્ત્રી મરણ

પર્યન્ત ક્ષમા, શીલ અને પૂર્ણ રૂપથી બ્રહ્મચારિણી થઈને રહે છે.

પતિનું પરલોક પ્રયાણ થઈ ગયાપ્પછી જે સ્ત્રી બ્રહ્મચર્યમાં લીન રહે છે. તેને પુત્ર ન હોવા છતાં પણ તે સ્વર્ગમાં જાય છે.

સંમેલનમાં એક પ્રવક્તાએ એક સ્ત્રી જાતિની હિતની વાતો કરતા વિધવા વિવાહની સહમતિની વાત જોશપૂર્વક શરૂ કરી. ત્યાં એક વૃદ્ધ ડોશીમા બેઠા હતા તેમની ઉંમર લગભગ (૫૦) પચાસ વર્ષની હતી. તેઓએ ઉભા થઈને કહ્યું ભાઈ પહેલા તમે તમારા માતાજીના બીજા લગ્ન ક્યાંક કરાવી લો પછી વિધવા વિવાહની સિફારિશ કરજો. તમારા જેવા બે-બે પુત્ર, પૌત્ર અને પૌત્રિઓ હોવા છતાં પણ તમારી માતાને એકલા જીવન પસાર કરવું પડે છે તેમને કેટલીએ મુસીબતો ઉઠાવવી પડે છે. માટે તમે તેમને કોઈની સાથે કોઈના ઘરમાં બેસાડી દો એટલે કે તમે તેમના બીજા લગ્ન કરાવી લો.

વિધવા વિવાહના સહમતિને કોઈક વિધવાથી લગ્ન કરવાનું કહે અથવા તો પોતાના પુત્ર સાથે લગ્ન કરવાનું કહે તો શું તે સ્વીકાર કરશે?

જેના ઘરમાં મોં માગ્યું દહેજ અને ઇચ્છાપૂર્વકની કન્યા પ્રાપ્ત થતી હોય તે ક્યારેય વિધવાને પોતાના ઘરમાં પુત્રવધૂના રૂપમાં લાવવાનું પસંદ નહીં કરે. આથી સિદ્ધ થાય છે કે ઉચ્ચકુળોના ઘરોમાં વિધવા વિવાહની પ્રથા ક્યારેય ન હતી અને ક્યારેય બનશે નહી. ઉચ્ચકુળ એ જ કે જે સદાચાર જીવન જીવે અર્થાત્ વિધવા વિવાહ સદાચારમય જીવન તો નથી જ.

તો શું અરિહંતના ઉપાસક અને આર્ય સંસ્કૃતિના સંરક્ષક પ્રબુદ્ધ મહાનુભાવ વિધવા વિવાહનો મત અપનાવી સમાજને દુરાચારી બનાવવા ઇચ્છે છે?

એથી સ્પષ્ટ રૂપથી સિદ્ધ થાય છે કે આવી પ્રથાઓ સદાચારી ઘરોમાં ક્યારેય પણ સ્થાન નહી પામે અને જેઓ દુરાચારી છે અથવા દુરાચારી બનવા માંગે છે તેઓ ઉંડાણથી આ બાબત પર વિચાર કરે.

સ્વામિ વિવેકાનંદ એકવાર અમેરિકા ગયા હતા તે સમયે ત્યાં તેઓનું

ભાષણ થયું હતું. ૧૨ જાન્યુઆરી ૧૯૬૨ના રાજસ્થાન પત્રિકામાં સ્વામિ વિવેકાનંદની "નારી વિષયક અવધારણા" શિર્ષકના અંતર્ગત ડૉ. મંજુલા સક્શેનાના લેખનો અમુક અંશ અહી આપ્યો છે. સ્વામિજીએ પણ ભારતીય નારીને કેવી રીતે પતિવ્રતા સિદ્ધ કરી છે. તેનો ખ્યાલ આપણને તેમના વિચારોથી આવશે.

"ભારતીય નારી પ્રાચીન, મધ્યકાલીન અને વર્તમાન વિષય પર કહેતા સ્વામિજીએ કહ્યું હતું, ભારતમાં નારી ઈશ્વરની પ્રત્યક્ષ અભિવ્યક્તિ છે અને તેનું સંપૂર્ણ જીવન આ વિચારથી ઓતપ્રોત છે કે તે જ 'મા' છે અને પૂર્ણ રીતે 'મા' બનવા માટે તેને પતિવ્રતા રહેવું અતિ આવશ્યક છે. તેઓએ કહ્યું છે કે ભારતમાં કોઈપણ 'મા' એ પોતાના છોકરાઓનો પરિત્યાગ કર્યો નથી. વિવેકાનંદે કોઈને પણ આ બાબતની ચુનૌતી આપી. *ભારતીય છોકરીઓને અગર અમેરિકન છોકરીઓની જેમ પોતાના અડધા શરીરને યુવકોની દૃષ્ટિ પડે તે માટે ખુલ્લુ રાખવાનું કહેવામાં આવે તો તે મરવાનું પસંદ કરશે.*

ભારતને ભારતના માપદંડથી માપી શકાય. તે (પશ્ચિમી) દેશોના માપદંડથી નહીં.

(હિટ્રાએટ ઈવનિંગ ન્યુઝે ૨૫ માર્ચ ૧૮૯૪)--ઈંગ્લેન્ડમાં ૨૭ ફેબ્રુઆરી ૧૮૯૫માં સ્વામિજીએ કહ્યું હતું ભારતના પુત્રોની સત્પ્રિયતા અને પુત્રિઓની પવિત્રતાની પ્રશંસા બધા યાત્રિકોએ કરી હતી.

સ્વામિજીને બ્રુકલિન એથિકલ એસોશિએશનના તત્ત્વાવધાનમાં હિસ્ટોરીકલ સોસાયટી હૉલમાં આપેલા ભાષણનાં અંતમાં એક શ્રોતાએ પૂછ્યું કે શું ભારતમાં બાલ વિધવાઓ સાથે ખરાબ વ્યવહાર થાય છે? ત્યારે તેના ઉત્તરમાં સ્વામિજીએ કહ્યું હતું કે-

અમુક હિન્દુઓ નાની ઉંમરમાં લગ્ન કરી લે છે બીજા તે સમયે લગ્ન કરે છે, જ્યારે તે મોટી ઉંમરનાં થઈ જાય છે અને અમુક વિવાહ ક્યારેય નથી

કરતા. મારા બાપુજીના વિવાહ તે સમયે થયા હતા જ્યારે તે બિલકુલ નાના હતા. મારા પિતાજીએ ચૌદ વર્ષની ઉંમરમાં વિવાહ કર્યા હતા અને હું ત્રીસ વર્ષનો છું છતાં અવિવાહિત છું. જ્યારે પતિ મૃત્યુ પામે છે ત્યારે તેની બધી મિલકત તેની પત્ની (વિધવા)ને મળે છે હું સમગ્ર ભારતમાં ફર્યો છું પણ મને દુર્વ્યવહારનું એક ઉદાહરણ મળ્યું નથી જેનો ઉલ્લેખ કર્યો છે.

ભારતીય દેશવાસીઓને પણ સંદેશ આપતા થકા તેઓએ કહ્યું હતું કે ભારતવાસીઓ તમે ન ભૂલતા કે તમારી સ્ત્રીઓનો આદર્શ સીતા, સાવિત્રી, દમયંતી છે અને એ પણ ન ભૂલતા કે તમારા ઉપાસ્ય સર્વસ્વ ત્યાગી ઉમાનાથ શંકર છે અને એ પણ ન ભૂલતા કે તમારા લગ્ન અને તમારું જીવન ઈન્દ્રિય સુખ વ્યક્તિગત સુખ માટે જ નથી.

ઉપરોક્ત વચનોમાં સ્ત્રી જાતિની પવિત્રતા કેટલી ઠોસ રૂપથી પ્રતિપાદિત કરી છે. જેનાથી વિધવા વિવાહ એક નિન્દનીય, ગર્હણીય અને દુરાચારી કૃત્ય છે એ સિદ્ધ થાય છે જેને સજ્જન પુરુષો પોતાના જીવનમાં ક્યારેય અપનાવશે નહીં.

ભગવાન સહાય ત્રિવેદી જોધપુરવાળાએ પણ કહ્યું છે કે અંગ્રેજોના લાંબા સમય સુધી સંપર્કના કારણે આપણા જીવન પદ્ધતિમાં તેમનું અંધાનુકરણ જ પ્રધાન રહ્યું છે.

તે અન્ધાનુકરણના ફળ સ્વરૂપે વિધવા વિવાહ, પરિવારમાં કંકાશ, છૂટાછેડા, અર્ધનગ્ન, અંગ પ્રદર્શન વાળી સ્ત્રી, પરાધીનતાની ફેશન, ટી.વી., વિડિયો વગેરેનું પ્રચલન-ગર્ભપાત, સંતતિ નિયમન ઓપરેશન વગેરે અનેક કુપ્રથાઓ આપણા આર્ય (ભારત) દેશમાં પ્રચલિત થઈ ગઈ છે.

જેનાથી ભારતીયોનું હિત નથી પરંતુ ભયંકર અહિત થઈ રહ્યું છે.

હિટલરે ૧૯૩૦માં ન્યુરેમ્બર્ગમાં લાખો યુવા સ્ત્રીઓની સામે કહ્યું હતું કે હું તમને ભોજન બનાવવામાં નિપુણ સુયોગ્ય માતા અને પતિને સંતોષ આપવાવાળી સ્ત્રીના રૂપમાં જોવા ઈચ્છું છું. તેણે સ્ત્રીના ત્રણ આદર્શ બતાવ્યા

સંતાન મંદિર ચૂલા (કલ્યાણ, નવેમ્બર ૧૯૭૫)

આ વાક્યમાં પણ નારીની પવિત્રતાનું વિધાન છે.

વિધવા વિવાહની પ્રથા પ્રારંભ થવા પહેલાં નારી જાતિમાં બ્રહ્મચર્ય પાલનની ભાવના વિશેષ પ્રમાણમાં હતી. એ ભાવના હવે વધારે પુષ્ટ કરવા માટે બ્રહ્મચર્યના ગુણગાન વધારે ઉપયોગી છે. તેથી અહીં બ્રહ્મચર્યની સ્તવના કરવામાં આવી છે.

સૂયગડાંગ સૂત્રની અંદર બધા જ તપમાં બ્રહ્મચર્ય તપ સર્વ શ્રેષ્ઠ બતાવ્યો છે.

પ્રશ્ન વ્યાકરણ સૂત્રમાં બ્રહ્મચર્યને અનેક ઉપમાઓ આપી છે. તેમાં અમુક ઉપમાઓ દ્વારા સ્તવના પણ કરાઈ છે. ગ્રહોના સમૂહમાં ચંદ્ર જેવું ઉત્તમ, રત્નોમાં વૈડૂર્ય રત્ન જેવું ઉત્તમ, ચંદનમાં ગોશીર્ષ ચંદન જેવું ઉત્તમ, નદીઓમાં સિતોદા જેવું ઉત્તમ, સમુદ્રોમાં સ્વયંભૂરમણ જેવું ઉત્તમ, હાથીઓમાં ઐરાવત જેવું ઉત્તમ, પરાક્રમીઓમાં સિંહ જેવું ઉત્તમ, પર્વતોમાં મેરૂ પર્વત જેવું ઉત્તમ, મુનિઓમાં તીર્થંકર જેવું ઉત્તમ બ્રહ્મચર્ય છે. એ પ્રમાણે અનેક ઉપમાઓથી બ્રહ્મચર્યને ઉપમિત કર્યો છે.

બ્રહ્મચર્યના પાલન કરવાવાળા અને કરાવવાવાળાના વિષયોમાં "અભિધાન રાજેન્દ્ર કોષ"માં જે વાતો બતાવી છે. તેનું અલ્પ સ્વરૂપ અહીં બતાવ્યું છે.

દેવ, દાનવ, ગંધર્વ, કિન્નર, યક્ષ, રાક્ષસ વગેરે દેવો બ્રહ્મચારીના ચરણોમાં નમસ્કાર કરે છે, કેમકે બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પાલન અત્યંત દુષ્કર છે.

સમતાથી સાધુ અને બ્રહ્મચર્યથી બ્રાહ્મણ કહીને તેની વ્યાખ્યા દર્શાવતા થકાં કહ્યું છે. બ્રહ્મ એટલે અહિંસા વગેરે પાંચ મહાવ્રત, ચર્ય એટલે પાલન કરવું એ જ બ્રહ્મચર્ય છે એવા બ્રહ્મચર્યને ધારણ કરેલ બ્રાહ્મણ છે.

બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું પાલન શૂરવીર માણસો જ કરી શકે છે. કાયરો દ્વારા

બ્રહ્મચર્યનું પાલન થતું જ નથી. હાથીનું કામ હાથી દ્વારા જ થાય ગધેડા, કૂતરા દ્વારા નહીં.

બ્રહ્મચર્ય લક્ષણથી યુક્ત ધર્મ જ ધ્રુવ છે, નિત્ય છે, શાશ્વત છે, એવું જિનેશ્વરોએ કહ્યું છે! જે સિદ્ધ થઈ ગયા છે, જે થઈ રહ્યા છે અને જે થવાના છે તે બધા જ બ્રહ્મચર્ય લક્ષણથી યુક્ત ધર્મ દ્વારા જ.

બ્રહ્મચર્ય વ્રતનું ખંડન થતા બધા જ વ્રતોનું ખંડન થાય છે, જેમકે કાચના ઘડાનો અમુક ભાગ નષ્ટ થવાથી પૂર્ણ ઘડો જ નષ્ટ થઈ જાય છે.

બ્રહ્મચર્ય વ્રત જ એક નિરપવાદ વ્રત છે અબ્રહ્મના સેવનથી મૂળવ્રતો ખંડિત થઈ જાય છે ફરીથી પ્રાયશ્ચિત્ત રૂપે ચારિત્ર (દીક્ષા) ગ્રહણ કરવું તે જ તેનો ઉપાય છે.

બ્રહ્મચર્યનો પાલક દીર્ઘ આયુષ્યવાન, સુંદર સંસ્થાન યુક્ત, સુદૃઢ સંઘયણ યુક્ત, તેજસ્વી અને શક્તિશાળી હોય છે એવું લખેલ છે.

મહાભારત વગેરે ગ્રંથોમાં પણ બ્રહ્મચર્યના ગુણગાન કર્યા છે જેમકે,

'મહાભારતમાં'માં કહ્યું છે કે બ્રહ્મચર્યમાં બધા જ તીર્થ છે, બ્રહ્મચર્યમાં જ તપ છે, બ્રહ્મચર્યમાં જ ધૈર્ય છે, અને યશ પણ નિહિત છે, બ્રહ્મચર્યમાં પુણ્ય પવિત્રતા અને પરાક્રમ છે, બ્રહ્મચર્યમાં સ્વાતંત્ર્ય અને ઈશ્વરત્વ પણ પ્રતિષ્ઠિત છે.

'ભગવત્ ગીતા'માં કહ્યું છે જો તમારે તમારો આત્મા શુદ્ધ જોઈએ તો બ્રહ્મચર્યનું આચરણ કરો.

શિવ સંહિતામાં કહ્યું છે કે એક વિર્ય બિન્દુ રૂપી મહારત્ન સિદ્ધ થયા પછી પૃથ્વી પર એવી કઈ સિદ્ધિ નથી જે પ્રાપ્ત ન થઈ શકે?

'દક્ષ સ્મૃતિ'માં કહ્યું છે કે મોક્ષનો દૃઢ આધાર બ્રહ્મચર્ય છે.

દાનોમાં શ્રેષ્ઠ દાન અભયદાન છે અને અભય આપવાનું સર્વશ્રેષ્ઠ સાધન બ્રહ્મચર્ય પાલન છે.

કૃષ્ણજીએ યુધિષ્ઠિરને કહ્યું કે, હે યુધિષ્ઠિર એક રાત બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરવાવાળાને જેટલું પુણ્ય પ્રાપ્ત થાય છે તેને ઈન્દ્રો પણ સહમતી આપે છે.

બ્રહ્મચર્યના પાલક મહાપુરુષનું નામ સ્મરણ પણ અનંતભવોની વાસનાને નાશ કરવામાં સક્ષમ છે. આ હેતુથી અહીંયા મહાપુરુષોને નમસ્કાર કરવામાં આવ્યા છે.

શ્રી થૂલિભદ્રજી બ્રહ્મચર્ય વ્રત પાલકોમાં સર્વશ્રેષ્ઠ પાલક છે. તેઓ એ બાર વર્ષની પરિચિત કોશા વેશ્યાને ઘેર ષટ્રસ (વિકાર વર્ધક) ભોજન કર્યું, કામોદ્દીપન ચિત્રશાળામાં ચાર માસ (ચાર્તુમાસ) વ્યતિત કરીને ત્રિકરણ ત્રિયોગથી બ્રહ્મચર્યનું પાલન કર્યું તેમને અમારી કોટી-કોટી વંદના.

"ધન ધન વિજયશેઠ શેઠાણીવિજયા પાળ્યો શિયળ મહાન"

વિજયશેઠ અને વિજયાશેઠાણી જેઓએ વિવાહના સુહાગરાતના દિવસથી એક જ પથારીનો ઉપયોગ કરવા છતાં ત્રિકરણ ત્રિયોગથી બ્રહ્મચર્યનું શુદ્ધ પાલન કરવાથી. ચોરાશી હજાર (૮૪૦૦૦) સાધુઓને સુપાત્ર દાન આપવાથી જેટલું ફળ થાય તેટલું ફળ એમની ભક્તિ કરવા દ્વારા થાય એવી શક્તિ મેળવી એવા મહાપુરુષોને કોટી કોટી વંદના.

ધનશેઠ અને ધનવંતીશેઠાણી જેઓ એકાન્તર બ્રહ્મચર્ય નિયમના કારણથી આજીવન બ્રહ્મચર્ય પાલન કરી આત્માનું ઉત્થાન આત્મસાધના કરી તેઓને પણ કોટી કોટી વંદના.

શ્રી વજસ્વામિ જેઓએ છ મહીનાની ઉંમરમાં જ પિતા મુનિના ચરણોમાં જીવન સમર્પિત કરી ત્રણ વર્ષની ઉંમરમાં જ 'અગ્યાર અંગ' કંઠસ્થ કરી માના પ્રલોભનનો સ્વીકાર ન કરતાં ચારિત્ર ગ્રહણ કરી છેલ્લે દશપૂર્વી બની રુક્મિણિની માંગણીને દીક્ષામાં પરિવર્તન કરાવવાળા મહાપુરુષોને કોટી-કોટી વંદના.

રાવણના ઘરમાં રહીને પણ નિષ્કલંક રહીને રામચંદ્રજીના કહેવાથી અગ્નિ પરિક્ષામાં ઉત્તીર્ણ થઈને સંસારને દુઃખકારી સમજી ચારિત્ર લેવાવાળી મહાસતી સીતાનું નામ સ્મરણ આજે પણ વાસનાને નષ્ટ કરવામાં અતિ ઉત્તમ સાધન છે.

સતી અંજના, સતી દમયંતી, સતી કલાવતી, સતી સુભદ્રા વગેરે અનેક સતીઓના આત્માઓએ બ્રહ્મચર્યનું ત્રિકરણ ત્રિયોગથી પાલન કર્યું છે, તેઓનું નામ સ્મરણ આજે પણ પાપનું પ્રક્ષાલન કરી રહ્યું છે.

આ બધા જ દૃષ્ટાંતથી સાબિત થાય છે કે, બ્રહ્મચર્યનું પાલન સર્વશ્રેષ્ઠ ધર્મ છે અને સ્ત્રી માટે પુનઃ વિવાહ વિધવા વિવાહ વગેરે કનિષ્ઠતમ અધર્મ છે. આ પ્રકરણમાં એક વાત અનેક વખત પૂછાય છે કે પુરુષ પુનઃવિવાહ કરી શકે છે તો સ્ત્રી માટે કેમ નિષેધ છે?

પુરુષો અને સ્ત્રીઓમાં પ્રધાનપણું પુરુષોનું સદાકાળથી ચાલ્યું આવ્યું છે. પુરુષોએ જ ધર્મ શાસ્ત્રની રચના કરી છે માટે પુરુષોને એકથી અનેક સ્ત્રીઓ કરવાની અનુમતિ અને સ્ત્રીઓને નિષેધ એવી કોઈ વાત નથી.

પ્રશ્ન તો છે કુદરતના ન્યાયનો કુદરતે સદાને માટે પુરુષોને પ્રધાનતા આપી છે! પ્રધાનમંત્રી અને મહારાણી પદ આવી ગયા પછી પણ તેણે પોતાના પતિના પાસે નિમ્ન સ્થાન પર રહીને જ જીવન વ્યતિત કરવું પડે છે. આ કુદરતી ન્યાયને કોઈ વ્યક્તિ દૂર નથી કરી શકતો.

સ્ત્રીના શારીરિક બંધારણની દૃષ્ટિએ પણ સ્ત્રીનો સંપર્ક જે પુરુષ સાથે એકવાર પણ થઈ જાય છે તે તેનો પતિ હોય છે.

માતૃત્વની સાથે પતિત્વનો સંબંધ પણ જોડાયેલ છે માટે સ્ત્રીઓએ ભૂલમાં પણ અયોગ્ય આચરણ કરી પોતાના માતૃત્વને લાંછન ન લગાડવું જોઈએ! પુત્રને પોતાની માતા પર એટલો વિશ્વાસ હોય છે કે જે માતા પોતાની આંગળી ચીંધીને બતાવે છે કે આ તારા પિતા છે ત્યારે તે બાળક આંખ મિંચીને સ્વીકાર કરી લે છે! તો શું પુનઃવિવાહ અને વિધવા વિવાહમાં આવી

વિશ્વસનીયતા રહી શકે છે?

પરિવાર નિયોજનની પણ અયોગ્ય પ્રકારથી પસંદગી થઈ રહી છે. જેનાથી જન સંખ્યા પર અંકુશ આવ્યો કે નહીં તે તો જ્ઞાની જ જાણે પણ વ્યભિચારી લોકોની સંખ્યામાં વધારો તો નિશ્ચયથી થયો છે. મામા, ફઈના છોકરા, ભાઈ બહેન, કાકાના દિકરા ભાઈ બહેન અને દેવર ભોજાઈના સંબંધોમાં પણ વ્યભિચારે પ્રવેશ કરી દીધો છે. જૈન શાસને તો "વસ્તિ નિરોધે" સૂત્ર આપીને વસ્તિના નિરોધ માટે બ્રહ્મચર્યને ઉત્તમ માર્ગ કહ્યો છે. (સૂત્ર કૃતાંગ સૂત્રમાં પહેલો સૂત્ર સ્કંધ ત્રીજો અધ્યાય અને પહેલા ઉદ્દેશકમાં બતાવ્યું છે.)

વાસ્તવિક "વસતિ નિરોધ" પરિવાર નિયોજનમાં બ્રહ્મચર્ય પાલન એ જ સર્વોત્કૃષ્ટ માર્ગ સિદ્ધ થયા પછી પુનઃવિવાહ અને વિધવા વિવાહને કોઈ સ્થાન રહેતું નથી.

ગર્ભપાત તો સ્પષ્ટ રૂપથી માનવ હત્યા જ છે. મૃત્યુ પથારી પર પડેલા ડોસાને મારી નાખનારને ફાંસીની સજા આપવામાં આવે છે અને તેમાં સહાયક વ્યક્તિને પણ વીસ સાલ સુધી ઉમ્રકેદની કડક સજા થાય છે એવો કાનુન વિદ્યમાન હોવા છતાં એક એવો વ્યક્તિ જેને દુનિયાની હવા પણ નથી લીધી ધર્મ નેતા અથવા રાજનેતા વગેરે બનવાની હૈસિયત લઈને આવેલો હોય તે પણ શક્ય છે. એવા ગર્ભસ્થ પુત્ર-પુત્રીની હત્યા કરવા કરાવવાનો અધિકાર કાયદાથી કેવી રીતે યોગ્ય છે? આના પર પ્રબુદ્ધ માનવીઓએ ગહરાઈથી વિચારવું જોઈએ.

જૈન શાસન પ્રબલ પુણ્યોદયના કારણે પ્રાપ્ત થાય છે એવું જો કહેવાય છે તો તેમાં એક કારણ છે કે એકેન્દ્રિયાદિ જીવોનું રક્ષણ કરવાનું વિધાન જૈન શાસનમાં જ છે જ્યાં પૃથ્વી, પાણી, અગ્નિ, વાયુ અને વનસ્પતિ કાયિક જીવોની પણ વિરાધનાથી બચવાનો નિર્દેશ આપેલો છે.

એવું જિનશાસન પ્રાપ્ત થયા પછી માનવ જ્યારે ગર્ભસ્થ પંચેન્દ્રિય પોતાના સંતાનની હત્યા કરાવે છે ત્યારે તો તેના માટે જૈન શાસનની પ્રાપ્તિનો

કોઈ અર્થ જ નથી રહેતો? ગર્ભપાત કેવળ માનવ હત્યા જ નથી પરંતુ સ્વહૃદયસ્થ કરુણા દેવીની પણ હત્યા છે.

એકવાર ગર્ભપાત કરાવેલી સ્ત્રીના શરીરમાં કેટલાય પ્રકારથી ભૌતિક રોગોની ઉત્પત્તિ થાય છે એમ બ્રિટિશ ડૉક્ટરોએ સંશોધન કરીને સિદ્ધ કર્યું છે.

ઈસાઈ ધર્મના વડા ગુરુ પોપે પણ ગર્ભપાત વિરુદ્ધ બહુ મોટો લેખ આપેલ છે.

જૈન શાસનને પ્રાપ્ત કરેલ મહાનુભાવો અને સદાચારી પુરુષોના માટે ગર્ભપાત જેવા મહાપાપકારી કાર્યોથી બચવા આ બે શબ્દો લખ્યા છે.

મહાભયંકર પાપોથી બચવા પુનઃવિવાહ, વિધવા વિવાહ, ગર્ભપાત, પરિવાર નિયોજન આદિથી દૂર રહેવું હિતાવહ છે. એજ.

વિચારણીય

- લેખક શ્રી પ્રદ્યુમ્નસૂરીશ્વરજી

ધર્મના ભોગે ધર્મ નહીં કરવાનો :

શ્રી સંઘ જમણ હોય ત્યારે તે માટેની રસોઈ આગલી અડધી રાતે રસોઈયાઓ માંડે એ ઘણું અનુચિત છે. જરૂર પડે, સંખ્યા ઘણી હોય ત્યારે કોરડ રાખવું. અત્યારની ભાષામાં જેને અલ્પાહાર કહે છે તેમ, બેથી ત્રણ દ્રવ્યો હોય, દાળ-ભાત ન હોય. ચોમાસાના દિવસોમાં તો એ લાઈટોમાં ફુદા, પતંગિયા વગેરેની વિરાધના બેસુમાર થાય છે. વળી વધારામાં *ધર્મમાંથી જ જો જયણા બાકાત હોય તો તે ધર્મ કહેવાય જ કેમ?*

ધર્મમાં વ્યાપારી મનોવૃત્તિ દાખલ થઈ :

મંડળના વહીવટદારો રાત્રે ૧૨ વાગ્યે યાત્રા માટેની બસ ઉપાડે! એમ એ બીજા દિવસમાં ગણાયને! વળી અમુક કિલોમીટર પૂરા કરવાના હોય તેથી

ઘણીવાર રાત્રે દશ વાગે જ પાલિતાણામાં યાત્રિકોને ઉતારે. આ યાત્રીઓ ધર્મશાળામાં જતાં પહેલાં જ બહાર લારીએ વીંટળાઈ વળે. કાંઈ ને કાંઈ ખાય!

આવ્યા છે તીર્થની યાત્રા કરવા માટે અને ત્યાં રાત્રિ-ભોજન કરે તો તેને યાત્રા કેમ કહેવાય? એ તો પિકનીક-પ્રવાસ થયો. તીર્થોની યાત્રા તો તનને અને મનને પવિત્ર કરવા માટે, અંતરનાં પાપ ધોવા માટે કરવાની છે. એ આશય તો નંદવાઈ જ ગયો! એટલે, ઓછા તીર્થની સ્પર્શના કરવી અને તે પણ દિવસ છતાં જ કરવી. તે તે સ્થળોના *પ્રભુજીનાં દર્શન 'આંખ બંધ કરીએ તો પણ દેખાય' એ રીતે કરવા!*

વિરતિવંતને વંદના કરવાનું વિધાન મહત્ત્વનું છે :

વંદના કરવાથી સામેની વ્યક્તિમાં જે ગુણસંપદા છે તેનો વિનિયોગ આપણામાં થાય છે.

જ્યારે કોઈ પચ્ચક્ખાણ કરવાના હોય ત્યારે અવશ્ય ગુરુને વંદના કરીને પચ્ચક્ખાણ કરવું જોઈએ. એ સામાચારી વ્યવસ્થા છે. વળી જેમને વંદના કરવાની હોય તે વ્યક્તિ આસન પર વિરાજમાન હોય, સન્મુખ હોય, પ્રસન્ન હોય ત્યારે રજા/આજ્ઞા લઈને વંદના કરવાની હોય છે. હવે સમજાશે કે રસ્તા વચ્ચે ઊભાં ઊભાં આયંબિલ વગેરેના પચ્ચક્ખાણની માંગણી તે અવિનય ઠરે છે.

એ જ રીતે ગુરુ મહારાજને ઊભા રાખી, ચોખાની ગહુંલી કાઢી વંદના કરવી તે અવિનય છે.

પ્રભુજીના વરઘોડામાં પણ આવો આગ્રહ રાખવામાં આવે છે એ અવિનય છે. *સામૈયામાં રસ્તા વચ્ચે ઊભા રાખીને ગહુંલી કાઢવાપૂર્વક ગુરુ મહારાજને વંદના કરવાની વાત પણ અર્હત્ના ધર્મને અનુરૂપ નથી જણાતી. એ કરતાં તો હાથમાં અક્ષત લઈને, બે હાથે વધાવતાં વધાવતાં સૌમ્ય મુદિત સ્વરે 'પધારો, પધારો. મત્થએણ વંદામિ, સુખશાતામાં*

છો!' એમ ઉચ્ચારવું વધારે સંગત જણાય છે. અન્યથા, રસ્તા વચ્ચે ઊભા રાખી અશાતા ઉપજાવી શાતા પૂછવા જેવું થશે! આધાર ગ્રંથ રૂપે ગુરુવન્દનભાષ્ય છે જ.

પ્રભુનો ધર્મ સર્વના ઉત્થાન માટેનો છે :

તે ધર્મની કોઈ પ્રવૃત્તિ અન્યને ધર્મ પ્રત્યે અપ્રીતિનું કારણ ન બનવી જોઈએ. આ કાળમાં તો દેરાસરમાં *ક્યારેક રાત્રે ભાવનામાં અને દિવસે પૂજનમાં માઈક દ્વારા આજુબાજુના પરિસરમાં અવાજનું ભારે પ્રદૂષણ ફેલાય છે. ઘરડાઓને નિંદરમાં વિક્ષેપ પડે, ત્રાસ થાય, ભણતા વિદ્યાર્થીઓને પણ અભ્યાસમાં ખલેલ પડે. તેથી અજૈનો અને હવે તો આધુનિક જૈનો પણ મનમાં કચવાય છે, અપ્રીતિ ધારે છે. ક્યારેક આવા પ્રશ્ને બોલાચાલી થાય છે અને ઝગડાના રૂપ સુધી પહોંચે છે.* આવા અનુભવો બધાને થાય છે. મને તો ડર છે કે અપ્રીતિ ઘટ્ટ થતાં દુર્લભ-*બોધિપણામાં જ નિમિત્ત* બની જાય છે. તેથી દેરાસરમાં લાઈટ અને માઈક જ નહી તેવું કરવામાં આવે તો, લોકો, સંગીતકારો અને વિધિકારો સમજીને જ આવે.

ઉપાશ્રયની બાબતમાં તો અમદાવાદ જેવા શહેરમાં, આજુબાજુમાં વસતા જૈન સુદ્ધાં, એવી જાતનો પ્રબળ અને પ્રગટ વિરોધ કરતા હોય છે ત્યારે મનમાં એમ થાય કે આ જીવો બોધિદુર્લભ તો નહીં બની જાય ને! આવી આશંકા જાગે તેવા સંજોગોમાં ધર્મીજીવોની જવાબદારી વધી જાય છે. તેવા સંયોગોમાં આપણે બોલવામાં ઘણો સંયમ કેળવવો જરૂરી છે. જો ધર્મી પ્રત્યે અપ્રીતિ થાય તો એ આગળ વધીને ધર્મ પ્રત્યે અપ્રીતિ કરાવે જ. એવું બને ત્યારે જીવ હારી જાય. પ્રભુ મહાવીર મહારાજાએ કહ્યું હતું કે, *'अप्रीतिमद् गेहे वासो न कर्तव्यः॥'* દેરાસરમાંથી માઈક, લાઈટ નીકળે અને સંયમીઓનો વ્યવહાર ઔચિત્યપૂર્ણ બને તો આ પ્રશ્ન ઉકેલી શકાય.

સિદ્ધચક્ર પૂજનવિધિ :

આ પૂજનની વિધિમાં લખ્યું છે કે, જેને પૂજન ભણાવવાનું હોય, જે પૂજનમાં બેસનારા હોય તે બધાં - કુલ ચાર જણાં - માંડલામાં એક, યંત્ર ઉપર બે અને વિધિકારક એમ ચારે જણાએ ખીરના ત્રણ એકાસણા પૂર્વક આ પૂજન ભણાવવું.

આ વાત અત્યારના ભણાવાતાં તમામ પૂજનો માટે પણ વિચારી શકાય. તે તે પૂજન ભણાવવાથી નીપજતાં ફળને મેળવવું હોય તો, આ વિધિ મહત્તમ અંશે જરૂરી ગણાવી જોઈએ.

પૂજન, શાંતિસ્નાત્ર, અષ્ટોત્તરી પૂજા :

આ પૂજનો ભણાવ્યા પછી તેના શાંતિજળની ગામ ફરતે ધારાવાડી દેવાની પ્રથામાં સુધારો કરવો જરૂરી છે. દિવસ છતાં છતાં જ તેના લાભ લેનારાઓએ એ સ્નાત્રનું શાંતિજળ બહુમાનપૂર્વક સાથે રાખીને ગામ ફરતી તેની ધારા કરવી જોઈએ. શ્રીસંઘે આ વિધાનને પ્રતિષ્ઠા આપવી જરૂરી છે.

પર્વાધિરાજ પર્યુષણમાં કાંઈ ને કાંઈ તપસ્યા કરવાનું ચાલે છે :

શહેરમાં તો આવા તપ ઘણી મોટી સંખ્યામાં થાય છે. આ બધું સારું છે. તપોધર્મનો પ્રસાર એ આનંદની ઘટના છે. હવે તેમાં એક ડગલું આગળ વધવાનું છે. અઠ્ઠાઈ વગેરે જે તપસ્યા થાય તે પછી, જેટલા દિવસનું એ તપ થયું હોય તેટલા દિવસ તેઓ રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કરે એમ થવું જોઈએ. અન્યથા, સિદ્ધિતપના પારણા પછીના દિવસે તપસ્વીને રાત્રે શાતા પૂછવા આવનારને, *એ જ તપસ્વી રાત્રે જમતાં જોવા મળે છે જે તપસ્વીને શોભતું નથી.* માટે તપ પૂરું થાય ત્યારે તપના જેટલા દિવસો તેટલા દિવસ તો ઓછામાં ઓછું રાત્રિભોજન ત્યજવું જોઈએ.

આંગી :

પ્રભુજીને દેવાધિદેવને વીતરાગ પરમાત્માને જે લોકો રૂની, રંગબેરંગી

ઊનની, સુતરના રંગીન દોરાની, મૂલ્યહીન પ્લાસ્ટીકના ઈમિટેશન નંગની અંગરચના કરે છે તે અથવા એવી કરેલી આંગી જોવા મળે છે ત્યારે અનુપમ એશ્વર્યથી શોભતા પ્રભુને આવી તુચ્છ વસ્તુઓ શા માટે ચઢાવતા હશે, શું જરૂર છે એવા એવા પ્રશ્નો મનને ડહોળે છે. અલંકાર રહિત પ્રભુજી સ્વયં પણ સુશોભિત અને મનોહારી લાગે છે. કરવી જ હોય તો પાર્થિવ જગતની મૂલ્યવાન ચીજોથી શણગારો, કાં તો માત્ર વિવિધરંગી પુષ્પોથી પ્રભુજીને વિભૂષિત કરો; સાચા હીરા-માણેક-મોતીથી સોનેરી વરખથી અંગરચના કરો. પરંતુ *હલકી નિર્માલ્ય ચીજનો તો પ્રભુને સ્પર્શ પણ નિષિદ્ધ ગણવો જોઈએ.*

મારા મનના થોડા વિચારો અહીં જણાવ્યા. રૂચે તો આના ઉપર સુજ્ઞ વ્યક્તિઓ વિચાર કરે. આમાં ક્ષતિ હોય તો ધ્યાન દોરે એવી વિનંતી છે. આવા બીજા વિચારોનાં મંથન પણ થયા કરે છે. અન્ય અવસરે એ શોભશે. હાલ આટલા વિચારો શ્રીસંઘ સમક્ષ મૂક્યા છે.

- 'નિત્ય સંસ્કૃતિ', જનવરી ૨૦૦૭

- પ્રભુ પૂજામાં સુગંધી શોભા યુક્ત પવિત્ર માણસે પવિત્ર ભાજનમાં લાવેલા નાભિથી ઉપર રાખીને લાવેલા ફૂલો વાપરવા જોઈએ.
- સુગંધ વગરના ફૂલો ફૂલના, ફૂલના પગર ભરવા પ્રભુની આજુ-બાજુ ગોઠવે તો હરકત નથી.

  જાસુદની ખીલ્યા વગરની માત્ર કળી ચઢાવવી ઉચિત લાગતું નથી.

-ધર્મદૂત મે-જૂન-૨૦૪૮.

આર્થિક સહયોગી

પરમપૂજ્ય પિતાશ્રી મહાસુખલાલ ચીમનલાલ વોહેરા
પરમપૂજ્ય માતુશ્રી શાંતાબેન મહાસુખલાલ વોહેરા

પુત્ર : રજનીભાઈ	પુત્રવધૂ : અલકાબેન
પૌત્ર : નરેન્દ્ર (નેમિ)	પૌત્રવધૂ : રીશીતા
પૌત્રી : રિદ્ધિ	જમાઈ : નીરવકુમાર

થરાદ

ફર્મ : રિદ્ધિ ફાઈનાન્સ

એલ-જી/૪૨, મોક્ષલાગી,
એસ. વી. રોડ, બોરીવલી (વેસ્ટ), મુંબઈ-૪૦૦૦૭૨